वार्षिकी
2019-20

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2019-2020

अध्यक्ष : डॉ. चंद्रशेखर कंबार

उपाध्यक्ष : श्री माधव कौशिक

सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय	4
परियोजनाएँ एवं योजनाएँ	8
2019-2020 की प्रमुख गतिविधियाँ	12
पुरस्कार	**13**
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019	14
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019	19
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2019	23
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2019	27
कार्यक्रम	**31**
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह	32
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह	53
युवा पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह	55
बाल साहित्य पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह	60
साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त	64
संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि	70
वर्ष 2019-2020 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची	152
वर्ष 2019-2020 में आयोजित शासकीय निकाय, क्षेत्रीय मंडलों तथा भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें	185
पुस्तक मेलों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची	187
प्रकाशित पुस्तकें	195
वार्षिक लेखा 2019-2020	231-283

साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें—कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व-आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलग्न है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक(कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/कलाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक/सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि-अनुवादक (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित—दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंतः अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक : विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच

प्रदान करता है), युवा साहिती (इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों/साहित्यकारों को देश के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा इंफ़ाल में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फ़ेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फ़ेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, इनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' (ILA) नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होनेवाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुनः अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुनः अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी. के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू.आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। सामान्य परिषद् को 2018-2022 के कार्यकाल के लिए पुनर्गठित किया गया तथा 2018 में डॉ. चंद्रशेखर कंबार अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलतः अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद् में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यताप्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित बाइस भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं—असमिया, बाङ्ला, बोडो, डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम्, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिळ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय ग्यारह भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4, डी.एल.खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िआ में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु : साहित्य अकादेमी के बेंगळुरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलतः स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळुरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम्, तमिळ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळुरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिळ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नै-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री विभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळुरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्र से भी की जाती है। अकादेमी ने अपनी पुस्तकों का विक्रय अमेज़न (www.amazon.in) तथा साहित्य अकादेमी वेबसाइट पर भी प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त चौबीस भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियाँ, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं फ़ुटेज़, लेखकों की पांडुलिपियाँ, लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफ़ोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों, और भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण प्रभावी घटनाओं, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक नमूना होगा, जो आम पाठकों के लिए रुचिकर होगा और साहित्यिक अनुसंधानकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी साबित होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी ही तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी द्वारा अब तक 154 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध है।

अकादेमी से किए जानेवाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालाचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लैमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिज़िटाइज़ेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2013 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो/वीडियो और अन्य सामग्रियों के डिज़िटाइज़ेशन के लिए एक क़रार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

अनुवाद केंद्र

चूँकि अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है, अकादेमी ने बेंगळुरु में अनुवाद केंद्र तथा कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है—विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, सन् 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटने वाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िआ, बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादक-मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा-निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादक मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी के एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवा रही है। किंतु समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन गई है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु प्रामाणिक शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत; शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश प्रकाशित हो चुका है तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश इसी वर्ष प्रकाशित होने की संभावना है। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िआ, मैथिली-ओड़िआ तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना-पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॉकबोराक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिज़िटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न प्रदर्शनियों में भी सहभागिता करता है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 15,735 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2019-2020 में पुस्तकालय के 369 नए सदस्य बने हैं तथा 1061 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु ख़रीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 1.76 लाख से भी अधिक है तथा अकादेमी के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर कुल 2.5 लाख (लगभग) पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूज़र फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पुस्तकालय ने ''सामग्री आधारित पूर्ण पाठ खोज प्रणाली'' की एक नई सेवा

भी शुरू की है, जो संदर्भ उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिज़िटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ-सूची उपलब्ध करा सकता है। ''हूज़'हू ऑफ़ इंडियन राइटर्स'' जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/SA Search System/sauser पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी गृह पत्रिका में प्रकाशित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की ख़रीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकंवर्जन/कंप्यूटरीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की समिति

पी.ओ.एस.एच. अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामलों को देखने के लिए गठित समिति की बैठक प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता तथा बेंगळूरु एवं उप-कार्यालय चेन्नई में भी हुई।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न समिति के अध्यक्ष को साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष की ओर से अग्रप्रेषित एक शिकायत प्राप्त हुई, जिसके बारे में उन्होंने निर्देश दिया कि साहित्य अकादेमी के यौन उत्पीड़न मामलों में विशेषज्ञता प्राप्त एक महिला वकील सहित तीन प्रतिष्ठित बाहरी सदस्यों को शामिल किया जाए। समिति ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष को शिकायतकर्ता और प्रतिवादी को एक प्रति के साथ रिपोर्ट सौंपी।

2019-2020 की प्रमुख गतिविधियाँ

- अकादेमी पुरस्कार 2019 प्रदत्त।
- अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2018 प्रदत्त।
- अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2019 प्रदत्त।
- अकादेमी युवा पुरस्कार 2019 प्रदत्त।
- चार लेखकों को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त।
- देशभर में कुल 625 कार्यक्रमों का आयोजन
  - ❖ 47 संगोष्ठियों, 76 परिसंवादों तथा 1 भाषा सम्मेलन का आयोजन।
  - ❖ 157 साहित्य मंच कार्यक्रमों का आयोजन।
  - ❖ 'लोक : विविध स्वर' शृंखला के अंतर्गत 7, मुलाक़ात शृंखला के अंतर्गत 8, 'युवा साहिती' शृंखला के अंतर्गत 8, 'कथासंधि' शृंखला के अंतर्गत 19, 'कविसंधि' शृंखला के अंतर्गत 20, 'अस्मिता' शृंखला के अंतर्गत 12, 'बहुभाषी सम्मिलन' के अंतर्गत 5, 32 लेखक सम्मिलन, 5 जनजातीय और वाचिक साहित्य कार्यक्रम, 6 पूर्वोत्तर एवं क्षेत्रीय सम्मिलन, 17 नारी चेतना, 13 मेरे झरोखे से, 9 लेखक से भेंट, 7 व्यक्ति और कृति, 4 अनुवाद कार्यशालाओं तथा 3 सृजनात्मक लेखन कार्यशालाओं के अलावा 170 से अधिक विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का समस्त भारत में आयोजन किया गया।
- 505 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- वर्ष 2019-2020 में 148 पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों का आयोजन एवं सहभागिता।
- अकादेमी ने लगभग 73.79 लाख रुपए की पुस्तकों की बिक्री की।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 1061 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 6 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 154 हो गई।
- *इंडियन लिटरेचर* के 5 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 5 अंकों का प्रकाशन।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019

18 दिसंबर 2019 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2019 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 23 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। नेपाली भाषा में साहित्य अकादेमी पुरस्कार की घोषणा 21 जनवरी 2020 को की गई। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2013 से 31 दिसंबर 2017 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 से सम्मानित लेखक

असमिया : जयश्री गोस्वामी महंत, ***चाणक्य*** (उपन्यास)

बाङ्ला : चिन्मय गुहा, ***घुमेर दरजा ठेले*** (निबंध)

बोडो : फुकन चंद्र बसुमतारी, ***आखाइ आथुमनिफ्राय*** (कविता-संग्रह)

डोगरी : (स्व.) ओम शर्मा 'जंद्रयाड़ी', ***बंदरालता दर्पण*** (निबंध)

अंग्रेज़ी : शशि थरूर, ***एन एरा ऑफ़ डार्कनेस*** (कथेतर गद्य)

गुजराती : रतिलाल बोरीसागर, ***मोजमां रे'वु रे!*** (निबंध)

हिंदी : नंदकिशोर आचार्य, ***छीलते हुए अपने को*** (कविता-संग्रह)

कन्नड : विजया, ***कुदि एसरू*** (आत्मकथा)

कश्मीरी : अब्दुल अहद हाजिनी, ***अख याद अख क़यामत*** (कहानी-संग्रह)

कोंकणी : निलबा अ. खांडेकर, ***द वर्डस्*** (कविता)

मैथिली : कुमार मनीष अरविंद, ***जिनगीक ओरिआओन करैत*** (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : वि. मधुसूदनन् नायर, ***अच्छन पिरन्न वीदु*** (कविता-संग्रह)

मणिपुरी : बेरील थांगा (एल. बीरमंगल सिंह), ***ऐ अमदी अदुडैगी ईथत्*** (उपन्यास)

मराठी : अनुराधा पाटील, ***कदाचित अजूनही*** (कविता-संग्रह)

नेपाली : सलोन कार्थक, ***विश्व एउटा पल्लो गाउँ*** (यात्रा-वृत्तांत)

ओड़िया : तरुणकांति मिश्र, ***भास्वती*** (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : किरपाल कज़ाक, ***अंतहीण*** (कहानी-संग्रह)

राजस्थानी : रामस्वरूप किसान, ***बारीक बात*** (कहानी-संग्रह)

संस्कृत : पेन्ना मधुसूदन, ***प्रज्ञाचाक्षुषम्*** (कविता-संग्रह)

संताली : काली चरण हेम्ब्रम, ***सिसिरजाली*** (कहानी-संग्रह)

सिंधी : ईश्वर मूरजाणी, ***जीजल*** (कहानी-संग्रह)

तमिऴ : चो. धर्मन, ***सूल*** (उपन्यास)

तेलुगु : बंदि नारायण स्वामी, ***सप्तभूमि*** (उपन्यास)

उर्दू : शाफ़े क़िदवई, ***सवानेह सर सैयद : एक बाज़दीद*** (जीवनी)

जयश्री गोस्वामी महंत

चिन्मय गुहा

फुकन चंद्र बसुमतारी

(स्व.) ओम शर्मा 'जंद्रयाड़ी'

शशि थरूर

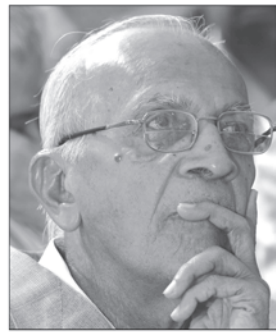
रतिलाल बोरीसागर

नंदकिशोर आचार्य

विजया

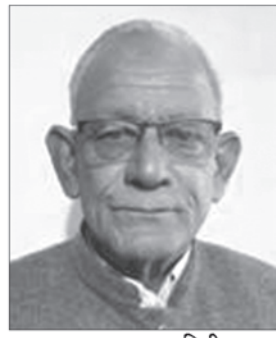
अब्दुल अहद हाजिनी

निलबा अ. खांडेकर

कुमार मनीष अरविंद

वि. मधुसूदनन् नायर

बेरील थांगा (एल. बीरमंगल सिंह)

अनुराधा पाटील

सलोन कार्थक

तरुणकांति मिश्र

किरपाल कज़ाक

रामस्वरूप किसान

पेन्ना मधुसूदन

काली चरण हेम्ब्रम

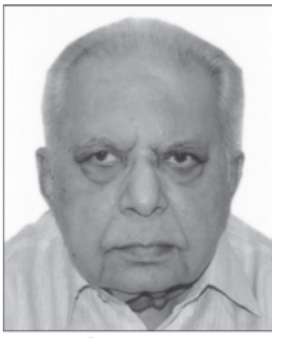
ईश्वर मूरजाणी

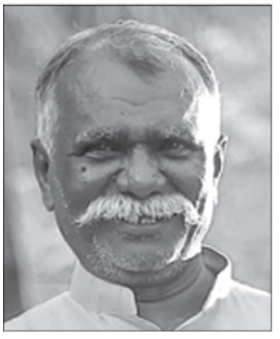
चो. धर्मन

बंदि नारायण स्वामी

शाफ़े क़िदवई

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. डॉ. बसंत भट्टाचार्य
2. श्री गगन च. अधिकारी
3. प्रो. उमेश डेका

बाङ्ला

1. सुश्री बानी बासु
2. श्री पवित्र मुखोपाध्याय
3. श्री उषारंजन भट्टाचार्य

बोडो

1. श्री नबीन मल्ला बर'
2. डॉ. रीता बर'
3. श्री यू.जी. ब्रह्म

डोगरी

1. श्रीमती पद्मा सचदेव
2. प्रो. शशि पठाणिया
3. डॉ. नरसिंह देव जम्वाल

अंग्रेज़ी

1. डॉ. जी.एन. देवी
2. प्रो. के. सच्चिदानंदन
3. प्रो. सुकांता चौधरी

गुजराती

1. श्रीमती अनिला ए. दलाल
2. श्री हासु याज्ञिक
3. श्री हर्षद त्रिवेदी

हिंदी

1. श्री लीलाधर जगूड़ी
2. श्री नंद भारद्वाज
3. प्रो. रतन कुमार पांडेय

कन्नड

1. श्री बी.आर. लक्ष्मण राव
2. डॉ. ना. दामोदर शेट्टी
3. डॉ. लता गुट्टि

कश्मीरी

1. श्री फ़याज़ तिलगामी
2. प्रो. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
3. श्री फ़ारुक़ नाज़की

कोंकणी

1. श्री गजानन जोग
2. श्रीमती मीना ककोदकर
3. श्री प्रकाश डी. पडगांवकर

मैथिली

1. प्रो. अमरनाथ झा
2. श्रीमती वीणा ठाकुर
3. डॉ. राजकुमार झा

मलयाळम्

1. डॉ. चंद्रमती
2. श्री एन.एस. माधवन
3. प्रो. एम. थॉमस मैथ्यू

मणिपुरी

1. डॉ. मोयरैंगथम प्रियोब्रत सिंह
2. प्रो. एच. बिहारी सिंह
3. प्रो. नहाकपम अरुणा देवी

मराठी

1. डॉ. आशाराम लोमटे
2. श्री लक्ष्मण माने
3. श्री वासुदेव सावंत

नेपाली

1. श्री इंद्रबहादुर गुरुंग
2. डॉ. शांति थापा
3. डॉ. कृष्णराज घटानी

ओड़िआ

1. डॉ. मालबिका राय
2. डॉ. फणी महांति
3. डॉ. प्रफुल्ल कुमार महांति

पंजाबी

1. डॉ. आतमजीत
2. श्री दर्शन सिंह बुट्टर
3. श्री मनमोहन सिंह दाउन

राजस्थानी

1. श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी
2. श्री सी.एल. सांखला
3. प्रो. अर्जुन देव चारण

संस्कृत

1. प्रो. एच.के. सतपथी
2. डॉ. सत्यनारायण चक्रवर्ती
3. प्रो. पी.सी. मुरलीमाधवन

संताली

1. श्री अर्जुन चरण हेमब्रम
2. श्री भुजंग टुडु
3. श्री गंगाधर हांसदा

सिंधी

1. श्री ढोलन राही
2. डॉ. निर्मल असनानी
3. प्रो. विषू बेलानी

तमिळ

1. श्री पुवियारसु
2. डॉ. के. चेल्लपन
3. श्रीमती शिवशंकरी

तेलुगु

1. श्री केतु विश्वनाधा रेड्डी
2. श्री सीला वीरराजू
3. डॉ. वी. चिन्नवीर भद्रडु

उर्दू

1. श्री जानकी प्रसाद शर्मा
2. श्री माहेर मंसूर
3. श्री मोहम्मद ख़लील

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019

24 फ़रवरी 2020 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2018 के लिए 23 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2013 से 31 दिसंबर 2017 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 से सम्मानित अनुवादक

असमिया : नवकुमार हंदिकै, ***राजतरंगिणी*** (*राजतरंगिणी*–ऐतिहासिक इतिवृत्त, संस्कृत), कल्हण

बाङ्ला : तपन बंद्योपाध्याय, ***भारतवर्ष*** (*संग्रह*–ओड़िया, कविता-संग्रह), सीताकांत महापात्र

बोडो : गोपीनाथ ब्रह्म, ***अबंलावरिनि फाव*** *(दैवत्तिटे विकृतिकळ*–मलयाळम्, उपन्यास), एम. मुकुंदन

डोगरी : रत्न लाल बसोत्रा, ***सीतसरै दी क्हानी*** (*कथा सतीसर*–हिंदी, उपन्यास), चंद्रकांता

अंग्रेज़ी : सुसैन डैनियल, ***कुसुमाबले*** (*कुसुमाबले*–कन्नड, उपन्यास), देवनूर महादेव

गुजराती : बकुला घासवाला, ***अंतर्नाद*** (*द वॉइस ऑफ़ द हर्ट*–अंग्रेज़ी आत्मकथा) मृणालिनी साराभाई

हिंदी : आलोक गुप्त, ***सरस्वतीचंद्र (खंड 1 और 4) (भाग 1 और 2)*** (सरस्वतीचंद्र–गुजराती, उपन्यास), गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी

कश्मीरी : रतन लाल जौहर, ***गोरा*** (*गोरा*–बाङ्ला/उर्दू, उपन्यास), रवींद्रनाथ ठाकुर

कोंकणी : जयंती नायक, ***जिंदगीनामा-जिवो रुख*** (*ज़िंदगीनामा*–हिंदी, उपन्यास), कृष्णा सोबती

मैथिली : केदार कानन, ***अकाल मे सारस*** (*अकाल में सारस*–हिंदी, कविता-संग्रह), केदारनाथ सिंह

मलयाळम् : सी.जी. राजगोपाल, ***श्रीरामचरितमानसम*** (तुलसीदासरामायनम) (*श्री रामचितमानस*–हिंदी, कविता-संग्रह), तुलसीदास

मणिपुरी : ख. प्रकाश सिंह, ***लालहौबा अमसुङ अतै शैरेङशिङ*** (*विद्रोही ओ अन्यान्य कविता*–बाङ्ला, कविता-संग्रह), क़ाज़ी नज़रुल इस्लाम

मराठी : सई परांजपे, ***आणि मग एक दिवस...*** (*एंड देन वन डे*–हिंदी, आत्मकथा), नसीरुद्दीन शाह

नेपाली : सचेन राई 'दुमी', ***बोज्यूले भनेको कथा*** (*ग्रेंडमदर्स टेल*–अंग्रेज़ी, उपन्यास), आर.के. नारायण

ओडिआ : अजय कुमार पट्नायक, ***श्रेष्ठ हिंदी गल्प*** (*चयनित*–हिंदी, कहानी-संकलन), विभिन्न लेखक

पंजाबी : प्रेम प्रकाश, ***देश वंड दे लहू दे रंग*** (*चयनित*–उर्दू, कहानी-संग्रह), सआदत हसन मंटो

राजस्थानी : देव कोठारी, ***चारु वसंता*** (*चारु वसंता*–कन्नड, कविता-संग्रह), नाडोज ह.प. नागराजय्या

संस्कृत : प्रेमशंकर शर्मा, ***रश्मिरथी,*** (*रश्मिरथी*–हिंदी, कविता-संग्रह), रामधारी सिंह दिनकर

संताली : खेरवाल सोरेन, ***आईकाउ*** (*अनुभव*–बाङ्ला, उपन्यास), दिव्येंदु पालित

सिंधी : ढोलन राही, ***मीठो पानी खारो पानी*** (*मीठा पानी खारा पानी*–हिंदी, उपन्यास), जया जादवानी

तमिऴ : के.वी. जयश्री, ***निलम पूत्तु मलर्न्न नाल*** (*निलम पूत्तु मलर्न्न नाल*–मलयाळम्, उपन्यास), मनोज कुरूर

तेलुगु : पी. सत्यवती, ***ओका हिजड़ा आत्मकथा*** (*द ट्रुथ अबाउट मी : ए हिजड़ा लाइफ़ स्टोरी*–अंग्रेज़ी आत्मकथा), ए. रेवती

उर्दू : असलम मिर्ज़ा, ***मोर पंख*** (*मीच माझा मोर*–मराठी, कविता-संग्रह), प्रशांत असनारे

* कन्नड भाषा में अनुवाद पुरस्कार की घोषणा बाद में की जाएगी।

नवकुमार हंदिकै

तपन बंद्योपाध्याय

गोपीनाथ ब्रह्म

रतन लाल बसोत्रा

सुसैन डैनियल

बकुला घासवाला

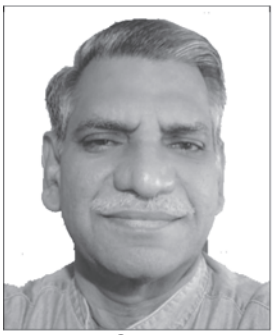
आलोक गुप्त

रतन लाल जौहर

जयंती नायक

केदान कानन

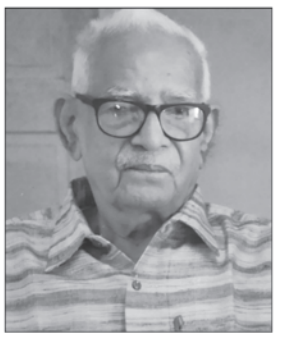
सी.जी. राजगोपाल

ख. प्रकाश सिंह

सई परांजपे

सचेन राई 'दुमी'

अजय कुमार पट्नायक

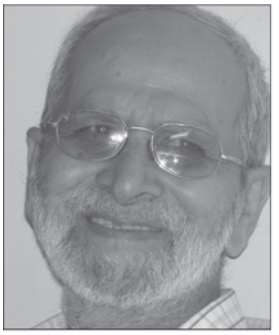

प्रेम प्रकाश

देव कोठारी

प्रेमशंकर शर्मा

खेरवाल सोरेन

ढोलन राही

के.वी. जयश्री

पी. सत्यवती

असलम मिर्ज़ा

* कुछ तकनीकी कारणों से, कन्नड भाषा के लिए साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार की घोषणा नहीं की जा सकी।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2019 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. डॉ. अनिल भराली
2. डॉ. पूर्ण भट्टाचार्य
3. प्रो. राजेन शइकीया

बाङ्ला

1. श्री अमिताभ देव चौधुरी
2. श्री कमल चक्रवर्ती
3. श्री शुभ्र बंद्योपाध्याय

बोडो

1. सुश्री जितुमनी बसुमतारी
2. डॉ. रोईरूब ब्रह्म
3. डॉ. स्वर्ण प्रभा चैनारी

डोगरी

1. श्री चमन अरोड़ा
2. प्रो. ओम गोस्वामी
3. श्री राज कुमार शर्मा (राज राही)

अंग्रेज़ी

1. डॉ. सी.टी. इंद्रा
2. प्रो. प्रमोद के. नायर
3. डॉ. रीता कोठारी

गुजराती

1. डॉ. चंद्रकांत टोपीवाला
2. सुश्री नीला शाह
3. श्रीमती सुषमा लेले

हिंदी

1. डॉ. मालचंद तिवाड़ी
2. डॉ. लक्ष्मीशंकर वाजपेयी
3. प्रो. रामेश्वर मिश्र

कन्नड

1. डॉ. आर. पूर्णिमा
2. श्री एस. दिवाकर
3. डॉ. अरविंद मलागत्ति

कश्मीरी

1. डॉ. रफ़ीक मसूदी
2. श्री सतीश विमल
3. श्री शाहिद बड़गामी

कोंकणी

1. श्री नागेश करमाली
2. श्री गावडे पांडुरंग काशीनाथ
3. डॉ. तानाजी हलरंकर

मैथिली

1. श्रीमती आशा मिश्रा
2. श्री बुद्धिनाथ मिश्र
3. डॉ. शिव प्रसाद यादव

मलयाळम्

1. प्रो. एस.आर. जयश्री
2. प्रो. पी. माधवन पिल्लै
3. डॉ. पी.के. चंद्रन

मणिपुरी

1. श्री एल. बीरेंद्रकुमार शर्मा
2. प्रो. नाओरेम खगेंद्र सिंह
3. सुश्री सोरोक्खैबम गंभिनी देवी

मराठी

1. श्री भारत सासणे
2. श्री जयंत पवार
3. श्री निशिकांत ठकार

नेपाली

1. सुश्री अप्सरा दहाल (शर्मा)
2. श्री नव सापकोटा
3. श्री प्रेम प्रधान

ओड़िया

1. श्रीमती अमियबाला पटनायक
2. श्री रवींद्र कुमार प्रहराज
3. डॉ. सूर्यमणि खूंटिया

पंजाबी

1. श्री बलबीर माधोपुरी
2. श्री चरणजीत भुल्लर
3. प्रो. जोगा सिंह

राजस्थानी

1. डॉ. मदन सैनी
2. श्रीमती विनीता शर्मा
3. प्रो. कल्याण सिंह शेखावत

संस्कृत

1. डॉ. एच.आर. विश्वास
2. प्रो. उमा शंकर शर्मा 'ऋषि'
3. डॉ. राजलक्ष्मी वर्मा

संताली

1. श्री चैतन्य प्रसाद माझी
2. श्री कालीचरण हेम्ब्रम
3. श्री लक्ष्मण बास्के

सिंधी

1. श्री गोपी कमल
2. डॉ. हूंदराज बलवाणी
3. श्री हीरो शेवकाणी

तमिऴ

1. श्री आर. वेंकटेश
2. डॉ. प्रेमा नंदकुमार
3. श्री एस. देवादोस

तेलुगु

1. श्रीमती आर. शांता सुंदरी
2. सुश्री स्वाती श्रीपाद
3. डॉ. वेन्ना वल्लभराव

उर्दू

1. श्री आज़िम गुरविंदर सिंह कोहली
2. श्री फे. शीन एज़ाज़
3. डॉ. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2019

14 जून 2019 को अगरतला में डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2019 के लिए 22 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। मैथिली भाषा के युवा पुरस्कार की घोषणा 12 जुलाई 2019 को की गई। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुतियों के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

युवा पुरस्कार 2019 से सम्मानित लेखक

असमिया : संजीब पॉल डेका, ***एइपिने कि आसे?*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : मौमिता मैती, ***कुंतल फिरे आसे*** (उपन्यास)

बोडो : रुजाब मुसाहारि, ***सानस्रि आरो मोन्दांथिनि मोखां***

डोगरी : सुनील कुमार, ***सीस*** (कहानी-संग्रह)

अंग्रेज़ी : तनुज सोलंकी, ***दीवाली इन मुज़फ्फ़रनगर*** (कहानी-संग्रह)

गुजराती : अजय सोनी, ***रेतीनो माणस*** (कविता-संग्रह)

हिंदी : अनुज लुगुन, ***बाघ और सुगना मुण्डा की बेटी*** (कविता-संग्रह)

कन्नड : फकीर (श्रीधर बनवासी जी.सी.), ***बेरू*** (उपन्यास)

कश्मीरी : सागर नज़िर, ***थर आंगनच*** (कविता-संग्रह)

कोंकणी : हेमंत अय्या, ***कथाकार*** (कहानी-संग्रह)

मैथिली : अमित पाठक, ***राग-उपराग*** (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : अनुजा अकतूट, ***अम्मा उरंगुन्निल्ल*** (कविता-संग्रह)

मणिपुरी : जितेन ओइनाम्बा, ***कनवासता तारकपा पिराङना*** (कविता-संग्रह)

मराठी : सुशील कुमार भागवत शिंदे, ***शहर आत्महत्या करायचं म्हणतंय...!*** (कविता-संग्रह)

नेपाली : कर्ण विरह, ***चर्किएको भुइँ*** (कविता-संग्रह)

ओड़िया : शिशिर बेहेरा, ***बिमुग्ध उच्चारण*** (साहित्यिक आलोचना)

पंजाबी : यादविंदर सिंह संधू, ***वकत बीतिया नहीं*** (उपन्यास)

राजस्थानी : कीर्ति परिहार, ***सगळां रौ सीर*** (कहानी-संग्रह)

संस्कृत : युवराज भट्टराई, ***वाग्विलासिनी*** (कविता-संग्रह)

संताली : गूहिराम किस्कू, ***जारपि दिशमरिन मानमि*** (कविता-संग्रह)

सिंधी : किरण परयाणी 'अनमोल', ***अनमोल रिश्ता*** (कविता-संग्रह)

तमिळ : सबरीनाथन, ***वाळ*** (कविता-संग्रह)

तेलुगु : गड्डम मोहन राव, ***कोंगवालु कत्ति*** (उपन्यास)

उर्दू : सलमान अब्दुल समद, ***लफ्ज़ों का लहू*** (उपन्यास)

संजीब पॉल डेका

मौमिता मैती

रुजाब मुसाहारि

सुनील कुमार

तनुज सोलंकी

अजय सोनी

अनुज लुगुन

फकीर (श्रीधर बनवासी जी.सी.)

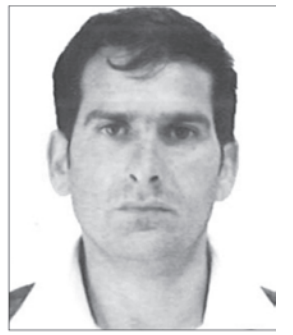
सागर नज़िर

हेमंत अय्या

अमित पाठक

अनुजा अकतूट

जितेन ओइनाम्बा

सुशील कुमार भागवत शिंदे

कर्ण विरह

शिशिर बेहेरा

यादविंदर सिंह संधू

कीर्ति परिहार

युवराज भट्टराई

गूहिराम किस्कू

किरण परयाणी 'अनमोल'

सबरीनाथन

गड्डम मोहन राव

सलमान अब्दुस समद

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2019 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. डॉ. अनिल शइकीया
2. श्री अनुपम कुमार
3. प्रो. बिभाष चौधुरी

बाङ्ला

1. श्री प्रफुल्ल रॉय
2. श्री सुमन सेनगुप्ता
3. प्रो. तपोधीर भट्टाचार्जी

बोडो

1. डॉ. दीपक बसुमतारी
2. प्रो. सुरथ नार्ज़ारी
3. डॉ. भौमिक च. बर'

डोगरी

1. श्री मोहन सिंह
2. श्री शैलेंद्र सिंह एस.एस.पी.
3. श्री शिवदेव सिंह 'सुशील'

अंग्रेज़ी

1. प्रो. नीलोफर भरूचा
2. श्रीमती सुरभि बनर्जी
3. श्री जेरी पिंटो

गुजराती

1. श्री रतिलाल बोरीसागर
2. श्रीमती शालिनी सी. टोपीवाला
3. श्रीमती शरीफ़ा विजलीवाला

हिंदी

1. डॉ. अल्पना मिश्र
2. श्री एकांत श्रीवास्तव
3. प्रो. मोहन

कन्नड

1. डॉ. विक्रम विसाजी
2. सुश्री मालती पट्टनशेट्टी
3. श्री नीलकंठगौड़ा एच.एन.

कश्मीरी

1. डॉ. आफ़ाक़ अज़ीज़ यट्टू
2. श्री रहीम रहबर
3. श्री शौकत अंसारी

कोंकणी

1. डॉ. चंद्रशेखर शिनॉय
2. श्री गोकुलदास प्रभु
3. श्री तुकाराम सेठ

मैथिली

1. डॉ. चंद्रमणि झा
2. श्री लक्ष्मण झा
3. श्री श्याम दरिहरे

मलयाळम्

1. डॉ. गीता पुतुस्सेरी
2. डॉ. पी.एस. राधाकृष्णन
3. डॉ. नेदुमुदि हरिकुमार

मणिपुरी

1. श्री लोङ्जम जयचंद्र सिंह
2. डॉ. नाओरेम बिद्यासागर
3. प्रो. ख. कुंजो सिंह

मराठी

1. श्री गणेश अवाटे
2. श्री प्रफुल्ल शिलेदार
3. श्री श्रीकांत देशमुख

नेपाली

1. श्री चंद्रमणि उपाध्याय
2. डॉ. गीता छेत्री
3. श्री के.बी. नेपाली

ओड़िया

1. सुश्री परामिता सतपथी
2. डॉ. जयंती रथ
3. डॉ. क्षीरोद चंद्र बेहेरा

पंजाबी

1. श्री बलदेव सिंह सड़कनामा
2. प्रो. मंजीत इंदिरा
3. डॉ. प्रीतम सिंह

राजस्थानी

1. डॉ. ब्रजरतन जोशी
2. श्री जितेंद्र निर्मोही
3. श्री उपेंद्र अनु

संस्कृत

1. श्री के.ई. देवनाथन
2. श्री हर्षदेव माधव
3. श्री सत्यनारायण चक्रवर्ती

संताली

1. श्री देवी प्रसन्ना बेसरा
2. श्री मानसिंह माझी
3. श्री श्रीकांत सोरेन

सिंधी

1. श्री मनोज चावला
2. डॉ. विनोद असुदाणी
3. डॉ. कमला गोकलाणी

तमिळ

1. प्रो. डॉ. के. पंजांगम
2. डॉ. के.एस. सुब्रह्मण्यन
3. डॉ. आर. कुरिंजीवेंदन

तेलुगु

1. श्री जुकांति जगन्नाधम
2. डॉ. मृणालिनी सी.
3. श्री रविकांति वसुनंदन

उर्दू

1. प्रो. मोहम्मद ज़ाकिर
2. प्रो. शाफ़े किदवई
3. श्री इक़बाल मसूद

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2019

14 जून 2019 को अगरतला में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरस्कार 2019 के लिए 16 पुस्तकों तथा समग्र योगदान के लिए 6 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। मैथिली भाषा में बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा 12 जुलाई 2019 को की गई। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पहले के वर्ष के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2013 से 31 दिसंबर 2017 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। लेकिन आरंभिक 10 वर्षों, जो 2010-2019 है, के लिए पुरस्कार बाल साहित्य के क्षेत्र में लेखक के समग्र योगदान के लिए दिए जा सकते हैं, यदि कोई पुस्तक पुरस्कार के योग्य नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार 2019 से सम्मानित लेखक

असमिया : स्वामिम नाछरिन (स्वामिना नाछरिन मिलन), ***मिलि, अमिया आरु एखन नदी*** (कहानी-संग्रह)
बाङ्ला : (स्व.) नबनीता देबसेन, ***बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु**
बोडो : लक्ष्मीनाथ ब्रह्म, ***सल'बाथा खोनासं दे*** (लोककथा)
डोगरी : विजय शर्मा, ***लरजां*** (कविता-संग्रह)
अंग्रेज़ी : देविका कारिअप्पा, ***इंडिया थ्रू आर्केलोजी : एक्सकवेटिंग हिस्ट्री*** (इतिहास)
गुजराती : कुमारपाल बालाभाई देसाई, ***बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु**
हिंदी : गोविंद शर्मा, ***काचू की टोपी*** (कहानी-संग्रह)
कन्नड : चंद्रकांत करदळ्ळी, ***काडु कनसिन बीडिगे*** (उपन्यास)
कश्मीरी : नाजी मुनव्वर, ***शुरेन हुंद नाजी*** (कविता-संग्रह)
कोंकणी : राजश्री बांदोडकार कारापुरकार, ***चिटकुल्या चिंकीचें विशाल विश्व*** (कहानी-संग्रह)
मैथिली : ऋषि वशिष्ठ, ***ई फूलक गुलदस्ता*** (कहानी-संग्रह)
मलयाळम् : मलयत्त अप्पुण्णी, ***बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु**
मणिपुरी : आर.के. सणहणबी (लोकखोमबी) चणु, ***थवायशिंगी थवाय*** (नाटक)
मराठी : सलीम सरदार मुल्ला, ***जंगल खजिन्याचा शोध*** (उपन्यास)
नेपाली : भाबिलाल लामिछाने, ***चराको चिरबिर भूराको किरकिर*** (कविता-संग्रह)
ओड़िया : बीरेंद्र कुमार सामंतराय, ***बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु**
पंजाबी : पवन हरचंदपुरी, ***एलियंस दी धरती ते*** (उपन्यास)
संस्कृत : संजय कुमार चौबे, ***चित्वा तृणं तृणम्*** (कविता-संग्रह)
संताली : लक्ष्मण चंद्र सरेन, ***झारुम झाः*** (कविता-संग्रह)
सिंधी : वीना शृंगी, ***बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु**
तमिऴ : देवी नाचियप्पन (देइवानइ), ***बाल साहित्य* में समग्र योगदान हेतु**
तेलुगु : बेलगाम भीमेश्वर राव, ***ताता माटा-वराला मूटा*** (कहानी-संग्रह)
उर्दू : मुहम्मद ख़लील, ***साइंस के दिलचस्प मज़ामीन*** (कहानी-संग्रह)

* राजस्थानी में कोई पुरस्कार नहीं।

स्विमिम नाछरिन (स्वामिना नाछरिन मिलन)

(स्व.) नबनीता देबसेन

लक्ष्मीनाथ ब्रह्म

विजय शर्मा

देविका कारिअप्पा

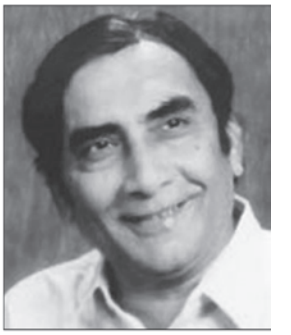

कुमारपाल बालाभाई देसाई

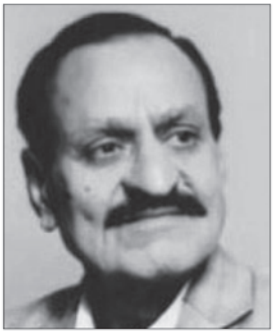

गोविंद शर्मा

चंद्रकांत करदळूळी

नाजी मुनव्वर

राजश्री बांदोडकार कारापुरकार

ऋषि वशिष्ठ

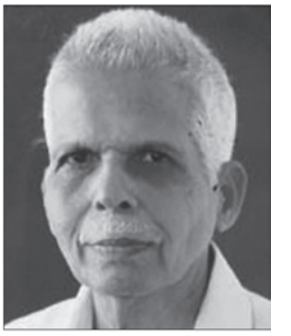

मलयथ अप्पुन्नी

आर.के. सणहणबी (लोकखोमबी) चणु

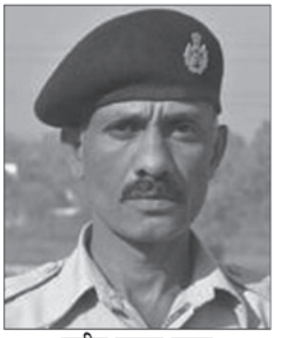
सलीम सरदार मुल्ला

भाबिलाल लामिछाने

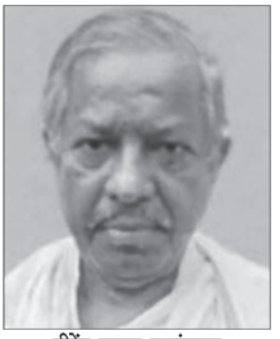
बीरेंद्र कुमार सामंतराय

पवन हरचंदपुरी

संजय कुमार चौबे

लक्ष्मण चंद्र सरेन

वीना श्रृंगी

देवी नाचियप्पन (देइवानइ)

बेलगाम भीमेश्वर राव

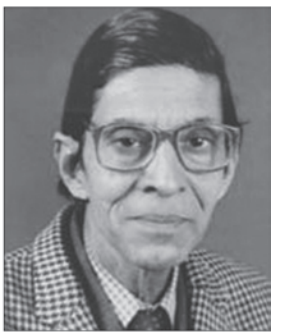
मुहम्मद खलील

साहित्य अकादेमी बाल पुरस्कार 2019 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

1. श्री अनीज़-उज-ज़मान
2. सुश्री बिनीता दत्ता
3. डॉ. जीवन नाराह

बाङ्ला

1. श्री बलराम बसाक
2. सुश्री कृष्णा बोस
3. श्री शीषेंदु मुखोपाध्याय

बोडो

1. श्री कृष्ण गोपाल बसुमतारी
2. डॉ. नारेस्वर नार्जारी
3. डॉ. प्रणब ज्योति नार्जारी

डोगरी

1. श्री इंद्रजीत केसर
2. श्री यशपाल 'निर्मल'
3. श्री देशबंधु डोगरा नूतन

अंग्रेज़ी

1. श्री हरीश त्रिवेदी
2. सुश्री उर्वशी बुटालिया
3. डॉ. कावेरी नामबिसन

गुजराती

1. डॉ. दीपक रावल
2. श्री महेश चंपक लाल
3. श्री कीर्ति दूधट

हिंदी

1. डॉ. अच्युतानंद मिश्र
2. श्री हनुमान प्रसाद शुक्ल
3. श्री नरेंद्र मोहन

कन्नड

1. डॉ. गुडिहल्ली नागराज
2. सुश्री एम.आर. कमला
3. डॉ. राघवेंद्र पाटील

कश्मीरी

1. प्रो. मिशल सुल्तानपुरी
2. डॉ. सोहनलाल कौल
3. डॉ. शफक़त अल्ताफ़

कोंकणी

1. श्री दामोदर मावज़ो
2. श्री कामत प्रकाश
3. श्री विंची कुआद्रोस

मैथिली

1. श्री धीरेंद्रनाथ मिश्र
2. श्री कामदेव झा
3. श्री अजित आज़ाद

मलयाळम्

1. श्री इलावूर श्रीकुमार
2. डॉ. के.एस. रविकुमार
3. श्री यू.ए. खाधेर

मणिपुरी

1. डॉ. शामुंगौ खाङ्गेंबम
2. श्री यामलेम्बम इबोम्चा
3. श्री थोकचोम थौयांगबा मैतेई

मराठी

1. श्री रणधीर शिंदे
2. श्री अतुल पेठे
3. सुश्री वीना गावँकर

नेपाली

1. श्री मोहन ठकुरी
2. श्री शंकर प्रधान
3. श्री मुक्ति प्रसाद उपाध्याय

ओड़िया

1. डॉ. अरबिंद पट्टनाइक
2. श्री दाश बेनहूर
3. डॉ. प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी

पंजाबी

1. श्री मनमोहन बावा
2. श्री देसराज काली
3. श्री प्रीतम सिंह भांगू

संस्कृत

1. डॉ. बलदेवनंद सागर
2. प्रो. रमेश कुमार पांडेय
3. डॉ. एच.वी. नागराज राव

संताली

1. श्री रबिलाल टुडु
2. श्री जदुमणि बेसरा
3. श्री मंगल माझी

सिंधी

1. श्री भगवान अटलाणी
2. सुश्री आशा रंगवाणी
3. श्री सुंदर अगनाणी

तमिऴ

1. श्रीमती आर. मीनाक्षी
2. श्री के.एम. कोथंदम
3. श्री कुषा. काथिरेसन

तेलुगु

1. श्री दसारी वेंकट रमण
2. डॉ. दीर्घासि विजयभास्कर
3. श्री दरभास्यनम श्रीनिवासाचार्य

उर्दू

1. श्री असद रज़ा
2. श्री बलराज बख्शी
3. श्री सैफ़ी सरोंजी

कार्यक्रम

साहित्योत्सव 2020

24 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी का वर्ष 2020 का वार्षिक साहित्योत्सव 24 फ़रवरी 2020 को नई दिल्ली के रवींद्र भवन लॉन में साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी के भव्य उद्घाटन समारोह के साथ शुरू हुआ। प्रदर्शनी को इस तरह से तैयार किया गया था कि किसी भी दर्शक को अकादेमी के उद्देश्यों, कार्यों और गतिविधियों की सटीक और व्यापक जानकारी प्राप्त हो सके। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने 2019 में अकादेमी की उन महत्त्वपूर्ण गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला जो मील का पत्थर साबित हुई हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार ने साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त सभी 24 भारतीय भाषाओं में साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहलों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारत जैसे देश में, अपनी समृद्ध संस्कृतियों, साहित्यकारों तथा कला रूपों के साथ, जब हम इस बारे में बात करते हैं कि भारत या भारतीयता का हमारे लिए क्या अर्थ है तब हमें हमेशा इस विविधता को उजागर करना चाहिए; अकादेमी शहरी और तथाकथित आधुनिक दुनिया को ग्रामीण और आदिवासी संस्कृतियों के साथ संवाद स्थापित करने की कोशिश करती है; अकादेमी यह दर्शाने का प्रयास करती है कि देश की कई जनजातीय समुदायों की भाषाओं और साहित्यकारों की अपनी समृद्ध परंपराएँ हैं; हम ऐसे आदिवासी स्वरों के लिए एक मंच प्रदान करना चाहते हैं; वे बताएँगे कि किस प्रकार आधुनिकता और प्रबल शक्तियों ने उन्हें दोगुना हाशिये पर लाकर खड़ा कर दिया है। वे हमारे लिए अपनी विविध और समृद्ध साहित्यिक तथा सौंदर्यपरक परंपराओं को उजागर करेंगे; उनकी आवाज़ें हमें उनके दर्द, क्षति तथा उनकी वापस लड़ने की शक्ति से अवगत कराएँगी। हिंदी की प्रख्यात लेखिका श्रीमती मन्नू भंडारी ने अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई श्रीमती मन्नू भंडारी

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह

25 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव के साथ मुख्य अतिथि श्री गुलज़ार एवं पुरस्कार विजेता

25 फ़रवरी 2020 को नई दिल्ली के कमानी सभागार में एक भव्य समारोह में 23 लेखकों को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 प्रदान किए गए।

समारोह की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक, मुख्य अतिथि श्री गुलज़ार, गणमान्य व्यक्तियों, पुरस्कार विजेताओं तथा दर्शकों का स्वागत किया। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को साहित्य में योगदान के लिए बधाई देते हुए कहा कि जो राष्ट्र साहित्य का जश्न नहीं मनाते, उन्हें प्रगतिशील नहीं कहा जा सकता। लेखन, लेखकों और साहित्यिक परंपराओं की समाज में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका है। ये पुरस्कार उन लेखकों के लिए हैं जो किसी दी गई भाषा में साहित्यिक परंपराओं को समृद्ध करते हैं। इस अवसर पर उन्होंने 2019 में साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में भी विस्तार से बताया।

अपने भाषण के अंत में श्रीनिवासराव ने अकादेमी के 65 वर्षों से भारतीय लेखकों के समुदाय द्वारा निरंतर संरक्षण और समर्थन देने के लिए धन्यवाद दिया।

साहित्य अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति-पाठ किया तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार ने पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। डोगरी पुरस्कार विजेता (स्वर्गीय) ओम शर्मा 'जंद्रयाड़ी' की ओर से उनके बेटे—श्री मनोज कुमार शर्मा 'निश्चिंत' ने पुरस्कार प्राप्त किया।

श्री चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि इस अवसर पर हम राष्ट्र की भाषायी और सांस्कृतिक विविधता का जश्न मनाते हैं। अकादेमी देश को सबसे अधिक विशिष्ट साहित्य और उत्कृष्ट अनुवाद उपलब्ध कराती है।

ऑस्कर सम्मान से सम्मानित फ़िल्म निर्देशक, गीतकार, पटकथा लेखक, निर्माता एवं कवि श्री गुलज़ार ने कहा कि लेखक अपने तथा अन्य लोगों के स्वर दर्ज करते हैं। लेखक दुनिया के बारे में बोलता है, आने वाली पीढ़ियों

के लिए बोलता है। हालाँकि आने वाली पीढ़ी के जीवन अलग होंगे, किंतु उसे कहने में लेखक कभी विफल नहीं होता। यह एक प्रकार की अग्नि परीक्षा है, क्योंकि लेखकों ने अपनी जान लड़ा लगा दी, वे गर्म पात्रों की तरह हैं।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने समापन भाषण में पुरस्कार प्राप्त करने वालों के परिजनों को हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि पुरस्कार प्राप्त करने वाले भारत की सांस्कृतिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने प्रभावी ढंग से बताया कि साहित्य की अपनी शक्ति है और कोई अन्य शक्ति इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

साहित्य अकादेमी ने मंगलवार, 25 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन लॉन में पुरस्कार विजेताओं के साथ मीडिया संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी तथा क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने पुरस्कार विजेताओं का स्वागत किया तथा मीडियाकर्मियों को उनका परिचय दिया।

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ :- गुजराती में पुरस्कार विजेता रतिलाल बोरीसागर ने कहा कि उनकी सभी

मीडिया से बातचीत करते पुरस्कार विजेता

कृतियाँ उनके व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित हैं और उन्होंने उन्हें हास्य का स्पर्श दिया है। हिंदी में पुरस्कार विजेता नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि साहित्य एक प्रकार का संवेदनशील सत्याग्रह है। उन्होंने महान लेखक और अच्छे लेखक के बीच के अंतर के बारे में पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए कहा कि एक महान लेखक का लेखन हमेशा समाज को प्रभावित करता है तथा एक अच्छे लेखक की रचनाएँ समाज का सच्चा दर्पण होती हैं। रामस्वरूप किसान ने कहा कि वह पेशे से किसान हैं, उन्होंने गाँव का जीवन स्वयं देखा और जिया है, अपनी रचनाओं में गाँव के जीवन को उन्होंने फिर से बनाने का प्रयास किया है। शाफे क़िदवई ने साहित्य में हो रही हिंसा पर बात की। बाङ्ला पुरस्कार विजेता चिन्मय गुहा ने कहा कि आधुनिक मीडिया परिदृश्य के कारण लोग अतीत की तुलना में कम पढ़ रहे हैं। अंग्रेज़ी साहित्य की बढ़ती माँग क्षेत्रीय भाषाओं के लिए ख़तरा है। मराठी पुरस्कार विजेता अनुराधा पाटील ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को बचाने और क्षेत्रीय साहित्य को समृद्ध करने के लिए अपनी भाषा में लिखना लेखक का कर्त्तव्य है। मणिपुरी पुरस्कार विजेता बेरिल थांगा ने कहा कि वह प्रकृति प्रेमी हैं तथा उनकी पुरस्कृत पुस्तक पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करने वाले एक बूढ़े आदमी की यात्रा के बारे में है। अन्य भाषाओं के पुरस्कार विजेताओं ने भी अपनी पुरस्कृत कृतियों के लेखकीय अनुभवों को मीडिया तथा दर्शकों से साझा किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन

साहित्योत्सव में, त्रि-दिवसीय अखिल भारतीय जनजातीय लेखक सम्मिलन 24 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन लॉन में आरंभ हुआ। प्रख्यात विद्वान तथा भाषाविद् अन्विता अब्बी ने सम्मिलन का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि जनजातीय साहित्य की दुनिया अन्य समाजों के स्तरीकरण के साथ साझा रहने का स्थान है और यह एक ऐसा स्थान है जिसमें उल्लेखनीय रत्न हैं जिन्हें मानव मन कभी भी खोज सकता है। भारत की प्रमुख संस्था साहित्य अकादेमी भारत के सभी क्षेत्रों में जनजातीय साहित्य को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध रही है। उन्होंने आगे कहा कि यह कार्यक्रम आदिवासी लेखकों तथा आदिवासी साहित्य को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि यह लगातार चौथा वर्ष है जब हमने अपने वार्षिक साहित्योत्सव में जनजातीय लेखक सम्मिलन को भारत के सबसे समावेशी साहित्यिक महोत्सव में शामिल किया है।

उद्घाटन भाषण में अन्विता अब्बी ने कहा कि जनजातीय साहित्य लोक साहित्य से जुड़ा हुआ है और लोक साहित्य मौखिक साहित्य से जुड़ा हुआ है क्योंकि

उद्घाटन भाषण प्रस्तुत करते हुए डॉ. अन्विता अब्बी

हमारा अधिकांश लोक साहित्य मौखिक साहित्य के रूप में ही उपलब्ध है। मौखिक साहित्य की सीमाएँ नहीं होतीं, मौखिक साहित्य में साहित्य की सभी शैलियाँ आपस में जुड़ी हुई होती हैं जबकि लिखित साहित्य में कई शैलियाँ--कथा, गद्य, गीत आदि होते हैं। पाठक पुस्तक पढ़ते समय लेखक से नहीं जुड़ सकता क्योंकि पाठक उसे देख नहीं पाता है, लेकिन मौखिक साहित्य में कथावाचक का दर्शकों से सीधा नेत्र-संपर्क होता है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष के रूप में बोलते हुए कहा कि भारत जैसे देश में, अपनी समृद्ध संस्कृतियों, साहित्यकारों और कला रूपों के साथ, जब हम इस विविधता के बारे में बात करते हैं तो हमें हमेशा इस विविधता को उजागर करना चाहिए कि भारत या भारतीयता का हमारे लिए क्या अर्थ है। अकादेमी शहरी और तथाकथित आधुनिक दुनिया को ग्रामीण और आदिवासी संस्कृतियों के साथ संवाद स्थापित करने की कोशिश करती है। अकादेमी यह दिखाने का प्रयास करती है कि किस तरह देश के कई आदिवासी समुदायों की भाषाओं और साहित्यकारों की अपनी समृद्ध परंपराएँ हैं। हम ऐसी जनजातीय आवाज़ों के लिए एक मंच प्रदान करना चाहते हैं। वे स्वयं स्पष्ट कर देंगे कि आधुनिकता और प्रमुख प्रवचन उन्हें दोगुना हाशिये पर कैसे डालते हैं। वे अपनी विविध और समृद्ध साहित्यिक और सौंदर्य परंपराओं को हमारे लिए खोलेंगे। उनकी आवाज़ हमें दर्द तथा नुकसान के बारे में जागरूक करेगी और लड़ने की इच्छा शक्ति भी जाग्रत करेगी।

सम्मिलन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान चंद्रकांत मुरासिंह ने की। यह कविता-पाठ का सत्र था। च. सोतेआईमोल (आईमोल), मुक्तेश्वर केंपराई (दिमासा), मिर्थनार्क के. मरक (गारो), रूप लाल लिंबू (लिंबू) और नगूरांग रीना (न्न्नेशी) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन का द्वितीय सत्र *आदिवासी साहित्य : संरक्षण और*

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन कार्यक्रम का दृश्य

पुनरुद्धार पर हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता नाटककार और पत्रकार आद्दंड सी. करिअप्पा ने की। सत्र की शुरुआत चुकी भूटिया ने की। अपने आलेख में भूटिया ने पूर्वोत्तर राज्यों में रहने वाली जनजातियों और जनजातीय भाषाओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि उत्तर-पूर्व उत्तरी-पूर्वी भाषाओं का संगम है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि हम अपने रोज़गार या बाहरी सार्वजनिक संबंध के माध्यम के लिए जिस भी भाषा का उपयोग करते हों, लेकिन कम-से-कम अपने परिवार के बीच हमें अपनी मातृभाषा में बातचीत करनी चाहिए।

दूसरे वक्ता श्रीकृष्ण जी. काकडे ने अपने भाषण में कहा कि भारत बहुभाषी देश है। भाषा विविधता इस देश की विशेषता है। उनके अनुसार राष्ट्रवाद और वैश्वीकरण जनजातीय भाषाओं के मुख्य शत्रु हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सरकारों को जनजातीय भाषाओं के संरक्षण के लिए उचित उपाय करने चाहिए।

सत्र के तीसरे वक्ता गंगा सहाय मीणा ने कहा कि जनजातीय भाषाओं के विकास के मामले में हम कम संवेदनशील हैं। उन्होंने बताया कि करीब 250 भाषाएँ मर चुकी हैं और करीब 197 भाषाओं के विलुप्त होने की आशंका है। उन्होंने आगे कहा कि आदिवासी भाषाओं के विकास में विस्थापन चिंताजनक है।

सत्र के चौथे वक्ता एस. नागमल्लेश्वर राव थे। अपने आलेख में श्री राव ने आंध्र प्रदेश के रायलसीमा और तेलंगाना राज्य के आसपास की जनजातियों और उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि सरकारें इन क्षेत्रों में जनजातीय भाषाओं के संरक्षण के लिए उत्तरोत्तर गंभीर क़दम नहीं उठा रही हैं।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में आद्दंड सी. करिअप्पा ने *कोडवा* भाषा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए सत्र का समापन किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन का तृतीय सत्र 'आदिवासी गीतों और कविताओं' के वाचन को समर्पित था। साहित्य अकादेमी कोलकाता क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने सत्र का संचालन किया। भीली और हिंदी—दोनों में लिखने वाली मंगला गरवाल ने सत्र की अध्यक्षता की। रामगोपाल रामलाल भीकवेकर (कोरकू); अंजलि बेलागल (हक्की पिक्की); दाहुन-ई-मोन-ई खासिरइन्टीयु (खासी); वी.आर. रालटे (मिजो) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सत्र के समापन से पूर्व सत्राध्यक्ष मंगला गरवाल ने अपनी कुछ गीतात्मक कविताओं का भी पाठ प्रस्तुत किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन का चतुर्थ सत्र आदिवासी गीतों और कविताओं पर आधारित था। ओडिआ, हिंदी, अंग्रेज़ी और कुई में लिखने वाले अनुज मोहन प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की। सुरेश हुस्नराव वेलाडे (गोंड); साइमोन रोंग्लो (खोइबू); शेफाली देबबर्मा (कोकबरोक); इवनिशा पठाव (जयंतिया); एल. सोलोमन दंगसावा (मारिंग) और शनोई मोजेस तराव

(तराव) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अनुज मोहन प्रधान ने सत्र का समापन किया तथा अपनी कविताएँ भी प्रस्तुत कीं।

अखिल भारतीय जनजातीय लेखक सम्मिलन का पंचम सत्र था—'आदिवासी संवेदनाएँ और मिथक', इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान मौली कौशल ने की। सत्र की शुरुआत बंजारा कवि जी. कृष्णा के आलेख से हुई। उन्होंने लंबाड़ी (जिसे बंजारा के नाम से भी जाना जाता है) के इतिहास जनजातियों और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इसके मिथकों पर चर्चा की। उन्होंने अपने आलेख का समापन करते हुए कहा कि किसी देश की सांस्कृतिक समृद्धि अपनी जनजातीय भाषाओं की प्रगति में निहित है।

द्वितीय वक्ता प्रख्यात शोधकर्ता विद्या कामत थीं। उन्होंने जनजातियों और उनके धर्मों की पारिस्थितिकी पर चर्चा की और बताया कि कैसे आदिवासी मिथक आधुनिक समय से जुड़े हुए हैं।

तृतीय वक्ता मिज़ो लेखक एवं अनुवादक वी.आर. राल्ते थे। उनका आलेख भारत में 'आदिवासी संवेदनाओं और मिथकों' को समर्पित था। डॉ. राल्ते ने कहा कि आदिवासी जीवन शैली के बारे में जानकारी प्राप्त कर भारत के जीवन को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। उन्होंने मिज़ो जनजातियों की समस्याओं तथा आधुनिक परिदृश्य में समाज में प्रचलित मिथकों पर चर्चा की।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा मौली कौशल ने सत्र का समापन किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन का षष्ठ सत्र 'आदिवासी गीतों और कविताओं' के पाठ को समर्पित था। जनेश अयन, जो चकमा और बाङ्ला दोनों में लिखते हैं, ने सत्र की अध्यक्षता की। एस. लिहिंगनिथिम हावकिप (कुकी), एम. पाओमिनलाल हावकिप (थादोउ-कुकी), हांगमिजी होंसेह (कार्बी) और सत्यजीत टोटो (टोटो) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। ज्ञानेश अयन ने सत्र का समापन किया।

सम्मिलन का सप्तम सत्र 'आदिवासी गीतों और कविताओं' के पाठ को समर्पित था। वारली परंपराओं, गीतों और अनुष्ठानों पर अधिकार प्राप्त संपत थंकर ने सत्र की अध्यक्षता की। गौरपर्व सिंह (मुंडारी), कुमुद बी. (परदिवाग्री) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

लेखक सम्मिलन

22 साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं ने 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम में भाग लिया और अपने रचनात्मक लेखन-अनुभवों को साझा किया। बैठक की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की।

असमिया पुरस्कार विजेता जयश्री गोस्वामी महंत ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक पर चर्चा करते हुए कहा कि चाणक्य का चरित्र उनके पसंदीदा चरित्रों में से एक है। उन्होंने आगे कहा कि उनकी पुस्तक इतिहास का टुकड़ा नहीं बल्कि ऐतिहासिक आँकड़ों पर आधारित उपन्यास है।

बाङ्ला पुरस्कार विजेता चिन्मय गुहा ने कहा कि शिक्षा जगत के सदस्य होने के रूप में उन्होंने सिस्टम में दरारों को पड़ते तथा घटते बौद्धिक-स्तर जैसी डरावनी बातों को अंकित किया है। इसलिए जब वह कहते हैं कि वह फ्रेंच पढ़ते हैं, वह अंग्रेज़ी पढ़ाते हैं और बाङ्ला में लिखते हैं, यह दिखाने का एक तरीका है कि हमें अपनी जड़ों के करीब रहने की ज़रूरत है, क्योंकि कोई दूसरा विकल्प नहीं है। जड़ों के बिना कोई महानगरीयता नहीं ठहर सकती है।

बोडो पुरस्कार विजेता फुकन च. बसुमतारी ने कहा कि उनकी कविता समाज में शांति और सद्भाव, समुदायों के बीच ईमानदार प्रेम और भाईचारा, समाज के ग़रीब और दबे-कुचले वर्गों के प्रति सच्चा प्रेम एवं सहानुभूति का आह्वान करती है।

गुजराती पुरस्कार विजेता रतिलाल बोरीसागर ने कहा कि कई बार ऐसा होता है कि आप कुछ अनुभव करते हैं किंतु उस अनुभव को तुरंत व्यक्त नहीं कर

पाते। उन्होंने आगे कहा, यह काफी बाद में होता है, जब आपका अनुभव काम आता है, और आपके लेखन का केंद्र बन जाता है।

हिंदी पुरस्कार विजेता नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि शब्द केवल माध्यम नहीं हैं बल्कि अनुभवों के स्रोत हैं जो समय और माहौल के बदलने पर कविता में बदल जाते हैं।

कन्नड पुरस्कार विजेता विजया ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक का ज़िक्र करते हुए कहा कि हमारा समाज जिस आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के दौर से गुज़र रहा है, वह पहले से कहीं अधिक लोगों के बीच असमानता पैदा कर रहा है।

कश्मीरी पुरस्कार विजेता अब्दुल अहद हाजिनी ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक पर चर्चा करते हुए कहा कि जब हमारा लेखन मानवीय भावनाओं से स्पंदित होता है, तो इसका प्रभाव जानवरों, पहाड़ों, सितारों, ग्रहों और पूरे ब्रह्मांड पर पड़ता है, जो स्वाभाविक भी है।

कोंकणी पुरस्कार विजेता निलबा अ. खांडेकर ने अपने भाषण में कहा कि हर कवि सत्य का साधक होता है। उन्होंने कहा कि कविता हमारे अनुभवों और भाषायी कौशल से प्रेरित होती है।

मैथिली पुरस्कार विजेता कुमार मनीष अरविंद ने अपने भाषण में कहा कि जिस समय कविता उनके मन में आकार ले रही थी, उस दौरान उन्होंने कई भावनाओं की एक शृंखला का अनुभव किया।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता वी. मधुसुदन नायर ने अपने भाषण में कहा कि विश्व जीवन में सामंजस्य बैठाने के लिए कहीं भी कोई प्रयास नहीं किया जा रहा है।

मणिपुरी पुरस्कार विजेता बेरिल थांगा ने अपने भाषण में कहा कि उनकी पुरस्कृत पुस्तक में एक शांतिपूर्ण द्वीप गाँव थांगा के लोगों के जीवन और सांस्कृतिक पहलुओं को कलम से उकेरा गया है।

मराठी पुरस्कार विजेता अनुराधा पाटील ने अपने भाषण में कहा कि कविता ने उनका मानवता पर विश्वास और अधिक दृढ़ किया है और यह उनके लिए एक अथक खोज है।

नेपाली पुरस्कार विजेता सलोन कार्थक ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक का ज़िक्र करते हुए कहा कि यात्रा लेखन की शैली ने उन्हें मानव इतिहास के सही और गलत पर प्रश्न उठाने तथा दुनिया भर के लोगों के साथ एकजुटता साझा करने के लिए प्रेरित किया।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता तरुणकांति मिश्र ने कहा कि उनकी कई कहानियाँ एक प्रकार की त्रासदी पर आधारित हैं। उनका सुखद अंत नहीं होता है। किंतु वह निराशावादी नहीं हैं। वह आँसुओं के सौदागर नहीं हैं। जीवन में तमाम त्रासदियों के बावजूद, वह दृढ़ता में विश्वास करते हैं, जैसे कई लेखकों ने उनके सम्मुख किया है, कि मनुष्य सहेगा नहीं संघर्ष करेगा। उन्होंने कहा कि उनकी आत्मा अजेय है।

पंजाबी पुरस्कार विजेता किरपाल कज़ाक ने कहा कि सृजन की प्रक्रिया आसान नहीं है।

राजस्थानी पुरस्कार विजेता रामस्वरूप किसान ने कहा कि यह एक मिथक है कि एक भाषा केवल भावनाओं, विचारों और भावनाओं के लिए एक माध्यम है, मेरे लिए भाषा एक माध्यम नहीं है बल्कि कुछ सार्थक हासिल करने का साधन है।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन

साहित्योत्सव के दौरान 'पूर्वोत्तरी' कार्यक्रम में देश के उत्तर-पूर्वी और उत्तरी क्षेत्र की भाषाओं के लेखकों ने सहभागिता की। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में अकादेमी द्वारा देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र में अकादेमी की गतिविधियों को रेखांकित करते हुए कहा कि अकादेमी ने अपनी स्थापना के बाद से अब तक के इतिहास में पहली बार एक वर्ष में सर्वाधिक 715 कार्यक्रम आयोजित किए हैं, जिनमें से 115 कार्यक्रम देश के उत्तर-पूर्व क्षेत्र में ही आयोजित किए गए हैं। अकादेमी ने उत्तर-पूर्व के वाचिक साहित्य को संरक्षित करने का बीड़ा उठा रखा है और कई पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन कार्यक्रम का दृश्य

कार्यक्रम का उद्घाटन भाषण प्रख्यात मणिपुरी कवयित्री अरम्बम मेमचौबी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि पूर्वोत्तर की समृद्ध भाषाओं और साहित्य के बारे में पूरे देश को जानकारी हो सके, इसके लिए सबको मिलकर प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं में जितना अधिक होगा उतना ही इस क्षेत्र के साहित्य का प्रसार होगा। उन्होंने इस दिशा में साहित्य अकादेमी के प्रयासों की प्रशंसा की और यह आशा व्यक्त की कि अकादेमी उत्तर-पूर्व की भाषाओं और उसके साहित्य को संरक्षित, प्रोत्साहित करने में इसी तरह अपनी सेवाएँ जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों द्वारा एक-दूसरे की संस्कृतियों को जानने का अवसर मिलता है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि उत्तर-पूर्व भारत भाषाओं का ख़ज़ाना है। इन भाषाओं के लोकसाहित्य को बचाना और उन्हें अन्य भारतीय भाषाओं से परिचित कराने के सघन प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों के साहित्यकारों और विद्वानों को इस कार्य के लिए आगे आना चाहिए और इस धरोहर के संरक्षण के उपाय करने चाहिए।

प्रथम सत्र पूर्वाह्न 10.30 बजे आयोजित हुआ जो कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता एन. किरण कुमार ने की। सत्र में रूमी लस्कर बोरा (असमिया), अनिता सिंह (अंग्रेज़ी), नवनीत मिश्र (हिंदी) और हाओबम सत्यवती देवी (मणिपुरी) ने अपनी कहानियों का पाठ प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र अपराह्न 12.30 बजे आयोजित हुआ जिसमें 'तथ्य और आख्यान का अंतर्गुंफन' विषय पर परिचर्चा हुई। इस सत्र का संयोजन हिंदी कवयित्री, कथाकार और विदुषी अनामिका ने किया। परिचर्चा में कमल चक्रवर्ती (बाङ्ला), गरिमा श्रीवास्तव (हिंदी), निशि पुलुगुर्था (अंग्रेज़ी), मंगत बादल (राजस्थानी) और हरिहर हांसदा (संताली) ने सहभागिता की। हरिहर हांसदा ने संताली साहित्य के तथ्य और आख्यान पर चर्चा की। इसके बाद निशी पुलुगुर्था ने बताया कि वे कहानी लिखने के दौरान कथानक, घटनाओं, संवेदनाओं आदि बातों का विशेष ध्यान रखती हैं। कमल चक्रवर्ती ने कहा कि मैं 1968 से जंगल में घूम रहा हूँ, जहाँ से मुझे लिखने की प्रेरणाएँ मिलती हैं। गरिमा श्रीवास्तव ने कहा कि हर लेखक अपने लेखन का संपादक भी होता है। लेखन आत्म से संवाद की प्रक्रिया है। वह साहित्य ही नहीं जो हमारे मन पर प्रभाव न डाले। मेरे लिए रचनात्मकता स्वयं को उबारने का साधन है। मंगत बादल ने कहा कि संवेदनशील व्यक्ति अपने संवेदनशील भावों के माध्यम से घटनाओं को अभिव्यक्त करता है और जब तक उसे व्यक्त नहीं करता तब तक वह स्वयं उस पीड़ा को भोगता है। जब तथ्यों और कथानक का सही प्रकार से अंतर्गुंफन होता है तब ही उसे एक सफल रचना कहा जा सकता है। सत्र की संयोजक अनामिका ने सत्र के संवादियों द्वारा प्रस्तुत विचारों पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की।

तृतीय सत्र कविता-पाठ का था, जो अपराह्न 2.30 बजे आयोजित हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता करबी डेका हाज़रिका ने की तथा इस सत्र में पिकूमणि दत्त (असमिया), चंद्रमणि झा (मैथिली), रश्मि चौधुरी (बोडो), गोपाल कृष्ण कोमल (डोगरी), जयदीप षडंगी (अंग्रेज़ी), मृत्युंजय सिंह (हिंदी), मंसूर बानिहाली (कश्मीरी), अब्दुल हमीद (मणिपुरी), बरजिंदर चौहान (पंजाबी), आलोक कुमार मिश्र (संस्कृत) और शारिक़ कैफ़ी (उर्दू) ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा उनके धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य

व्याख्यान देते हुए अर्जुनदेव चारण

"नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य" विषय पर 26 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन परिसर में आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात लेखक तथा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुनदेव चारण ने किया। उन्होंने भारतीय नाट्य परंपरा का ज़िक्र करते हुए कहा कि किसी भी परंपरा का अनुसरण करना किसी बोझ को ढोना नहीं है, बल्कि कोई परंपरा अपने आपको वर्तमान में ढालने के लिए हमेशा सजग रहती है। उन्होंने कहा कि यह परिवर्तन बेहद सूक्ष्म होता है, लेकिन यह परंपरा को हमेशा आधुनिक बनाए रखता है। उन्होंने नए निर्देशकों द्वारा नाट्य आलेखों में मनमाने बदलाव करने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह प्रक्रिया भारतीय नाट्य परंपरा को अवरुद्ध करने वाली है। उन्होंने नाट्य निर्देशकों से अपील की कि 'शब्द' नाटक का शरीर होते हैं, अतः उनका सम्मान करना ज़रूरी है। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि विभिन्न विधाओं के रंगकर्म उनके हृदय के अत्यंत निकट हैं। कोई भी रचना जब नए परिवेश के साथ दर्शकों के सामने प्रस्तुत होती है तो वह भी नई होकर वर्तमान का हिस्सा बन जाती है। उन्होंने अपने कई नाटकों में किए गए इस प्रकार के परिवर्तनों की जानकारी भी दी।

परिचर्चा के अगले सत्र में कृष्णा मनवल्ली की अध्यक्षता में अथोकपम के.सी. सिंह (मणिपुरी), सपनज्योति ठाकुर (असमिया), शफ़ाअत ख़ान (मराठी) और सुमन कुमार (हिंदी) ने नाट्य लेखन के वर्तमान परिदृश्य पर अपने विचार व्यक्त किए। शफ़ाअत ख़ान ने कहा कि मराठी में नाट्य लेखन की एक स्वस्थ परंपरा है, जो आज तक चली आ रही है। सपनज्योति ठाकुर ने असमिया के व्यावसायिक रंगमंच का ज़िक्र करते हुए कहा कि हालाँकि यह केवल मनोरंजन के लिए होता है, लेकिन फिर भी इस कारण, हमेशा नए नाटक उपलब्ध रहते हैं। सुमन कुमार ने कहा कि वे एक नाट्य निर्देशक के रूप में नाट्य लेख में बदलाव को ग़लत नहीं मानते, बल्कि नाट्य लेखकों को अगर यह बदलाव ठीक लगे तो उन्हें इसके लिए निर्देशकों को छूट देनी चाहिए, वैसे भी नाटक मुक्ति का यज्ञ होता है तो उसके लिए किसी भी प्रकार का कोई अवरोध नहीं होना चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में सभी के प्रति धन्यवाद प्रकट हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी नाटकों के अनुवाद एवं नाट्य पाठ के लिए प्रयास कर रही है। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

संवत्सर व्याख्यान

साहित्य अकादेमी का प्रतिष्ठित *संवत्सर व्याख्यान* इस वर्ष 26 फ़रवरी 2020 को भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं प्रख्यात विचारक प्रणव मुखर्जी द्वारा दिया जाना था, किंतु अपरिहार्य कारणों से वे नहीं आ पाए। उनका लिखित व्याख्यान साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक संयुक्ता दासगुप्ता द्वारा पढ़ा गया। संवत्सर व्याख्यान का विषय था—'अर्थशास्त्र की चिरस्थायी विरासत'।

प्रस्तुत है पठित व्याख्यान के कुछ अंशों का हिंदी अनुवाद —

"...'अर्थ' शब्द के विभिन्न आशय हैं, किंतु कौटिल्य ने जिस प्रकार से 'अर्थशास्त्र' के शाब्दिक अर्थ का प्रयोग किया है, वह मानव अस्तित्व के लक्ष्यों के हित में है।

इसलिए अर्थशास्त्र धन (अर्थ) की रक्षा और अधिग्रहण का विज्ञान है, संस्कृत का अर्थ है 'योगक्षेम'। इस विज्ञान का उद्देश्य है राजनीति, धन और व्यावहारिकता के अंतर को पूरा करना तथा शक्ति को बनाए रखना। तदनुसार कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रशासन, कानून, न्याय और व्यवस्था, कर, राजस्व और व्यय, विदेश नीति तथा रक्षा और युद्ध जैसे विषय सम्मिलित हैं। इन सभी मामलों का अध्ययन करने का उद्देश्य तीन परस्पर संबंधित अनुमानों यथा - उन कल्याणकारी मुद्दों को बढ़ावा देना, जिससे धन की प्राप्ति होती है, जिसके बदले में विजय द्वारा किसी के क्षेत्र में विस्तार करना संभव होता है। कौटिल्य का दावा है कि यह प्राचीनकाल से उनके पूर्व के ज्ञान का संकलन है, जो अंतरराज्यीय और अंतरराज्यीय क्षेत्रों के परिप्रेक्ष्य में शासकों के आचरण (व्यक्तिगत और सार्वजनिक) के संबंध में पारंपरिक अवधारणाओं और समझ का संपुंजन है। कुछ मुद्दों पर कौटिल्य के व्यक्तिगत मत भी उनकी टिप्पणियों के रूप में मौजूद हैं, जिसमें वह पहले के विद्वानों की कुछ राय से स्पष्ट रूप से सहमत या असहमत हैं। इसे 1904 में मैसूर के डॉ. आर. शाम शास्त्री द्वारा पुनर्जीवित किया गया तथा इसे 1909 में प्रकाशित किया गया तथा 1915 में इसका अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित हुआ। अर्थशास्त्र ने अपने उस उद्देश्य को पूर्ण किया जो एक महान पुस्तक के लिए आवश्यक मानदंड था। यह पुस्तक बार-बार पढ़ी जाती है।..."

"...साहित्य समाज का दर्पण है। अर्थशास्त्र के महान ज्ञान द्वारा राज्य और समाज के बीच के अपरिहार्य संबंध का साक्ष्य हम प्राप्त कर सकते हैं। समाज और इसके लोगों की प्रसन्नता तथा भलाई इसका उच्च मानदंड है। प्रसन्नता मानव जीवन-अनुभव का आधार है। स्वास्थ्य, प्रसन्नता और उर्वर जीवन हमारे नागरिकों के मूल अधिकार हैं।''

"...कौटिल्य का श्लोक, जो संसद भवन के लिफ्ट नं. 6 के पास अंकित है, अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता और स्थायी भाव को बहुत सुंदर तरीके से दर्शाता है–

प्रजासुखे सुखं राज्ञः प्रजानां तु हिते हितम्।
नात्मप्रियं हितं राज्ञः प्रजानां तु प्रियं हितम् ॥

अर्थात् – प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है, प्रजा के हित में ही उसे अपना हित देखना चाहिए। जो स्वयं को प्रिय लगे उसमें राजा का हित नहीं है, उसका हित तो प्रजा को जो प्रिय लगे उसमें है।..."

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित, प्रस्तुत किए गए *संवत्सर व्याख्यान* की पुस्तिका का विमोचन भी किया गया।

'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

27 फ़रवरी 2020 को साहित्योत्सव के चौथे दिन 'प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य' विषयक तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात कन्नड लेखक एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एस.एल. भैरप्पा ने कहा कि प्राचीन भारत में, आश्रमों और शैक्षणिक संस्थानों को वनों के बीच स्थापित किया जाता था तथा आश्रम धाम जो वानप्रस्थ का तीसरा चरण था, इसमें गृहस्थ जीवन से निवृत्त होकर ध्यान किया जाता था तथा जीवन के अर्थ को वन में रहकर जाना जाता था। उन्होंने कहा कि पश्चिमी और भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनुष्य और प्रकृति के बीच संकटों में एक बुनियादी अंतर है। भारतीयों के लिए प्रकृति ईश्वर की एक रचना या अभिव्यक्ति है और इसलिए वह

(बाएँ से दाएँ) के. श्रीनिवासराव, अमित चौधुरी, एस.एल. भैरप्पा, चंद्रशेखर कंबार तथा माधव कौशिक

पवित्र और पूजा के योग्य है। हमारे जीवन की भलाई से संबंधित प्रकृति की समस्या आज जीवन की प्रमुख समस्या है। औद्योगीकरण और प्रकृति के अप्रतिबंधित उपयोग के कारण हम पृथ्वी को निर्जन बना रहे हैं। ओजोन परत को पहुँचने वाली क्षति के ख़तरों के प्रति वैज्ञानिक हमें सावधान कर रहे हैं। पश्चिम के लोग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए पेड़ों और जंगलों को बनाए रखने की वकालत करते हैं, जबकि भारतीय परंपरा प्रकृति के साथ अपने आध्यात्मिक संबंध को बनाए रखने के लिए यही काम करती है।

प्रसिद्ध लेखक और रॉयल सोसाइटी ऑफ़ लिटरेचर के फ़ैलो अमित चौधुरी ने अपने बीज भाषण की शुरुआत में, डीएच लॉरेंस की विश्व प्रसिद्ध कविता, 'पीच' उद्धृत की। कविता की पंक्तियों की व्याख्या करते हुए, उन्होंने कहा कि इस कविता में कवि द्वारा मानव जाति के प्रभुत्व का आह्वान किया गया है। यह प्रभुत्व हमेशा उसकी इच्छाशक्ति को पूर्णता में परिणत करता है। प्रकृति स्वयं संपूर्ण नहीं है, यह अधूरी है, और पूर्णता प्राप्त करने की प्रक्रिया में है। इसलिए यह काव्यात्मक भाषा की तरह है जैसा कि मैथ्यू अर्नोल्ड ने इसे 'तरल' और 'अप्रकाशित' कहा है। काव्यभाषा जब रूढ़ हो जाती है तब काव्यात्मकता समाप्त हो जाती है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि एक समान और अद्वितीय भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का दृष्टिकोण ही वह आधार था जिस पर भारत का विचार विन्यस्त था। देश को आज़ादी मिलने से पहले ही भारत की सांस्कृतिक धारणा बन चुकी थी।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने उद्घाटन सत्र में समाहार वक्तव्य देते हुए कहा कि प्राचीन काल से प्रकृति और पर्यावरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। हम कभी भी प्रकृति और पर्यावरण पर हावी नहीं होना चाहते थे। हम सदा उनमें सामंजस्य करने का यत्न करते रहे हैं।

संगोष्ठी के प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और साहित्यप्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि यह एक प्रचलित तथ्य है कि प्रकृति साहित्यिक प्रस्तुतियों को प्रेरित और प्रभावित करती है। हाल के दिनों में साहित्यिक प्रस्तुतियों और उसके विश्लेषण में पर्यावरण और प्रकृति को कैसे चित्रित किया जाता है, इस पर तथा इको-आलोचना पर बहुत सारे काम और कार्यक्रम हुए हैं। उन्होंने आगे कहा कि अकादेमी ने महसूस किया कि पर्यावरण और प्रकृति इस समय बेहद महत्त्वपूर्ण विषय हैं।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय था - 'महाकाव्यों, उपाख्यानों एवं मिथकों में प्रकृति'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी कवि, समालोचक और अकादेमी के महत्तर सदस्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। उन्होंने कहा कि प्रकृति पर किसी भी बातचीत से पहले यह बात महत्त्वपूर्ण है कि उसके प्रति हम किस तरह का नज़रिया रखते हैं। यदि हमारी दृष्टि उपयोगितावादी है तो हम उसको शोषक की दृष्टि से देखेंगे और हमारी दृष्टि पारंपरिक है तो हम उसे पूजनीय मानेंगे। उन्होंने बाङ्ला साहित्य में विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, ओड़िआ साहित्य में गोपीनाथ महांति का ज़िक्र करते हुए कहा कि कोई भी सृजनात्मक रचना पाठकों में तब ही स्थान पाती है जब वह प्रकृति के प्रति निर्मल भावनाओं के साथ व्यक्त की जाती है। उन्होंने कालिदास की संस्कृत रचनाओं में हिमालय के सौंदर्य के कुछ रोचक प्रसंगों के सहारे बात करते हुए कहा कि प्रकृति को मनुष्य का दर्जा देना होगा तभी हम उसके साथ न्याय कर पाएँगे। उन्होंने महात्मा गाँधी का ज़िक्र करते हुए कहा कि शायद वे विश्व के अंतिम बड़े व्यक्ति थे जिन्होंने पर्यावरण पर अपनी गहरी संवेदना से भरी चिंता व्यक्त की थी।

सत्र में, रघुल वी. राजन ने अपने आलेख में कहा कि दुनिया भर में कई संस्कृतियों में 'नागा पंथ' का प्रचलन रहा है, चाहे वह ट्युटोनिक पौराणिक कथा हो, इजिप्ट, चीनी या भारतीय। यू.एन. मुखर्जी जैसे विद्वानों ने प्राचीन भारत में प्रचलित 'नागा पंथ' की ऋग्वेद की *अहिरबुधिन्य* की अवधारणा का पता लगाया। केरल में भी एक नागा पंथ था जिसमें स्वर्ण रंग के सर्पों की पूजा उनके घर के निकटवर्ती खेतों में की जाती थी, उन्हें

सर्प कावु (सर्पों का पवित्र वन) कहा जाता था; सर्प का मलयाळम् में अर्थ है भुजंग। उन्होंने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आजकल विकास के नाम पर पेड़ों को नष्ट किया जा रहा है। उनकी रक्षा करने वाली स्वदेशी मान्यताएँ शिक्षित युवाओं के लिए बेकार हैं। आधुनिक मनुष्य लालची हो गया है। कमला दास की कृति *सर्प कावु* की मूर्तियाँ अब भूमि के एक छोटे से टुकड़े में सिमट कर रह गई हैं।

अभय मौर्य ने कहा कि एक महाकाव्य किसी भी व्यक्ति या राष्ट्र के सबसे प्राचीन ऐतिहासिक अतीत से प्राप्त महत्त्वाकांक्षी कहानियों को दर्शाता है। शुरुआती तौर पर यह कहानियाँ वाचिक काव्य शैली में कही गईं तथा बाद में वे कुछ विशिष्ट कवियों या लेखकों, यथा - वाल्मीकि द्वारा *रामायण*, व्यास द्वारा *महाभारत* तथा होमर द्वारा *ओडिसी* एवं *इलियड* के रूप में लिखी गईं। अधिकांश महाकाव्यों में प्रकृति को अपनी अभिव्यक्ति के तीन रूप मिले : बाहरी, आंतरिक और अभिन्न। विलियम कॉओपर की प्रसिद्ध उक्ति है, ''भगवान ने देश बनाया तथा आदमी ने शहर बनाया।'' होमर कृत *ओडिसी* और *इलियड* में प्रकृति को बाह्य व्यक्तित्व के रूप में अभिव्यक्त देखा जा सकता है, अर्थात् प्रकृति को परिदृश्य के रूप में देखा जाता है, जिससे व्यक्ति के परिवेश में और अधिक सुंदरता बढ़ती है।

विश्वनाथ शिंदे ने अपने आलेख में कहा कि लोकगाथाएँ लोकचेतना का सजीव गेय प्रतिबिंब हैं। लोकगाथाएँ सांस्कृतिक अस्मिता की अमूल्य निधि हैं। मिथ शब्द का अर्थ धर्मगाथा से भी किया जाता है।

एम.ए. आलवार ने अपने आलेख में बताया कि पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन आदि आज की समस्याओं को हल करने में वैदिक ग्रंथ किस प्रकार से योगदान दे सकते हैं। इस आलेख में वेदों और पारंपरिक साहित्य की प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के लिए एक उपकरण के रूप में इसके रणनीतिक विस्तार के अंतर्निहित पारंपरिक व्यवहारों के बारे में कुछ विश्वासों और प्रथाओं के बारे में बताया गया है।

भोजनोपरांत द्वितीय सत्र आयोजित हुआ, जिसका विषय था : 'उत्तर-पूर्व के साहित्य में प्रकृति विमर्श : पूर्व और वर्तमान स्थिति'। इस सत्र की अध्यक्षता दामोदर मावज़ो ने की तथा इस सत्र में ममंग दई, डेज़्मंड खार्मावफ्लाङ् और प्रीति रेखा दत्त ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

ममंग दई ने अपने आलेख में कहा कि विभिन्न समुदायों के साहित्य का एक बड़ा हिस्सा मौखिक परंपरा के माध्यम से हमारे पास आता है। बदले में इसने एक ग़ैर-लिपि मातृभाषा से अनुवादित समकालीन लेखों के एक साहित्यिक परिदृश्य को बढ़ावा दिया है जो रोमन लिपि का उपयोग कर रहा है या अंग्रेज़ी भाषा में लिखा गया है। डेज़्मंड खार्मावफ्लाङ् ने 'खासी एकात्मकता के साथ लोकगीत और कथा : एक अध्ययन' विषयक अपने आलेख में इस बात पर बल दिया कि लोकसाहित्य में विचारों और मुद्दों की साहित्यिक अवधारणाओं की जाँच के लिए एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण की अधिक आवश्यकता है।

प्रीति रेखा दत्त ने 'बिहू गीत में प्रकृति पर चिंतन : एक अध्ययन' पर अपने शोध पत्र में विश्लेषण किया कि *बिहू* मूल प्राकृतिक जीवन की आत्मा और सोच है, इसमें जीवनचक्र की भावनाओं का विवरण मिलता है।

तृतीय सत्र का विषय था : 'भारतीय लोकसाहित्य में प्रकृति'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात समालोचक और अकादेमी के महत्तर सदस्य गोपी चंद नारंग ने की तथा महेंद्र कुमार मिश्र और महेश शर्मा ने अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. नारंग ने कहा कि प्रादेशिकता किसी भी मुल्क की एकजुटता के विपरीत है लेकिन इससे ही अवचेतन और चेतन बनता है वर्ना शेक्सपियर भारत में और ग़ालिब अरब में क्यों पैदा नहीं हो सकते। प्रादेशिकता में पहाड़, नदियाँ, वादियाँ, खेतियाँ, धरती सब आ जाते हैं। उनकी ख़ुशबू साहित्य में समोई हुई है। संगोष्ठी के सत्रों का संचालन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।

संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता हरीश त्रिवेदी ने की, जबकि सीमा शर्मा और सचिन केतकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सचिन केतकर ने गुजराती के दो महत्त्वपूर्ण कथाकारों को संदर्भित करते हुए कहा कि लेखकों द्वारा किया गया ऋतुओं के परिवर्तन और क्षेत्र की वनस्पतियों तथा जीवों का वर्णन महत्त्वपूर्ण एवं प्रतीकात्मक है। कहानियों में विशिष्ट क्षेत्रीय और पर्यावरणीय स्थान केवल कथाओं में 'व्यवस्था', 'पृष्ठभूमि' या 'लोकेल' की भूमिका ही नहीं निभाते, बल्कि कथा में लोगों की नियति को आकार देने वाले आवश्यक चरित्र बन जाते हैं और केंद्रीय प्रतीक जो एक ही समय में प्राचीन एवं समकालीन हैं वह मनुष्य की आंतरिक और बाहरी दुनिया को दर्शाते हैं।

सीमा शर्मा ने कहा कि प्रकृति पर लिखित साहित्य की भारतीय संस्कृति में गहरी जड़ें हैं। भारतीय लोककथाओं, मिथकों और किंवदंतियों ने प्रकृति के साथ मनुष्य के सामंजस्यपूर्ण और सहजीवी संबंधों को दर्शाया है। यद्यपि पिछली सदी की अंधाधुंध विकासात्मक गतिविधियों के कारण बड़े पैमाने पर वनों का नुकसान हुआ है तथा जल संसाधनों, मिट्टी और वायु प्रदूषण बढ़ा है। इन मुद्दों ने विश्वभर के लेखकों तथा पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है।

पंचम सत्र 'कवि-कल्पना में प्रकृति' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता इंद्रनाथ चौधुरी ने की तथा इस सत्र में पी. मणिक्यांबा 'मणि', बोधिसत्व एवं रख़्शंदा जलील ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

रख़्शंदा जलील ने उर्दू और फ़ारसी में प्रकृति की व्यापकता का विवरण प्रस्तुत किया। प्रकृति का सामान्य रूप से विविधतापूर्ण वर्णन, वसंत, ऋतुओं का बदलना, बादलों, हवा, विशेषरूप से सुबह और गोधूलि उनके प्रिय विषय रहे हैं। यह भी कहा जाना चाहिए कि इन विषयों में से अधिकांश के लिए एक निश्चित बयानबाज़ी की गुणवत्ता थी तथा इन्हें अधिक सुंदर तथा शास्त्रीय परंपरा से युक्त करने हेतु इनके कॉस्मेटिक सौंदर्य को विवरणों द्वारा बढ़ाया गया।

मिनी प्रसाद ने कहा कि नारीवाद एक ऐसे समुदाय को आवाज़ देता है जिसे इतिहास और संस्कृति में हाशिये पर रखा गया है। 1960 के दौरान नारीवाद आगे बढ़ गया तथा कुछ अन्य विचारधाराओं के साथ मिलकर उसका विकास हुआ। इस प्रकार से नारीवाद और पर्यावरणवाद के विलय को इको-फेमिनिज़्म के रूप में जाना जाता है।

यह समझ कि मानव के अस्तित्व को कई संकटों का सामना करना पड़ रहा है, ने प्रकृति माँ के संरक्षण के लिए पर्यावरणवाद और विचारधाराओं को जन्म दिया। जबकि विज्ञान, प्रौद्योगिकी और औद्योगीकरण द्वारा तेज़ी से प्रकृति का शोषण किया जा रहा था, तब इस बात को महसूस किया गया कि इस ग्रह पर जीवन को ख़तरा है और तब पर्यावरणवाद जैसी बढ़ती विचारधाराओं को संचालित किया गया तथा दिनों दिन उन्हें और अधिक गति प्रदान की गई। इस ग्रह को हमें अगली पीढ़ी को सौंपने से पूर्व, सह-अस्तित्व और सहानुभूति के एक मात्र तरीक़े पर चल कर उसे पहले समझना होगा।

पी. मणिक्यांबा 'मणि' ने अपने आलेख में बताया कि मानवीकरण, मानवीय चेष्टाओं का आरोप, मानवीय भावनाओं के साथ प्रकृति के दृश्यों के रूपकों के आधार पर तेलुगु साहित्य में अनेक सुंदर, कोमल और गतिशील बिंबों की सृष्टि हुई है। इस प्रकार कविताओं की कल्पना में प्रकृति पर विचार हुआ।

संगोष्ठी का षष्ठ सत्र 'स्त्रीवाद और दलित कल्पना' पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता मालाश्री लाल ने की और मिनि प्रसाद, मंजू सरकार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। मंजू सरकार ने महाश्वेता देवी के उपन्यास *जंगल के दावेदार* दलित कथा पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि उपन्यास का अंत यह चित्रित करता है कि प्रकृति, दलित भावना और नारीवाद एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

सप्तम सत्र का विषय था—'आधुनिक भारतीय कथा साहित्य में प्रकृति और क्षेत्र'। इसकी अध्यक्षता उदय नारायण सिंह ने की। इस सत्र में पी.पी. रवींद्रन, सा. कंदासामी, राणा नायर एवं यशोधरा मिश्रा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उदय नारायण सिंह ने पश्चिम बंगाल की कथाओं के संदर्भ में क्षेत्रवाद पर अपने विचार व्यक्त किए।

अष्टम सत्र की अध्यक्षता के. सच्चिदानंदन ने की। इस सत्र का विषय था—'कवियों की कल्पनाओं में प्रकृति-II'। इस सत्र में मेल्विन रॉड्रिग्ज़, मोगळ्ळी गणेश, बलवंत जानी तथा अश्वनी कुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

के. सच्चिदानंदन ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि कोई भी साहित्य अपने विशिष्ट परिवेश से अलग नहीं होता जहाँ वह जन्म लेता है। यदि उस क्षेत्र विशेष के साहित्य में वहाँ की स्थानीय विशिष्टता नहीं दिखती तो फिर लेखक की सृजनशीलता को प्रश्नांकित किया जाना चाहिए। मेल्विन रॉड्रिग्ज़ ने कहा कि कवियों और प्रकृति के बीच का संबंध अत्यधिक जैविक है। कोंकणी कविता में प्रकृति के अनगिनत रूपक हैं, जिनका बुद्धिमता से उपयोग लोगों के दृष्टिकोण, नारी शक्ति, आध्यात्मिक आवश्यकताओं, संस्कृति, सामाजिक जागरूकता आदि को दर्शाने के लिए किया जाता है।

मोगळ्ळी गणेश ने कहा कि कविता मानव-निर्मित किंतु पर्यावरण से उत्पन्न रचना होती है। प्रकृति में कवियों की कल्पनात्मक जड़ें हैं। रचनात्मकता के लिए आवश्यक वृत्ति, सभी प्रकार की सहवर्ती भावनाएँ, काव्यात्मक सृजन से जुड़े व्यवहार आदि कविताओं के परिवेश और सामाजिक अनुभवों से उत्पन्न होते हैं। कवि की कल्पना में मानव जाति के अनुभव और विकासवादी स्मृतियों के संयोजन की गहरी संवेदनशीलता शामिल होती है। बलवंत जानी ने अपने वक्तव्य में यह गहरी चिंता व्यक्त की कि प्रकृति लगातार हमें विनाश के संकेत दे रही है लेकिन हम जाने क्यों उन गंभीर संकेतों को समझना ही नहीं चाह रहे हैं, इसके घातक परिणाम होंगे।

नवम् सत्र की अध्यक्षता महेंद्र कुमार मिश्र ने की, जिसमें ए. चेल्लपेरुमाल, कलाचंद महाली, शिवदास बास्के एवं अनिल कुमार तिरिया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। महेंद्र कुमार मिश्र ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में विभिन्न उदाहरणों द्वारा प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य के संबंधों पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि वही साहित्य अब तक लंबी कालावधि के बावजूद बचा रह सका है जिसमें लोक की साँसें दर्ज हैं, आमजन के राग-विराग-उल्लास और संघर्ष की गाथाएँ धड़कती हैं। ए. चेल्लपेरुमाल ने अपने सुचिंतित आलेख में इस बात को रेखांकित किया कि पर्यावरण और साहित्य का अद्‌भुत सामंजस्य उस जगह, उस क्षेत्र से देखने को मिलता है जिसमें वह साहित्य रचा गया है और वहाँ का विशिष्ट परिवेश उसे प्रभावित करता है। कलाचंद महाली ने कहा कि प्राचीनकाल से देसी लोग वन क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं। उन्होंने अपनी आजीविका बनाए रखने के लिए ज्ञान अर्जित किया। शनैः शनैः चेतना ने उनकी दक्षता को विशेषज्ञता तक पहुँचाया। महाली आदिवासी लोग इसका एक उपयुक्त उदाहरण हैं।

शिवदास बास्के ने कहा कि ''जाहेर थान'' की अवधारणा संताल लोगों द्वारा एक नया गाँव स्थापित करने की है, ''कुलही दुरुप'' का अर्थ है उस विशेष गाँव की सर्वोत्तम उपजाऊ भूमि के टुकड़े का पता लगाना, जहाँ सभी प्रकार के पौधे उगाए जा सकें तथा उन्हें ''जाहेर थान'' के लिए चुना जा सके। शब्द जाहेर की उत्पत्ति ''जाह'' (फल) तथा ''एर'' अर्थात् बीजों को फैलाना, दूसरे शब्दों में जाहेर को एक ऐसी भूमि का टुकड़ा भी कहा जा सकता है जिसमें समस्त प्रकार के पौधों के बीजों को उगाया जा सके या प्राकृतिक रूप से वहाँ पर वह उपलब्ध हों। ''थान'' का अर्थ है पूजा स्थल। जैव-संरक्षण पर देसी लोगों की इस पारंपरिक अवधारणा और ज्ञान को इसके संरक्षण तथा जटिल मुद्दों को हल करने के लिए संभावित उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

अनिल कुमार तिरिया ने कहा कि उनका आलेख इकोस्प्रिच्युएलेटी को पुनः परिभाषित करने का प्रयास है तथा कोल्हन में 'हो' जनजाति के देशौली जीवन, विद्या और पहचान की खोज करता है। यह रिवाज़ों, परंपराओं, संस्कृति, धर्म, रीति-रिवाज़ों और पवित्र उपदेशों में अनंत पैतृक आत्माओं देशौली और जाहेर बुरी की पूजा करने की मान्यताओं का वर्णन करने का प्रयास है। 'हो' समुदाय में देशौली के साथ जीवन शुरू और समाप्त होता है। देशौली निःसंदेह 'हो' जनजाति समुदाय का जीवन एवं उनकी पहचान है।

संगोष्ठी के दशम एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता जी. मधुसूदनन् ने की। 'पारिस्थितिक सौंदर्यशास्त्र और आलोचना : नियम एवं चलन' विषयक इस सत्र में धनंजय सिंह, जतिंद्र कुमार नायक, ओम द्विवेदी एवं रोहित मनचंदा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। जी. मधुसूदनन् ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में तमाम वैश्विक संकटों का कारण पर्यावरण और प्रकृति के दोहन को मानते हुए कहा कि यदि हम जल्दी नहीं संभले तो बहुत देर हो जाएगी। उन्होंने पारिस्थितिक सौंदर्यशास्त्र और आलोचना के कई प्रतिमानों पर भी साहित्य को परखने की कोशिश की। धनंजय सिंह ने कहा कि व्याकरण-दार्शनिक भर्तृहरि (5वीं शताब्दी ई.पू.) ने प्राकृतिक वस्तुओं को संदर्भित किया ताकि वे भाषायी प्रतीकवाद के अपने सिद्धांत को विकसित कर सकें। वह शब्द और अर्थ के बीच के रिश्ते को समझने वाले पहले दार्शनिक हैं। ध्वनि और स्फोट (शब्द-आयात) के भेद को विस्तार से समझाने के लिए उन्होंने जल निकायों में चंद्रमा के प्रतिबिंब की एक समानता को नियोजित करके बताया। ओम द्विवेदी ने पर्यावरणीय आपदाओं का सामना करने के लिए ज़िम्मेदारी हेतु शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि इस भयावह आपदा का मुक़ाबला करने के लिए निवारक उपायों को तभी प्राप्त किया जा सकता है जब कोई पृथ्वी पर भावी जीवन के लिए अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास करे। जतिंद्र कुमार नायक और रोहित मनचंदा ने अपने वक्तव्यों में प्रकृति के व्यापक स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्य ही है जो पर्यावरण की बहुछवियों को प्रभावशाली तरीके से व्यक्त कर लोगों के मन में प्रकृति के प्रति प्रेम जगा सकता है। कार्यक्रम का संचालन क्षेत्रिय सचिव कृष्णा किंबहुने ने किया।

आमने-सामने

साहित्य अकादेमी द्वारा 27 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में आयोजित *आमने-सामने* कार्यक्रम के अंतर्गत बाङ्ला के पुरस्कृत लेखक चिन्मय गुहा से सुबोध सरकार ने बातचीत की। चिन्मय गुहा ने कहा कि उन्होंने 21 वर्ष रवींद्रनाथ ठाकुर तथा रोमां रोलां के पत्र-व्यवहार का अध्ययन किया और यह जानने की कोशिश की कि कैसे एक समय के दो बड़े साहित्यकार बिना सरहद की दुनिया बनाने का स्वप्न देख रहे थे। उन्होंने कहा कि मैंने अनुवाद के ज़रिये एक नए भाषायी सौंदर्य को बनाने और उसको आत्मसात करने की प्रक्रिया को महसूस किया है। बिना जड़ों की तरफ लौटे कोई भी परंपरा जीवित नहीं रह सकती। विभिन्न सृजनात्मक विधाओं के बीच मुझे अनुवाद कार्य ज़्यादा चुनौतीपूर्ण और बेहतर लगा। जड़ों की तलाश आज भी जारी है।

पुरस्कृत गुजराती लेखक रतिलाल बोरीसागर से हर्षद त्रिवेदी ने बातचीत की। रतिलाल बोरीसागर ने अपने लेखन की प्रेरणा अपने से ही पाने की बात कहते हुए बताया कि वे भगवान द्वारा बनाए गए मैन्यूफैंक्चरिंग डिफ़ेक्ट हैं। उन्होंने अपने युवा अवस्था के संघर्षों का ज़िक्र करते हुए कई मज़ेदार बातें बताईं और कहा कि साहित्यकार को बाहर की दुनिया में ही सम्मान मिलता है। घरवाले उन्हें एक लेखक के रूप में न देखकर एक पिता, पति की ज़िम्मेदार भूमिका में देखते हैं।

हिंदी में पुरस्कृत नंदकिशोर आचार्य से भानु भारती ने बातचीत की। एक प्रश्न के जवाब में नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि वे बचपन से ही अपने को समझने की कोशिश में लगे रहते थे। आगे चलकर यही चाहत मनुष्य के आत्म को पहचानने की कोशिश बन गई। उन्होंने विभिन्न विधाओं में लेखन की सफलता और असफलता पर बात करते हुए कहा कि शब्द के अंदर एक छिपी हुई अनुभूति होती है और कोई भी रचना उसी के कारण मज़बूत या हल्की होती है। उन्होंने कहा कि कोई भाषा तभी तब बची रहेगी जब तक वह अपने बहाव को बनाए रखेगी। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता मेरा सबसे बड़ा आग्रह है।

मलयाळम् भाषा के लिए पुरस्कृत मधुसूदनन् नायर से आर. नंदकुमार ने बातचीत की। मधुसूदनन् नायर ने कहा कि अगर वे किसी एक बच्चे को रोने से चुप नहीं करा सकते तो उन्हें कवि कहलाने का अधिकार

नहीं है। उन्होंने केरल में कविता की ऑडियो-परंपरा की बात करते हुए बताया कि यह विधा अभी वहाँ बहुत लोकप्रिय है। उन्होंने कहा कि हम किसी भाषा को संगीत से अलग नहीं कर सकते।

अंत में उर्दू के लिए पुरस्कृत शाफ़े क़िदवई ने सरवर-उल-हुदा से बातचीत में कहा कि उनकी पुरस्कृत कृति में सर सैयद के जीवन के विभिन्न पहलुओं को जानने-समझने की कोशिश है। उन्होंने सर सैयद की व्यापक और दूरगामी दृष्टि के बारे में कहा कि वे इस्लाम की प्रगति को एक नए परिवेश में देखना चाहते थे।

अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन

(बाएँ-दाएँ) के. श्रीनिवासराव, आर. राज राव, चंद्रशेखर कंबार तथा होशांग मर्चेंट

साहित्योत्सव में अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन का आयोजन 27 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन परिसर में अपराह्न 2.00 बजे किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण में कहा कि अकादेमी भारत के सभी कवियों का सम्मान करती है। मुख्य अतिथि एवं प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि होशांग मर्चेंट ने अपनी तीन कविताओं का पाठ किया। उन्होंने ट्रांसजेंडर लोगों के साथ होनेवाली विभिन्न ज़्यादतियों का ज़िक्र किया।

अपने बीज भाषण में प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि आर. राज राव ने कहा कि आज से 17 महीने पहले स्थितियाँ दूसरी थीं और यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि हमारे प्रतिनिधि इस तरह किसी सार्वजनिक मंच पर अपनी अभिव्यक्तियों को प्रस्तुत कर सकेंगे। उन्होंने इसके लिए स्वयं एवं साथियों द्वारा लंबी क़ानूनी लड़ाई का ज़िक्र करते हुए बताया कि आज हम क़ानूनन कुछ अधिकार पा चुके हैं लेकिन अभी हमारी लड़ाई सामाजिक पहचान बनाने की है। उन्होंने कई विदेशी क़ानूनों की जानकारी देते हुए कहा कि हमारी लड़ाई अभी भी जारी है।

अपना अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि एलजीबीटीक्यू लोगों के साथ किए जाने वाला अमानवीय व्यवहार उन्हें व्यथित करता है। हमारे समाज द्वारा उन्हें पूरी तरह स्वीकार करना होगा, तभी हम एक संतुलित समाज की कल्पना कर पाएँगे।

अगले सत्र में विक्रमादित्य सहाय (अंग्रेज़ी कवि) की अध्यक्षता में एलजीबीटीक्यू पहचानवाले कवियों द्वारा कविताएँ प्रस्तुत की गईं। पठित कविताओं का मूल स्वर उनके प्रति उपेक्षा से भरे सामाजिक व्यवहार के साथ-साथ सहज मानवीय अनुभूतियाँ और समय-समाज था। रवीना बरिहा ने अपनी कविता में कहा कि - ''दुख के पाठ पढ़कर और निर्मल हुई मैं, पाकर तिरस्कार तुम्हारा अनजाने में सबल हुई मैं''। इस कवि सम्मेलन में अदिति आंगिरस (अंग्रेज़ी), चाँदिनी (कन्नड), गिरीश (तमिऴ), शांता खुराई (मणिपुरी), रेशमा प्रसाद (हिंदी), अब्दुल रहीम (उर्दू), आकाश (राय) दत्त चौधुरी (अंग्रेज़ी), तोशी पांडेय (हिंदी), विशाल पिंजाणी (सिंधी एवं अंग्रेज़ी), अलगू जगन (तमिऴ) तथा डेनियल मेंडोंका (हिंदी एवं उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कविताएँ मूल भाषा के साथ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद में पढ़ी गईं। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद कुमार देवेश द्वारा किया गया।

अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व पर परिचर्चा

व्याख्यान देते हुए जानकी प्रसाद शर्मा

28 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन परिसर में 'अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व' विषयक परिचर्चा का उद्घाटन प्रख्यात मराठी कवि एवं अनुवादक चंद्रकांत पाटील ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि अनुवाद केवल शब्दों का अनुवाद नहीं, बल्कि शब्दों के साथ जुड़ी एक पूरी संस्कृति का अनुवाद होता है। केवल सृजनात्मक रचनाओं के अनुवाद को ही हम अनुवाद की श्रेणी में रख सकते हैं और यह काम सबसे ज़्यादा चुनौतीपूर्ण होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जिस भाषा से हम अनुवाद कर रहे हैं उस भाषा की संस्कृति की जितनी ज़्यादा जानकारी होगी, अनुवाद उतना ही सुंदर हो सकेगा। शरतचंद्र, प्रेमचंद, मंटो से लेकर अमृता प्रीतम तक, जो हमारे देश की साहित्यिक धरोहर हैं, अनुवाद के कारण ही सार्वजनीन हुए हैं। जैसे पृथ्वी पर वही चीज़ें ज़्यादा समय तक जीवित रहती हैं जो जैविक विविधता से परिपूर्ण होती हैं, उसी तरह वही अनुवाद लंबे समय तक जीवित रहेगा जो देश की भाषायी विविधता को अपने में समेटेगा। परिचर्चा का अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि अनुवाद की प्राचीन परंपरा के कारण ही भारत आज एक राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। बहुभाषी देश में अनुवाद एक ऐसा सेतु है जो लोगों को पास लाता है और 'अन्य' के प्रति समझ और सम्मान को बढ़ाता है। उन्होंने अनुवाद के लिए अंग्रेज़ी पर निर्भरता की बजाय भारतीय भाषाओं में परस्पर अनुवाद पर बल दिया। के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि अनुवाद के माध्यम से विचार, भाव, संवेदनाएँ और एक क्षेत्र की समस्याओं, परिस्थितियों की जानकारी भी दूसरी भाषा में पहुँचती हैं। स्रोत भाषा के साहित्य को अर्थपूर्ण तरीक़े से लक्ष्य भाषा में पहुँचाना अनुवाद का वास्तविक उद्देश्य होता है।

सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पर अवधेश कुमार सिंह के संपादन में प्रकाशित की गई महत्त्वपूर्ण पुस्तक *हिंदी अनुवाद विमर्श* (दो खंड) का विमोचन भी किया गया। अगले सत्र में सुकृता पॉल कुमार की अध्यक्षता में आलोक गुप्त (गुजराती), जानकी प्रसाद शर्मा (उर्दू), प्रवासिनी महाकुड (ओड़िआ), रेखा सेठी (हिंदी) ने अपनी-अपनी भाषाओं में अनुवाद के समय आनेवाली परेशानियों का ज़िक्र किया।

सुकृता पॉल कुमार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि वर्तमान में अनुवादों का चयन बाज़ार के दबाव में हो रहा है, जो कि स्वाभाविक प्रक्रिया नहीं है। अनुवाद की पूरी प्रक्रिया रस्सी पर संतुलन के समान है जहाँ ज़रा-सी भी नज़र चूकने पर अर्थ का अनर्थ हो जाता है। आगे उन्होंने कहा कि अनुवाद एक कला है। अनुवाद री-क्रिएशन के रूप में यथार्थ का पुनर्सृजन करता है। किसी क्षेत्र में वास्तविक यथार्थ को परिवेश और भाषा में पहुँचाने का कार्य कितना जटिल है, यह आप सोच कर देखें।

गुजराती अनुवादक आलोक गुप्त ने कहा कि बाज़ार के दबाव के कारण तुरंत अनुवाद करने की प्रक्रिया बढ़ी है जिसके कारण अनुवाद कर्म को बेहद नुक़सान हो रहा है। क्योंकि भाषा संस्कृति की वाहक होती है अतः हमें अनुवाद के सांस्कृतिक दायित्व को भी समझना ज़रूरी है। जानकी प्रसाद शर्मा ने कहा कि अनुवाद के सभी सिद्धांत तभी काम आ पाते हैं जब अनुवादक की सांस्कृतिक समझ और उसका अनुभव व्यापक होता है। रेखा सेठी ने देश की बहुभाषिकता की ताक़त में कमी आने पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे अनुवाद की सृजनात्मकता पर दूरगामी प्रभाव पड़ेंगे। परिचर्चा का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

'मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना' पर परिचर्चा

(बाएँ से दाएँ) डी. उमापति, अकु श्रीवास्तव, संयुक्ता दासगुप्ता, बलदेव राज गुप्त तथा मधु आचार्य

28 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन परिसर में 'मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना' विषयक परिचर्चा के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात पत्रकार एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के पूर्व अध्यक्ष बल्देव भाई शर्मा थे। अपने उद्घाटन व्याख्यान में उन्होंने कहा कि बिना संवेदनशीलता के की गई पत्रकारिता मानवता के लिए बेहद हानिकारक है। पत्रकारिता में संवेदना होना इसलिए आवश्यक है कि वर्तमान में मीडिया की पहुँच बहुत व्यापक हो गई और उसका तात्कालिक प्रभाव भी बहुत तेज़ी से सामने आता है। उन्होंने हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता के कई उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में पत्रकारिता साहित्य से ही परिष्कृत होकर निकली है अतः वह हमेशा संवेदना से पूर्ण रही है। सत्र के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि टी.वी. पत्रकारिता आने के बाद झूठी तस्वीरों का एक ऐसा सिलसिला शुरू हुआ है, जिससे हमें सतर्क रहने की आवश्यकता है। वर्तमान की इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता को 'इमेज ट्रैप' की संज्ञा देते हुए उन्होंने कहा कि इसे रोकने के लिए हमें शीघ्र ही कुछ करना होगा। परिचर्चा के आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि पत्रकारिता आज हमारी जीवन-शैली में शामिल है और इसके समाज पर व्यापक प्रभाव को देखते हुए ही हमने साहित्योत्सव में मीडिया और साहित्य की दशा-दिशा पर परिचर्चा आरंभ की है। संयुक्ता दासगुप्ता की अध्यक्षता में अगले सत्र में अकु श्रीवास्तव, बलदेवराज गुप्ता, डी. उमापति एवं मधु आचार्य ने अपने विचार व्यक्त किए। अकु श्रीवास्तव ने पत्रकारिता की वर्तमान स्थिति पर टिप्पणी करते हुए कहा कि हमारा पूरा नज़रिया उदारवाद आने के बाद बदल गया है। हम केवल निंदा कर रहे हैं लेकिन कोई समाधान नहीं ढूँढ़ रहे हैं। समाचारों को तुरंत 'ब्रेक' की जल्दी में हम तथ्यों की जाँच भली-भाँति नहीं कर रहे हैं और यही विवाद का कारण है। बलदेवराज गुप्ता ने समाचार पत्रों की बिगड़ती भाषा पर गहरी चिंता जताई। उन्होंने पत्रकारिता-प्रशिक्षण की कमी और वर्तमान में पढ़ाई जा रही पत्रकारिता पर गहरी चिंता व्यक्त की। डी. उमापति ने कन्नड पत्रकारिता में संवेदना के वर्तमान आयामों पर चर्चा की और कहा कि हिंदी में जिस तरह की साहित्यिक परंपरा है वैसी कन्नड में भी है। मधु आचार्य ने समाज और सत्ता के ढाँचे में आए बदलाव की ओर इशारा करते हुए कहा कि इस कारण पूरे समाज की संवेदनाएँ नष्ट हुई हैं। इसका प्रभाव हमारी पत्रकारिता पर भी पड़ा है।

नई फ़सल : अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन

'साहित्योत्सव' के अंतर्गत 29 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन परिसर में 'नई फ़सल : अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन प्रख्यात कन्नड साहित्यकार सिद्धलिंगय्या द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन व्याख्यान में उन्होंने अकादेमी द्वारा युवा लेखकों के लिए चलाई जा रही विभिन्न गतिविधियों के लिए अकादेमी की प्रशंसा की तथा युवाओं से इसका भरपूर लाभ उठाने की अपील की। विशिष्ट अतिथि प्रख्यात असमिया लेखक ध्रुवज्योति

बोरा ने कहा कि आज की बदलती परिस्थितियों में सभी युवा लेखकों को नए, बेहतर और कल्याणकारी समाज के निर्माण और उसके पक्ष में खड़ा होने की आवश्यकता है। उन्होंने भारतीय समाज की बहुसांस्कृतिकी और बहुलतावादी प्रवृत्ति को बनाए रखने के लिए युवा लेखकों को आंदोलनकर्मी की भूमिका निभाने के लिए तैयार रहने का आह्वान किया। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने युवावस्था के दिनों का ज़िक्र करते हुए कहा कि पहचान और उससे जुड़ना किसी भी युवा लेखक के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है। प्रारंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा लेखकों के लिए चलाई जा रही यात्रा अनुदान, नवोदय योजना, युवा पुरस्कार, मुलाक़ात/युवा साहिती आदि कार्यक्रम योजनाओं के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

सम्मिलन का प्रथम सत्र 'मैं क्यों लिखता/ लिखती हूँ?' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात मलयाळम् कथाकार के.पी. रामनुन्नी ने की। इस सत्र में लक्ष्यजित बोरा (असमिया), किंजल जोशी (गुजराती), प्रियंका मिश्रा (मैथिली), मंदाकिनी भट्टाचार्य (अंग्रेज़ी) और श्रीजित पेरुमथचन ने अपनी सृजनात्मकता की प्रेरणा और प्रभावों पर चर्चा की। लक्ष्यजित ने दो कविताओं के माध्यम से अपनी रचनात्मकता के कारणों को बताया। किंजल जोशी ने कहा कि साहित्य मेरा प्रयोजनरहित प्रेम है। प्रियंका मिश्रा ने कहा कि वे स्वयं से साक्षात्कार और समय से संवाद के लिए लिखती हैं। मंदाकिनी भट्टाचार्य ने कहा कि कविता उनके लिए व्यक्तिगत जुनून के स्थान पर सामूहिक यात्रा है। श्रीजित पेरुमथचन ने कहा कि मैं स्वयं की खोज में लिखता हूँ। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में के.पी. रामनुन्नी ने कला के प्रयोजन संबंधी पारंपरिक सवालों और विमर्शों को संदर्भित करते हुए अपनी बात रखी।

द्वितीय सत्र 'लेखन : व्यवसाय या जुनून' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िआ लेखक गौरहरि दास ने की। इस सत्र में मूनिसा असलम दरवेश

व्याख्यान देते हुए ध्रुवज्योति बोरा

(कश्मीरी), रिमी मुतसुद्दी (बाङ्ला) और जी. अखिला (अंग्रेज़ी) ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी वक्ताओं ने देश-विदेश के महान लेखकों/विचारकों की उक्तियों को संदर्भित करते हुए अपनी प्रस्तुतियाँ दीं और कहा कि लेखन केवल और केवल जुनून ही हो सकता है, व्यवसाय कदापि नहीं, एक ऐसा जुनून जो लेखक के ऊपर आजीवन तारी रहता है।

तृतीय सत्र 'मैं और मेरी पीढ़ी का साहित्य' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला कथाकार रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। इस सत्र में नागराज हेत्तुरु (कन्नड), तोंगब्रम अमरजीत सिंह (मणिपुरी) और अंबेश तलवडकर (कोंकणी) ने अपनी-अपनी भाषाओं के समकालीन युवा लेखन परिदृश्य पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में रामकुमार मुखोपाध्याय ने पठित आलेखों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि इन तीन लेखकों के विचारों के माध्यम से हमने प्रायः संपूर्ण भारतीय लेखन के परिदृश्य में परिचय प्राप्त कर लिया है, क्योंकि ये लेखक भारत के तीन कोनों से आए हैं।

चतुर्थ सत्र कहानी-पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता प्रकाश भातंब्रेकर ने की। इस सत्र में क्षीरोद बिहारी बिस्वाल (ओड़िआ), सरोज बाला (डोगरी) तथा रोशनी रोहड़ा (सिंधी) ने अपनी कहानियों के हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए, जिनके क्रमशः शीर्षक ''आदत'', ''आधुनिक सोचों वाला पिता'' तथा ''दावत''। मानुषी (तमिऴ) तथा इंडला चंद्रशेखर (तेलुगु) ने अपनी कहानियों के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए, जिनके क्रमशः शीर्षक थे—''मदर्स लव'' तथा ''टोबैको सीजन''। प्रकाश

भातंब्रेकर ने युवा लेखकों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं।

सम्मिलन का पंचम एवं अंतिम सत्र कविता-पाठ का था, जो प्रख्यात उर्दू शायर शीन काफ़ निज़ाम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में मिहिर चित्रे (अंग्रेज़ी), राजकुमार मिश्र (संस्कृत), स्वप्निल शेळके (मराठी), रीना मेनारिया (राजस्थानी), रोशन राई (नेपाली), महेंद्र कुमार (उर्दू), चंद्रमोहन किस्कू (संताली) एवं मधु राघवेंद्र (अंग्रेज़ी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कविता-पाठ मूल भाषा के साथ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद में हुए। शीन काफ़ निज़ाम ने पठित कविताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी के साथ अपनी कविताएँ भी सुनाईं। सम्मिलन के सत्रों का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया तथा अंत में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ साहित्योत्सव संपन्न हुआ।

आओ कहानी बुनें : बच्चों के लिए कार्यक्रम

साहित्य अकादेमी ने शनिवार, 29 फ़रवरी 2020 को नई दिल्ली में रवींद्र भवन परिसर में बच्चों के लिए एक कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें डी.पी.एस. इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, दिल्ली, कन्नड सीनियर सेकेंडरी स्कूल, लोधी एस्टेट, नई दिल्ली, ब्रह्म शक्ति सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सोनीपत, सर्वोदय बाल विद्यालय, राउस एवेन्यू, दीनदयाल उपाध्याय, नई दिल्ली, द यूनियन एकेडमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजा बाज़ार, नई दिल्ली जैसे विभिन्न स्कूलों के 200 से अधिक छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में कविता प्रतियोगिता और चित्रकारी प्रतियोगिता के बाद कहानी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। तीनों प्रतियोगिताओं के लिए विषय था—'माँ प्रकृति का संरक्षण'। इसके अंतर्गत दो वर्ग रखे गए थे। पहले वर्ग में कक्षा पहली से 7वीं तक के बच्चों ने भाग लिया, दूसरे वर्ग में कक्षा 8वीं से 12वीं

(बाएँ-दाएँ) दीपा अग्रवाल तथा मधु पंत

तक के बच्चों ने भाग लिया। हिंदी और अंग्रेज़ी भाषाओं के प्रत्येक वर्ग में अलग-अलग तीन पुरस्कार दिए गए।

प्रतियोगिता के बाद साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने बच्चों तथा अतिथियों का स्वागत किया। हिंदी की प्रख्यात बाल-लेखिका मधु पंत ने बच्चों को एक गधे की कहानी सुनाई, जो चतुर और बुद्धिमान बनना चाहता था। उन्होंने बच्चों के साथ एक खेल भी

लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते हुए बच्चे

खेला जिसमें बच्चों से उन्होंने पर्यावरण से संबंधित सवाल भी पूछे। प्रख्यात अंग्रेज़ी बाल-लेखिका दीपा अग्रवाल ने अंग्रेज़ी में एक कहानी भी सुनाई, जिसमें जंगल के विभिन्न जीव-जंतुओं के जीवन को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया था। इसमें सभी बच्चों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया और कार्यक्रम का आनंद उठाया।

भारत में प्रकाशन की स्थिति पर परिचर्चा

29 फ़रवरी 2020 को रवींद्र भवन परिसर में आयोजित 'भारत में प्रकाशन की स्थिति' पर आयोजित परिचर्चा का उद्घाटन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष गोविंद प्रसाद शर्मा ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने साहित्यिक पुस्तकों की घटती बिक्री पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसा कई कारणों से हो रहा है, लेकिन प्रमुख कारण है कि हम विद्यालय स्तर पर बच्चों में साहित्य पढ़ने की रुचि विकसित नहीं कर पा रहे हैं। पुस्तकों को आम जन-जीवन से जोड़ने की चुनौती आज प्रमुख है। इसके लिए लेखकों को भी आगे आकर पाठकों को खोजना होगा। एक अन्य कारण के रूप में उन्होंने पुस्तकों के मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया पर भी सवाल उठाए। उन्होंने प्रकाशकों से अनुरोध किया कि वे पुस्तक प्रकाशन को समाज के कल्याण की दृष्टि से देखें।

सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने औपचारिक स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी लगभग 150-200 नई पुस्तकें प्रतिवर्ष प्रकाशित करती है और लगभग 300 पुस्तकों का पुनर्मुद्रण करती है, लेकिन हम भी पुस्तकों की बिक्री में लगातार गिरावट देख रहे हैं। हमें इस चुनौती से मिलकर लड़ना होगा। इसी संदर्भ में इस परिचर्चा का आयोजन किया गया है, जिससे हम एक दूसरे से यह जान सकें कि इस समस्या का निदान कैसे हो सकता है।

प्रथम विचार सत्र निर्मलकांति भट्टाचार्जी के संयोजन में संपन्न हुआ और उसमें कार्तिका वी.के., अदिति माहेश्वरी, प्रीति शिनॉय और पारमिता सत्पथी ने भाग लिया। कार्तिका वी.के. ने कथा साहित्य की वर्तमान प्रकाशन स्थिति पर बात करते हुए कहा कि युवा पीढ़ी की प्राथमिकता में अब पुस्तकें नहीं हैं। हमें नए लेखकों के साथ-साथ नए पाठकों की भी आवश्यकता है और इसके लिए दोनों के बीच एक संवाद आवश्यक है। उन्होंने अनुवाद की बढ़ती संख्या पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि अब यह केवल अंग्रेज़ी से नहीं, बल्कि कई क्षेत्रीय भाषाओं से किया जा रहा है। वाणी प्रकाशन का प्रतिनिधित्व कर रही अदिति माहेश्वरी ने कहा कि दूसरे देशों की तरह हमारे देश में भी इस क्षेत्र में सरकारी सहयोग की आवश्यकता है। जीएसटी के चलते प्रकाशन उद्योग प्रभावित हुआ है। प्रीति शिनॉय ने कहा कि लेखकों को भी पाठकों की वर्तमान रुचि का ध्यान रखते हुए कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि लेखकों को अपने साहित्य का प्रचार-प्रसार का सारा ज़िम्मा सिर्फ़ प्रकाशकों पर ही नहीं छोड़ देना चाहिए, बल्कि अगर वे स्वयं भी इसमें प्रकाशकों का बिना संकोच किए सहयोग करेंगे तो निश्चित रूप से सार्थक परिणाम दिखेंगे, और उन्होंने अपने बेस्टसेलर लेखक की छवि को प्रमाण के रूप में ध्यान में रखने की अपेक्षा की।

ओड़िआ लेखिका पारमिता सत्पथी ने कहा कि ओड़िआ लेखकों और अनुवादकों को रॉयल्टी देते वक़्त भी प्रकाशकों को जीएसटी देना पड़ता है, जिसका प्रभाव प्रकाशन पर पड़ता है, और प्रकाशक यह राशि लेखक और अनुवादक की रॉयल्टी से ले लेते हैं, यह चिंतनीय है। अपने वक्तव्य में निर्मलकांति भट्टाचार्जी ने कहा कि पाठ्य पुस्तकों के प्रकाशन में भी यदि साहित्यिक प्रकाशकों से सहयोग लिया जाए तो इस क्षेत्र में आ रही गिरावट को रोका जा सकता है। उन्होंने भारतीय भाषाओं के अनुवाद को ज़्यादा प्रकाशित करने की अपील की।

द्वितीय विचार सत्र प्रख्यात कवि अरुण कमल के संयोजन में संपन्न हुआ, जिसमें आलोक श्रीवास्तव एवं अरुंधति सुब्रह्मण्यम ने कविता प्रकाशन की वर्तमान

स्थिति पर बातचीत की। आलोक श्रीवास्तव ने कविता के महत्त्व पर टिप्पणी करते हुए कहा कि कविता जीवन और समाज की आवश्यकता है और यह हमेशा बनी रहेगी। कविता पुस्तकों की निरंतर माँग यह प्रदर्शित करती है कि हमारा समाज अभी जीवित है। अरुंधति सुब्रह्मण्यम ने कहा कि सोशल मीडिया के प्रति बढ़ती रुचि के कारण लेखकों/कवियों ने दूसरों की रचनाएँ पढ़ना बंद कर दिया है, जो कि चिंताजनक है। सत्र के संयोजक अरुण कमल ने कहा कि कविता हाल के वर्षों में ज़्यादा लोकतांत्रिक हुई है। कोई भी समाज तभी तक जीवित रहेगा जब तक उसके लोग कविता लिखते और पढ़ते रहेंगे। उन्होंने मलयाळम्, मराठी एवं बाङ्ला में कविता की अच्छी बिक्री का उल्लेख करते हुए कहा कि पंजाबी, उर्दू एवं ओड़िआ में कविता की बिक्री कम हुई है। अंत में श्रोताओं द्वारा पूछे गए सवालों के जवाब भी प्रतिभागियों द्वारा दिए गए। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2018 अर्पण समारोह का दृश्य

साहित्य अकादेमी जो भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है ने 14 जून 2019 को अगरतला के सुकांतो अकादेमी सभागार में एक शानदार समारोह में वर्ष 2018 के लिए अपने अनुवाद पुरस्कार प्रदान किए। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने मानव जीवन में अनुवाद के महत्त्व पर चर्चा की तथा बताया कि किस प्रकार अनुवाद ने दुनियाभर के लोगों के क्षितिज को विस्तार प्रदान किया है तथा अनुवाद किस प्रकार विशाल भारत के विभिन्न समुदायों के एकीकरण में मदद करता है। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अनुवाद को रचनात्मक प्रक्रिया तथा अनुवाद के पश्चिमी कसौटियों से दूर जाने की आवश्यकता पर चर्चा की। साहित्य अकादेमी के सचिव ने प्रशस्ति आलेख पढ़कर सुनाया तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष ने 21 चयनित अनुवादकों को अनुवाद पुरस्कार प्रदान किए, तीन अनुवादक विभिन्न कारणों से समारोह में नहीं आ सके। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में विशिष्ट कवि और विद्वान श्री हर प्रसाद दास ने पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए भारतीय अनुवाद सिद्धांत विकसित करने की आवश्यकता पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने डॉ. कंबार से एक राष्ट्रीय अनुवाद केंद्र बनाने की अपील की जो सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद प्रक्रिया में मदद करेगा और अकादेमी से संयुक्त राष्ट्र की तर्ज पर भारतीय भाषाओं के लिए अनुवादकों की राष्ट्रीय रजिस्ट्री तैयार करने की भी अपील की। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने समापन व्याख्यान में पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और न केवल साहित्यिक परिवेश में बल्कि रोज़मर्रा के जीवन में भी अनुवाद के मूल्य और सभी भाषाओं में अनुवादकों को बढ़ावा देने के महत्त्व पर भी चर्चा की। के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया तथा कार्यक्रम के आयोजन में अकादेमी के साथ सहयोग करने के लिए स्थानीय अधिकारियों को भी धन्यवाद दिया।

अभिव्यक्ति

15-16 जून 2019, अगरतला

साहित्य अकादेमी ने अनुवाद पुरस्कार अर्पण के दौरान 15-16 जून 2019 को अगरतला में 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने जनजातीय तथा अलिखित भाषाओं सहित समस्त भारतीय भाषाओं में लेखकों द्वारा अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों को प्रोत्साहित करने के लिए साहित्य अकादेमी के विभिन्न प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के लेखकों तथा कवियों को बढ़ावा देने के लिए साहित्य अकादेमी के महत्त्वपूर्ण केंद्रबिंदुओं पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अभिव्यक्ति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए बताया कि यह न केवल साहित्य अकादेमी बल्कि समस्त साहित्यिक एवं कला संगठनों को भारतीय विचारों के संवर्धन के लिए एवं लेखकों तथा कलाकारों की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है। अपने उद्घाटन भाषण में हिंदी के प्रख्यात लेखक और विद्वान गोविंद मिश्र ने पूरे भारत में साहित्य को बढ़ावा देने तथा अनुवाद के माध्यम से भारत की विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं को एकजुट करने हेतु साहित्य अकादेमी के कार्यों की सराहना की। उन्होंने अभिव्यक्ति कार्यक्रम से पहले होने वाले अनुवादक सम्मिलन पर प्रकाश डाला और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम देश की साहित्यिक परंपराओं को एकीकृत करते हैं तथा आपसी संबंधों को काफी आगे तक ले जाते हैं। अपने समापन भाषण में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने विगत वर्षों में किए गए अभिव्यक्ति कार्यक्रम के प्रभाव की चर्चा की और प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दीं। प्रथम सत्र कविता-पाठ को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात अंग्रेज़ी कवि रोबिन नांगोम ने की। नौ प्रख्यात कवियों—समीर तांती, अंजली बसुमतारी, विजय वर्मा, अश्विनी कुमार, बोधिसत्व, वाद्रेवु चिन्नवीरभद्रडु, दर्शन बुट्टर, नाडिया मसंद तथा विशाल खुल्लर ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। द्वितीय सत्र का विषय था—'अनुवाद : संस्कृतियों को समंजित करते हुए'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात विद्वान हरीश त्रिवेदी ने की। इस सत्र में चार प्रख्यात विद्वानों—आलोक गुप्ता, मीना टी. पिल्लई, जय मित्रा तथा मालचंद तिवाड़ी ने सहभागिता की तथा अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किए कि किस प्रकार अनुवाद न केवल किसी के क्षितिज तथा ज्ञान को विस्तार प्रदान करता है बल्कि विभिन्न मानस, संस्कृतियों तथा परंपराओं को एकजुट भी करता है। तृतीय सत्र कहानी-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक और विद्वान सरोज चौधरी की। इस सत्र में तीन प्रख्यात कथाकारों मोगल्ली गणेश, रहीम रहबर तथा शिल्पा कांबळे ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। चतुर्थ सत्र कविता-पाठ का था। इस सत्र की अध्यक्षता माधव कौशिक ने की। इस सत्र में दस प्रख्यात कवियों मेल्विन रोड्रिग्स, सलमा, प्रदीप मजूमदार, अशोक कुमार मेहता, इंद्र बहादुर गुरुंग, प्रीतिधारा सामल, परमानंद झा, गोबिंदचंद्र माझी, एस. गंभिनी तथा थाईलो मोग ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अगरतला के निकोल के निदेशक चंद्रकांत मुरासिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। प्रथम तीन सत्रों का संयोजन साहित्य अकादेमी के उपसचिव एस. राजमोहन तथा अंतिम सत्र का संयोजन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

युवा पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह

8 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

पुरस्कार विजेताओं के साथ चंद्रशेखर कंबार, माधव कौशिक तथा के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी जो भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है ने 8 सितंबर 2019 को असम के डिब्रूगढ़ स्थित लालचंद कनोई मेमोरियल सभागार, एच.एस. कनोई कॉलेज में वर्ष 2019 के लिए 23 युवा लेखकों को अपना युवा पुरस्कार प्रदान किया। कार्यक्रम की शुरुआत भूपेन हाज़रिका के 93वें जन्मदिन के अवसर पर उनके प्रसिद्ध गीत 'बिस्तिर्नो पारोरे' से हुई।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा अंग्रेज़ी के प्रख्यात विद्वान एवं लेखक अमरेश दत्ता, सम्मानित अतिथियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। अपने स्वागत भाषण में सचिव साहित्य अकादेमी ने राष्ट्र की साहित्यिक संपदा के विकास में युवा लेखकों की भूमिका प्रतिपादित की। उन्होंने बताया कि साहित्य अकादेमी किस प्रकार विभिन्न भाषाओं और विभिन्न शैलियों में लिखने वाले युवा लेखकों को प्रोत्साहित तथा उन्हें मान्यता प्रदान करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। युवा पुरस्कार 23 भारतीय भाषाओं की विभिन्न विधाओं यथा—असमिया में संजीब पॉल डेका को उनके कहानी-संग्रह *एइपिने कि आसे?* बाङ्ला में मौमिता मैती को उनके उपन्यास *कुंतल फिरे आसे*, बोडो में रुजाब मुसाहारि को उनके कविता-संग्रह *सानस्रि आरो मोन्दांथिनि मोखां*, डोगरी में सुनील कुमार को उनके कहानी-संग्रह *सीस*, अंग्रेज़ी में तनुज सोलंकी को उनके कहानी-संग्रह *दीवाली इन मुज़फ्फ़रनगर*, गुजराती में अजय सोनी को उनके कहानी-संग्रह *रेतीनो माणस*, हिंदी में अनुज लुगुन को उनके कविता-संग्रह *बाघ और सुगना मुंडा की बेटी*, कन्नड में फकीर (श्रीधर बनवासी जी.सी.) को उनके उपन्यास *बेरु*, कश्मीरी में सागर नज़ीर को उनके कविता-संग्रह *थर आंगनच*, कोंकणी में हेमंत अय्या को उनके कहानी-संग्रह *कथाकार*, मलयाळम् में अनुजा अकतूट को उनके कविता-संग्रह *अम्मा उरंगुन्निल्ल*, मणिपुरी में जितेन ओइनाम्बा को उनके कविता-संग्रह *कनवासता तारकपा पिराङना*, मराठी में सुशील कुमार भागवत शिंदे को उनके कविता-संग्रह *शहर आत्महत्या करायचं म्हणतंय...!* नेपाली में कर्ण विरह को उनके कविता-संग्रह *चर्किएको भुइँ*, ओड़िआ में शिशिर बेहेरा को उनके साहित्यिक समालोचना *बिमुग्ध उच्चारण*, पंजाबी में यादविंदर सिंह संधू को उनके उपन्यास *वकत बीतिया नहीं*, राजस्थानी में कीर्ति परिहार को उनके

कहानी-संग्रह *सगळां रौ सीर*, संस्कृत में युवराज भट्टराई को उनके कविता-संग्रह *वाग्विलासिनी*, संताली भाषा में गूहिराम किस्कू को उनके कविता-संग्रह *जारपि दिशमरिन मानमि*, सिंधी में किरण परयाणी 'अनमोल' को उनके कविता-संग्रह *अनमोल रिश्ते*, तमिळ में सबरीनाथन को उनके कविता-संग्रह *वाळ*, तेलुगु में गड्डम मोहन राव को उनके उपन्यास *कोंगवलु कत्ति* तथा उर्दू में सलमान अब्दुस समद को उनके उपन्यास *लफ़्ज़ों का लहू* के लिए क्रमशः प्रदान किए गए।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए सभी युवा पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा मंच पर बैठे पुरस्कार विजेताओं की मंडली की तुलना मिनी इंडिया से की। उन्होंने कहा कि हालांकि सभी लेखक अलग-अलग पेशे से हैं जैसे डॉक्टर, वैज्ञानिक, बैंकर, शिक्षक आदि, लेकिन जब लेखन की बात आती है तो उनमें एक ही जज़्बा होता है। अंत में उन्होंने कहा कि इस राष्ट्र के युवाओं का साहित्य के क्षेत्र में सुनहरा भविष्य है।

लेखक सम्मिलन

9 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

व्याख्यान देते हुए अनुजा अकतूट

9 सितंबर 2019 को असम के डिब्रूगढ़ स्थित इंदिरा मिरी कांफ्रेंस हॉल में 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की और युवा पुरस्कार विजेताओं ने अपने लेखकीय विचारों और अनुभवों को साझा किया।

असमिया लेखक संजीब पॉल डेका ने शुरुआती वर्षों में उनके सामने आनेवाली कठिनाइयों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि बचपन उनके लिए कभी 'सुनहरा' नहीं था—तथाकथित सरल गाँव के जीवन में उन्होंने गरीबी, पदानुक्रम, शोषण, समलैंगिकता और महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा को बारीकी से देखा। उन्होंने उल्फा, सल्फा और लिंकमैन की दुखद घटनाओं को भी देखा। उन्होंने खाली पड़े गाँवों को भी देखा क्योंकि युवाओं को निजी कंपनियों में नौकरी की तलाश में या तो गुवाहाटी या गुजरात की ओर पलायन करना पड़ता था। लेकिन वह अपने बचपन के दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि वह ऐसा समय था जिसने उन्हें कहानी कहने की बहुअभिव्यक्तियों की ओर प्रेरित किया, एक लेखक के रूप में वे ज़्यादातर जीवंत लोक आख्यानों के माध्यम से अभिव्यक्ति किया करते थे जो उनके लिए एक मज़बूत प्रेरणा स्रोत बन गया।

बाङ्ला लेखिका मौमिता मैती ने कहा कि उनका मानना है कि कलम तलवार से भी ताक़तवर है। उन्हें बचपन से पढ़ाई बहुत पसंद है तथा वे भी स्वयं को अपनी भूमि और अपनी भाषा से गहराई से जुड़ा हुआ महसूस करती हैं। एक बच्चे के रूप में उन्होंने अपनी उम्र के एक लड़के को एक चाय की दुकान पर काम करते देखा, वह उस स्थिति विरोध करना चाहती थीं। और उनके विरोध करने का तरीक़ा उस घटना को एक छोटी-सी नोटबुक में कुछ पंक्तियों के रूप में लिखना था। अपने कॉलेज के दिनों के दौरान, उन्होंने उन विभिन्न राज्यों, संस्कृति और पृष्ठभूमि के छात्रों और डॉक्टरों जिनसे वह मिली थीं, की कहानियाँ एकत्रित करना शुरू कर दीं। कॉलेज की शिक्षा के दौरान वह नक्सल आंदोलन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्र उत्तर बंगाल में रहीं। उन्होंने कहानियाँ सुनना और आंदोलन से संबंधित घटनाओं को पढ़ना जारी रखा। इस प्रकार *कुंतल फिरे आसे* की रचना की तथा वर्ष 2016 में वह प्रकाशित हुआ।

बोडो लेखक रुजाब मुसाहारी ने साहित्य अकादेमी को यह पुरस्कार प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया। उनके लिए यह उनके जीवन में नया मोड़ है और इसने उन्हें अपार खुशी, प्रेरणा और बोडो भाषा के प्रति ज़िम्मेदारी का भाव भी दिया है। उन्होंने बोडो भाषा के विकास के लिए अथक लेखन और काम करने का भी वादा किया।

अंग्रेज़ी लेखक तनुज सोलंकी ने कहा, ''हमें ख़ुद से पूछना होगा कि लेखक की क्या भूमिका है और क्या होने वाला है? हम शायद ऐसे दस्तावेज़ हैं जिन पर अंत समय तक अपने निशान बनाने की ज़िम्मेदारी है, हाँ, अंत समय तक। दुनिया ख़त्म हो रही है, और हम इसे ख़त्म होता देख रहे हैं। यद्यपि, मैं ग़लत साबित होने पर ख़ुश होऊँगा। लेकिन क्या दुनिया के अंत का मतलब है कि हम लेखकों द्वारा पीछे छोड़े गए दस्तावेज़ों को क्या कोई नहीं पढ़ेगा, या वे भविष्य की पीढ़ी के जीवित बचे लोगों द्वारा पढ़े जाएँगे, जो निःसंदेह हमारे समय को घृणा की दृष्टि के साथ देखेंगे। हमें बाद की संभावनाओं को देखते हुए कार्य करना होगा, जिसकी एक धूमिल-सी आशा है। और हमें उन भावी पाठकों को दिखाना होगा कि हमने वह कहने की कोशिश की जिसे कहने की आवश्यकता थी, कि हमने सत्ता से सच बोलने का प्रयास किया, कि हमने अपने समय की परस्थितियों को गंभीरता से लिया, कि लड़ने के लिए बहुत सारी लड़ाइयाँ थीं और हमने उनमें से कुछ लड़ाई लड़ी भी। कि अगर इतिहास हास्यास्पद होने के एक अंतिम चरण से गुज़र कर चला गया, फिर भी हमने उसे एक अर्थपूर्ण आकार देने का प्रयास किया।''

कन्नड लेखक श्रीधर बनवासी जी.सी. 'फकीर' अपनी भाषा में नए घटनाक्रमों तथा कन्नड साहित्य के इतिहास के उत्सुक पर्यवेक्षक हैं। जैसा कि वह एक बहुत समृद्ध गुणवत्ता वाला कार्य करना चाहते थे, इसलिए वे वामपंथी या दक्षिणपंथी समूहों में शामिल नहीं हुए, बल्कि उन्होंने आध्यात्मिक गुरु रामकृष्ण परमहंस की शिक्षाओं का पालन किया, जो कहते हैं, ''जिस प्रकार एक मधुमक्खी समस्त फूलों से अमृत एकत्रित करके छत्ता बनाती है उसी प्रकार से मनुष्य को समाज में सबको प्रेम तथा उनका सम्मान करना चाहिए।'' इससे उन्हें यथार्थवादी साहित्य लिखने की प्रेरणा मिली। उन्होंने साहित्य की ऐसी दुनिया बनाने की ज़िम्मेदारी स्वयं पर ली, जहाँ एकात्मता की भावना मौजूद है। आप कन्नड साहित्य के दिग्गजों – कुवेम्पू, डीवीजी, शिवराम कारंथ, एस.एल. भैरप्पा, तेजस्वी, डॉ. चंद्रशेखर कंबार, प्रो. वीरभद्र के साहित्यिक कार्यों से प्रभावित हैं।

ओड़िआ लेखक शिशिर बेहेरा ने अपने ग्रैंडअंकल कुंजबन पाल के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जिन्होंने उनके भय और निराशावाद को दूर किया। वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने मात्र स्कूली पढ़ाई की, फिर भी वे प्राचीन और मध्ययुगीन ओड़िआ साहित्य के प्रमुख कार्यों से भलीभाँति परिचित थे। ओड़िआ साहित्य के अनमोल ख़ज़ाने से मिलवाने के अलावा, उनके ग्रैंडअंकल ने उन्हें एक महत्त्वपूर्ण सबक सिखाया, जिसे ख़ुद महसूस भी किया कि मौखिक साहित्यिक परंपरा रोज़मर्रा के जीवन का एक अभिन्न अंग है और यह कि साहित्य की अविश्वसनीय स्थानों पर पनपने की सबसे अधिक संभावना होती है। उन्होंने आगे कहा कि निबंध कथेतर है यद्यपि कहानी कल्पना है, जो विचारों को व्यक्त करने के लिए अपेक्षाकृत कम लेकिन शक्तिशाली रूप है। ओडिशा और अन्य जगहों के साहित्यिक परिवेश में, निबंध लेखन की परंपरा पर वर्तमान विद्वानों द्वारा अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

राजस्थानी लेखिका कीर्ति परिहार ने एक लेखक के रूप में अपनी यात्रा सुनाई। उनके समाज में एक लड़की के लिए हाई स्कूल के बाद अपनी पढ़ाई जारी रखना कितना मुश्किल था। लेकिन उनके पिता ने न केवल उन्हें अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए प्रोत्साहित किया बल्कि उन्हें लेखक बनने के लिए प्रेरित भी किया। कई अवरोधों के बावजूद वह अपने तरीके से लड़कर एक लेखक बनने में सफल हो पाईं।

तमिळ लेखक सबरीनाथन ने कहा कि पूरी दुनिया में संयोजक प्रवृत्ति के लोग पक्षपातपूर्ण सिरों को नष्ट करने के लिए विभाजित और अलग-अलग हैं। अलगाव

का उपयोग लोगों को अलग-थलग करने और उनकी रचनात्मक स्वतंत्रता को दबाने के लिए किया जाता है। चूँकि हमारे देश के साथ-साथ दुनिया भर में भी ऐसा ही है, इसलिए एक लेखक की भूमिका अधिक ज़िम्मेदार और अनिवार्य रूप से दुरूह हो गई है। कलाकार एक विस्मयकारी जीव है, जो कई बार किसी भी प्रकार की ज़िम्मेदारियों से मुक्त हो जाता है और कई बार पीड़ादायक स्थिति में होने के कारण ख़ुद को किसी या सभी स्थितियों के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है। लेकिन जब आप संस्कृति के दायरे में हस्तक्षेप करने की कोशिश करते हैं जो उसका कार्य करने का क्षेत्र है, तो वह परेशान हो जाता है और यह समझ में आता है। उनका दृढ़ विश्वास है कि जब तक हमारे मतभेदों और विशिष्टता का सम्मान और संरक्षण किया जाता है, तब तक इस भूमि की आत्मा सकुशल और सुंदर बनी रहेगी।

तेलुगु लेखक गड्डम मोहन राव ने 'चिंदु यक्षगण' ग्रामीण लोक कला-रूप और पूरे चिंदू कलाकारों की ओर से इस दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। वह इस बात पर बहुत गौरवान्वित और हर्षित थे कि उनकी पुस्तक युवा पुरस्कार प्राप्त करने वाला प्रथम तेलुगु उपन्यास है। उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से चिंदू कलाकारों की मुश्किलों को उजागर किया है।

माधव कौशिक ने अपने समापन भाषण में युवा लेखकों के प्रयासों की सराहना की और उन्हें लेखक के रूप में समाज के प्रति अधिक ज़िम्मेदार होने के लिए प्रोत्साहित किया।

अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन

9-10 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

साहित्य अकादेमी ने विभिन्न भाषाओं में लिखने वाले देशभर के युवा लेखकों और कवियों को प्रोत्साहित करने के लिए 'आविष्कार' कार्यक्रम के अंतर्गत एक अनूठे कार्यक्रम 'अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया। अकादेमी द्वारा पहली बार असम के डिब्रूगढ़ में 9 से 10 सितंबर 2019 तक इंदिरा मिरी कांफ्रेंस हॉल, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डिब्रूगढ़, असम में इसका आयोजन किया गया। महोत्सव में चार सत्र थे जहाँ लेखकों और कवियों ने अपनी कविताएँ, कहानियाँ प्रस्तुत कीं और अपने लेखकीय अनुभवों को भी साझा किया।

उद्घाटन सत्र 9 सितंबर 2019 को आरंभ हुआ। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने समस्त गणमान्य लोगों का स्वागत किया। इस सत्र का उद्घाटन प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका नमिता गोखले ने किया, और अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक ध्रुवज्योति बोरा, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक भी सत्र में उपस्थित थे। नमिता गोखले ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि भारत का भाषायी और साहित्यिक मानचित्र, इसकी सीमा, विविधता और परंपरा तथा इतिहास की छाप पूर्णतः आकर्षक है। हम बहुभाषी हैं 'एक बहुभाषी : संस्कृति'। भाषायी समूह और साहित्यिक परंपराएँ आपस में टकरा गई हैं और अभी सब कुछ पेचीदा-सा है। साहित्य अकादेमी ने इन पुरस्कारों के माध्यम से बहुभाषी साहित्यिक प्रशंसा का एक अनूठा मॉडल तैयार किया है, जिससे अन्य यूरोपीय देश भी संघर्ष कर रहे हैं, लोग नहीं जानते कि हम भारत में समस्त बहुभाषियों का सम्मान किस प्रकार करते हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष ने अपनी कविताएँ सुनाकर अपना अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। समापन भाषण साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष ने प्रस्तुत किया।

'कवि सम्मिलन' का प्रथम सत्र दोपहर 3.45 बजे आरंभ हुआ जिसकी अध्यक्षता अंग्रेज़ी के प्रख्यात लेखक एवं कवि रिजियो योहानन राज ने की। कमल कुमार तांती (असमिया), मेहुल देवकला (गुजराती), प्रांजल धर (हिंदी), सी. दीपू सिंह (मणिपुरी), एस. प्रियसखा (ओडिआ), पी. विष्णु कुमार (तमिऴ) तथा ब्रजेश अंबर (उर्दू) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

10 सितंबर 2019 को कार्यक्रम जारी रहा और इसमें तीन सत्र हुए। 'मेरी साहित्यिक प्रेरणा' विषयक द्वितीय सत्र प्रातः 10.00 बजे आरंभ हुआ। इसकी अध्यक्षता अनीता अग्निहोत्री ने की। मौसमी कंदाली (असमिया), बिनोद घोसाल (बाङ्ला), सूफ़िया ख़ातून (अंग्रेज़ी), ए.अनघा कोलाथ (मलयाळम्) तथा फेलिक्स डिसूजा (मराठी) ने अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बताया।

तृतीय सत्र 'कहानी-पाठ' का था, जो पूर्वाह्न 11.45 बजे आरंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता सत्यकाम बरठाकुर ने की। मृणाल कलिता (असमिया), आनंद कुंचानूर (कन्नड), दीपराज सतरडेकर (कोंकणी) तथा मदन गोपाल लड्ढा (राजस्थानी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

भोजन के बाद चतुर्थ व अंतिम सत्र 'कवि सम्मिलन' का था, इसकी अध्यक्षता असमिया परामर्श मंडल की पूर्व सदस्य करबी डेका हाज़रिका ने की। कौशिक किसलय (असमिया), बिजित गयारी (बोडो), रोशन बराल (डोगरी), प्रवीण कश्यप (मैथिली), संजोक खवास (नेपाली), गगन दीप शर्मा (पंजाबी), अनिल प्रताप गिरि (संस्कृत), अंपा मरांडी (संताली), मनोज चावला (सिंधी) तथा इब्राहीम निर्गुण (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया।

कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सत्र समाप्त हुआ। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी ने 8 से 10 सितंबर 2019 तक प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक पुस्तक प्रदर्शनी-सह-बिक्री का भी आयोजन किया, जहाँ पुस्तकों पर आकर्षक छूट दी गई थी।

बाल साहित्य पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह

14 नवंबर 2019, मयलापोर, चेन्नै

पुरस्कार विजेताओं के साथ चंद्रशेखर कंबार, के. श्रीनिवासराव, माधव कौशिक तथा मुख्य अतिथि वैरामुत्तु

साहित्य अकादेमी ने 14 नवंबर 2019 को भारतीय विद्या भवन, मयलापोर, चेन्नै में बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत कुमारी शारदा द्वारा गाए गए, *द भारत* मंगलाचरण गीत से हुई। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त विभिन्न भाषाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाले बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं का स्वागत किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि बच्चे राष्ट्र की सबसे बड़ी संपदा हैं। ध्यान देनेवाली ख़ास बात यह है कि बाल साहित्य नैतिकतावादी नहीं होना चाहिए वरन् उसे मस्ती, आनंद तथा उत्सव पर ध्यान देनेवाला होना चाहिए। साहित्य अकादेमी बाल साहित्य के प्रकाशन के लिए एक मंच प्रदान करती है और बाल साहित्य के लेखकों में से सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को प्रोत्साहित भी करती है। हालांकि हमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और स्मार्ट फोन से बच्चों का ध्यान छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिए, हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हैरीपॉटर और टिनटिन का अभी भी उनकी कल्पनाओं पर क़ब्ज़ा है, बाल साहित्य बच्चों के जीवन को रोशन करने का प्रयास करता है। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार एवं साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक, प्रख्यात तमिळ कवि वैरामुत्तु तथा चेन्नई की साहित्यिक बिरादरी के रचनाकारों का स्वागत किया, जो भारी संख्या में इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उल्लेख किया कि बच्चे वे बीज हैं जिनमें से भविष्य के पेड़ अंकुरित होते हैं। बच्चे न केवल एक राष्ट्र के बल्कि पृथ्वी पर समस्त राष्ट्रों की सबसे बड़ी संपत्ति होते हैं। बच्चे संपत्ति हैं क्योंकि वे विकास का सूत्रपात करते हैं। न केवल वे विकास के अग्रदूत हैं, बल्कि वे संवृद्धि और विकास के निर्णायक उत्प्रेरक हैं। माधव कौशिक ने विजेताओं को माला, शॉल व गुलदस्ते भेंट कर सम्मानित किया। कंबार ने 21 पुरस्कार विजेताओं में से प्रत्येक को ताम्र फलक तथा 50000/- रुपए की पुरस्कार राशि प्रदान की।

प्रख्यात तमिळ कवि वैरामुत्तु ने 24 भाषाओं को जोड़ने और एक सांस्कृतिक समृद्ध राष्ट्र के निर्माण, बाल साहित्य पुरस्कार के

माध्यम से युवा मन का विकास करने में साहित्य अकादेमी की सेवा की प्रशंसा की। उन्होंने उल्लेख किया कि धर्मों या नदियों को एकजुट करना बहुत मुश्किल है लेकिन भारत के कल्याण के लिए बेहतर तरीक़ा साहित्य के माध्यम से मन को जोड़ना है। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी क्योंकि उन्होंने बाल मनोविज्ञान, छोटे बच्चों की कोमल भावनाओं को समझा है और विभिन्न तरीकों से बच्चों के प्रति बड़ों की हिंसा का विरोध किया है। बच्चों ने जो पहला संगीत सुना वह है उनकी मातृभाषा, गीत, शब्द और मातृभाषा की मधुरध्वनियाँ। उन्होंने साहित्यकार अजहा की एक कविता का हवाला दिया। उन्होंने कहा कि तमिळ के अग्रणी बाल लेखक वल्लीयप्पा मस्ती के साथ गणित सिखाते हैं। उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि शिव का शीफायर पटाखा फैक्ट्रियों, कश्मीरी कालीन कारखानों और दिल्ली और महानगरों की चाय की दुकानों और अलीगढ़ आदि की ताला इकाइयों में मेहनत करके बच्चे अपना बेहतरीन समय और प्राथमिक शिक्षा खो रहे हैं। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि बच्चे तितलियों, पक्षियों और घरेलू जानवरों के साथ बात करें और अपने बचपन का आनंद लें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से अनुरोध किया कि वे न केवल पढ़ने के लिए बल्कि अच्छे गीतों और चित्रों को देखने के लिए भी बच्चों के पुस्तकालयों की स्थापना करें और बच्चों के लिए फिल्में भी उपलब्ध होनी चाहिए।

उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने देश के दूरस्थानों से यात्रा करके आए पुरस्कार विजेताओं के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने उल्लेख किया कि साहित्य को समझना और उसकी सराहना की जानी चाहिए। बहुभाषी भारत की विविधता की सराहना की जानी चाहिए तथा एस. राधाकृष्णन के संदेश 'भारतीय साहित्य एक है हालाँकि यह कई भाषाओं में लिखा जाता है' उद्धृत किया जाना चाहिए। उन्होंने बाल लेखकों विशेषरूप से पुरस्कार विजेताओं को धन्यवाद दिया जो वास्तविक दूरदर्शी हैं तथा जिन्होंने बिना किसी ग्लैमर या प्रसिद्धि के अपनी मेहनत के बल पर अपना नाम कमाया। उन्होंने इस भव्य समारोह को सफल बनाने तथा बाल साहित्य के लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, प्रेस, कवियों, लेखकों एवं चेन्नई के बाल साहित्य प्रेमियों का आभार व्यक्त किया।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2019, चेन्नै

व्याख्यान देते हुए माधव कौशिक

साहित्य अकादेमी ने 15 नवंबर 2019 को भारतीय विद्या भवन, चेन्नै में बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं के लिए 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रख्यात हिंदी कवि, विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने 'लेखक सम्मिलन' की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन्होंने उन पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी जो बच्चों के लिए कविताएँ, गीत तथा कहानियाँ लिखने, भाषा को सरल बनाने, नई कहानी की खोज करने तथा बच्चों की कल्पना पर क़ब्ज़ा करने के लिए काफी वर्षों से मेहनत कर रहे हैं। उन्होंने महान कवि डब्ल्यू.एच. ऑडेल के हवाले से कहा, लेखक स्व-निर्मित व्यक्ति होते हैं जो तत्काल प्रोत्साहन, त्वरित प्रसिद्धि या अन्य संभावनाओं की उम्मीद नहीं करते हैं। उन्होंने कहा कि वह वैज्ञानिकों, शिक्षकों, प्रबंधकों, पुरातत्व विज्ञानियों, पर्यावरण विशेषज्ञों और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न लोगों द्वारा बच्चों के लिए उत्सुकता से लिखने के लिए बहुत ख़ुश हैं। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को आमंत्रित किया कि बाल लेखन से संबंधित अपने रचनात्मक अनुभवों को साहित्यप्रेमियों से साझा करें।

असमिया पुरस्कार विजेता स्वामिम नाछरिन ने महसूस किया कि लेखक अपनी कल्पना की मदद से बच्चों के लिए अपने साहित्य में एक नया स्वस्थ वातावरण तैयार करते हैं।

बोडो पुरस्कार विजेता लक्ष्मीनाथ ब्रह्म ने कहा कि बाल साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह भाषा कौशल के विकास को बढ़ाता है जो सीखने की नींव प्रदान करता है।

डोगरी पुरस्कार विजेता विजय शर्मा ने महसूस किया कि कविताओं से बच्चों को बहुत आनंद प्राप्त होता है तथा उनकी कविताएँ देशभक्ति, पर्यावरण संरक्षण और आधुनिक विचारों की एक विस्तृत शृंखला पर केंद्रित हैं और ऐसे विचार सरल और स्पष्ट भाषा में होने चाहिए ताकि बच्चे कविताओं से जुड़ सकें।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता देविका कारिअप्पा ने कहा कि जो कहानियाँ रहस्य, रोमांच, रोमांस, त्रासदी, जीत, धैर्य से भरी होती हैं—उनका मानना है की वे सब बच्चों की कल्पना के अनुरूप होती हैं।

गुजराती पुरस्कार विजेता कुमारपाल बालाभाई देसाई ने कहा कि उन्होंने बाल साहित्य के लिए कई दशक समर्पित किए तथा उन्होंने जीवनी, उपन्यासों और कहानियों में विशेषज्ञता प्राप्त की। उन्होंने बताया कि वह नैतिक मूल्यों को जाग्रत करना चाहते हैं और उनकी रचनाएँ समाज को समृद्ध बनाने पर केंद्रित होती हैं।

हिंदी पुरस्कार विजेता गोविंद शर्मा ने उल्लेख किया कि कहानियों में अधिक अपील है तथा कविताएँ उनके बाद में आती हैं। बच्चों की रचनाओं की शुरुआत पत्रिकाओं तथा अख़बारों में किसानों, जवानों और भारत की रोज़मर्रा की ज़िंदगी की बातों से होती है। लेखकों की आधुनिकता और उनके द्वारा की गई कड़ी मेहनत उल्लेखनीय है।

कन्नड पुरस्कार विजेता चंद्रकांत करदळ्ळी ने कहा कि वे कल्याण कर्नाटक का अभिवादन करते हैं जो औपचारिक रूप से पहले हैदराबाद, कर्नाटक था तथा वह इस बात से प्रसन्न हैं कि उस क्षेत्र के बाल लेखकों को साहित्य अकादेमी द्वारा सम्मानित किया गया। उनकी पुस्तक एक जंगल के सपने पर केंद्रित है जिसमें दस चित्रों और दस गीतों के साथ मोर, पक्षी, आकाश और हर जगह चमचमाती प्रकृति को चित्रित किया गया है।

कोंकणी पुरस्कार विजेता राजश्री बांदोडकर कारपुरकार ने बताया कि अंग्रेज़ी में भौतिकी पढ़ाना भार लगता था किंतु बाद में जब उन्होंने बच्चों के लिए भौतिकी के विषयों पर कोंकणी में गीत लिखे तो उन्हें बहुत आनंद आया। उन्होंने आगे बताया कि विज्ञान और कथा के अगुआ जयंत नार्लीकर ने बच्चों के लिए लिखने का मार्ग प्रशस्त किया और उन्होंने लेखन की संवेदनशीलता की आवश्यकता का भी परिचय दिया। बाल साहित्य चित्रों, गीतों, अच्छी भाषा तथा परिचित छवियों के साथ दिलकश होना चाहिए।

मैथिली पुरस्कार विजेता ऋषि वशिष्ठ ने कहा कि नाटकों में अभिनय करने की तुलना में बच्चों के लिए रचनाएँ लिखना बहुत कठिन होता है। उन्होंने बाल नाटकों पर ध्यान केंद्रित किया तथा 'रंगमंच' के लिए कई नाटक लिखे हैं।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता मलयत्त अप्पुण्णी ने महसूस किया कि बाल लेखक होना उनके लिए परम सौभाग्य की बात रही है तथा साहित्य के क्षेत्र में उनके लिए सीखने की यह एक विशिष्ट अवस्था रही है।

मणिपुरी पुरस्कार विजेता आर.के. सणहणबी चणु ने कहा कि बच्चे राष्ट्र का स्तंभ हैं और बाल साहित्य उन्हें वर्तमान स्थिति में अधिक प्रतिस्पर्धी बनाएगा। उनके काम ने वैज्ञानिक ज्ञान और पर्यावरण के प्रति प्रेम और स्नेह प्रदान किया है।

मराठी पुरस्कार विजेता सलीम सरदार मुल्ला ने वनों के अपने व्यापक अनुभव और पर्यवेक्षण को साझा किया। उनके संग्रह की कहानियाँ बच्चों की कल्पनाशील भावना और उनकी जिज्ञासाओं को विस्तारित करने तथा उन्हें वन्य जीवन को समझने में आसान बनाने के उद्देश्य से लिखी गई हैं। उन्होंने जैव विविधता की समृद्ध विरासत के संरक्षण और प्रकृति के संरक्षण पर बल दिया।

नेपाली पुरस्कार विजेता भविलाल लामिछाने ने कहा कि बाल साहित्य और बाल मनोविज्ञान आपस में जुड़े

हुए हैं। आज, बच्चों को अत्यधिक आकर्षक चित्रों के साथ सुसज्जित विभिन्न जानकारियों का एक समान आनंद मिलता है। यह न केवल उनसे अपील करता है बल्कि उनके दिमाग़ को भी काफी हद तक बढ़ाता है।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता बीरेंद्र कुमार सामंतराय ने बच्चों के लिए अपनी पुस्तकों के बारे में बहुत लंबी बातें कहीं। ओड़िआ पुरस्कार विजेता ने उल्लेख किया कि ओडिशा में पुरी मंदिर, चिल्का झील, सूर्य मंदिर जैसे कई आकर्षण हैं तथा उनकी रचनाओं में ओडिया जीवन का महिमा मंडन करनेवाली ग्रामीण छवियाँ शामिल हैं।

पंजाबी पुरस्कार विजेता पवन हरचंदपुरी ने कहा कि दिन-प्रतिदिन की घटनाओं को समझना अधिक महत्त्वपूर्ण था तथा उन्होंने हमेशा पंजाब, भारत तथा विश्व में मानव जीवन के समय और स्थितियों के साथ चलने की कोशिश की है।

संस्कृत पुरस्कार विजेता संजय कुमार चौबे ने कविता के सिद्धांतों, बाल साहित्य की बारीकियों पर सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

संताली पुरस्कार विजेता लक्ष्मण चंद्र सोरेन ने उल्लेख किया कि साहित्य का दर्शन ईमानदार तथा अच्छा होना चाहिए। इससे लोग ईमानदारी से सोचते हैं तथा अच्छे कार्यों की ओर प्रेरित होते हैं।

सिंधी पुरस्कार विजेता वीना शृंगी ने महसूस किया कि लेखकों को बच्चों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए प्रयास करना होगा ताकि वे पढ़ने की ओर आकर्षित हो सकें। उन्हें वास्तविक पाठकों की दुनिया, उनकी नई उभरती जीवन शैली तथा नई चुनौतियों पर क़ब्ज़ा करना चाहिए।

तमिळ पुरस्कार विजेता देवी नाचियप्पन ने तमिळ बाल साहित्य में कवि मणि देसिगा विनायगम पिल्लई तथा भारतीयार से लेकर श्री अजहा. वल्लीप्पा के गौरवशाली युग को याद किया। उन्होंने प्रेम और गर्व से याद किया कि वह अजहा वल्लीप्पा की बेटी हैं तथा उनके पिता ने शुरुआती वर्षों से बाल साहित्य के लिए उनकी प्रतिभा को तैयार किया। उनकी कविताएँ आधुनिक आविष्कारों, प्यारे जानवरों तथा पौधों, जातिगत मतभेदों को ख़त्म करने तथा ओजोन को संरक्षित करने से संबंधित हैं। उन्होंने 'वीडू' (हाउस) अपनी कविता से एक पंक्ति का हवाला दिया—'मुझे सबसे .ज्यादा पसंद है मेरा घर। मेरे पिता, माँ और बहन वहाँ रहते हैं। मैं प्रार्थना करती हूँ, खाती, पढ़ती, सोती हूँ, दोस्तों से मिलती हूँ, अपने घर में खेलती हूँ आदि।'

तेलुगु पुरस्कार विजेता बेलगाम भीमेश्वर राव ने बताया कि उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता पर्यावरण है और उनका पहला बाल-गीत एक तोते 'चिलुका' पर था। उन्होंने महसूस किया कि बच्चों के लिए साहित्य के माध्यम से प्रकृति, भूमि और पर्यावरण की रक्षा के महत्त्व को सिखाया जाना चाहिए।

उर्दू पुरस्कार विजेता मुहम्मद ख़लील ने उल्लेख किया कि वह विज्ञान, मशीनों तथा वैज्ञानिकों की आत्मकथाओं पर सरल एवं स्पष्ट भाषा, परिचित विचारों तथा विषयों का उपयोग करते हैं।

माधव कौशिक ने विभिन्न लेखकों द्वारा की गई स्पष्ट और विस्तृत टिप्पणियों की सराहना की, जिन्होंने बहुत अलग रास्तों का अनुसरण किया किंतु बच्चों के जीवन को ढालने के एकमात्र उद्देश्य के लिए वे एकनिष्ठ हैं जिससे कि उन्हें रंगीन, सुखद फलदायी बाल साहित्य प्रदान किया जा सके तथा इस प्रकार आधुनिक भारत को एक नया आकर मिल सके।

साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता सबसे प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों को प्रदान की जाती है तथा यह देश का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान है। परंपरा अनुसार, साहित्य अकादेमी के एक बार में अधिकतम केवल 21 जीवित महत्तर सदस्य ही हो सकते हैं और साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जिन्होंने भारतीय साहित्य के संवर्धन के लिए मौलिक तथा स्थायी योगदान दिया हो।

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद ने 29 जनवरी 2019 को नई दिल्ली में आयोजित अपनी 90वीं बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित चार प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता दिए जाने की सिफ़ारिश की।

- जयंत महापात्र
- पद्मा सचदेव
- नगेन शइकीया
- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

जयंत महापात्र को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

25 मई 2019, कटक, ओडिशा

साहित्य अकादेमी ने कटक में 25 मई 2019 को प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी तथा ओड़िआ कवि जयंत महापात्र को अपने सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान "महत्तर सदस्यता" से सम्मानित किया। कार्यक्रम की शुरुआत साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने कवि तथा उनकी कविताओं के बारे में संक्षेप में बताया तथा उन्होंने महत्तर सदस्यता प्रशस्ति पत्र भी पढ़ा। उन्होंने कहा कि जयंत महापात्र आधुनिक भारत के सबसे प्रगतिशील तथा अभिनव कवियों में से एक हैं। आंतरिक रूप से भारतीय जीवन की वास्तविकताओं से

जयंत महापात्र को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार

प्रेरित होकर, वह स्वाभाविक रूप से सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता, रीति-रिवाज़ों, मिथकों, आत्म और अनंत काल, परंपराओं, अनुष्ठानों, प्रेम, जुनून, क्रोध, हताशा, भूख और अभाव, दुख तथा आम लोगों की तुच्छता के बारे में निपुणता के साथ लिखते हैं।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि जयंत महापात्र की कविताएँ आम लोगों का स्वर हैं। वह अन्य भारतीय कवियों से पृथक हैं। उनके समर्पित काव्यात्मकों ने उन्हें राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई। वह अगली पीढ़ी के लिए प्रेरणा हैं। अपने स्वीकृति वक्तव्य में जयंत महापात्र ने कहा कि ओडिशा मेरी जन्मभूमि है, जहाँ मैंने अपना सारा जीवन बिताया है। मैं ओडिशा के बारे में लिखना बंद नहीं कर सकता। कविता मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। कविताओं की पुस्तक जीवन नहीं है, बल्कि लेखन ही जीवन है। इस अवसर पर दुर्गा प्रसाद पंडा द्वारा संपादित कवि के जीवन और कार्यों पर आधारित पुस्तक 'जयंत महापात्र - ए रीडर' का विमोचन भी किया गया।

महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह के पश्चात *संवाद* कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने की। वक्ता थे—सुकृता पॉल कुमार, अरुण कमल तथा जतिंद्र कुमार नायक। सुकृता पॉल कुमार ने कवि के भीतर के कविता उत्सव तथा श्री महापात्र की द्विभाषिता का वर्णन किया। उन्होंने उनकी कविता 'भूख' का हवाला देते हुए कहा कि जयंत महापात्र बहुत ही संवेदनशील कवि हैं।

अरुण कमल ने जयंत महापात्र की कुछ कविताओं की पंक्तियों के साथ-साथ उन्हें काफी पहले लिखे गए पत्र के संदर्भ में भी बताया। उन्होंने कहा कि जीवन कवियों और कविताओं को परिभाषित करता है तथा कवि जीवन को फिर से परिभाषित करता है, जिसे महापात्र की कविताओं में देखा जा सकता है। जतिंद्र कुमार नायक ने उन दिनों को याद किया जब श्री महापात्र रेवेनशॉ विश्वविद्यालय में भौतिकी के व्याख्याता थे तथा श्री नायक छात्र थे। उन्होंने कहा कि जयंत महापात्र एक ऐसे कवि हैं जो सारी दुनिया से प्रेम करते हैं तथा ओडिशा के प्रति उनका प्रेम उनकी अधिकांश कविताओं में परिलक्षित होता है। धन्यवाद प्रस्ताव साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के सदस्य तरुण कुमार ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में रमाकांत रथ, हरप्रसाद दास, दशरथी दास, हुसैन रबी गाँधी, अमरेश पटनायक, बिमल जेना, प्रदीप्त कुमार पंडा, सुशांत कुमार नायक, बिजॉय कुमार शतपथी, अपर्णा मोहांती, पारमिता सत्पथी तथा देवव्रत मदनराय समेत कई प्रख्यात लेखक उपस्थित थे।

पद्मा सचदेव को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

12 जून 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने अपने सभागार में प्रख्यात साहित्यकार एवं विद्वान पद्मा सचदेव को अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से विभूषित किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने उन्हें सम्मान स्वरूप ताम्रफलक तथा अंगवस्त्रम् भेंट किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि पद्मा सचदेव उत्कृष्ट कवयित्री तो हैं ही वे एक श्रेष्ठ अनुवादक भी हैं। उनका अपनी मातृभाषा से प्रेम और उसको आगे बढ़ाने का जुनून काबिले तारीफ़ है। हमारी पीढ़ी सौभाग्यशाली है कि हम उनके समय में रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। महत्तर सदस्यता प्राप्त करने के बाद अपने स्वीकृति वक्तव्य में पद्मा सचदेव ने कहा कि ''देश की सर्वोच्च संस्था, साहित्य अकादेमी द्वारा मुझे सर्वोच्च सम्मान दिए जाने पर मैं गद्गद् हूँ।'' आगे उन्होंने साहित्य अकादेमी के पूर्व सचिव प्रभाकर माचवे और इंद्रनाथ चौधुरी का ज़िक्र करते हुए कहा कि इन दोनों ने ही मुझे

पद्मा सचदेव को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार

लेखकों के एक बड़े परिवार से जोड़ा। अपने जीवन में डोगरी लोकगीतों की भूमिका का ज़िक्र करते हुए कहा कि इन्हीं के करीब जाकर मैंने छंद जोड़ना सीखा। हिंदी में गद्य लेखन का श्रेय उन्होंने चर्चित साहित्यकार तथा *धर्मयुग* के संपादक धर्मवीर भारती को दिया।

महत्तर सदस्यता सम्मान अर्पण समारोह के प्रारंभ में अतिथियों एवं श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि भारत साहित्य और लेखन की भूमि है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण आयाम देश की महिला रचनाकारों का योगदान है। उन्हें इस दिशा में अभी बहुत कार्य करना है, फिर भी, लंबे समय से सभी भारतीय भाषाओं में महिलाओं के उत्कृष्ट योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। इनकी संख्या भले ही अधिक न हो लेकिन सभी भाषाओं में उनके लेखन की सामग्री और गुणवत्ता विश्व की बाकी लेखिकाओं से उत्कृष्ट है, चाहे वह पद्य हो या गद्य। अपने स्वागत भाषण के बाद उन्होंने पद्मा सचदेव के लिए लिखा गया प्रशस्ति पत्र प्रस्तुत किया।

सम्मान अर्पण समारोह के बाद 'संवाद' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात डोगरी लेखक दर्शन दर्शी की अध्यक्षता में इंद्रनाथ चौधुरी, चित्रा मुद्गल तथा मोहन सिंह ने पद्मा सचदेव से जुड़े अपने सृजनात्मक और व्यक्तिगत संबंधों को साझा किया। ज्ञात हो कि पद्मा सचदेव अकादेमी की महत्तर सदस्यता सम्मान प्राप्त करने वाली आठवीं लेखिका हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से, चाहे वे कविताएँ हों, या गीत हों अथवा गल्प, उन्होंने एकनिष्ठ भाव से डोगरी साहित्यिक परिदृश्य को समृद्ध किया है। कार्यक्रम में हिंदी की महत्त्वपूर्ण लेखिकाएँ मृदुला गर्ग, ममता कालिया, निर्मला जैन, चंद्रकांता, अनामिका के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी की उत्तरी भाषाओं के संयोजक भी उपस्थित थे। कार्यक्रम से पहले पद्मा सचदेव पर साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया।

पद्मा सचदेव का जन्म 1940 में जम्मू में हुआ। 1947 में भारत के विभाजन का शिकार बने संस्कृत के विद्वान जयदेव बादु की तीन संतानों में सबसे बड़ी पद्मा जी ने अपनी शिक्षा की शुरुआत पवित्र नदी 'देवका' के तट पर स्थित अपने पैतृक गाँव पुरमंडल के प्राथमिक विद्यालय से की। पद्मा सचदेव के छंदों की लयबद्ध सुंदरता संस्कृत काव्य के साथ आपके परिचित होने का प्रत्यक्ष परिणाम है। लोककथाओं और लोकगीतों की समृद्ध वाचिक परंपरा के साथ स्वतंत्रता संग्राम के दौरान डोगरी के आकर्षण की पुनर्खोज ने आपके विकास को प्रेरित किया तथा उन्हें एक कवयित्री के रूप में उत्कृष्ट बनाया। आज वह मानती हैं कि उनकी कविता पर सबसे महत्त्वपूर्ण प्रभाव उनके प्रिय डुग्गर प्रदेश के मधुर लोकगीतों से आया है।

1969 में, पद्मा सचदेव ने अपने पहले कविता-संग्रह *मेरी कविता मेरे गीत* के साथ राष्ट्रीय साहित्यिक परिदृश्य में पर्दापण किया। इसकी भूमिका हिंदी के क़द्दावर कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी थी। इस पुस्तक को अंततः 1971 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पद्मा सचदेव की प्रमुख कृतियाँ हैं - *उत्तर बैहनी, तैंथियाँ, तवी ते चनहाँ, अक्खर कुंड, नेहरियाँ गलियाँ (अँधेरी गलियाँ), पोटा पोटा निंबल, लालदियाँ, सुग्गी, चित्त चेते, शब्द मिलावा, दीवानख़ाना, मितवाघर, अमराई, गोदभरी, बू तूँ राज़ी, अब न बनेगी देहरी, नौशीन, मैं कहती हूँ आँखिन देखी, जम्मू जो कभी शहर था तथा बारहदरी।*

नगेन शइकीया को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

7 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

साहित्य अकादेमी ने 7 सितंबर 2019 को डिब्रूगढ़ में प्रख्यात असमिया लेखक नगेन शइकीया को अपने सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान "महत्तर सदस्यता" से सम्मानित किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने पूर्ववर्तियों में से एक के रूप में श्रीमंत शंकरदेव के साथ असम की समृद्ध साहित्यिक विरासत पर चर्चा की। नगेन शइकीया महान संत के महान उत्तराधिकारियों में से एक हैं तथा उन्होंने विभिन्न शैलियों की कई साहित्यिक कृतियाँ लिखीं हैं। उन्होंने शोध पद्धति तथा तुलनात्मक साहित्य पर भी पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने कहा कि, 'आधुनिक भारतीय साहित्य के अमिट लेखकों' में से एक होने के नाते, नगेन शइकीया साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता के सबसे योग्य प्राप्तकर्ताओं में से एक हैं। स्वागत भाषण के पश्चात डॉ. राव ने महत्तर सदस्यता के प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने असमिया साहित्य द्वारा सामान्य तौर पर भारतीय साहित्य की बहुलता को समृद्ध करने में उसकी भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने शइकीया की रचनाओं में प्रारंभ से ही चित्रित जीवन के दर्शन पर आधारित अपने विचार व्यक्त किए। शइकीया ने विधाओं तथा लेखन के साथ प्रयोग किए हैं तथा कुछ मामलों में नए स्वरूपों में लाने के लिए उन्हें आपस में मिलाया भी है। उन्होंने शइकीया के लेखन में 'मित-भाष' के उपयोग के साथ-साथ भाषा के उनके द्वारा किए गए उपयोग पर भी बात की जो 'चेतना की धारा' की शैली के साथ तुलनीय है। डॉ. कंबार ने यह भी कहा कि डॉ. शइकीया के कई लेखन वास्तव में परेशान करने वाली बाहरी स्थितियों के प्रति

प्रो. नगेन शइकीया को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार एवं साथ में हैं माधव कौशिक एवं के. श्रीनिवासराव

उनके सामाजिक आत्म की प्रतिक्रिया हैं। नगेन शइकीया ने सम्मान स्वीकार करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि उन्होंने पुरस्कार या सम्मान के लिए नहीं, बल्कि पाठकों के प्रति अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने की प्रतिबद्धता के लिए लिखा है। उन्होंने कहा कि असम के कई विचारकों में से, मध्यकालीन असम के शंकरदेव, 19वीं सदी के लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ तथा 20वीं सदी के ज्योतिप्रसाद अग्रवाल ने मेरे मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ी थी। उन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन तथा स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उन घटनाओं के बारे में श्रोताओं को जानकारी दी, जिन्होंने उनके जीवन-दर्शन को आकार दिया। वह द्वितीय विश्वयुद्ध, गाँधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन तथा स्वतंत्रता के पश्चात सी.पी. आई. आंदोलन पर प्रतिबंध लगाने से काफी प्रभावित थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के पीछे काम कर रही प्रेरक ताक़तों पर भी चर्चा की।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अपने व्याख्यान में डॉ. शइकीया के लेखन की न केवल असम के भीतर बल्कि बाहर भी उसकी लोकप्रियता पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि कानूनविद होने के अलावा, वे एक उत्कृष्ट शिक्षाविद तथा प्रोफेसर रह चुके हैं। डॉ. शइकीया ने साहित्य की खोज में हज़ारों छात्रों का मार्गदर्शन किया है तथा एक संपादक के रूप में उन्होंने कई लेखकों को तैयार किया है। महत्तर सदस्यता अर्पण के पश्चात आयोजित 'संवाद' कार्यक्रम में चार विख्यात विद्वानों– प्रदीप ज्योति महंत, करबी डेका हाज़रिका तथा मदन शर्मा ने वक्ताओं के रूप में भाग लिया तथा साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक ध्रुवज्योति बोरा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। बोरा ने एक लेखक के रूप में नगेन शइकीया की उपलब्धि, जो आम आदमी के जीवन के अत्यंत समीप थे, पर आधारित अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। करबी डेका हाज़ारिका ने "मित-भाष" में लिखी पुस्तकों पर चर्चा की तथा भाषा के उपयोग की इस शैली की तुलना अन्य साहित्यिक शैलियों से की। उन्होंने इस "मित-भाष" शैली के विभिन्न तत्त्वों पर भी बात की। उन्होंने नगेन शइकीया के लेखन से इस प्रकार के कई उदाहरण दिए तथा उनका विश्लेषण भी प्रस्तुत किया। प्रदीप ज्योति महंत ने नगेन शइकीया के सामाजिक आइकन के साथ-साथ एक महान साहित्यकार होने की भूमिका की सराहना की। उन्होंने दो विषयों यथा - नगेन शइकीया द्वारा दर्ज किया गया असमिया लोगों का इतिहास तथा शंकरदेव के अध्ययन में उनके योगदान पर चर्चा की। मदन शर्मा ने नगेन शइकीया के रचनात्मक स्वाध्याय के साथ-साथ शोधकर्ता के रूप में उनके आलोचनात्मक स्वाध्याय पर भी अपनी बात रखी। उन्होंने नगेन शइकीया के लेखन की विशाल शृंखला पर बात की। उनकी रचनाएँ काव्यात्मक होने के साथ-साथ आधुनिक भी हैं। उन्होंने नगने शइकीया के लेखन के विषयों, जो मानव जीवन की यात्रा और उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हैं, पर अपने विचार व्यक्त किए। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदत्त

29 सितंबर 2019, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

साहित्य अकादेमी द्वारा किसी भी लेखक को दिए जाने वाला सर्वोच्च सम्मान 'महत्तर सदस्यता' प्रख्यात हिंदी कवि एवं समालोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को प्रदान किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि जब विश्वनाथ प्रसाद तिवारी साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष थे तब उनके कार्यकाल के दौरान ऐसे कई गंभीर संकट के क्षण आए, लेकिन ऐसी कठिन समस्याओं के बीच भी वे अपने 'स्वाधीन विवेक' के ही साथ रहे, तथा उन्होंने आश्चर्यजनक रूप से सही निर्णय लिए, जो उस समय ही नहीं बल्कि बाद के समय में भी सही निर्णय साबित हुए, जिन्हें साहित्य अकादेमी के इतिहास में याद रखा जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपनी रचनाओं में यह स्वयं साबित किया है कि उनकी कल्पना और रचना अपनी कठोर

ज़मीन पर मजबूती के साथ, आम जनता के कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हुई है।

यह सम्मान साहित्य अकादेमी के वर्तमान अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को सम्मानित कर अकादेमी स्वयं को सौभाग्यशाली मान रही है। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक एवं हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र भी उपस्थित थे।

सम्मान प्राप्त करने के बाद अपने स्वीकृति वक्तव्य में विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि ''मैं साहित्य अकादेमी का आभारी हूँ कि उसने अपना यह सर्वोच्च सम्मान मुझे देने का निर्णय लिया तथा उसके पदाधिकारियों के प्रति विशेष कृतज्ञ हूँ जो इसे देने के लिए दिल्ली से चलकर यहाँ आए। यह सम्मान सर्वपल्ली राधाकृष्णनन तथा चक्रवर्ती राजगोपालाचारी सहित देश के इतने बड़े-बड़े व्यक्तित्वों को प्रदान किया गया है कि इसे प्राप्त कर मैं न केवल अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ बल्कि संकोच का भी अनुभव कर रहा हूँ। आगे उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी भारत की सर्वोच्च साहित्य-संस्था है, जो लेखकों की मातृ संस्था जैसी है। संसार के प्रति करुणा और प्रेम को हमारे आचार्यों ने साहित्य का आधार-भाव कहा है। इसी करुणा और प्रेम से न्याय-भाव, विवेक-बुद्धि तथा संघर्ष-चेतना स्वमेव उत्पन्न हो जाती है। प्रकृति ने मुझे जितनी क्षमता दी है उस सीमा के भीतर, मैंने अपने लेखन में, इसी भाव को शब्द देने का प्रयास किया है।

सम्मान समारोह के बाद आयोजित 'संवाद' कार्यक्रम में ए. अरविंदाक्षन, अरुण कमल, कमल किशोर गोयनका तथा रेवती रमण ने विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से चर्चा की। सभी का मानना था कि विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने हिंदी कविता और हिंदी आलोचना को समृद्धि प्रदान की है।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार, साथ में हैं माधव कौशिक एवं के. श्रीनिवासराव

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि

शिव कुमार राय की जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

27 अप्रैल 2019, कुर्सियांग, दार्जीलिंग

साहित्य अकादेमी ने गोर्खा जन पुस्तकालय, कुर्सियांग के सहयोग से 27 अप्रैल 2019 को दार्जीलिंग के टाउन कम्युनिटी हॉल में शिव कुमार राय की जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता गोर्खा जन पुस्तकालय के अध्यक्ष राबिन कुमार प्रधान ने की। बीज भाषण जीवन नामदुंग ने प्रस्तुत किया। उन्होंने शिव कुमार राय की रचनाओं के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता रिंजी ईडन वांगदी ने की। वक्ता थे—सुजाता रानी राय (एक कवि के रूप में : शिव कुमार राय), योगेश खाती (उपन्यासकार के रूप में : शिव कुमार राय) तथा रेमिका थापा (एक कहानीकार के रूप में : शिव कुमार राय)। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता जसयोजन 'प्यासी' ने की। आलेख वक्ता थे—संजय बांतवा (एक नाटककार के रूप में : शिव कुमार राय), चंद्र शर्मा (संपादक के रूप में : शिव कुमार राय) तथा राजकुमार छेत्री (एक निबंधकार के रूप में : शिव कुमार राय)। तृतीय सत्र शिव कुमार राय द्वारा लिखित कहानियों के वाचन पर आधारित था। प्रेम प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की तथा शिव कुमार राय कृत कहानियों को सांगमू लेप्चा, तिरुप्रसाद नेपाल, चुडेन कबिमो तथा निरंकार थापा ने पढ़कर सुनाया।

बी. पुट्टास्वामैय्या के जीवन और लेखन पर परिसंवाद तथा उनके नाटक कुरुक्षेत्र का मंचन

17 मई 2019, जे.सी. रोड, बेंगलुरु

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने पंपा सांस्कृतिक मट्टू समाजिक केंद्र, बेंगलुरु के सहयोग से 17 मई 2019 को प्रातः 10.30 बजे कन्नड भवन, जे. सी. रोड, बेंगलुरु के नयना सभागार में बी. पुट्टास्वामैय्या के जीवन और लेखन तथा उनके नाटक *कुरुक्षेत्र* के मंचन पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों और श्रोताओं का स्वागत किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने परिसंवाद का उद्घाटन किया तथा उन्होंने कहा कि बी. पुट्टास्वामैय्या रंगमंच की एक बड़ी हस्ती होने के साथ-साथ एक लेखक और पत्रकार भी थे। वे बेंगलुरु से प्रकाशित *प्रजावाणी* (कन्नड) और *डेक्कन हेराल्ड* (अंग्रेज़ी) दैनिक समाचार-पत्रों के संपादक थे। उनका

क्रांति कल्याण (मैग्नम ओपस) जैसा उपन्यास तथा अन्य लेखन कन्नड साहित्य जगत में बहुत लोकप्रिय हैं। इस अवसर पर कर्नाटक सरकार के कन्नड एवं संस्कृति विभाग की निदेशक के. एम. जानकी मुख्य अतिथि थीं। नागेंद्र प्रसाद तथा उगमा श्रीनिवास विशिष्ठ अतिथि थे। पंपा सांस्कृतिक मट्टू सामाजिक केंद्र के सचिव आर. वेंकटराजू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में आर. पूर्णिमा ने 'पत्रकार के रूप में बी. पुट्टास्वामैय्या' पर आलेख प्रस्तुत किया। एच.ए. पार्श्वनाथ ने 'कन्नड रंगमंच में बी. पुट्टास्वामैय्या का योगदान' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में पी. जयलक्ष्मी अभयकुमार ने 'बी. पुट्टास्वामैय्या का जीवन और विचार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। आर. वेंकटराजू ने 'बी. पुट्टास्वामैय्या के उपन्यास' और 'बी. पुट्टास्वामैय्या के सामाजिक सरोकार' विषय पर चर्चा की। समापन सत्र में कन्नड कवि तथा साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक सिद्दलिंगय्या ने समापन भाषण प्रस्तुत किया और कहा कि कन्नड साहित्य और पत्रकारिता में बी. पुट्टास्वामैय्या का योगदान बहुत बड़ा है। उनके संपादकीय शानदार और अक्सर विनोदी हुआ करते थे तथा इस प्रकार साहित्यिक बिरादरी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया करते थे। उनके उपन्यास आज भी प्रासंगिक हैं और वर्तमान जीवन और सामाजिक परिदृश्य को दर्शाते हैं। बी.के. श्रीनिवास, एम. विश्वनाथ और सी.के. गुन्दन्ना ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में भाग लिया।

नोनावीनाकेरे रामकृष्णअय्या द्वारा निर्देशित बी. पुट्टास्वामैय्या कृत नाटक 'कुरुक्षेत्र' का मंचन उसी शाम बेंगलुरु के पंपा सांस्कृतिक मट्टू सामाजिक केंद्र की मंडली के सदस्यों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में पत्रकारों, साहित्यिक और रंगमंच बिरादरी के लोगों ने भाग लिया तथा बेंगलुरु के मीडिया द्वारा इस कार्यक्रम की कवरेज की गई।

5वाँ विश्व महाकाव्य महोत्सव

26-30 जून 2019, किर्गिस्तान

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, के आदेशानुसार साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष ने अभय कुमार मोर्य (प्रख्यात रूसी विद्वान एवं अंग्रेज़ी/हिंदी लेखक) तथा रूसी भाषा के जाने-माने विद्वान हेमचंद्र पांडे को किर्गिस्तान का दौरा करने के लिए 26 से 30 जून 2019 तक बिश्केक, किर्गिज गणराज्य में आयोजित 5वें विश्व महाकाव्य महोत्सव के अंतर्गत 'वास्तविकता और प्रतिबिंब के रूप में विश्व की पौराणिक और महाकाव्य की छवियाँ' विषय पर आयोजित परिसंवाद में भाग लेने के लिए नामित किया। प्रो. पांडे निजी कारणों से प्रतिनिधिमंडल में शामिल नहीं हो सके।

'वास्तविकता और प्रतिबिंब के रूप में विश्व की पौराणिक और महाकाव्य की छवियाँ' विषय पर आयोजित परिसंवाद एक अंतरराष्ट्रीय घटना थी जिसमें 23 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस परिसंवाद को दो भागों में विभाजित किया गया था—(क) 'वास्तविकता और प्रतिबिंब को विधा के रूप में दर्शाती विश्व की पौराणिक और महाकाव्य की छवियाँ'; तथा (ख) लोक कलाकारों द्वारा किर्गिज महाकाव्य **मनास** तथा 20वीं सदी की सबसे महान मानास्ची सायाक्बे कारालेव को समर्पित एक प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के भाग (ख) के अंतर्गत विभिन्न देशों के कलाकारों ने लोक वस्तुओं को समर्पित प्रस्तुतियों का प्रदर्शन किया।

प्रो. मोर्य ने 'वास्तविकता और प्रतिबिंब को विधा के रूप में दर्शाती विश्व की पौराणिक और महाकाव्य की छवियाँ' विषय पर आयोजित परिसंवाद में भाग लिया। यह दो दिनों तक चलने वाला एक वैज्ञानिक परिसंवाद कार्यक्रम था। इस परिसंवाद में 23 देशों के 42 प्रतिनिधियों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। आलेख आधुनिक समय के समाज में महाकाव्य-संस्कृति के मिथकों और मिथकीय परंपराओं के वैज्ञानिक अध्ययन तथा प्रमुख समस्याओं के सैद्धांतिक और व्यावहारिक

पहलुओं पर आधारित थे। आलेख विशेषरूप से समय और स्थान के मामले में महाकाव्यों के अनुकूलन और परिवर्तन के रूपों से संबंधित थे। आलेख वक्ताओं ने एक अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू, विशेषरूप से, महाकाव्यों द्वारा उनके संबंधित समाजों तथा पूरी दुनिया में सदियों से पड़ने वाले प्रभावों की चर्चा की।

27 जून 2019 को प्रो. मोर्य ने 'अ कम्पेरेटिव व्यू ऑफ़ एपिक रिसेप्शन इन द वर्ल्ड' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। इस आलेख का केंद्र बिंदु महाकाव्य *रामायण* और *महाभारत* थे। इस विषय पर अन्य चार आलेख वक्ताओं ने भी अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. मोर्य के आलेख की प्रशंसा की गई, क्योंकि उन्होंने *रामायण* और *महाभारत* जैसे महाकाव्यों सहित ग्रीक महाकाव्य *इलियड* और *ओडिसी* तथा फिन्निश महाकाव्य *कलेवाला* एवं किर्गिज महाकाव्य *मनास* के सिद्धांतों और महाकाव्यों के अभ्यास पर व्यापक अध्ययन किया था। यह परिसंवाद निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचा : महाकाव्य कार्यों के गहन अध्ययन के लिए कार्यक्रमों और परियोजनाओं को तैयार करने के उद्देश्य से प्रभावी अंतर-सरकारी संपर्कों की स्थापना की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने तथा संबंधित समाजों और पूरे विश्व में उनकी भूमिका और उद्देश्यों में तेज़ी से प्रयास करना; विभिन्न देशों के विशेषज्ञों और विद्वानों से अपील करना कि वे *महाकाव्य विज्ञान* के विविध पहलुओं के वैज्ञानिक अध्ययन की दिशा में अपने प्रयास और अधिक तेज़ करें; अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों और परिसंवादों एवं अन्य चैनलों के माध्यम से *महाकाव्य विज्ञान* के क्षेत्र में अनुसंधान प्रयासों के व्यापक प्रसार के लिए प्रयासों को और अधिक तेज़ करना; पौराणिक लक्षण विज्ञान तथा प्ररूप विज्ञान के शोध पर विशेष ध्यान केंद्रित करने की दृष्टि से उक्त विषय पर नियमित रूप से परिसंवाद आयोजित करना।

संताली साहित्य में जीवनी और आत्मकथा पर परिसंवाद

07 जुलाई 2019, राँची

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने रामदयाल मुंडा आदिवासी कल्याण शोध संस्थान जनजातीय संग्रहालय के सहयोग से राँची में 7 जुलाई 2019 को *संताली साहित्य में जीवनी और आत्मकथा* पर परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। आरंभिक व्याख्यान साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक मदन मोहन सोरेन ने प्रस्तुत किया। परिसंवाद का उद्घाटन रामदयाल मुंडा आदिवासी कल्याण अनुसंधान संस्थान जनजातीय संग्रहालय के निदेशक रणेंद्र कुमार ने किया। रणेंद्र ने संताली को ध्यान में रखते हुए भारत के विभिन्न जनजातीय साहित्यकारों की समकालीन स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने संताली साहित्य के हिंदी और अंग्रेज़ी में अनुवाद किए जाने पर बल दिया। रामचंद्र मुर्मु ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने संताली में जीवनीपरक एवं आत्मकथात्मक साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए। राँची विश्वविद्यालय के संताली विभाग के विभागाध्यक्ष के. सी. टुडु कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सचिन मरांडी ने की। धन्यवाद प्रस्ताव दुली मुर्मु ने किया। शैक्षणिक सत्र का आरंभ श्री हांसदा की अध्यक्षता में हुआ। आदित्य मरांडी का आलेख 'साहित्य में जीवनी का महत्त्व' विषय पर आधारित था। लक्ष्य बस्की का आलेख

'गुरु गोमकी पं. रघुनाथ मुर्मु' की जीवनी पर आधारित था। श्याम सी. टुडु ने साहित्य में आत्मकथा के महत्त्व पर चर्चा की। अंतिम वक्ता श्रीकांत सोरेन ने संताली साहित्य में 'जीवनी और आत्मकथा' की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए।

भारतीय नेपाली साहित्य में यात्रा लेखन के 100 वर्ष पर परिसंवाद

19 जुलाई 2019, दार्जीलिंग

(दाएँ-बाएँ) नरबहादुर दहल, शांति छेत्री, श्री इंद्रमणि दर्नाल और जीवन नामदुंग

साहित्य अकादेमी ने नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिंग के सहयोग से 19 जुलाई 2019 को नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जीलिंग के सु.धा.पा. हॉल में 'भारतीय नेपाली साहित्य में यात्रा लेखन के 100 वर्ष' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक जीवन नामदुंग ने की। परिसंवाद के आरंभ से पूर्व हैमन्न दास राय, लक्ष्मण श्रीमाल, असित राय (साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य) और के.पी. मल्ला—सभी प्रख्यात नेपाली लेखकों के निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए दो मिनट का मौन रखा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात नेपाली लेखक नरबहादुर दहल थे। श्री दहल ने भारतीय नेपाली साहित्य में यात्रा लेखन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। अपने बीज-भाषण में शांति छेत्री ने साहित्य में यात्रा लेखन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करने से उस स्थान की संस्कृति, भाषा, भूगोल, पर्यावरण और सभ्यता के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है जो लेखन में परिलक्षित हो सकती है। जीवन नामदुंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि यात्रा लेखन पर इस प्रकार की प्रथम पुस्तक, जिसका शीर्षक 'मेरो लंदन राजतिलक यात्रा' है शेर सिंह राणा ने लिखी थी तथा वह वर्ष 1913 में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने आगे कहा कि अब तक इस विषय पर केवल कुछ ही पुस्तकें लिखी गई हैं तथा यात्रा लेखन का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। नेपाली साहित्य सम्मेलन के महासचिव सूर्य श्रेष्ठ ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इस अवसर पर पद्म तमाङ् ने सरस्वती वंदना नृत्य प्रस्तुत की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता हस्ता नेचाली ने की तथा आलेख वक्ता थे—राज बहादुर राय, इंद्र बहादुर छेत्री, एम. पथिक तथा जीवन लाबर। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गुप्त प्रधान ने की तथा जय प्रकाश लामा, विमल राय, तारा लोहार लेप्चा तथा अर्जुन प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

हरिकृष्ण कौल पर परिसंवाद

16 जुलाई 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 16 जुलाई 2019 को नई दिल्ली स्थित रवींद्र भवन में कश्मीरी भाषा और साहित्य में (स्वर्गीय) हरिकृष्ण कौल के बहुमूल्य योगदान पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कश्मीर के प्राचीन साहित्य के महत्त्वपूर्ण लेखकों का ज़िक्र करते हुए कहा कि आधुनिक कश्मीरी कथा साहित्य में हरिकृष्ण कौल का नाम बहुत महत्त्वपूर्ण है। वे मानवता के सच्चे पक्षधर थे और उन्होंने आम नागरिकों की समस्याओं को सबके समक्ष प्रस्तुत किया। कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक अज़ीज़ हाजिनी ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए

व्याख्यान देते हुए राजेश भट

बताया कि वे केवल उत्कृष्ट लेखक ही नहीं बल्कि एक आला इंसान भी थे और प्रचार-प्रसार से दूर ही रहते थे। उन्होंने आगे कहा कि उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को देखते हुए अभी उन पर बहुत काम किया जाना बाकी है। इस संदर्भ में उन्होंने उपस्थित सभी कश्मीरी लेखकों से अनुरोध किया कि हम सबको इस सिलसिले में मिलकर कार्य करना होगा। प्रख्यात कश्मीरी लेखक एवं उनके सहपाठी रहे औतार कृष्ण रहबर ने कहा कि कश्मीरी भाषा में जिन लोगों ने भी अच्छी कहानी लिखी है उनमें हरिकृष्ण का नाम बहुत आगे है। उन्होंने सामान्य जनभाषा का प्रयोग कर कश्मीरी भाषा को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनका यथार्थवादी दृष्टिकोण और दिल को छू लेने वाली भाषा उनको लोकप्रिय ही नहीं बल्कि एक विश्वस्तरीय स्थान प्रदान करती है। उन्होंने कश्मीरी भाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण रचनाकारों के ऑडियो कैसेट बनवाने की बात कही जिससे कि यह भाषा आनेवाली पीढ़ी में प्रासंगिक रह सके। अलीगढ़ विश्वविद्यालय से पधारे मुश्ताक मुंतज़िर ने कहा कि उन्होंने पूरा जीवन कश्मीरी भाषा को आगे बढ़ाने में लगाया और कुछ महत्त्वपूर्ण अनुवादों के ज़रिये भी कश्मीरी साहित्य को आगे बढ़ाने का कार्य किया। गौरीशंकर रैणा ने उनके नाटक और रेडियो नाटकों के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर राजेश भट्ट, रोशनलाल 'रोशन', आर.के. भट्ट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्हें ज़रूरी रचनाकार के रूप में याद किया।

कार्यक्रम में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की संयुक्त सचिव निरुपमा कोतरू के अतिरिक्त प्रख्यात कश्मीरी लेखक दीपक कौल, एस.के. कौल, वीरमुंशी, राजेंद्र प्रेमी, भारत पंडित, एम.के. निर्धन एवं अशोक सराफ आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

'मयेंगबम आनंदमोहन सिंह का जीवन और कार्य' पर परिसंवाद

20 जुलाई 2019, इंफ़ाल

व्याख्यान देते हुए एन. किरण कुमार सिंह

साहित्य अकादेमी ने एन.जी. कॉलेज के सहयोग से इंफ़ाल में 20 जुलाई 2019 को एन.जी. कॉलेज जुबली हॉल में 'मयेंगबम आनंदमोहन सिंह का जीवन और कार्य' पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि मयेंगबम आनंदमोहन सिंह जैसी जानी-मानी हस्तियों के जीवन और कार्यों पर आधारित इस प्रकार के परिसंवाद कार्यक्रमों का आयोजन भारत के विभिन्न राज्यों में भी किया जाना चाहिए जिसका उद्देश्य वर्तमान पीढ़ी को अतीत के दिग्गज रचनाकारों से जोड़ना है।

साहित्य अकादेमी के मणिपुर परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार सिंह ने अपने बीज-भाषण में कहा कि कई वर्षों तक मयेंगबम आनंदमोहन जैसी शख़्सियत के बारे में मणिपुर के कम लोगों को ही पता था। उन्होंने एक कवि, निबंधकार, शिक्षक, संस्मरण लेखक, शिक्षाविद, प्रशासक तथा अनुवादक के रूप में आनंदमोहन पर संक्षेप में चर्चा की। सत्र की अध्यक्षता कर रहे इंफ़ाल के एन.जी. कॉलेज के प्राचार्य मंगलेम्बा ने मणिपुर की संस्कृति के प्रसार के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। उद्घाटन सत्र का समापन एन.जी. कॉलेज के उप-प्रधानाचार्य अशोक रॉय चौधरी द्वारा दिए गए विस्तृत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मयेंगबम अक्षय कुमार ने की। एन.जी. कॉलेज के सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ेसर सेराम इंद्रजीत ने आनंदमोहन के जीवन पर अपने विचार प्रकट करते हुए सत्र की शुरुआत की। उन्होंने प्रख्यात व्यक्तित्वों के बारे में बताया। उन्होंने अपने आलेख में आनंदमोहन के मणिपुरी साहित्य में उनके द्वारा लिखी गई विभिन्न पुस्तकों के साहित्यिक योगदानों के बारे में भी बताया। मणिपुर संस्कृति विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष थोउनोजम खोमडोन सिंह ने मणिपुर में पुस्तकालय के क्षेत्र में आनंदमोहन द्वारा विशेषरूप से किए गए योगदानों की चर्चा की। उन्होंने मणिपुर के महाराजा बोधचंद्र के ए.डी.सी. और निजी सचिव के रूप में आनंदमोहन के कार्यों की पड़ताल की। खोमडोन ने विस्तार से बताया कि कैसे आनंदमोहन इंफ़ाल में ज़िला पुस्तकालय और बाल पुस्तकालय-सह-संग्रहालय के पुस्तकालयाध्य बने। लामाबम गोजेंदरो ने 'नाटककार के रूप में आनंदमोहन' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। गोजेंदरो ने (स्वर्गीय) आनंदमोहन द्वारा लिखे गए विभिन्न नाटकों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। आलेख-पाठ के सत्र के पश्चात सत्राध्यक्ष एम. अक्षयकुमार ने कई ऐसे बिंदुओं को स्पष्ट किया जो (स्वर्गीय) एम. आनंदमोहन की शिक्षा, करियर, व्यक्तिगत आदतों आदि के संबंध में अस्पष्ट रहे थे। उन्होंने प्रथम सत्र को सफल बनाने के लिए सभी आलेख वक्ताओं तथा साहित्यप्रेमियों का आभार प्रकट किया।

द्वितीय सत्र के अध्यक्ष हुइरेम बिहारी सिंह थे। मणिपुरी साहित्य के विख्यात समालोचक थ. इबोहांबी सिंह ने द्वितीय सत्र की शुरुआत 'एक संस्मरण लेखक के रूप में आनंदमोहन' विषयक आलेख के साथ की। उन्होंने विद्वानों की परिभाषा और संस्मरण लेखन के वर्गीकरण, संस्मरण लेखन और आत्मकथा आदि के बीच अंतर को स्पष्टता के साथ व्याख्यित किया। हेइकरुजम श्यामसुंदर ने 'निबंधकार तथा अनुवादक के रूप में आनंदमोहन' के व्यक्तित्व की श्रेष्ठता पर प्रकाश डाला। परिसंवाद के अंतिम वक्ता लॉन्गजम जॉयचंद्र सिंह ने श्रोताओं के साथ अपने संस्मरण साझा करते हुए आनंदमोहन के शिक्षक रूप को प्रस्तुत किया। श्री जॉयचंद्र ने कई ऐसे मौकों और समय का हवाला दिया जहाँ विशेषरूप से एक शिक्षक के रूप में आनंदमोहन ने उनका साहित्य के क्षेत्र में मार्गदर्शन किया। परिसंवाद का समापन जवाहरलाल नेहरू मणिपुर डांस एकेडमी के निदेशक एल. उपेंद्रो शर्मा के नेतृत्व में हुआ, जिसमें मणिपुरी लिटरेरी सोसायटी के अध्यक्ष प्रह्लाद शर्मा तथा कई अन्यों के साथ विचार-विमर्श हुआ। साहित्य अकादेमी की मणिपुरी परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक एच. बिहारी सिंह ने कार्यक्रम का समाहार प्रस्तुत किया तथा संगोष्ठी के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया एवं भावी पीढ़ी के हित और लाभ में विद्वानों द्वारा पढ़े गए आलेखों को प्रकाशित करने की अपील की।

गोरा शास्त्री जन्मशताब्दी पर परिसंवाद

20 जुलाई 2019, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी ने वयोवृद्ध पत्रकार संघ के सहयोग से हैदराबाद में 20 जुलाई 2020 को प्रतिष्ठित लेखक एवं पत्रकार गोरा शास्त्री की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में परिसंवाद का आयोजन किया।

(बाएँ-दाएँ) जी.एस. वर्दाचारी, के. श्रीनिवासराव तथा भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैय्या नायडू

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैय्या नायडू कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे तथा उन्होंने परिसंवाद का उद्घाटन किया तथा अपने जीवन काल में गोरा शास्त्री द्वारा लिखे गए लेखों के संग्रह 'विनयकुडी वीणा' तथा गोविंदराजू चक्रधर द्वारा गोरा शास्त्री पर लिखित विनिबंध (पुनर्मुद्रित), जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित किया गया है, का विमोचन भी किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता वयोवृद्ध पत्रकार संघ के अध्यक्ष जी.एस. वर्दाचारी ने की। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण दिया। वयोवृद्ध पत्रकार संघ के उपाध्यक्ष टी. उदयवारू ने 'विनयकुडी वीणा' पुस्तक का परिचय दिया। वयोवृद्ध पत्रकार संघ के सचिव के. लक्ष्मण राव ने धन्यवाद किया। बाद में परिसंवाद का आयोजन दो सत्रों में किया गया। सुबह के सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक के. शिवा रेड्डी ने की। प्रख्यात आलेखकारों—दासू केशव राव, कल्लूरी भास्करम, के. बी. लक्ष्मी, नागसूरी वेणुगोपाल, नंदीराजू राधा कृष्ण ने गोरा शास्त्री की कृतियों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। संध्या सत्र की अध्यक्षता भंडारू श्रीनिवास राव ने की। प्रसिद्ध विषय विशेषज्ञों में पी.एस. गोपाल कृष्ण, गोविंदराजू चक्रधर, के. रमा लक्ष्मी और श्रीनिवास वासुदेव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस कार्यक्रम में (स्वर्गीय) गोरा शास्त्री के परिजन भी शामिल हुए।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति एम. वेंकैय्या नायडू ने कहा कि ''आमतौर पर किसी व्यक्ति को उसके धन के आधार पर आंका जाता है। लेकिन अक्षर का ज्ञान ऐसा धन है जो आपके साथ सदैव रहता है। गोरा शास्त्री अंग्रेज़ी तथा तेलुगु भाषाओं में संपादकीय एक समान सहजता से लिखते थे। उनके संपादकीय का स्वर, विशेषरूप से *आंध्र भूमि* के संदर्भ में ऐसा था मानो संपादक पाठक के साथ बातचीत कर रहा हो। उनकी रचनाओं में व्यक्तिगत स्पर्श था। पत्रकारों की वर्तमान पीढ़ी को पहले की पीढ़ियों द्वारा निर्धारित किए गए उदाहरणों से सीखने की आवश्यकता है। गोरा शास्त्री के संपादकीय का साहित्यिक महत्त्व रहा है। आज का न्यूज़ मीडिया एक-दो संगठनों को छोड़कर साहित्यिक मोर्चे पर ज़्यादा फोकस नहीं कर रहा है। हम नैतिकता और स्वतंत्र पत्रकारिता के मानकों का उल्लंघन बर्दाश्त नहीं कर सकते। मीडिया को ईमानदारी और वस्तुनिष्ठता का प्रकाश पुंज होना चाहिए। वर्तमान परिदृश्य में, हम विचारों के साथ मिश्रित समाचार पाते हैं, इस प्रकार हमें उनके तथ्यों पर भ्रम होता है। असली तस्वीर अर्ध सत्य के धुएँ की स्क्रीन के पीछे धुंधली हो जाती है।

द हिंदू के पूर्व रेज़ीडेंट एडीटर दासू केशव राव ने 'गोरा शास्त्री के अंग्रेज़ी संपादकीय' पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा, 'गोरा शास्त्री के आगमन ने उदास परिदृश्य को एक जीवंतता प्रदान की। वह ऐसे व्यक्ति नहीं थे जो किसी स्थिति या सत्ता से डरें या दबाव में आकर उनका सम्मान करें, किंतु वे आम आदमी के प्रबल समर्थक थे।'

प्रसिद्ध लेखक और समालोचक श्रीमती के.बी. लक्ष्मी ने 'गोरा शास्त्री की कहानियाँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा, 'गोरा शास्त्री की कहानियाँ आम आदमी, मज़दूर वर्ग के रोज़मर्रा के संघर्षों को समाहित करती थीं। यह उनके 'अ बास्केट ऑफ़ ऑरेंजिज़' में भी देखा जा सकता है, जो उनकी अंग्रेज़ी कहानी है। एक भारतीय मध्यमवर्गीय व्यक्ति के जीवन में संघर्ष उनके

कई कार्यों में अभिव्यक्त होते हैं, क्योंकि वह स्वयं एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार के थे। जीवंत व्यक्तित्व और जीवंत घटनाएँ उनके कार्यों के लिए मुख्य आधार थे।

दो सत्रों में नागसूरी वेणुगोपाल तथा पी.एस. गोपाल कृष्ण ने 'गोरा शास्त्री के रेडियो नाटक' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। नंदीराजू राधाकृष्ण ने 'गोरा शास्त्री, जैसा कि मैं उन्हें जानता हूँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, ए.बी.के. प्रसाद ने 'संपादक के रूप में गोरा शास्त्री' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, गोविंदराजा चक्रधर ने 'गोरा शास्त्री : एक सव्यसाची पुरुष' तथा के. रमा लक्ष्मी ने 'गोरा के संस्मरण, स्वतंत्र के संपादक' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस अवसर पर वयोवृद्ध पत्रकार संघ के अध्यक्ष जी.एस. वरदाचारी और गोरा शास्त्री की सुपुत्री सुनंदा ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

राजस्थानी कहानियों के दो दशक पर परिसंवाद

27 जुलाई 2019, श्री गंगानगर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने सृजन सेवा संस्थान के सहयोग से श्री गंगानगर (राजस्थान) में 27 जुलाई 2019 को 'राजस्थानी कहानियों के दो दशक' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

प्रख्यात उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री विजय कुमार गोयल ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। पिछले दो दशकों के दौरान राजस्थानी कहानियों में आए बदलावों पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि हम जो भी काम करें, उसे पूरी निष्ठा और जुनून के साथ करें। बीज भाषण राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राजस्थानी कहानियों ने भारतीय साहित्य में अपना स्थान हासिल कर लिया है तथा अन्य भाषाओं में लिखी जा रही कहानियों के बराबर खड़ी हैं। उन्होंने राजस्थानी कहानी के क्रमिक विकास और पिछले कुछ वर्षों के दौरान हुए बदलावों पर चर्चा की। प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता आदित्य चितलंगिया ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में अपने बच्चों को शिक्षा देने के लिए हम अपनी मातृभाषा की अनदेखी कर रहे हैं। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक ज्योति कृष्ण वर्मा ने अपने संक्षिप्त भाषण में प्रतिभागियों तथा दर्शकों का स्वागत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता बुलाकी शर्मा ने की। इस सत्र में ओमप्रकाश भाटिया, राजेंद्र जोशी तथा दिनेश पांचाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता कुंदन माली ने की और हरीश बी. शर्मा, राजेंद्र शर्मा 'मुसाफ़िर' तथा कीर्ति शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं ने पिछले दो दशकों के दौरान राजस्थानी कहानियों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

नेमीचंद्र जैन जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद

30 अगस्त 2019, नई दिल्ली

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव, साथ में हैं—माधव कौशिक, नंदकिशोर आचार्य, रश्मि वाजपेयी और ज्योतिष जोशी

साहित्य अकादेमी द्वारा 30 अगस्त 2019 को रवींद्र भवन, नई दिल्ली में नेमिचंद्र जैन जन्मशतवार्षिकी पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन व्याख्यान प्रख्यात कवि, नाटककार एवं आलोचक नंदकिशोर आचार्य ने प्रस्तुत किया तथा विशिष्ट अतिथि प्रख्यात निर्देशक, नृत्यांगना एवं विदुषी रश्मि वाजपेयी थीं, बीज भाषण प्रख्यात आलोचक ज्योतिष जोशी ने प्रस्तुत किया

तथा अध्यक्षीय व्याख्यान साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया।

अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि रचनाकार सिर्फ़ अपनी रचनाओं से ही बड़ा नहीं बनता है, बल्कि उसने साहित्य में कितने नए रचनाकारों को स्थान दिया, उन्हें प्रभावित किया और आगे बढ़ाया, इससे भी वह पहचाना और याद किया जाता है। नेमिचंद्र जैन जी ऐसे ही रचनाकार थे जिन्होंने बहुत सारे नए रचनाकारों को एक नई दृष्टि दी और उन्हें संस्कारित किया।

अपने उद्घाटन व्याख्यान में नंदकिशोर आचार्य ने कहा कि नेमिचंद्र जैन ने परंपरा को आलोचनात्मक दृष्टि से देखा है और नए सत्य का उद्घाटन किया है। वे हमेशा ऐसी नवीनता की तलाश में रहे जो मनुष्य में नैतिकता का बोध लाती है। वे एक तरीक़े से निसंग आलोचक थे। हिंदी आलोचना ने उनके साहित्य-चिंतन और व्यावहारिक आलोचना पर ठीक तरह से ध्यान नहीं दिया है। और यह उनकी प्रतिभा की अनदेखी है। उनकी कविताओं को लेकर और काम किए जाने की आवश्यकता है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारीं प्रख्यात निर्देशक, नृत्यांगना एवं विदुषी रश्मि वाजपेयी ने उनके पूरे जीवन को याद करते हुए उनकी उदारता के कई उदाहरण देते हुए कहा कि वह एक पति और एक पिता के रूप में स्त्रियों की स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने विवाह के बाद न केवल अपनी पत्नी को शिक्षित किया बल्कि विभिन्न कला माध्यमों में कार्य करने की छूट भी दी। ऐसा ही उन्होंने हम बहनों के लिए भी किया। उन्होंने युवाओं में उनकी विशेष रुचि का ज़िक्र करते हुए कहा कि वे आनेवाली पीढ़ियों तक सांस्कृतिक समझ को पहुँचाना चाहते थे। बीज भाषण देते हुए प्रख्यात आलोचक ज्योतिष जोशी ने कहा कि नेमिचंद्र जैन सभी अर्थों में विरले व्यक्ति थे, उन्होंने हिंदी साहित्य के सभी क्षेत्रों में स्मरणीय कार्य किया है। उन्होंने कविता को उनके व्यक्तित्व की कुंजी बताते हुए कहा कि इसी के सहार हम उनको बेहतर तरीके से समझ सकते हैं। एक आलोचक के रूप में वे 'सभ्यता समीक्षक' हैं जो संस्कृति का कोई भी पहलू अनछुआ नहीं छोड़ते हैं। वे भारतीय रंगकर्म को अभिनय केंद्रित बनाना चाहते थे जो कि मुख्यतः निर्देशक केंद्रित है। उन्होंने हिंदी आलोचकों पर तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्होंने नेमिचंद जैन के साथ बेहद संकीर्णता दिखाई है। आगे उन्होंने कहा कि नेमिचंद्र जैन की कविता को सतर्कता के साथ देखने की आवश्यकता है। उन्होंने कहानी, उपन्यास की समीक्षा के प्रतिमानीकरण का बड़ा काम किया था। उनके कार्यों की विवेचना करना अत्यंत आवश्यक है। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में माधव कौशिक ने कहा कि साहित्यिक संकीर्णता के चलते हमने नेमिचंद्र का मूल्यांकन उचित तरीक़े से नहीं किया है जिसकी आज बेहद आवश्यकता है।

प्रथम सत्र, जो 'नाट्यलोचन और संस्कृति विमर्श' पर था, की अध्यक्षता देवेंद्रराज अंकुर ने की और हृषीकेश सुलभ, कीर्ति जैन एवं सुमन कुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सर्वप्रथम कीर्ति जैन ने नेमिचंद्र जैन की नाट्य आलोचना के संदर्भ में कहा कि हिंदी रंगमंच के विकास में वे हिंदी प्रदेश की सामंतवादी सोच को ज़िम्मेदार ठहराते थे। उनका मानना था कि रंगमंच कोई शास्त्रीय विधा नहीं है जिसमें कि बदलाव न किए जा सकें। अतः रंगमंच को निरंतर अपने दर्शकों के साथ संवाद करते रहना चाहिए। नेमिचंद्र जैन नाट्य आलोचकों से यह उम्मीद कर रहे थे कि वे नाटक के ज़रूरी और गैर-ज़रूरी तत्त्वों की तरफ़ गंभीरता से ध्यान दें। हृषिकेश सुलभ ने कहा कि वे सांस्कृतिक विमर्श के राजनीति से प्रेरित हो जाने पर चिंतित थे। वे इस बात पर विश्वास करते थे कि नाटक केवल डिजाइन नहीं बल्कि सभी कलाओं का मिश्रण है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि नेमिचंद्र जैन ने ही नाट्य आलोचना की सहज भाषा को तैयार किया। वे हिंदी रंगमंच की बौद्धिक क्षमता को बढ़ाना चाहते थे। सुमन कुमार ने कहा कि नेमिचंद्र जैन ने युवा रंगकर्मियों को वह विवेक दिया जिससे वे नाटकों की विभिन्न शैलियों को देख और परख सकें। सत्र के अध्यक्ष देवेंद्रराज अंकुर ने कहा कि नाट्य आलोचना की स्थिति अभी भी बहुत

गंभीर है और उसे जाँचने-परखने के लिए हम अभी भी कोई समग्र दृष्टि विकसित नहीं कर पाए हैं। उन्होंने कहा कि नेमिचंद्र जैन हमेशा इस बात को कहते थे कि नाटक की समीक्षा में केवल किसी एक पक्ष की श्रेष्ठता का आकलन नहीं होना चाहिए, बल्कि सभी क्षेत्रों को सम्यक दृष्टि से देखना चाहिए।

अगला सत्र उनके 'काव्यावदान और काव्यचिंतन' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता नंदकिशोर आचार्य ने की और ध्रुव शुक्ल एवं ओम निश्चल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। ओम निश्चल ने नेमिचंद्र जैन के काव्य-संसार को चिह्नित करते हुए कहा कि उनका एकांत 'पलायनवादी एकांत' नहीं था बल्कि उसमें निज के साथ समाज को देखने की दृष्टि थी। नेमिचंद्र जैन की आंतरिकता ही उनका वैशिष्ट्य है। नेमिचंद्र जैन का कवि संकोची और काव्य-संयम का अद्भुत मिश्रण है। ध्रुव शुक्ल ने उनकी कविता के बारे में कहा कि कविता में उनकी सादगी अलग से पहचानी जा सकती है। वे अपने समकालीन कवियों से प्रेरणा लेते हुए उनके साथ खड़े दिखते हैं और सहचर और सहधर्मी की एक नई मिसाल प्रस्तुत करते हैं। सत्र के अध्यक्ष नंदकिशोर आचार्य ने कविता को उनकी सबसे प्रिय विधा मानते हुए कहा कि उन्होंने कविता में अहम का विलयन और उसका सामाजीकरण बहुत संतुलित रूप में किया। हमें उनकी कविता को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है।

अंतिम सत्र 'कथालोचन और साक्षात्कार' विषय पर था जिसकी अध्यक्षता रोहिणी अग्रवाल ने की और सत्यदेव त्रिपाठी, प्रभात रंजन एवं पल्लव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पल्लव ने अपने आलेख में कहा कि नेमिचंद्र जैन अपनी पुस्तक 'अधूरे साक्षात्कार' में आलोचक का सच्चा धर्म निभाते हुए कभी भी किसी उपन्यासकार या उपन्यास से अभिभूत नहीं होते बल्कि उसकी आलोचना समग्र रूप से करते हैं। वह उपन्यास को परखने के लिए प्रामाणिकता, सूक्ष्मता और गहराई का जो सूत्र देते हैं वह आज भी कालजयी है। प्रभात रंजन ने कहा कि वे अपनी इस पुस्तक में आलोचना के ऐसे सूत्र देते हैं जो आनेवाली पीढ़ी को उपन्यास पढ़ने की नई दृष्टि देते हैं। सत्यदेव त्रिपाठी ने कहा कि इनकी आलोचना की यह विशिष्टता है कि वह कथा समीक्षा में अपने नाटक के समीक्षक को नहीं आने देते हैं। वे हमेशा कृति के माध्यम से समीक्षा करते हैं और 'मैला आँचल' की समीक्षा में यह उद्घाटित करते हैं कि पहले हमारा समाज आध्यामिकता और धार्मिकता से संचालित होता था, वह अब राजनीति से संचालित होने लगा है। रोहिणी अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि वह अपनी आलोचना में लेखक को दरकिनार कर रचना से संवाद करते हैं और उसके तल में छिपी हुई साधारण से साधारण चीज़ों को जाँच-परखकर ऊपर लाते हैं।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम स्थल पर नेमिचंद्र जैन के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रदर्शित करती एक चित्र-प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्य और नाट्य प्रेमी उपस्थित थे।

सिद्धैय्या पुराणिक, मीरजी अन्नाराय तथा रा.या. धारवाड़कर की जन्मशताब्दी पर परिसंवाद

31 जुलाई-01 अगस्त 2019, चामराजपेटे, बेंगलुरु

उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने कन्नड साहित्य परिषद, बेंगलुरु के सहयोग से 'सिद्धैय्या पुराणिक, मीरजी अन्नाराय तथा रा.या. धारवाड़कर की

जन्मशताब्दी' पर द्वि-दिवसीय परिसंवाद का आयोजन कृष्णराजा परिशनमंदिर, कन्नड साहित्य परिशत्तु चामराजपेटे, बेंगलुरु में किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने किया। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के प्रख्यात कन्नड कवि एवं संयोजक सिद्ध लिंगय्या ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। कन्नड साहित्य परिषद के अध्यक्ष मनु बालीगर ने सत्र की अध्यक्षता की तथा अध्यक्षीय व्याखान प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र 'सिद्धैय्या पुराणिक के जीवन और लेखन' विषय पर आधारित था। नागबाई बुल्ला ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए सिद्धैय्या पुराणिक के जीवन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। वेंकटगिरी दलवई तथा वाई.एम. याकोल्ली ने क्रमशः सिद्धैय्या पुराणिक की कविता और सिद्धैय्या पुराणिक के गद्य लेखन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय 'मीरजी अन्नाराय का जीवन और लेखन' था। शांतिनाथ दिब्बद ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए मीरजी अन्नाराय के जीवन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। बाला साहेब लोकापुर और पद्मिनी नागराजू ने क्रमशः मीरजी अन्नाराय के उपन्यासों और मीरजी अन्नाराय के शोध लेखन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र रा.या. धारवाड़कर के 'जीवन और लेखन' पर आधारित था। शांतिनाथ दिब्बद ने सत्र की अध्यक्षता की तथा रा.या. धारवाड़कर के जीवन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। बी. सुकन्या मारुति (बी. सुकन्या) तथा गणेश अमिंगद ने क्रमशः रा.या. धारवाड़कर का रचनात्मक लेखन तथा रा.या. धारवाड़कर के विविध लेखन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'पूर्वी और पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांत, काव्यशास्त्र तथा सौंदर्यशास्त्र के तुलनात्मक अध्ययन' पर परिसंवाद

01 अगस्त 2019, तिरूर

आरंभिक भाषण देते हुए के.पी. रामनुन्नि

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने थुंचथ एज़ुथाचन मलयाळम् विश्वविद्यालय के सहयोग से तिरूर में 01 अगस्त 2019 को थुंचथ एज़ुथाचन मलयाळम् विश्वविद्यालय, तिरूर के सभागार में 'पूर्वी और पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांत, काव्यशास्त्र तथा सौंदर्यशास्त्र के तुलनात्मक अध्ययन' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने दक्षिण भारतीय भाषाओं में प्रचलित भारतीय काव्यात्मकों तथा साहित्यिक सिद्धांतों के बारे में विस्तार से बताया तथा वक्ताओं को रचनात्मक साहित्य के आलोक में नए वर्ण-पट विकसित करने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों के बारे में भी बात की तथा विश्वविद्यालय के गणमान्य व्यक्तियों और संकाय सदस्यों तथा छात्रों का स्वागत किया।

प्रख्यात कथाकार और साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता के.पी. रामनुन्नि ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने 'दैवथिंटे पुस्तकम और सूफ़ी परंजा कथा' जैसी अपनी रचनात्मक कृतियों से पर्याप्त उदाहरण दिए। सूफ़ी रहस्यवादी अनुभवों तथा केरल के कथानक के

प्रभाव ने अपने तरीक़े से स्पष्ट रूप में भारतीय काव्यों को योगदान दिया है। उन्होंने यह सलाह भी दी कि पश्चिमी सिद्धांतों के अलावा हमें रचनात्मक कार्यों के आधार पर नए सिद्धांतों को अपनाना होगा।

साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक प्रभा वर्मा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा साहित्यिक सिद्धांतों और विशेषरूप से भारतीय काव्यों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि वाक्-अर्थ (वागर्थ)—शब्द और अर्थ हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने कालिदास के प्रसिद्ध श्लोकों का हवाला दिया और इसे जी. शंकर कुरुप, बशीर जैसे पुरोधाओं के मलयाळम् कार्यों तथा अकादेमी पुरस्कार द्वारा सम्मानित अपने कविता-संग्रह *शामा माधवन* के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि इस विचार-विमर्श में हमारे द्रविड़ काव्यों की मुख्य विशेषताओं का पता लगाया जाना चाहिए जिससे इस विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं, छात्रों और शिक्षाविदों को लाभ होगा। उन्होंने अकादेमी तथा मलयाळम् विश्वविद्यालय द्वारा इस दिशा में इस प्रकार की पहल का स्वागत किया।

थुंचथ एजुथाचन मलयाळम् विश्वविद्यालय के कुलपति अनिल वल्लतोल ने उद्घाटन भाषण दिया। उन्होंने तुलनात्मक अध्ययन करने और अंध-क्षेत्रवाद से बचने के महत्त्व को बताया जिससे अकादमिक स्तर पर साहित्यिक अध्ययन बिगड़ सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अकेले खड़ा नहीं हो सकता और इसलिए वह एक ऐसी इकाई है जो संस्कृति से शुरू होती है।

संस्कृत के प्रख्यात विद्वान सी. राजेंद्रन ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने आनंदवर्धन, भामह, मम्मट व अन्य की रस-ध्वनि के विभिन्न सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारतीय काव्यों की बहुत ही अलग विशेषता है। हमारे द्रविड़ साहित्यकारों ने भी साहित्यिक सिद्धांतों और काव्यों में बहुत योगदान दिया है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि पश्चिमी काव्यों और हमारे पूर्वी काव्यों का पद्धतिगत अध्ययन किया जाना चाहिए और इस तरह के तुलनात्मक अध्ययन हमारे विचारों को बढ़ाने में सहायक होंगे।

मलयाळम् विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष ई. राधाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र के अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एस.के. वसंतन ने की। श्रीदेवी ने 'संस्कृत और पश्चिमी काव्य में पाठकों की प्रतिक्रिया के सिद्धांत' तथा टी. वासुदेवन ने 'वक्रोक्ति एंड स्ट्रक्चरलिज़म' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सी. राजेंद्रन ने की। रोशनी स्वप्ना ने 'हॉर्जिनस एंड ईस्टर्न औचित्य डॉक्टरिन' तथा सी. गणेश ने 'साहित्य और कल्पना : भारतीय काव्यों की अवधारणाओं का विकास' पर तथा वसंतन ने 'पश्चिमी आलोचनात्मक दृष्टिकोण की सीमाएँ' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कुलपति अनिल वल्लतोल ने आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

'सुब्रह्मण्य भारतियार कृत भारत जन सभाई' की शतवार्षिकी पर परिसंवाद

2 अगस्त 2019, चेन्नई

(बाएँ-दाएँ) के. पार्थसारथी, भारती बालन, मालन वी. नारायणन, सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम तथा सीनि विश्वनाथन

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई ने तमिळ और सांस्कृतिक अध्ययन स्कूल, तमिलनाडु ओपन यूनिवर्सिटी, चेन्नई के सहयोग से 2 अगस्त 2019 को कांफ्रेंस हॉल, टी.एन.ओ.यू., चेन्नई में 'सुब्रह्मण्य भारतियार कृत भारत जन सभाई' की शतवार्षिकी पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी की

सामान्य परिषद के सदस्य भारती बालन ने स्वागत भाषण दिया। टी.एन.ओ.यू. के कुलपति के. पार्थसारथी ने उद्घाटन व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि महाकवि भारतियार न केवल असाधारण कवि थे, बल्कि भारतीय साहित्यिक परिवेश में उनका बहुआयामी व्यक्तित्व भी था।

उन्होंने कहा कि भारतियार हर किसी के लिए एक सच्ची प्रेरणा हैं तथा उनकी अमर साहित्यिक कृति 'भारत जन सभाई' युवा पीढ़ी के लिए अनकहे मूल्यों को समाहित करती है।

डॉ. पार्थसारथी ने 'भारत जन सभाई' की शतवार्षिकी मनाने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना भी की। साहित्य अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षीय व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि भारतियार न केवल कवि थे, बल्कि उन्होंने नाटक, पत्रकारिता, भारतीय इतिहास तथा संस्कृति के क्षेत्र में भी कार्य किया है। 'भारत जन सभाई' के दस्तावेज़ उसके तमिळ गायन तथा भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष के इतिहास को दर्शाते हैं। सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने कहा कि भारतियार ने तमिळ भाषा में कई नए शब्दों की शुरुआत की। उदाहरण के लिए, भारतियार ने तमिळ समकक्ष शब्द 'सिराई ओलाई' को 'वारंट' तथा 'अरासु इराई' 'टैक्स' के लिए गढ़ा। उन्हें इस बात का हर्ष था कि इस परिसंवाद ने भारतियार और उनकी अमर साहित्यिक कृतियों को याद करने का मार्ग प्रशस्त किया। सामान्य परिषद के सदस्य श्री मालन ने आरंभिक व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि भारतियार कृत 'भारत जन सभाई' तमिळ साहित्य को एक महत्त्वपूर्ण तथा मूल्यवान योगदान है, उन्होंने तमिळ में भगवदगीता, श्री अरबिंदो की कविताओं तथा पतंजलि के योग सूत्रों का अनुवाद किया है। भारतियार का दृष्टिकोण तमिळ भाषा और साहित्य में नए विचारों और सिद्धांतों को आत्मसात करना था। प्रथम सत्र में श्री सीनि विश्वनाथन ने 'भारत जन सभाई' पुस्तक पर अपना आलेख प्रस्तुत किया जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के इतिहास के बारे में बताया गया था। उन्होंने बताया कि यह पुस्तक 1918 से 1920 के बीच दो खंडों में प्रकाशित हुई थी। उनके पश्चात सी. सेतुपति ने भारतियार के निबंधों में देशभक्ति के तत्त्वों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री मालन ने की। नागा सेंगामाला थायर ने भारतियार के देशभक्ति गीतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। वी.वी. सुब्रह्मण्यन ने भारतियार की अन्य रचनाओं में देशभक्ति के तत्त्वों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि भारतियार के प्रत्येक गीत में शुद्ध देशभक्ति झलकती है। उन्होंने 'पांचाली शब्दम', 'विनायक नानमणि मालाई' और 'वेलाई थामराई' (वाइट लोटस), 'पराशक्ति' और 'कन्नन एन आरसन' (कृष्णा इज़ माई किंग) जैसे अन्य गीतों का भी हवाला दिया। टी.एन.ओ.यू. के स्कूल ऑफ़ तमिळ एंड कल्चरल स्टडीज़ के सहायक प्रोफेसर वाइयापुरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कई विख्यात लेखकों, शिक्षाविदों और साहित्य प्रेमियों ने इस अवसर पर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कन्नड में बाल गौरवग्रंथों के पुनःपाठ पर संगोष्ठी तथा अनुवाद कार्यशाला

5-6 अगस्त 2019, बेंगलुरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु के शब्दाना, सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन ने प्रथम बुक्स तथा जैन यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु के सहयोग से 'कन्नड बाल गौरवग्रंथों के पुनःपाठ पर संगोष्ठी तथा अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन 5-6 अगस्त 2019 को सेमिनार हॉल, जैन यूनिवर्सिटी कॉलेज, नंबर 1/1-1, अटरिया टावर्स, पैलेस रोड, बेंगलुरु में किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु के सेंटर फ़ॉर ट्रांसलेशन के मानद निदेशक एस.आर. विजयशंकर ने उद्घाटन सत्र में आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादेमी और विशेष रूप से सेंटर फॉर ट्रांसलेशन के साहित्यिक प्रयासों पर बात की। कार्यक्रम का उद्घाटन साहित्य अकादेमी

संगोष्ठी का एक दृश्य

के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक सिद्धलिंगय्या ने किया। प्रथम बुक्स, बेंगलुरु की चेयरपर्सन सुजेन सिंह ने प्रथम बुक्स की पुस्तकों तथा भाषाओं पर चर्चा की। जैन विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज के डीन मयथिली पी. राव ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

प्रथम सत्र में ए.वी. नवदा ने कन्नड में बाल साहित्य के उद्भव एवं विकास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। नागेश हेगड़े ने जीवन और पर्यावरण पर आधारित क्लासिक कन्नड कहानियाँ विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की शुरुआत एच.एस. वेंकटेश मूर्ति द्वारा बाल-लेखन पर आधारित आलेख प्रस्तुति के साथ हुई। इसके पश्चात एम.एस. श्रीराम द्वारा 'अनुवाद : प्रासंगिकता, चुनौतियाँ' तथा चा.हा. रघुनाथ द्वारा 'नए युग के लिए कहानियाँ' विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए गए।

दूसरे दिन, 6 अगस्त 2019 को *अनुवाद के आदर्श उदाहरण* विषय पर नागेश हेगड़े, कोल्लेगला शर्मा, शशि समपल्ली, एस. कुमार, टी.एस. श्रीनिधि तथा शिवानंद होमबाला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

प्रथम बुक्स से श्रीमती भार्गवी ने 'स्टोरी वीवर पर अनुवाद' विषय पर चर्चा की। चर्चा सत्र में हर्षवर्धन सुल्या ने 'समाचार पत्रों में बाल-लेखन' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। 11.00 बजे एक गतिविधि सत्र था, बाल साहित्यिक ग्रंथों के आधार पर प्रशिक्षु अनुवादकों को अनुवाद का अभ्यास कराया गया। ध्वनि—एक परिचय सत्र मध्याह्न 12.00 बजे आरंभ हुआ जिसमें शिवानंद होमबाला ने अपनी प्रस्तुतियों के साथ की कहानियों पर चर्चा की।

दोपहर के भोजनोपरांत, गतिविधि सत्र 'अनुवादों की समीक्षा और अंतिम रूप देने पर' आधारित था, जिसमें प्रशिक्षु अनुवादकों से अपने अनुवाद प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया तथा उनकी समीक्षा की गई और उन्हें अंतिम रूप दिया गया। इसके पश्चात एक चर्चा सत्र हुआ, जिसमें वसंत नाडिगेर ने बच्चों के लिए अनुवाद पर आधारित एक पुस्तिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इसके बाद प्रथम बुक्स की हेमा डी. खुर्शापुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम सफल रहा तथा बाल साहित्यकारों, अनुवादकों, साहित्यिक बिरादरी तथा मीडियाकर्मियों ने इसमें भाग लिया।

संस्कृत साहित्य में 21वीं सदी के लेखकीय प्रचलन पर संगोष्ठी

7-8 अगस्त 2019, पुदुचेरी

साहित्य अकादेमी ने पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी के सहयोग से 7-8 अगस्त 2019 को 'संस्कृत साहित्य में 21वीं सदी के लेखकीय प्रचलन' पर संस्कृत में द्वि दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों तथा संस्कृत के विद्वानों का स्वागत किया, जो भारत के विभिन्न हिस्सों से पधारे थे तथा जिन्हें विभिन्न विषयों पर आलेख प्रस्तुत करने थे। अपने स्वागत भाषण में के. श्रीनिवासराव ने संस्कृत भाषा और उसके साहित्य के महत्त्व तथा प्रभाव

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

पर चर्चा की। उन्होंने संस्कृत की कई कालजयी कृतियों पर प्रस्तुत किए गए वैज्ञानिक मुद्दों को तलाशने की आवश्यकता पर भी बल दिया। विश्वविद्यालय के कुलपति गुरमीत सिंह ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि संस्कृत को पूरी तरह से सीखना चाहिए ताकि जीवन में अधिक बौद्धिक ऊँचाइयों तक पहुँचा जा सके।

संगोष्ठी को पाँच आलेख प्रस्तुति सत्रों में बाँटा गया था—21वीं शताब्दी के संस्कृत साहित्यिक सिद्धांतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन और संस्कृत के नाट्य-लघुकथा, पासू, बाल ग़ज़ल, गीत-गद्य-यात्रा वृत्तांत के व्यंग्य साहित्य की समालोचना के साथ-साथ आनंदमूर्ति का संस्कृत लेखन। 'संस्कृत में साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत साहित्यिक कृतियाँ' पर एक विशेष सत्र हुआ। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बंगाल और ओडिशा के प्रख्यात संस्कृत विद्वानों ने उपर्युक्त विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का समापन भाषण साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक अभिराज राजेंद्र मिश्र ने दिया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबु ने पांडिचेरी विश्वविद्यालय और संस्कृत के सभी शोधार्थियों का आभार व्यक्त किया।

'तमिऴ उपन्यास लेखन में समकालीन प्रचलन' पर परिसंवाद

8 अगस्त 2019, तंजावुर

(बाएँ-दाएँ) आर. कामरासु, एस. कार्लोस, जी. बालसुब्रह्मण्यम और के. चिन्नप्पन

तमिऴ विश्वविद्यालय, तंजावुर के सहयोग से चेन्नई में साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने 8 अगस्त 2019 को सीनेट हॉल, तमिल विश्वविद्यालय, तंजावुर में 'तमिऴ उपन्यास लेखन में समकालीन प्रचलन' (प्रभावों के विशेष संदर्भ के साथ) पर एक परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के कार्यालय प्रभारी टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने स्वागत भाषण दिया। तमिऴ विश्वविद्यालय के कुलपति जी. बालसुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उपन्यासों का विश्लेषण और अध्ययन उनके स्थानीय महत्त्व के आधार पर किया जाना चाहिए। साहित्य को समझने के लिए तमिऴ साहित्यिक सिद्धांतों और पाश्चात्य साहित्यिक अवधारणाओं—दोनों को पढ़ा जाना चाहिए। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य तमिऴवन (एस. कार्लोस) ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि यह धारणा है कि उपन्यास महाकाव्यों के सातत्य हैं, जो तमिऴ उपन्यासों के लिए सबसे उपयुक्त हैं, जिन्होंने *सिलपपथिकाराम, मणिमेककलई* तथा *कंब रामायणम* जैसे महाकाव्यों की विरासत को सँभाला है, जबकि उपन्यासों को 19वीं सदी

के अंत में ही प्रमुखता मिली, लेकिन उपन्यास लेखन में उन्होंने वर्तमान अल्पनिद्रा की स्थिति पर अफ़सोस जताया। तमिऴ विश्वविद्यालय के भाषा संकाय के डीन आर. कामरासु ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता एन. शिवसुब्रह्मण्यन ने की तथा उन्होंने उपन्यासों में कहानी कहने के नए रुझानों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार समय और विचारधारा एक उपन्यास का निर्माण करते हैं। उनके आलेख का केंद्रीय बिंदु कहानी लेखन के नए तरीके थे। उनके बाद जी. कुपुसामी ने तमिऴ में अनूदित उपन्यासों के बारे में बताया। उन्होंने सांस्कृतिक समझ, अनुवाद विधियों तथा उपन्यास लेखन में आधुनिक प्रवृत्तियों को विस्तार से बताया। टी. विष्णुकुमारन ने छाया उपन्यास पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, एक उपन्यास समाप्त होने के बाद भी समाप्त नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे अपने प्रभाव और विचारधाराओं के माध्यम से पाठक के मन में निरंतर चलायमान रहना चाहिए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता एन. मुरुगेस पांडियन ने की और उन्होंने इतिहास को पुनर्जीवित करने वाले उपन्यासों पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि इतिहास अतीत का पुनर्निर्माण है। कुमारसेल्वा ने कुमारी क्षेत्र के उपन्यासों में कथा और स्थान की भूमिका के बारे में बताया। आर. कंदासामी ने उपन्यासों में आधुनिक कथा तकनीकों पर आलेख प्रस्तुत किया और नीता एझिलासी ने आधुनिकतावादी तथा उत्तर-आधुनिकतावादी उपन्यासों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार आधुनिक उपन्यास किसी के आत्म को समझने में मदद करते हैं। उन्होंने संगम युग से समकालीन लेखन तक के विकास का विहंगम दृश्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में तमिऴ विश्वविद्यालय संकायों के छात्रों एवं स्थानीय साहित्यिक उत्साही लोगों ने भाग लिया। सभी ने अकादेमी द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की प्रशंसा की।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक महोत्सव

9-10 अगस्त 2019, नई दिल्ली

(बाएँ-दाएँ) मदन मोहन सोरेन, हलधर नाग, सीताकांत महापात्र, उदय नारायण सिंह तथा के. श्रीनिवासराव

वर्ष 2019 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष' घोषित किया गया है। इस उपलक्ष्य में साहित्य अकादेमी ने 9-10 अगस्त 2019 को 'अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव' नई दिल्ली में भारत के 60 जनजातीय भाषा लेखकों को आमंत्रित करके आयोजित किया। उत्सव की शुरुआत साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा उद्घाटन सत्र में दिए गए स्वागत भाषण से हुई। आरंभिक व्याख्यान संताली परामर्श मंडल के संयोजक मदन मोहन सोरेन ने प्रस्तुत किया। उद्घाटन व्याख्यान साहित्य अकादेमी के प्रख्यात ओड़िआ कवि एवं महत्तर सदस्य सीताकांत महापात्र ने प्रस्तुत किया। हलधर नाग विशिष्ट अतिथि थे, बीज भाषण उदय नारायण सिंह ने प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय व्याख्यान साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने दिया।

प्रथम सत्र 'भारत की आदिवासी भाषाएँ : विशिष्टता, मुद्दे, वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ' विषय पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता मिमी केविचुसा इजुङ ने की तथा शांता नायक (बंजारा), राजा कुमार नाइक (बथूड़ी), महादेव टोप्पो (कुड़ुख़), सत्य नारायण

मुंडा (मुंडारी), पूर्णचंद्र हेम्ब्रम (संताली) तथा चंद्रमोहन हेब्रू (हो) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र कहानी-पाठ का था। इसकी अध्यक्षता केशरीलाल वर्मा ने की तथा नंदेश्वर दयमारी (बोडो), प्रदीप कन्हर (कुई) तथा के. सानी एलेक्जेंडर (माओ) ने कहानी-पाठ किया। तृतीय सत्र कविता-पाठ का था। बादल हेम्ब्रम ने सत्र की अध्यक्षता की तथा कलिङ बोराङ (आदि), अंगम ज़तुंग चिरू (चिरू), पद्मिनी नाइक (हो), सावित्री जुआङ (जुआङ), कोशोर कोरा (कोरा), कलाचंद महाली (महाली), मेरी ग्रेस (निकोबारी), एच. चिनखेंथाङ (पाइते), अशोक कुमार पुजाहारी (संबलपुरी-कोशली) तथा गागरिन शबर (शबर) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

चतुर्थ सत्र 'भारत की आदिवासी भाषाएँ : संरक्षण और पुनरोद्धार' पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता के. वासमल्ली ने की तथा आलेख वक्ता थे—धर्मेंद्र पारे (कोरकू), जॉयसिंह तोकबी (कार्बी), सृजन सुब्बा (लिंबू), अमल राभा (राभा) तथा सुबोध हांसदा (संताली)। पंचम सत्र कविता-पाठ का था। सत्र की अध्यक्षता महादेव टोप्पो ने की तथा उत्तरा चकमा (चकमा), विश्वज्योति वर्मन (दिमासा), अंजनी मारकम (गोंडी), पूर्णिमा सरोज (हल्बी), बखियामॅन रिनजाह (खासी), एस. दखार (खासी), नीरद चंद्र कन्हर (कुई), कोनचोक रिगज़िन (लद्दाखी), हर्षल वतुजी गेडाम (मडिया गोंडी) तथा सोमा सिंह मुंडा (मुंडारी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

षष्ठ सत्र कहानी-पाठ का था। सत्र की अध्यक्षता मदन मोहन सोरेन ने की तथा पाइकरे चम्पिया (हो), श्रीकृष्ण जी. काकड़े (कोरकू), बीरेंद्र कु. सोया (मुंडारी) तथा चारू मोहन राभा (राभा) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

सप्तम सत्र कविता-पाठ था। सत्र की अध्यक्षता बसंत निरगुणे ने की तथा येसे रिंगजंग भूटिया (भूटिया), जितेंद्र वासवा (देहवाली), उगेन लेप्चा (लेप्चा), बी.एल. सुब्बा (लिंबू), सोनम वांग्मू (मोनपा), जमुना बिनी तादर (निशी), लानबोन काबुई (पाइते), द्विजेन्द्रनाथ भक्त (राजबोंगशी), रेखा जुगनके (राजगोंडी), राजेश राठवा (राठवी), उपेन किस्कू (संताली), एस. रत्नम्मा (सोलिगा) तथा नीमा तमाङ (तमाङ) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक के समापन भाषण के साथ उत्सव संपन्न हुआ।

असम की कविता की प्रवृत्तियों तथा प्रकृतियों पर परिसंवाद

16 अगस्त 2019, जोरहाट, असम

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने असम के जोरहाट स्थित जे.बी. कॉलेज के सहयोग से 16 अगस्त 2019 को असम के जे.बी. कॉलेज में 'असम की कविता की प्रवृत्तियों तथा प्रकृतियों' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

जे.बी. कॉलेज के प्राचार्य विमल बाराह, पूर्वी क्षेत्र, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश, साहित्य अकादेमी की असमिया परामर्श मंडल की सदस्य ज्योतिरेखा हाज़रिका, साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के सदस्य पिकुमणि दत्ता, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर, प्राणजीत बोरा (विशेष आमंत्रित) तथा जे.बी. कॉलेज (स्वायत्त) के अंग्रेज़ी विभाग के प्रमुख सुजीत शर्मा ने उद्घाटन सत्र में सहभागिता की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जे.बी. कॉलेज के प्राचार्य विमल बारा ने की। उद्घाटन व्याख्यान में उन्होंने इस प्रकार के परिसंवाद आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कॉलेज को इस प्रकार का आयोजन करने का अवसर प्रदान करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना भी की। उन्होंने इस विषय पर परिसंवाद आयोजित करने की

प्रासंगिकता के बारे में बताया और इसके आयोजन में अकादेमी की भूमिका की सराहना की। अपने व्याख्यान में उन्होंने 'अस्मिता' कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित कर साहित्य अकादेमी ने असम की लेखिकाओं को एक बेहतर मंच प्रदान किया है जो एक सराहनीय कार्य है। ज्योतिरेखा हाज़रिका ने संक्षेप में कार्यक्रम के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा मंच पर विराजे गणमान्य अतिथियों का परिचय दिया। साहित्य अकादेमी के प्रतिनिधि के रूप में उन्होंने इस प्रकार के कार्यक्रमों को शुरू करने तथा आयोजित करने में अकादेमी के प्रयासों के बारे में बताया।

परिसंवाद की संयुक्त समन्वयक प्रणामी बानिया ने इस कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में बताया। उन्होंने परिसंवाद के उद्घाटन सत्र का संचालन किया। इस सत्र में अभिनंदन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्र स्थित क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने संक्षिप्त स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में उन्होंने इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन में अकादेमी की भूमिका पर प्रकाश डाला। देवेंद्र कुमार देवेश ने इसके आयोजन में पहल करने के लिए जे.बी. कॉलेज के दो विभागों की सराहना भी की। उद्घाटन सत्र के अंत में प्रणामी बानिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय असमिया कविता 1981-2018 की प्रवृत्तियों तथा प्रकृतियों पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के प्रख्यात लेखक एवं सहायक प्रोफेसर प्राणजीत बोरा ने की। सत्र में तीन आलेख वक्ताओं—इस्माइल हुसैन, गीतांजलि शइकीया तथा राजीब बोरा ने क्रमशः '1981-1990 के दौरान असमिया कविता', '1991-2000 के दौरान असमिया कविता' तथा '2001-2018 के दौरान असमिया कविता' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय 'असम की सजातीय कविताओं की प्रवृत्तियाँ तथा प्रकृतियाँ' था। सत्र की अध्यक्षता फुकन बसुमतारी ने की। सत्र में तीन आलेख वक्ताओं—हाड्मीजि हाड्गसे, दीपक कुमार डोले तथा श्री सौरभ कुमार देउरी ने 'असम की कार्बी कविता की प्रवृत्तियों और प्रकृतियों', 'मिसिङ कविता की प्रवृत्तियों और प्रकृतियों' तथा 'देवरी कविता की प्रवृत्तियों और प्रकृतियों' पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में धन्यवाद प्रस्ताव मिताली गोवाला ने प्रस्तुत किया।

असमिया उपन्यास : उसका मूल और विकास पर परिसंवाद

17 अगस्त 2019, गुवाहाटी, असम

परिसंवाद का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी ने असमिया विभाग, कोट्टन विश्वविद्यालय के सहयोग से 17 अगस्त 2019 को कोट्टन यूनिवर्सिटी, गुवाहाटी में 'असमिया उपन्यास : उसका मूल और विकास' परिसंवाद का आयोजन किया।

शुरुआत में महेश कलिता ने कहा कि असमिया विभाग असमिया साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हमेशा प्रयासरत रहा है तथा यह कार्यक्रम उसी दिशा में एक और क़दम है। कोट्टन यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार दिगंत कुमार दास ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता ताबुराम टेड के निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि देने के पश्चात, श्री देवेश ने साहित्य अकादेमी के कार्यों, उद्देश्यों यथा—भारत की विभिन्न भाषाओं तथा उनके साहित्य को बढ़ावा देने की बात की। असमिया

के प्रख्यात विद्वान दयानंद पाठक ने गंभीर बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उपन्यास प्रत्येक आयु, संस्कृति तथा समाज का अपरिहार्य हिस्सा है। उन्होंने विभिन्न दशकों के असमिया उपन्यासों के विकास का पता लगाने के लिए एक लंबा, विस्तृत और बहुत ही सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि असमिया उपन्यास का स्वरूप जो हमें आज देखने को मिलता है, उसे आकार देने में विभिन्न लेखकों तथा पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान है। उद्घाटन सत्र के अंत में असमिया विभाग की प्रमुख लुत्फा हानुम सलीमा बेगम ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अरूपा पतंगिया कलिता ने की। सत्र का प्रथम आलेख भूपेंद्र नारायण भट्टाचार्य ने प्रस्तुत किया। उन्होंने 'पारंपरिक उपन्यास के क्षेत्र में मेरी यात्रा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र का द्वितीय आलेख नमिता डेका ने 'असमिया उपन्यासों में महिला पात्र : चयनित उपन्यासों से चर्चा' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। पोरी हिलोइदारी ने 'असमिया उपन्यासों में इतिहास की पुनरावृत्ति' विषय पर आधारित सत्र का अंतिम आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता राजेन कलिता ने की। दोपहर के सत्र का प्रथम आलेख मंजुमाला दास ने 'स्वतंत्रता के पश्चात असमिया उपन्यासों के झरोखे' विषय पर प्रस्तुत किया। द्वितीय आलेख मीरा देवी ने 'रीता चौधरी कृत उपन्यासों का गहन पठन/विश्लेषण' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। अंतिम आलेख प्रसिद्ध असमिया उपन्यासकार फणींद्र कुमार देवचौधरी ने प्रस्तुत किया। उन्होंने 'एक उपन्यासकार की दृष्टि से समकालीन असमिया उपन्यास' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र में प्रस्तुत किए गए आलेखों के पश्चात्, सत्राध्यक्ष राजेन कलिता ने कहा कि क्षेत्रीय साहित्य हमेशा मुख्यधारा के साहित्य से अधिक स्वतंत्र रहा है तथा इसलिए उन्हें अन्वेषण का व्यापक क्षेत्र मिलता है।

गुजराती साहित्य में हास्य पर परिसंवाद

21 अगस्त 2019, भुज

(बाएँ-दाएँ) दर्शना ढोलकिया, रतिलाल बोरीसागर, विनोद जोशी तथा धीरेंद्र मेहता

साहित्य अकादेमी ने क्रांतिगुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा कच्छ विश्वविद्यालय भुज के सहयोग से बुधवार, 21 अगस्त 2019 को 'गुजराती साहित्य में हास्य' पर गुजराती परिसंवाद का आयोजन किया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने साहित्य अकादेमी द्वारा गुजराती सहित विभिन्न भाषाओं में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों संबंधी जानकारी दी। साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक विनोद जोशी ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि नवरसों में हास्य प्रमुख है। उन्होंने कहा कि हास्य करुण रस का साथी है और नई पीढ़ी के लिए गुजराती भाषा में हास्य साहित्य की समृद्ध परंपरा को जानना, यह परिसंवाद में काफी फलदायी होगा। उन्होंने साहित्य अकादेमी की निरंतर की जा रही गतिविधियों और कार्यों की भी प्रशंसा की। परिसंवाद में बीज भाषण प्रख्यात गुजराती साहित्यकार रतिलाल बोरीसागर ने प्रस्तुत किया, उन्होंने ने कहा कि हास्य मानव जाति के लिए ईश्वर द्वारा दिया गया अनूठा उपहार है तथा समग्र गुजराती हास्य साहित्य पर सार्थक चर्चा के लिए यह आयोजन महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि साहित्य में संवेदनशीलता आवश्यक है। धीरेंद्र मेहता ने अपने अध्यक्षीय संबोधन

में कहा कि हास्य साहित्य बहुत सरल है, केवल करुण रस से ही हास्य संपन्न होता है।

द्वितीय सत्र में हरेश ढोलकिया ने 'विनोद भट्ट का हास्य साहित्य', रमणीक सोमेश्वर ने 'रतिलाल बोरीसागर का व्यंग्य साहित्य' तथा मनोज रावल ने 'साम्प्रत हास्य-व्यंग्य साहित्य' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य सतीश व्यास ने की। भुज विश्वविद्यालय के आचार्य भावेश जेठवा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम में छात्रों, संकाय के प्राध्यापकों तथा साहित्य प्रेमियों ने सहभागिता की।

सिंधी साहित्य में गोबिंद माल्ही, अज उत्तम तथा कीरत बबाणी का योगदान पर परिसंवाद

25 अगस्त 2019, मुंबई

व्याख्यान देते हुए मोहन गेहाणी, साथ में—नामदेव ताराचंदाणी तथा ओम प्रकाश नागर

साहित्य आकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 25 अगस्त 2019 को अपने बेसमेंट सभागार में 'सिंधी साहित्य में गोबिंद माल्ही, अज उत्तम तथा कीरत बबाणी का योगदान' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने साहित्य अकादेमी के विभिन्न कार्यक्रमों तथा गतिविधियों के बारे में बताया तथा अतिथि वक्ताओं एवं श्रोताओं का स्वागत किया। सिंधी साहित्यकार मोहन गेहाणी ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि सिंधी साहित्य की प्रगति में तीनों साहित्यकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने गोबिंद माल्ही, अज उत्तम तथा कीरत बबाणी के जीवन के कई संदर्भों का हवाला देकर उनके योगदानों को रेखांकित किया। इस अवसर पर मोहन गेहाणी ने सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य वासदेव मोही की अनुपस्थिति में उनके द्वारा भेजे गए बीज भाषण को पढ़कर भी सुनाया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदाणी ने की।

प्रथम सत्र में संध्या कुंदनाणी तथा जेठो लालवाणी ने 'सिंधी साहित्य को गोबिंद माल्ही, अज उत्तम तथा कीरत बबाणी का योगदान' विषय पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता नामदेव ताराचंदाणी ने की। इस अवसर पर उन्होंने बलदेव मतलाणी द्वारा भेजे गए आलेख को पढ़कर सुनाया, जो इस कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके थे। द्वितीय सत्र में गोबिंद माल्ही की बेटी शोभा माल्ही चाँदनाणी, अज उत्तम की बेटी आशा चाँद तथा कीरत बबाणी के बेटे अरुण बबाणी ने अपनी पारिवारिक स्मृतियों को साझा करते हुए उनके जीवन के संघर्षों पर प्रकाश डाला। सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार जगदीश लछाणी ने की।

बिनोद चंद्र नायक जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी

25 अगस्त 2019, संबलपुर, ओडिशा

साहित्य अकादेमी ने ओडिशा के संबलपुर के अमृता विहार स्थित गंगाधर मेहेर विश्वविद्यालय में 25 अगस्त 2019 को बिनोद चंद्र नायक जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का दृश्य

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने की। प्रसिद्ध ओड़िआ कवि राजेंद्र किशोर पांडा ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। पी. जी. काउंसिल के अध्यक्ष सदन कुमार पॉल कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। बीज भाषण प्रदीप कुमार पांडा ने प्रस्तुत किया। मंच पर ओड़िआ विभाग के विभागाध्यक्ष लंबोदर साहू भी उपस्थित थे।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत अतिथियों के परिचय तथा स्वागत भाषण के साथ साहित्य अकादेमी, कोलकाता के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने की। राजेंद्र किशोर पांडा ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि साहित्य को प्रगति के दृष्टिकोण से देखना चाहिए न कि वामपंथी या दक्षिणपंथी या मध्यमार्गी दृष्टि से। उनके अनुसार, कल्पना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है, किंतु कला एक प्रगतिशील लेखक को आकार देने में कल्पना से पूर्व आती है। उन्होंने कवि बिनोद चंद्र नायक को प्रेम और यथार्थ का कवि बताया। उनकी रचनाओं ने उन्हें कवियों के कवि बना दिया है। बीज भाषण देते हुए प्रदीप कुमार पांडा ने यथार्थवादी ढंग से कवि बिनोद चंद्र नायक तथा उनकी कालातीत रचनाओं का मूल्यांकन प्रस्तुत किया। उन्होंने कवि को एक साहित्यिक निर्माता के रूप में चित्रित किया जो किसी भी 'वाद' पर नहीं बल्कि हमारे चारों ओर प्रकृति की सुंदरता पर विश्वास करता है। साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने कवि बिनोद चंद्र नायक की प्रशंसा की तथा उन्होंने उन्हें सार्वभौमिक सोच और वैश्विक धारणा वाले रचनाकार के रूप में चित्रित किया। उन्होंने यह बात भी कही कि कवि को किसी भौगोलिक क्षेत्र या किसी भौतिक मानचित्र तक सीमित नहीं रखा जा सकता। जी.एम.यू. के पी.जी. काउंसिल के अध्यक्ष सदन कुमार पॉल ने जी.एम. यूनिवर्सिटी में इस प्रकार की भव्य संगोष्ठी आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा उनके क्षेत्र को लोकप्रिय बनाने तथा इस प्रकार के क्षेत्रीय साहित्यकारों एवं भाषाओं को समृद्ध बनाने में उनके प्रयासों की सराहना की। उद्घाटन सत्र के अंत में जी.एम. विश्वविद्यालय के ओड़िआ विभाग के विभागाध्यक्ष लंबोदर साहू ने इस अवसर पर उपस्थित समस्त प्रतिभागियों तथा श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता संबलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ध्रुव राज नायक ने की। इस सत्र में संबलपुर के एन.एस.सी.बी. कॉलेज के ओड़िआ के सहायक प्रोफेसर श्याम भोई, संबलपुर के सरकारी महिला कॉलेज में ओड़िआ की सहायक प्रोफेसर अखिला बिस्वाल तथा बलांगीर में सरकारी कॉलेज के प्राचार्य अशोक महापात्र ने आलेख प्रस्तुत किए। श्री भोई ने बिनोद चंद्र नायक के काव्य पात्रों में रोमांटिक तत्त्वों के यथार्थवादी चित्रण के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कविताप्रेमियों की अगली पीढ़ियों से अपील की कि वे अपनी मातृभूमि के प्रति उनके प्रेम को समझने के लिए उनकी कविताओं का गहराई अध्यन करें। अखिला बिस्वाल ने बिनोद चंद्र नायक की रचनाओं में निहित आधुनिक सभ्यता के संभावित विनाश के कारणों के बारे में गंभीरता से बताया। अशोक महापात्र द्वारा दी गई प्रस्तुति, कवि द्वारा मानव जाति में अच्छाई का वर्णन करने के लिए किए गए विभिन्न प्रकार के शब्दों के प्रयोगों के समान थी। अध्यक्षीय संबोधन में ध्रुव राज नायक ने बिनोद चंद्र नायक के संपूर्ण

जीवन को चार चरणों में विभक्त किया—पहला उनका प्रारंभिक जीवन, एक शिक्षक के रूप में, उनके व्यवसाय की कार्यावधि तथा एक निर्माता एवं कवि के रूप में उनके समय के बारे में बताया। भोजनावकाश के बाद द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ओड़िसा साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष अश्विनी कुमार मिश्र ने की, जिसमें संतोष कुमार रथ, जी.एम.यू. में भीमा भोई चेयर प्रोफेसर तथा गौरीदास प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। रथ ने बताया कि महान कवि बिनोद चंद्र नायक की साहित्यिक रचनाओं में किस प्रकार प्राच्य तथा पश्चिमी संस्कृतियों के साहित्यिक विचार परिलक्षित हुए। उन्होंने आगे कहा कि श्री नायक की काव्य गहराई को उचित रूप से समझने के लिए हमें अपने समय में अपनाई गई लेखन शैली पर पुनर्विचार करना होगा। कवि के रूप में बिनोद चंद्र नायक की महानता को समझने के लिए उस काल के समकालीन लेखन पर फिर से गौर करना होगा। गौरीदास प्रधान ने नायक की रचनाओं में पौराणिक मुद्दों की उपस्थिति को ख़ूबसूरती से वर्णित किया। कवि बिनोद चंद्र नायक ने अपनी कविताएँ लिखते समय जिन चरित्रों को अपनाया है, उनमें मिथकों की गहरी उपस्थिति है। अध्यक्षीय संबोधन में अविनी कुमार मिश्र ने बिनोद चंद्र नायक की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य पर आयोजित एक दिवसीय संगोष्ठी में दी गई प्रस्तुतियों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र के अंत में मनोज कुमार पांडा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मलयाळम् साहित्य में गाँधी जी पर संगोष्ठी

26-27 अगस्त 2019, कोट्टयम

महात्मा गाँधी की 150वें जन्म वर्ष समारोह के रूप में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने 26-27 अगस्त 2019 को सुकुमार अषिकोड ट्रस्ट, मलयाळम् विभाग, बेसलियस कॉलेज, कोट्टयम तथा महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम के सहयोग से 'मलयाळम् साहित्य

संगोष्ठी का दृश्य

में गाँधी जी' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन बेसिलियस कॉलेज मीडिया सेंटर, कोट्टयम में किया।

सुप्रीम कोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति तथा प्रसिद्ध गाँधीवादी के.टी. थॉमस ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। प्रख्यात मलयाळम् समीक्षक थॉमस मैथ्यू ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। लेखक तथा सुकुमार अषिकोड ट्रस्ट के सचिव पॉल मनालिल ने सत्र की अध्यक्षता की।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कोट्टयम के बेसलियस कॉलेज के प्राचार्य बीजू थॉमस, मलयाळम् विभाग के विभागाध्यक्ष थॉमस कुरुविला, सुकुमार अषिकोड ट्रस्ट के उपाध्यक्ष वी. सुमेधन ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम संयोजक मंजुषा वी. पाणिकेर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

गाँधी पीस फाउंडेशन के कार्यकारी समिति-सदस्य एम.पी. मथाई ने 'एक लेखक के रूप में गाँधी जी' विषय पर आधारित आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता डी.बी. कॉलेज, थालायोलाप्पराम्बू के अंग्रेज़ी विभाग के विभागाध्यक्ष इंदु के.एस. ने की। सेंट एंटनी कॉलेज, पीरुमड़ा में मलयाळम् के सहायक प्रोफ़ेसर बॉबी के. मैथ्यू ने सत्र का संचालन किया।

प्रथम सत्र में, पूर्व सूचना आयुक्त, केरल राज्य तथा महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफ़ेसर कुरियास कुम्बलाकुऴइ ने 'मलयाळम् काव्य में गाँधी जी' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता

प्रसिद्ध गाँधीवादी एवं समालोचक डॉ. जोस परकादाविल ने की। एन.बी.टी. की कार्यकारी समिति के सदस्य श्रीसियलम उन्नीकृष्णन ने चर्चा का संचालन किया। इस सत्र के बाद प्रख्यात मलयाळम् कवि पी.के. गोपी ने गाँधी जी पर कविताओं का पाठ किया। फादर के. एम. जॉर्ज, अध्यक्ष पाउलोस मार ग्रेगोरियॉस ने इस सत्र की अध्यक्षता की।

27 अगस्त 2019 को आरंभ हुए सत्र में उपन्यासकार पी. राधाकृष्णन ने 'मलयाळम् उपन्यास में गाँधी जी' पर आलेख प्रस्तुत किया। मदुरै कामराज विश्वविद्यालय के मलयाळम् विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष तथा गाँधीवादी सी. जे. रॉय ने सत्र की अध्यक्षता की। जोबिन चाहमाकाला ने चर्चाओं का संचालन किया। सेंट थॉमस कॉलेज, कोष़ेनचेरी में मलयाळम् के सहायक प्रोफेसर जैसन जोस ने 'मलयाळम् कहानियों में गाँधी जी' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल के सदस्य तथा प्रख्यात समालोचक बालचंद्रन वाद्क्केदाथु ने सत्र की अध्यक्षता की। मैथ्यू पॉल ने चर्चा सत्र का संचालन किया।

अगले सत्र में केरल संगीत नाटक अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष टी.एम. अब्राहम ने 'मलयाळम् नाटक में गाँधी जी' पर आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लोक साहित्यकार ए.के. नांबियार ने की। स्कूल ऑफ़ जर्नलिज़्म के निदेशक, प्रेस क्लब, कोट्टयम के सर थेक्किन्कड़ जोसेफ ने चर्चा का संचालन किया।

के.जी. कॉलेज, पमपाडी की प्राचार्य शायला अब्राहम ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। एम.ओ.सी. कॉलेज के सचिव एम.ई. कुरियाकोस ने समापन सत्र का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य अजयपुरम ज्योतिष कुमार ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य एन. अजित कुमार विशेष आमंत्रित अतिथि थे। साहित्य अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य एल.वी. हरि कुमार ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। सुकुमार अष़िकोड ट्रस्ट की कार्यकारी समिति के सदस्य वी. देथन ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। शरत पी. नाथ (संयुक्त संयोजक) ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी के साथ-साथ साहित्य अकादेमी पुस्तक प्रदर्शनी तथा बिक्री का भी आयोजन किया गया।

ओड़िआ में प्रगतिशील साहित्य पर परिसंवाद

26 अगस्त 2019, राउरकेला, ओडिशा

साहित्य अकादेमी ने सरकारी स्वायत्त महाविद्यालय, राउरकेला के सहयोग से ओडिशा के राउरकेला में 26 अगस्त 2019 को 'ओड़िआ में प्रगतिशील साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

ओडिशा विधानसभा के माननीय सदस्य एस.जे. शशि भूषण बेहेरा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। विधानसभा के माननीय सदस्य एस.जे. शारदा प्रसाद नायक कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। परिसंवाद की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने की। साहित्य अकादेमी कोलकाता के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में मिहिर कुमार साहू ने साहित्य अकादेमी के उद्देश्यों तथा कार्यों के बारे में बताया। उद्घाटन भाषण में एस.जे. शशि भूषण बेहेरा ने कहा कि हमारे पास महिमामंडन अतीत तथा उद्देश्यपूर्ण भविष्य है। भाषा और साहित्य की गरिमा बनाए रखने के लिए हमें संकल्प लेने की आवश्यकता है। परिसंवाद के विशिष्ट अतिथि एस.जे. शारदा प्रसाद नायक ने अपने भाषण में ओडिशा की भाषा और साहित्य को मजबूत करने पर बल दिया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के सदस्य बिजय कुमार शतपथी ने अपने बीच भाषण में बताया कि किस प्रकार प्रगतिशील अवधारणा पश्चिमी सामाजिक और आर्थिक प्रणाली को विरासत में मिली तथा अन्य विकसित और विकासशील देशों में फैल गई। उन्होंने कहा कि यूरोप में औद्योगिक क्रांति तथा रूस में अक्टूबर क्रांति ने समाजवाद को जन्म

दिया। अपने संबोधन में उन्होंने कार्ल मार्क्स *दास कैपिटल* और *कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र* के महान कार्यों का भी हवाला दिया जिसने समाजवाद की नींव रखी। अंत में सरकारी स्वायत्त महाविद्यालय के प्राचार्य देवेंद्रनाथ बेहरा ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता महान साहित्यकार कवि अनंत पटनायक के पुत्र अमरेश पटनायक ने की। प्रथम आलेख बिजॅय कुमार बोहिदार ने प्रस्तुत किया। अपने आलेख में उन्होंने कहा कि जीवन में प्रगतिशीलता की स्वीकार्यता प्रगतिशील साहित्य का मूल अर्थ है। सामाजिक व्यवस्था में शांति और सद्भाव स्थापित करने के लिए हमें अपने भीतर मानवतावाद पैदा करना होगा। प्रगति का कुल आधार मानवतावाद पर निर्भर करता है। द्वितीय आलेख पर्वत कुमार मल्लिक ने प्रस्तुत किया। मल्लिक ने कहा कि चेतना के विस्फोट से प्रगतिशील दुनिया का द्वार खुलेगा। उन्होंने भारत के उन महान राजनीतिक और सामाजिक नेताओं का नाम लिया, जिन्होंने समाज की बेहतरी की दिशा में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। तृतीय आलेख सुचित्रा मोहंती ने प्रस्तुत किया। अपने आलेख में मोहंती ने ओड़िया प्रगतिशील साहित्य के इतिहास और विकास का वर्णन किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता एस. जे. भूपेन महापात्र ने की। प्रथम आलेख हरीश चंद्र बेहरा ने प्रस्तुत किया। अपने आलेख में डॉ. बेहरा ने पश्चिमी और पूर्वी साहित्य में प्रगतिशील प्रवृत्ति को चित्रित किया। उन्होंने कहा कि समाजवादी लोकतंत्र की स्थापना और सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक घटनाओं में संतुलन लाने के लिए हमें अपनी चेतना का विस्तार करना होगा और अपनी विचार प्रक्रिया को सुधारना होगा। उन्होंने कार्ल मार्क्स, एंजल, टॉलस्टॉय, पुश्किन, ऑडेन मायाकोवस्की जैसे अन्य महान समाजवादी नेताओं का नाम लिया जिन्होंने मानवतावाद की स्थापना के लिए अपने जीवन का बलिदान कर दिया तथा समाज में समानता लाने के लिए समाजवाद का प्रचार किया। डॉ. बेहरा ने प्रगतिशील साहित्य पर आधारित कुछ प्रसिद्ध कविताओं का भी हवाला दिया। द्वितीय आलेख प्रदीप कुमार बारिक ने प्रस्तुत किया। अपने आलेख में डॉ. बारिक ने पूर्वी और पश्चिमी विचारकों की महान साहित्यिक कृतियों के उदाहरण प्रस्तुत किए। अंतिम आलेख प्रदीप्ता कुमार पांडा ने प्रस्तुत किया। उनके आलेख का विषय *ओडिया नाटक में प्रगतिशील प्रवृत्ति* था। अपने आलेख में उन्होंने कुछ प्राचीन साहित्यिक ग्रंथों का हवाला दिया जो समाजवाद और सामाजिक यथार्थवाद पर आधारित प्रगतिशीलता और समकालीन नाटक का ढोंग करते हैं। अंत में मिहिर कुमार साहू ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

आर.के. प्रियॅगोपालसना के जीवन तथा कार्यों पर परिसंवाद

29 अगस्त 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य अकादेमी ने मणिपुर विश्वविद्यालय के नृत्य और संगीत विभाग के सहयोग से 29 अगस्त 2019 को मणिपुर के इंफ़ाल में 'आर.के. प्रियॅगोपालसना के जीवन तथा कार्यों' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

अपने स्वागत भाषण में देवेंद्र कुमार देवेश ने भारतीय साहित्य के हित में अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों तथा अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं के साहित्य को बढ़ावा देने की बात कही। उन्होंने भारत में विभिन्न समुदायों के वाचिक साहित्य के विकास के लिए साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में भी बताया। एन. किरण कुमार सिंह ने अपने आरंभिक भाषण में कहा कि नृत्य जिसमें हावभाव होते हैं, सभी प्राणियों की प्रथम भाषा है। उन्होंने वक्ताओं तथा उन छात्रों को, जिनके लिए इस परिसंवाद का विशेष महत्त्व है, को धन्यवाद देकर अपने आरंभिक भाषण का समापन किया। जरनैल सिंह ने समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में अपने भाषण में कहा कि समाज की हर पीढ़ी को अपनी संस्कृति को जीवित रखने की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए। अपने भाषण के अंत में उन्होंने कहा कि परिसंवाद का आयोजन बहुत महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक था क्योंकि इसने मणिपुर के आर.के. प्रियॅगोपालसना जैसे महान रचनाकार के प्रति सम्मान का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सोइबम इमोबा ने की तथा विभाग की अतिथि संकाय सदस्य हरिमती देवी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का दृश्य

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मणिपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति हिजाम तोम्बी सिंह ने की। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू मणिपुरी डांस एकेडमी, इंफ़ाल, मणिपुर के समस्त शिक्षकों एवं वक्ताओं - पीएच. इबोतोन सिंह, ए. लक्ष्मी देवी तथा एस. नयनसखी देवी का स्वागत करते हुए सत्र की शुरुआत की। उन्होंने गुरु प्रियॅगोपालसना की बहुमूल्य कलात्मक कृतियों को याद किया जिन्होंने मणिपुरी कला और संस्कृति के अन्य क्षेत्रों न केवल नृत्य बल्कि कोरियोग्राफिक कृतियों का बीड़ा उठाया। उन्होंने मणिपुरी नृत्य के विभिन्न रूपों में गुरु प्रियॅगोपालसना की उत्कृष्टता पर टिप्पणी की। जे.एन. मणिपुरी डांस एकेडमी के पूर्व प्रधानाचार्य पीएच. इबोतोन सिंह ने बताया कि गुरु प्रियॅगोपालसना ने 5 गाथागीतों की रचना की, जिनमें से एक में 'राजर्षि भाग्यचंद्र' में गुरु ने स्वयं 'भाग्यचंद्र' की भूमिका निभाई। उन्होंने गुरु आर.के. प्रियॅगोपालसना के जीवन और कार्यों के बारे में कई अज्ञात पक्षों के बारे में विस्तार से बताया। ए. लक्ष्मी देवी ने मणिपुरी नृत्य के क्षेत्र में अग्रणी के रूप में गुरु आर.के. प्रियॅगोपालसना पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। जे.एन. मणिपुरी डांस एकेडमी की पूर्व संकाय सदस्य एस. नयनसखी देवी ने मणिपुरी नृत्य में कोरियोग्राफी के क्षेत्र में प्रथम पुरुष मणिपुरी नर्तक और अग्रणी के रूप में गुरु आर.के. प्रियॅगोपालसना के बारे में बताया। एच. तोम्बी ने गुरु को प्रदान की गई 'नटराज' की महान उपाधि को याद करते हुए प्रथम सत्र का समापन किया। उन्होंने कहा कि गुरु प्रियॅगोपालसना अक्षरों के व्यक्ति थे। भोजनोपरांत, द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पद्मश्री से सम्मानित एलाम इंदिरा देवी ने की, जो गुरु की सबसे अंतरंग और प्रिय छात्रा थीं। सत्र में 3 वक्ता थे—एम. माचा चाओरेईकनबा, वाई. गोपी देवी तथा पी. लीलावती देवी। एम. चाओरेईकनबा ने मणिपुरी नृत्य के क्षेत्र में गुरु आर.के. प्रियॅगोपालसना की स्थिति पर चर्चा की। मणिपुर विश्वविद्यालय की संकाय सदस्य वाई. गोपी देवी ने अपने पिता आर.के. सूर्योबोरो से नृत्य करने के लिए ली गई गुरु-दीक्षा को याद किया जो मणिपुरी नृत्य और मणिपुरी नट संकीर्तन के प्रसिद्ध प्रतिपादक थे। परिसंवाद की अंतिम वक्ता मणिपुर विश्वविद्यालय की पी. लीलावती ने जवाहरलाल नेहरू मणिपुरी नृत्य अकादेमी में कोरियोग्राफी के क्षेत्र के अग्रणी गुरु प्रियॅगोपालसना पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। पद्मश्री से सम्मानित एलाम इंदिरा देवी ने गुरु के निजी जीवन का सारगर्भित लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में हरिमती देवी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

गुजराती युवा लेखक सम्मिलन

30-31 अगस्त 2019, आणंद, गुजरात

गुजराती युवा लेखक सम्मिलन का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 30-31 अगस्त 2019 को श्री रविशंकर महाराज सभागार में एन.एस. पटेल आर्ट्स कॉलेज, आणंद के सहयोग से

द्विदिवसीय 'गुजराती युवा लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया। इस सम्मिलन की शुरुआत साहित्य अकादेमी मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने प्रतिभागी युवा लेखकों तथा दर्शकों का स्वागत करते हुए किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के विभिन्न कार्यक्रमों, प्रकाशनों तथा गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी, साथ ही युवा लेखकों के प्रोत्साहन के लिए अकादेमी के प्रयासों तथा योजनाओं के बारे में भी बात की। एन.एस. पटेल आर्ट्स कॉलेज आणंद के प्राचार्य मोहन पटेल ने कहा कि कॉलेज ने अपने अस्तित्व के पचास साल पूरे कर लिए हैं, नई पीढ़ी को गुजराती साहित्य की समृद्ध परंपरा से जोड़ने के लिए साहित्यिक आयोजन की यह सार्थक पहल एक भव्य पहल है। अपने उद्घाटन भाषण में साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक विनोद जोशी ने कहा कि युवा लेखकों के बीच विचार और संवेदनाएँ उनके कार्यों में परिलक्षित होती हैं। उन्होंने यह भी कहा कि एक रचयिता आंतरिक उथल-पुथल को शब्द देता है। उन्होंने संस्कृत वाङ्मय का ज़िक्र करते हुए कहा कि नया होना सतही होना नहीं है। अध्यक्षीय व्याख्यान प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार मणिलाल पटेल ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि गुजराती में साहित्य निर्माण की समृद्ध परंपरा है और हर पीढ़ी ने समृद्ध साहित्य लिखकर अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि मैं जब भी गाँव जाता हूँ तो कविता या कहानी के साथ लौटता हूँ। ये रचनाएँ सोने की तरह हैं, जिसे रचयिता लगातार अपनी प्रतिभा और क्षमता से बनाता है। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य में सामाजिक लेखन का अपना महत्त्व है, युवा पीढ़ी को अपना रास्ता बनाना चाहिए।

प्रथम सत्र रचना-पाठ को समर्पित था जिसमें युवा गुजराती लेखक अजय सोनी ने *रेत, नदी* और *जंगल* शीर्षक से अपनी कहानी प्रस्तुत की। उन्होंने प्रतीकों के माध्यम से प्रकृति पर आसन्न संकट की ओर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया। इस सत्र में युवा कवियों जिगर जोशी तथा वर्षा प्रजापति ने अपनी चुनिंदा कविताएँ तथा ग़ज़लें प्रस्तुत कीं। सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य नितिन वडगामा ने की।

सम्मिलन का द्वितीय सत्र 'मैं क्यों लिखता हूँ?' विषय पर आधारित था। जिसमें राम मोरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं अपने दादा-दादी के माध्यम से लोकगीतों तथा लोकसाहित्य से जुड़ा। स्कूल की बैठकों ने भी साहित्यिक रुचि जगाने में योगदान दिया। उन्होंने कहा कि कहानी लेखक को पहचानती है, लेखक कहानी नहीं चुनता। दूसरे आलेख वक्ता मेहुल देवकला ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि लेखन आत्माभिव्यक्ति का सरल माध्यम है। आजकल सतत् पढ़ने की रुचि लेखकों में बदल गई है। सत्र की अध्यक्षता विनोद जोशी ने की।

दूसरे दिन तृतीय सत्र रचनाओं को समर्पित था, जिसमें संजय पटेल ने 'म्हारी विचित्र कला' विषयक विनोदी लेख प्रस्तुत किया। युवा कवि अनंत राठौड़ तथा मोना लीया ने अपनी गुजराती ग़ज़लों एवं कविताओं को प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ लेखक जयेश बोगायता ने की।

चौथा सत्र 'समकालीन युवा सृजन' विषय पर केंद्रित था। गुजराती समीक्षक एवं साहित्यकार अजय सिंह चौहान तथा पन्ना त्रिवेदी ने इस विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता राजेश पंड्या ने की।

समापन वक्तव्य प्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार ध्रुव भट्ट ने प्रस्तुत किया। युवा लेखकों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जिस वातावरण और पर्यावरण में हमारा जीवन रहता है, उसकी अभिव्यक्ति साहित्य में होती है। लेखक अपनी रचना में जो चरित्र रचता है, वही थोड़े समय बाद लेखक को लिखता है। सृजन-प्रक्रिया का यह रहस्य जिज्ञासा जगाता है। प्रसिद्ध गुजराती लेखक शिरीष पांचाल ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि दिल को छूने वाली रचना सबसे अच्छी रचना है। उन्होंने यह भी कहा कि कोई अपने शब्दों के माध्यम से संवेदना और वैचारिक संपन्नता को कितना व्यक्त कर सकता है यह भी लेखक की परीक्षा है। उन्होंने युवा लेखकों के

उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस कार्यक्रम में छात्रों, साहित्यिक विभूतियों तथा मीडिया कर्मियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

सी.जे. थॉमस जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी

02 सितंबर 2019, कुराविलंगड, केरल

संगोष्ठी का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु ने मलयाळम् के शोध विभाग, देव मठ कॉलेज, कुराविलंगड तथा सी.जे. स्मारक समिति, कूथाट्टुकुलम के सहयोग से सोमवार, 02 सितंबर 2019 को देव मठ कॉलेज, कुराविलंगड में सी.जे. थॉमस जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मलयाळम् प्रसिद्ध कवि और *ग्रंथलोकम* के प्रधान संपादक एस. रमेशन ने की। स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी के.पी. राधाकृष्णन ने दिया, जिन्होंने अकादेमी द्वारा समाज के लिए प्रदान की गई सेवाओं के बारे में विस्तार से बताया। कॉलेज के प्राचार्य जोजो के. जोसेफ ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। मलयाळम् के प्रख्यात समालोचक एम. थॉमस मैथ्यू ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने सी.जे. थॉमस की मानवीय अवधारणा का ज़िक्र किया। रेव. फादर कुरियाकोस वेल्लाचालिल तथा जोस करिमबाना ने समापन व्याख्यान प्रस्तुत किया। मलयाळम् के अनुसंधान विभाग के प्रमुख सिबी कुरियन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में दो आलेख प्रस्तुत किए गए। शिबू. एस. कोट्टराम ने 'सी.जे. थॉमस के नाटकों में आधुनिक नाटक की धारणा' पर बल दिया। उनकी राय में परंपरा को निरंतर नकारा जाता है तथा उस पर सवाल उठाए जाते हैं। परिणामस्वरूप, इतिहास मानवता का निरंतर शिकार करता है और दौड़ से बचने के लिए लोग या तो प्रामाणिक संस्करणों को स्वीकार करने से इनकार करते हैं या जानबूझकर उन्हें विघटित कर देते हैं। *अवन वेनदुम वरुन्नू* नाटक में 'उपदेसी' के पात्र द्वारा आधुनिक दुविधा में फँसे आदमी का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। नाटक में केंद्रीय मुख्य पात्र मथुकुट्टी है। इस नाटक में वह यह संदेश देने की कोशिश करते हैं कि युद्ध और हिंसा समाज के व्यक्तित्व और सुंदरता को नष्ट कर देते हैं। उनके नाटक *विश्वरक्षम* में प्रत्येक व्यक्ति समाज के प्रति तीव्रता से प्रतिक्रिया करता है।

द्वितीय सत्र में चार आलेख प्रस्तुत किए गए। एल. थॉमस कुट्टी ने 'रंगमंच, भाषा और संस्कृति' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अपने आलेख में उन्होंने बताया कि विभिन्न समकालीन ज्ञानमीमांसा पद्धतियों पर सी.जे. ने अपना सख़्त रुख़ बनाए रखा है। सी.जे. के अनुसार रंगमंच की राजनीति में प्रतिरोध और विद्रोह का स्वर है। भाषा उन प्रतीकों के माध्यम से काम करती है जो उस परंपरा का प्रभाव वहन करते हैं जिसमें वे पैदा होते हैं। प्रतीकों को परंपरा की विशिष्टता से, स्वाभाविक रूप से, बदल दिया जाता है। 'समकालीन मलयाळम् रंगमंच : लेखन और प्रदर्शन' शीर्षक से आलेख प्रस्तुत करने वाले राजा वॉरियर ने कहा कि नाटक एक ऐसा रूप है जिसकी उचित शुरुआत, मध्य तथा अंत ठीक होना चाहिए। निर्देशक की विशिष्ट भूमिका साहित्य में छिपी चुप्पी को समझाने की है। अभिनेता केवल पात्रों को स्वरूप प्रदान करता है। अच्छे नाटक हमेशा भावनाओं से जुड़े होते हैं।

के.एम. अनिल ने 'सी.जे. के कार्यों में राजनीतिक विचार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि जब हम सी.जे. के नाटकों का

विश्लेषण करते हैं, तो हम पाते हैं कि उनके नाटक साम्यवाद से संबद्ध नहीं हैं। न्याय और क़ानून के बीच विरोधाभास सी.जे. के नाटकों का आदर्श रहा है जिससे मनुष्य के वास्तविक अर्थ और मनुष्य को परिभाषित करने वाले विभिन्न पहलुओं का पता चलता है। वह ज्ञान को अधिक महत्त्व देते हैं। सी.जे. की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया मूल रूप से एक ऐतिहासिक तर्क उपस्थित करती है। उनके नाटक *1128-इल क्राइम 27* एक आम आदमी के जीवन के लगभग समस्त पहलुओं में सरकार के प्रभावों को दर्शाती है। म्यूज़ मैरी ने 'सी.जे. : एक उद्दंड पुनःपरिभाषित' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जो मुख्यरूप से सी.जे. थॉमस द्वारा लिखित निबंधों पर केंद्रित था। उन्होंने कहा कि हम सी.जे. के कार्यों में व्यक्ति और उसके स्थान के बीच का संघर्ष देख सकते हैं। सी.जे. हमेशा उस समाज का विरोध करते थे, जिसने व्यक्ति से छेड़छाड़ करने की कोशिश की है। वह बेशक एक विद्रोही थे जिन्होंने रंगमंच की दुनिया को आंदोलित कर दिया था। उन्होंने कहा कि यह संगोष्ठी साहित्य और भाषा में रुचि रखने वाले छात्रों, शिक्षाविदों तथा आम लोगों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संगोष्ठी के माध्यम से समाज के लिए सी.जे. थॉमस के बहुमूल्य साहित्यिक योगदान के बारे में नई दृष्टि तथा विचार प्राप्त हो सकेंगे।

बोडो में बाल साहित्य पर परिसंवाद

6 सितंबर 2019, असम

साहित्य अकादेमी ने बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार, असम के सहयोग से 6 सितंबर 2019 को बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार, असम में 'बोडो में बाल साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों का संक्षेप में ब्यौरा प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र में अदराम

परिसंवाद का एक दृश्य

बसुमतारी, दीपाली खेरकातरी, मिहिर कुमार ब्रह्म, रायरूब ब्रह्म तथा रूपाश्री हाज़ोवारी ने *बोडो में बाल साहित्य* की विभिन्न विशेषताओं पर चर्चा की। उन्होंने विभिन्न कार्यों तथा बच्चों के मन पर पड़े उनके प्रभावों का उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक अनिल कुमार बर' ने बैठक की अध्यक्षता की। द्वितीय सत्र में बिंदु बसुमतारी, केशब मुसाहारी, लक्ष्मीनाथ ब्रह्म तथा नबीन मल्ला बर' ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता इंदिरा बर' ने की।

'वैश्विक परिवेश में मैथिली भाषा एवं साहित्य' विषय पर संगोष्ठी

8-9 सितंबर 2019, मधेपुरा, बिहार

आरंभिक व्याख्यान देते हुए प्रेम मोहन मिश्र

साहित्य अकादेमी ने टी.पी. कॉलेज के सहयोग से 8-9 सितंबर 2019 को बिहार के मधेपुरा में 'वैश्विक परिवेश में मैथिली भाषा एवं साहित्य' विषय पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबू द्वारा प्रस्तुत किए गए स्वागत भाषण से हुई। मैथिली परामर्श

मंडल के संयोजक प्रेम मोहन मिश्र ने अपने आरंभिक भाषण में संगोष्ठी के मूल विषय पर चर्चा की। बी. एन.एम. विश्वविद्यालय के कुलपति अवध किशोर राय ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। बीज भाषण प्रख्यात मैथिली लेखिका बीना ठाकुर ने प्रस्तुत किया। बी.सी. एम. विश्वविद्यालय के मैथिली विभाग के विभागाध्यक्ष रामनरेश सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। इस अवसर पर बी.एन.एम. विश्वविद्यालय के सम-कुलपति फ़ारूक अली कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'मैथिली काव्य एवं वैश्विक परिवेश' पर आधारित था। इसकी अध्यक्षता अमोल राय ने की तथा पंचानन मिश्र व केशकर ठाकुर ने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में चर्चा का विषय था—'मैथिली साहित्य में आधुनिक रुझान-वैश्विक परिवेश'। इस सत्र की अध्यक्षता राजाराम प्रसाद ने की तथा सदानंद यादव, प्रमोद पांडेय, योगानंद झा एवं राजाराम प्रसाद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अगले दिन, 9 सितंबर 2019 को तृतीय सत्र का विषय था—'मैथिली भाषा में देशभक्ति - वैश्विक परिवेश।' इस सत्र में मुरलीधर झा, केदार कानन तथा के.पी. यादव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता धीरेंद्र नारायण झा ने की तथा उन्होंने भी अपना आलेख प्रस्तुत किया। चतुर्थ सत्र का विषय था—'मैथिली भाषा का मानकीकरण - वैश्विक परिवेश'। इस सत्र की अध्यक्षता अमलेंदु शेखर पाठक ने की। धीरेंद्र कुमार, उपेंद्र प्रसाद यादव तथा अशोक अविचल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रेम मोहन मिश्र ने की। रामनरेश सिंह ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का समापन साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबु के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में स्थानीय साहित्यकार, लेखक, विद्वान तथा मीडियाकर्मी शामिल हुए।

'बोडो साहित्य में महिला लेखन' विषय पर संगोष्ठी

7 सितंबर 2019, असम

संगोष्ठी का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी ने कोकराझार गवर्नमेंट कॉलेज के सहयोग से 7 सितंबर 2019 को कोकराझार गवर्नमेंट कॉलेज, असम में 'बोडो साहित्य में महिला लेखन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

शुरुआत में बोडो परामर्श मंडल की सदस्या अंजलि बसुमतारी ने प्रथम सत्र के अतिथियों तथा प्रतिभागियों का परिचय प्रस्तुत किया। बोडो परामर्श मंडल के संयोजक अनिल कुमार बर' ने संगोष्ठी के महत्त्व पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। श्री साहू ने अपने भाषण में साहित्य अकादेमी के विभिन्न कार्यक्रमों, पुरस्कारों तथा योजनाओं के बारे में बताया तथा युवा पीढ़ी से इस प्रकार के कार्यक्रमों में शामिल होकर इससे लाभान्वित होने का अनुरोध किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता अनिल कुमार बर' ने की। प्रथम आलेख वक्ता गणेश बर' थे। 'बोडो साहित्य में बोडो महिलाओं का संघर्ष' विषय पर केंद्रित अपने आलेख में उन्होंने महिलाओं के लेखन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर अपने विचार प्रकट किए। दूसरे आलेख वक्ता नरेश्वर नार्ज़ारी थे। उनके आलेख का विषय था—'बोडो साहित्य

के क्षेत्र में रेणु बर' का योगदान'। (स्वर्गीय) सुश्री बर' बोडो की एक महान महिला लेखिका थीं। उन्होंने बाल साहित्य, कहानी, उपन्यास, गद्य के साथ-साथ सिनेमा के क्षेत्र में भी योगदान दिया। तीसरे आलेख वक्ता रुजब मुसाहारी थे। उनके आलेख का विषय था—'मेरी दृष्टि में अंजू नाज़ारी कृत—*अंग मबवर्वी दोंग दस्वंग*। अंजू नाज़ारी कृत 'अंग मबवर्वी दोंग दस्वंग' एक कविता-संग्रह है, जो 2014 में प्रकाशित हुआ था। यह बोडो वासियों की सबसे उल्लेखनीय पुस्तकों में से एक है। इसमें कुल 75 कविताएँ हैं तथा अधिकतर कविताएँ महिलाओं से संबंधित हैं। चौथी आलेख वक्ता रूपाली स्वर्गियारी थीं। उनके आलेख का विषय था—'इंदिरा बर' की कविता में नारीवाद'। फुकन चौधरी बसुमतारी ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने सभा में उपस्थित सभी अतिथियों तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। इस सत्र में तीन वक्ता थे। सत्र के प्रथम आलेख वक्ता रुस्तम ब्रह्म थे। उनके आलेख का विषय था—'बोडो में 'स्व' तथा चयनित कवियों की अन्य अवधारणाएँ'। द्वितीय आलेख वक्ता थीं—अल्का बसुमतारी। उन्होंने 'बोडो लोक साहित्य में बोडो महिलाओं का प्रतिनिधित्व' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुनील फुकन बसुमतारी ने 'बोडो साहित्य के क्षेत्र में बोडो लेखिकाओं का योगदान' (बोडो कवयित्रियों के विशेष संदर्भ में) पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्रों के पश्चात् विचार-विमर्श का सत्र हुआ। अंजलि बसुमतारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'गाँधी तथा भारत के क्षेत्रीय साहित्यों के निर्माण में उनका योगदान' पर परिसंवाद

9 सितंबर 2019, पुदुचेरी

साहित्य अकादेमी ने पांडिचेरी विश्वविद्यालय के सहयोग से पुदुचेरी में 9 सितंबर 2019 को 'गाँधी तथा भारत के क्षेत्रीय साहित्यों के निर्माण में उनका योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

व्याख्यान देती हुईं संयुक्ता दासगुप्ता

पांडिचेरी विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग की प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष एच. कल्पना ने उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक संयुक्ता दासगुप्ता ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। पांडिचेरी विश्वविद्यालय के मानविकी संकाय के डीन के. श्रीनिवास ने अभिनंदन किया। हिंदी तथा बाङ्ला के प्रख्यात विद्वान इंद्रनाथ चौधुरी ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उज्ज्वल जना ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता टी. मार्क्स ने की। तीन आलेख वक्ताओं—कैलाश सी. बराल ने (पूर्वोत्तर भारत के साहित्यकारों पर गाँधी का प्रभाव), ज्योतिर्मय त्रिपाठी ने (गाँधी के निबंध : एक साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यांकन) तथा महादेव ने (कन्नड साहित्य में गाँधी तथा उनकी विचारधारा का प्रतिनिधित्व) ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कैलाश सी. बराल ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। के. श्रीनिवास (गाँधी के ग्रंथों में दार्शनिक प्रतिबिंब), क्लेमेंट एस. लूर्डेस (भारतीय अंग्रेज़ी कथा में गाँधी), संयुक्ता दासगुप्ता (लिंग तथा जाति में बाङ्ला साहित्यिक प्रतिनिधित्व : गाँधी और टैगोर) तथा आर. महेंद्रन (मु. वर्धरासनार के उपन्यासों में गाँधीवादी विचारधारा) ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

कन्हैयालाल सेठिया जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

11-12 सितंबर 2019, सुजानगढ़, राजस्थान

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी ने मरुदेश संस्थान के सहयोग से सुजानगढ़ (राजस्थान) में 11-12 सितंबर 2019 को कन्हैयालाल सेठिया जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (दिल्ली) के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुन देव चारण थे। उन्होंने कहा, सेठिया जी की दृष्टि मानवता की भलाई पर आधारित थी तथा उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से इस पहलू को मज़बूत किया जो उनके जीवनकाल में ही लोकगीतों के रूप में लोकप्रिय हो गया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि कन्हैयालाल सेठिया का अपनी मातृभूमि से गहरा लगाव था। उन्होंने कहा कि सेठिया ने राजस्थानी साहित्य को काफी समृद्ध किया है तथा उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। अकादेमी उनके साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने का हर संभव प्रयास करेगी। राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए कहा कि सेठिया जी के 100वें जन्मदिन को उन्हीं की हवेली में मनाना सेठिया जी जैसे कवि को सच्ची श्रद्धांजलि है। उन्होंने आगे कहा कि सरकार को उनकी मातृभूमि सुजानगढ़ में कन्हैयालाल सेठिया के नाम से संग्रहालय बनाना चाहिए। नंद भारद्वाज ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कन्हैयालाल सेठिया के साहित्यिक योगदान को प्रेरणादायक बताते हुए उसकी सराहना करते हुए कहा कि उनकी सोचने और लिखने की अनूठी शैली थी। महाकवि कन्हैयालाल सेठिया फाउंडेशन कोलकाता के न्यासी तथा दिवंगत कवि के पुत्र जयप्रकाश सेठिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मंगत बादल ने की। इस सत्र में उषा किरण सोनी, हाकम अली नागरा तथा चेतन स्वामी ने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अंबिका दत्त ने की। जगदीश गिरि, विनोद स्वामी तथा मदन सैनी ने आलेख प्रस्तुत किए।

आइदान सिंह भाटी ने तृतीय सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में राजेंद्र बारहठ, विनोद सारस्वत तथा संजू श्रीमाली ने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता कुंदन माली ने की। शिवदान सिंह जोलावास, गौरीशंकर प्रजापत तथा घनश्याम नाथ कछावह ने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में भंवर सिंह सामोर ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने की।

'ओड़िआ भाषा के जनजातीय उपन्यास' पर परिसंवाद

13 सितंबर 2019, केओंझार, ओडिशा

संगोष्ठी का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी ने पतितपावन कॉलेज के ओड़िआ भाषा विभाग के सहयोग से 13 सितंबर 2019 को ओड़िआ के केओंझार के पतितपावन कॉलेज में 'ओड़िआ भाषा के जनजातीय उपन्यास' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा की। उन्होंने ओड़िशा की आदिवासी संस्कृति तथा आदिवासी जीवन और संस्कृति पर लिखे गए कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यासों के बारे में बताया। पद्मश्री तुलसी मुंडा ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। कृष्ण चंद्र प्रधान ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की। कृष्ण चंद्र प्रधान ने अपने भाषण में आदिवासी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए आदिवासी उपन्यासों में दर्शाए गए रीति-रिवाज़ों और अनुष्ठानों का वर्णन किया। पुष्पलता पाधी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में संजय हाती तथा रमेश चंद्र मलिक ने आलेख प्रस्तुत किए। गजेंद्र कुमार सेनापति ने सत्र की अध्यक्षता की। पुष्पलता पाधी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। द्वितीय सत्र में नगेन कुमार दास तथा सिसिरा बेहरा ने सुशांत कुमार नायक की अध्यक्षता में अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रबीन कबी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। चर्चा का केंद्रबिंदु गोपीनाथ महांति की विभिन्न रचनाओं के इर्द-गिर्द घूमता रहा। उनकी तुलना फकीर मोहन सेनापति जैसे अन्य प्रमुख लेखकों से भी की गई। उपन्यासों में दर्शाए, आदिवासी समुदायों के चित्रण पर केंद्रित आलेख प्रस्तुत किए गए तथा वक्ताओं ने आदिवासी उपन्यासों की सामान्य विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला।

महात्मा गाँधी और मराठी साहित्य पर संगोष्ठी

14-15 सितंबर 2019, नागपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने राष्ट्रसंत तुकदोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के मराठी तथा गाँधीवादी विचार अनुभागों के सहयोग से 14-15 सितंबर 2019 को गाँधी भवन, नागपुर में 'महात्मा गाँधी और

उद्घाटन भाषण देते अभय बंग

मराठी साहित्य' पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रख्यात मराठी लेखक, विचारक तथा सामाजिक कार्यकर्ता अभय बंग ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा प्रख्यात मराठी लेखक सुरेश द्वादिश्वर ने बीज भाषण प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने गाँधी भवन में एकत्रित प्रतिभागियों तथा साहित्यप्रेमियों का स्वागत किया। प्रतिष्ठित मराठी लेखक तथा साहित्य अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक रंगनाथ पठारे ने अपने आरंभिक व्याख्यान में दर्शन, राजनीति, धार्मिक विचार तथा साहित्य पर महात्मा गाँधी के गहरे प्रभावों की चर्चा की। उन्होंने कहा, गाँधी भारत में युग परिवर्तन लाए। डॉ. बंग ने उद्घाटन व्याख्यान में इस तथ्य को नकारा कि मराठी साहित्य महात्मा गाँधी के प्रभाव को उपयुक्त रूप से स्वीकार करने में विफल रहा है। वास्तव में, अब हमें गाँधी (जो एक दिग्गज पुरुष थे) से जुड़े सभी भावनात्मक दोलनों को गाँधीवादी विचारों से हटकर सोचना चाहिए। दुर्भाग्यवश, मराठी लेखकों ने शुरुआत में गाँधी की उपेक्षा की और बाद में उनका उपहास उड़ाया। द्वादिश्वर ने बीज भाषण में कहा कि चार्ली चैपलिन तथा कई अन्य विशिष्ट हस्तियाँ महात्मा गाँधी के जादू के घेरे में थीं। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि उनके बाद राष्ट्र का नेतृत्व केवल गाँधी ही कर पाएँगे, लेकिन हमने उनकी उपेक्षा की। राष्ट्रसंत तुकदोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय के कुलपति सिद्धार्थ विनायक काणे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि गाँधी का प्रभाव सचमुच सर्वव्यापी था तथा उनके प्रभाव के

कई आयामों को चित्रित करने वाला साहित्य बनाना काफी चुनौतीपूर्ण था और अगर ऐसा किया गया होता तो हमारा साहित्य इस संबंध में पूरा हो जाता। लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ। गाँधीवादी विचार विभाग के विभागाध्यक्ष प्रमोद वातकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि एवं समालोचक बसंत अबाजी डहाके ने की। चित्रा रेडकर ने अपना आलेख प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता रवींद्र रुक्मिणी पंधरीनाथ ने की। इस सत्र का विषय था—'गाँधीवादी विचार तथा साने गुरुजी, विनोबा भावे और राष्ट्रसंत तुकदोजी महाराज का साहित्य'। इस सत्र में रमेश वारखेड़े, प्रमोद वातकर तथा अश्क राणा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन के सत्र का विषय था—'गाँधीवादी विचार तथा मुस्लिमों एवं आदिवासियों का साहित्य'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रमोद मुंगघटे ने की। जावेद पाशा कुरैशी तथा प्रभु राजगडकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अगले सत्र की अध्यक्षता चंद्रकांत वानखेड़े ने की। इस सत्र का विषय था—'गाँधीवादी विचार तथा दलित एवं नारीवादी साहित्य'। इस सत्र में सुनील रामटेके तथा गीतांजलि वी.एम. ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। राजन गवस ने अंतिम सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र का विषय था—'महात्मा गाँधी और बाल साहित्य'। लीला शिंदे तथा मंगला वारखेड़े ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सुबल चंद्र हांसदा पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

15 सितंबर 2019, घोरधरा, झारग्राम

साहित्य अकादेमी ने अखिल भारतीय संताली लेखक संघ, पश्चिम बंगाल शाखा के सहयोग से झारग्राम ब्लॉक महिला अरण्य सुंदरी महासंघ हॉल, घोरधरा, झारग्राम में 15 सितंबर 2019 को सुबल चंद्र हांसदा पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का एक दृश्य

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने वक्ताओं का दर्शकों को परिचय दिया। उन्होंने सुबल चंद्र हांसदा के जीवन और कार्यों पर संक्षिप्त रूप से बात की। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात विद्वान भोगला सोरेन ने किया। अपने भाषण में उन्होंने संताली नाटकों के इतिहास के बारे में बताया तथा उनके द्वारा लिखे गए नाटकों की तुलना पंडित रघुनाथ मुर्मु द्वारा लिखित नाटकों से की। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि शैलजा नंदा हांसदा ने अपने पिता के साथ अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया। रबिलाल टुडु ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने सुबल चंद्र हांसदा के लेखन की विशिष्ट विशेषताओं के साथ-साथ समकालीन सामाजिक माहौल पर उनकी रचनाओं के महत्त्व पर भी प्रकाश डाला।

सी.एल. बास्की ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अखिल भारतीय संताली लेखक संघ, पश्चिम बंगाल शाखा के महासचिव दिजपद हांसदा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता खैरवाल सोरेन ने की। आलेख वक्ताओं यथा— श्रीधरन हांसदा ने 'सुबल चंद्र हांसदा के जीवन और कार्यों' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा चंद्रमोहन सोरेन ने सुबल चंद्र हांसदा की विशिष्ट लेखन शैली का विश्लेषण प्रस्तुत किया। गौरचंद्र मुर्मु ने सुबल चंद्र हांसदा की रचनाओं की भाषा, तकनीक और शैली पर तथा बाबूलाल टुडु ने सुबल चंद्र हांसदा की रचनाओं में परिलक्षित धार्मिक आस्था और संताली समाज पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सुभाष मुखोपाध्याय पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी

18-19 सितंबर 2019, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय के सहयोग से कलकत्ता विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय चंद्रमुखी कादंबिनी सभागृह में 18-19 सितंबर 2019 को सुभाष मुखोपाध्याय पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया। उन्होंने सुभाष मुखोपाध्याय के जीवन और कार्यों पर संक्षिप्त रूप से बात की। उन्होंने मुखोपाध्याय की रचनाओं के विशिष्ट गुणों की जानकारी भी श्रोताओं को दी। उन्होंने उनकी तुलना भारत के अन्य प्रख्यात साहित्यकारों से की। आरंभिक भाषण सुबोध सरकार ने प्रस्तुत किया। डॉ. सरकार ने सुभाष मुखोपाध्याय की रचनाओं का हवाला दिया तथा उनकी रचनाओं की सरलता तथा संक्षिप्तता पर प्रकाश डाला। उन्होंने उनकी रचनाओं और उनके कारणों के मार्क्सवादी उपभेदों की ओर भी इशारा किया। उद्घाटन भाषण जयंत महापात्र ने दिया। डॉ. महापात्र ने सुभाष मुखोपाध्याय से अपने निजी संबंधों की चर्चा की तथा सुभाष मुखोपाध्याय से बातचीत के दौरान के अपने अनुभवों को भी साझा किया। उन्होंने कविता की उत्पत्ति पर विस्तार से चर्चा की तथा उन प्रभावों के बारे में बताया जो महान कविताओं को आगे लाने के लिए एक साथ काम करते हैं। प्रोफ़ेसर स्वपन चक्रवर्ती ने अपने बीज भाषण में सुभाष मुखोपाध्याय के जीवन और कार्यों की पृष्ठभूमि के महत्त्व पर चर्चा की। यह राजनीतिक उथल-पुथल का दौर था। प्रोफ़ेसर चक्रवर्ती ने विभिन्न उपाख्यानों को प्रस्तुत किया तथा जिन ऐतिहासिक कारकों ने सुभाष मुखोपाध्याय के जीवन और रचनाओं को प्रभावित किया, उन पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। सोनाली चक्रवर्ती बनर्जी (कुलपति)

व्याख्यान देते हुए सुबोध सरकार

ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री कौशिक ने सुभाष मुखोपाध्याय की रचनाओं की ईमानदारी और ताक़त पर प्रकाश डाला। उन्होंने उनकी रचनाओं की तुलना अन्य प्रख्यात हिंदी साहित्यकारों से भी की। उन्होंने सुभाष मुखोपाध्याय की रचनाओं के हिंदी अनुवाद की अनुपलब्धता के बारे में भी बात की। प्रोफ़ेसर बनर्जी ने एक व्यक्तिगत लेखक और साहित्यिक समुदाय के नेता के रूप में सुभाष मुखोपाध्याय की उपलब्धियों के बारे में बताया। कलकत्ता विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार देबाशीष दास ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'भारतीय भाषाओं में सुभाष मुखोपाध्याय की उपस्थिति'। इस सत्र में बाङ्ला के अलावा भारतीय भाषाओं के प्रख्यात विद्वानों तथा लेखकों यथा—प्रयाग शुक्ल (हिंदी), दिलीप मायेंगबम (मणिपुरी) तथा वनिता (पंजाबी) ने भाग लिया। उन्होंने अपनी-अपनी भाषाओं में सुभाष मुखोपाध्याय की रचनाओं के अनुवाद के बारे में बताया। एच.एस. शिवप्रकाश ने सत्र की अध्यक्षता की। यह सत्र अन्य लेखकों के दर्शन पर सुभाष मुखोपाध्याय के लेखन के पड़े प्रभाव पर केंद्रित था। सुभाष मुखोपाध्याय को स्पष्ट अर्थपूर्ण तरीके से राय व्यक्त करने में महारथ हासिल थी। उनकी रचनाओं की इस संरचनात्मक गुणवत्ता ने आधुनिक भारतीय लेखकों को प्रभावित किया। 1940 में, जब वह अभी छात्र थे, उन्होंने अपना प्रथम कविता-संग्रह *पदातिक* (द फुट सोल्जर) प्रकाशित करवाया। कई समालोचक इस पुस्तक को आधुनिक बाङ्ला कविता के

विकास में मील का पत्थर मानते हैं। यह कवियों की प्रथम कल्लोल पीढ़ी से स्पष्ट प्रस्थान का प्रतिनिधित्व करती थी; तथा सुभाष के विशिष्ट, प्रत्यक्ष स्वर, उनके तकनीकी कौशल तथा कट्टरपंथी दुनिया को देखने के उनके नज़रिए के लिए इस कृति ने बड़ी लोकप्रियता अर्जित की। अपनी कविता में सुभाष ने उस दौर की भारी उथल-पुथल से संघर्ष किया जो उत्साही बाङ्ला समाज को ऊपर-नीचे करती है। संगोष्ठी का द्वितीय सत्र 'हाशिये के स्वर के रूप में उनकी कविता' विषय पर आधारित था। इस सत्र में प्रोफ़ेसर आशीष गुप्ता तथा दिलीप बंद्योपाध्याय ने क्रमशः 'सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण' विषय पर बात की। प्रोफ़ेसर गुप्ता ने ''हाशिये'' शब्द की सविस्तार सैद्धांतिक परिभाषा व्याख्यायित की। अपने भाषण में डॉ. बंद्योपाध्याय ने सुभाष मुखोपाध्याय की रचनाओं में अपनी विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाने वाली कई महिला पात्रों का ज़िक्र किया। प्रचलित सामाजिक परिदृश्य के साथ-साथ लेखक के अपने मॉडल और दृष्टिकोण की भूमिका ने इन अमर पात्रों को बनाने में सहयोग किया। प्रोफ़ेसर चिन्मय गुहा ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उन दिग्गजों की रचनाओं से सुभाष मुखोपाध्याय की तुलना करते हुए समकालीन प्रख्यात साहित्यकारों का ज़िक्र किया। तृतीय सत्र 'ऑटोबायोग्राफिकल नोट्स इन हिज़ फिक्शन एंड नॉन-फिक्शन प्रोज़' विषय पर आधारित था। सत्र में श्री अवीक मजूमदार, प्रोफ़ेसर बिस्वजीत राय तथा प्रोफेसर हिमबंत बंद्योपाध्याय ने सुभाष मुखोपाध्याय के जीवन में तथा उसके आसपास हुई मूल घटनाओं पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए क्योंकि उन्होंने उनकी रचनाओं को काफी हद तक प्रभावित किया। उनके करीबी लोगों के मुताबिक मुखोपाध्याय का अपने अंतिम वर्षों में राजनीति से मोहभंग हो गया था। वह दिल और गुर्दे की गंभीर बीमारियों से पीड़ित थे तथा जुलाई 2003 में उनका कोलकाता में निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। 'ढोलगोबिंदो' जैसे किरदार उनकी रचनाओं में बार-बार बहुत सारे आत्मकथात्मक लक्षणों के साथ दिखाई देते हैं। प्रख्यात विद्वान प्रोफ़ेसर पवित्र सरकार ने सत्र की अध्यक्षता की। पिछले सत्र में सुभाष मुखोपाध्याय को श्रद्धांजलि देने के लिए 'बहुभाषी कवि सम्मिलन' का आयोजन किया गया। बैठक में प्रोफ़ेसर अंशुमन कर, कीर्ति सेनगुप्ता, नीलांजन बंद्योपाध्याय, संयुक्ता बंद्योपाध्याय, शंकर चक्रवर्ती, सुषमेली दत्त तथा विमलेश त्रिपाठी जैसे विख्यात कवियों ने सुभाष मुखोपाध्याय की स्मृति में अपनी कविताएँ पढ़ीं। बैठक की अध्यक्षता रणजीत दास ने की। धन्यवाद प्रस्ताव साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया।

कोकबोरोक काव्योत्सव

19 सितंबर 2019, गबोर्डी, सिपाहीजला, त्रिपुरा

कोकबोरोक काव्य महोत्सव

19 सितंबर 2019 को साहित्य अकादेमी - उत्तर पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (एन.ई.सी.ओ.एल.) द्वारा एक दिवसीय 'कोकबोरोक काव्योत्सव' का आयोजन त्रिपुरा ग्रामीण विकास संगठन (टी.आर.जी.ओ.) के सहयोग से गबोर्डी समुदाय भवन, गबोर्डी, सिपाहीजला, त्रिपुरा में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा पवित्र दीप प्रज्जवलित कर किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी की गतिविधियों पर बात की। अकादेमी ने पहली बार अगरतला के बजाय किसी दूरस्थ क्षेत्र में कार्यक्रम का आयोजन किया है। त्रिपुरा प्राकृतिक सौंदर्य की भूमि है। त्रिपुरा का प्राकृतिक सौंदर्य साहित्य का स्रोत है। गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर ने त्रिपुरा के

उदयपुर में गोमती नदी के प्राकृतिक सौंदर्य पर आधारित *बिसर्जन* और *राजश्री* लिखी। कविता भाषा का सबसे कोमल रूप है। उन्होंने त्रिपुरा के इतिहास पर भी चर्चा की। अपने भाषण के अंत में जिस स्थान पर साहित्य अकादेमी कार्यालय का निर्माण किया जा सकता है के लिए भूमि उपलब्ध करवाने में मदद करने के लिए त्रिपुरा सरकार का आभार व्यक्त किया। उन्होंने जनजातीय भाषाओं, संस्कृति, परंपराओं के संरक्षण तथा विभिन्न प्रकार की भाषाओं पर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए चंद्रकांत मुरासिंह का भी आभार व्यक्त किया।

प्रख्यात कोकबोरोक कवयित्री शेफाली देबबर्मा ने अपने उद्घाटन भाषण में कोकबोरोक लेखन की उत्कटेच्छा पर बल दिया। जिसके मन में जो कुछ भी होता है, उसे वह लिखना चाहिए। कोकबोरोक साहित्य की जड़ें गाँव में स्थित हैं। उन्होंने गाँव गबोर्डी में इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी का आभार व्यक्त किया। त्रिपुरा ग्रामीण विकास संगठन (टी.आर.जी.ओ.) के अध्यक्ष सुकुमार देबबर्मा ने अपने भाषण में इस कार्यक्रम के आयोजन में साहित्य अकादेमी के योगदान की सराहना की। उन्होंने कोकबोरोक लेखकों को सम्मानित करने के लिए अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव से आगामी नवंबर 2019 में त्रि-दिवसीय कार्यशाला का हिस्सा बनने की अपील की। एन.ई.सी.ओ.एल. के निदेशक चंद्रकात मुरासिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने कहा कि अपनी संस्कृति और परंपरा को बचाए रखना बहुत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षित माता-पिता कोकबोरोक में अपने नवजात शिशुओं का नाम रखें। सांस्कृतिक विकास के बिना हम पूरी तरह से विकसित नहीं हो सकते। गाँव देश की आत्मा है। उन्होंने युवाओं से कड़ी मेहनत करने तथा खुद को नशे से दूर रखने की अपील की। अंत में उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा एक गाँव में कार्यक्रम आयोजन करने में सहायता करने के लिए धन्यवाद दिया जिसकी बहुत आवश्यकता थी। उद्घाटन सत्र की समाप्ति के पश्चात कविता-पाठ सत्र आरंभ हुआ। इसमें 3 कविता-पाठ के सत्र हुए तथा प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से कुल 23 कोकबोरोक कवियों ने सत्रों में भाग लिया। कार्यक्रम का समापन प्रख्यात कोकबोरोक गायक बिशु देव कलाई तथा उनकी मंडली द्वारा गाए गए समापन गीत के साथ हुआ। कार्यक्रम में विभिन्न स्कूलों के शिक्षकों सहित 400 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। अंत में एन.ई.सी.ओ.एल. के निदेशक चंद्रकांत मुरासिंह ने सभी गणमान्य व्यक्तियों, छात्रों तथा स्थानीय लोगों व प्रतिभागियों एवं मीडियाकर्मियों को कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद देकर कार्यक्रम का समापन किया।

'संस्कृत साहित्य में गाँधी' पर परिसंवाद

20 सितंबर 2019, नलबाड़ी, असम

आरंभिक व्याख्यान देते हुए अभिराज राजेंद्र मिश्र

साहित्य अकादेमी ने कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबाड़ी, असम के सहयोग से 20 सितंबर 2019 को नलबाड़ी, असम में 'संस्कृत साहित्य में गाँधी' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबु के स्वागत भाषण से हुई। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने आरंभिक व्याख्यान में परिसंवाद की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के पूर्व कुलपति हरेकृष्ण शतपथी ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। के.बी.वी. संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार हेमेंद्र शर्मा

ने अभिनंदन भाषण प्रस्तुत किया। के.बी.वी. संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति दीपक कुमार शर्मा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उद्घाटन सत्र का समापन रतुल बुजार बरुआ के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

परिसंवाद कार्यक्रम दो सत्रों में विभक्त था। प्रथम सत्र की अध्यक्षता अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की तथा श्री सत्यनारायण चक्रवर्ती ने 'बंगाल के कुछ पंडितों द्वारा गाँधी जी के संघ पर तत्काल प्रतिक्रिया' पर तथा जीत राम भट ने 'संस्कृत साहित्य और महात्मा गाँधी' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मिथिला प्रसाद त्रिपाठी ने की। रमाकांत पांडेय ने 'संस्कृत महाकाव्यों में महात्मा गाँधी' पर अपना आलेख तथा कमलेश चोकसी ने महात्मा गाँधी की आत्मकथा के संस्कृत अनुवाद का समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

आलेख प्रस्तुति के पश्चात दर्शकों के साथ संक्षिप्त विचार-विमर्श सत्र हुआ। कार्यक्रम में असम के नलबाड़ी के कई जाने-माने लेखक, विद्वान तथा मीडियाकर्मी शामिल हुए। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

महिला लेखन पर पूर्वी क्षेत्रीय महोत्सव

21-22 सितंबर 2019, दार्जीलिंग

साहित्य अकादेमी ने गोर्खा दुख निवारक सम्मेलन, दार्जीलिंग के सहयोग से 21-22 सितंबर 2019 को महिला लेखन पर पूर्वी क्षेत्रीय महोत्सव का आयोजन दार्जीलिंग के जी.डी.एन.एस. सभागार, एन.सी. गोयनका रोड में किया।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों तथा दर्शकों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी की नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक जीवन नामदुंग ने महिलाओं के लेखन के महत्त्व पर बल दिया। मोनिका मुखिया ने अपने उद्घाटन

व्याख्यान देते हुए जीवन नामदुंग

भाषण में समाज में महिला लेखन के ऐतिहासिक पहलु पर चर्चा की। उन्होंने समाज में महिलाओं के विभिन्न पहलुओं, भूमिकाओं तथा महिलाओं की स्वतंत्रता पर नए विचारों और समाज में हमेशा पीड़ित तथा हाशिए पर रहने वाली दबी हुई महिलाओं के उत्थान पर चर्चा की। सत्र के अध्यक्ष बी.बी. गुरुंग ने भी इस प्रकार के साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की। केशव गुरुंग ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा तथा सत्र का समापन किया। कार्यक्रम का संचालन नेपाली साहित्य की प्रमुख कवयित्री तथा नेपाली साहित्य सम्मेलन की सहायक सचिव सबीता संकल्प ने किया। महोत्सव के प्रथम सत्र की शुरुआत अंजू बसुमतारी की अध्यक्षता में हुई। गीताली बोरा ने असमिया भाषा में समकालीन लेखन तथा असमिया भाषा की कहानियों तथा उपन्यासों पर केंद्रित अपना आलेख प्रस्तुत किया। जिनिया मित्रा ने बाङ्ला साहित्य के विकास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा समकालीन कहानियों, उपन्यासों तथा कविता लेखन पर बल दिया। उन्होंने बाङ्ला साहित्य के पूर्व औपनिवेशिक महिला लेखन पर भी बअपने विचार व्यक्त किए। रेवती मिश्रा ने अपने आलेख में मैथिली भाषा के ऐतिहासिक पहलु तथा विकास पर केंद्रित अपना आलेख प्रस्तुत किया। अंजू बसुमतारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में लेखकों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न आलेखों की सराहना की। द्वितीय सत्र में नेपाली कवयित्री अमाला सुब्बा, ओड़िआ कवयित्री सुनंदा प्रधान तथा संताली कवयित्री सुचित्रा हांसदा ने अपनी

कविताएँ प्रस्तुत कीं। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मणिपुरी लेखिका एल.आई. देवी ने की। उन्होंने कवियों द्वारा प्रस्तुत कविताओं का विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए अपने भाषण का समापन किया तथा उन्होंने अपनी कविता भी प्रस्तुत की। तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात ओड़िया लेखिका बसंती मोहांती ने की। सत्र में मणिपुरी लेखिका कोइजम शांतिबाला देवी ने मणिपुरी भाषा में समकालीन महिला लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुमित्रा अबिरल ने नेपाली भाषा में समकालीन महिला लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने नेपाली भाषा के विकास में महिला लेखकों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की। संताली भाषा की रानी मुर्मु ने संताली भाषा के विकास में महिला लेखक के योगदान के विभिन्न उदाहरणों का हवाला देते हुए संताली भाषा में समकालीन महिला लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। बासमती मोहंती ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में विभिन्न महिला लेखकों द्वारा प्रस्तुत आलेखों का विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली लेखिका बीना ठाकुर ने की। इस सत्र में असमिया भाषा की रूमी लस्कर बोरा, बाङ्ला भाषा की तिलोत्तमा मजूमदार तथा बोडो भाषा की मीरा खेरकतारी ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

'लोक साहित्य : परंपरा और विकास' विषय पर संगोष्ठी

21-22 सितंबर 2019, उदयपुर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने लोक कला मंडल के सहयोग से 21-22 सितंबर 2019 को उदयपुर, राजस्थान में 'लोक साहित्य : परंपरा और विकास' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

भानु भारती उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने लोक साहित्य को उसके सही परिप्रेक्ष्य में समझने तथा संरक्षित करने की आवश्यकता पर बल दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं का स्वागत किया तथा लोक साहित्य के महत्त्व के बारे में बताया। राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने बीज-भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि लोक साहित्य और लोक परंपराएँ समय बीतने के साथ विकसित होती रही हैं। उन्होंने आगे कहा कि लोक रंगमंच के कलाकारों को समकालीन लोक साहित्य के वर्तमान समय से संबद्ध होना चाहिए तथा श्रोताओं के समक्ष उसे प्रदर्शित करना चाहिए। सत्र की अध्यक्षता सोहन दान चारण ने की। उन्होंने कहा कि लोक साहित्य और लोक परंपराएँ मानव जीवन के विकास के साथ अस्तित्व में आईं। धन्यवाद प्रस्ताव भारतीय लोक कला मंडल, उदयपुर के निदेशक लायक हुसैन ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता शारदा कृष्णा ने की। आलेख वक्ता थे—ज्योति पुंज, हरीश बी. शर्मा तथा गिरधारीदान रतनु। विश्वामित्र दधीच ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। सुरेश सालवी, बुलाकी शर्मा तथा राजेश कुमार व्यास ने इस सत्र में आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्रीलाल मोहता ने की। इस सत्र के आलेख वक्ता थे—जितेंद्र निर्मोही, अंबिका दत्त तथा भूपेंद्र सिंह। चतुर्थ सत्र में लायक हुसैन, प्रकाश अमरावत तथा ओमप्रकाश भाटिया ने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता भंवर सिंह सामौर ने की। समापन सत्र में देव कोठियाल ने समापन भाषण प्रस्तुत किया, जिसकी अध्यक्षता राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने की।

आधुनिकता और जीवाछ मिश्र तथा मैथिली बाल साहिती पर परिसंवाद

26 सितंबर 2019, दरभंगा, बिहार

साहित्य अकादेमी ने 26 सितंबर 2019 को आई.क्यू.ए.सी., एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा, बिहार के मैथिली विभाग के सहयोग से *आधुनिकता और जीवाछ मिश्र तथा मैथिली बाल साहिती* पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत साहित्य अकादेमी के उपसचिव

आलेख वाचन करते हुए अशोक कुमार झा 'अविचल'

एन. सुरेश बाबू के स्वागत भाषण से हुई। मैथिली के प्रख्यात लेखक भीमनाथ झा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। रामानंद झा 'रमन' ने बीज भाषण प्रस्तुत किया जबकि विद्यानाथ झा ने सत्र की अध्यक्षता की। सभी वक्ताओं ने जीवाछ मिश्र के कार्यों के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता नारायण झा ने की। अशोक कुमार झा 'अविचल' ने 'जीवाछ मिश्र के जीवन और योगदान' के बारे में बताया, शांतिनाथ सिंह ठाकुर ने 'आधुनिक मैथिली गद्य और रामेश्वर की भाषा' पर अपने विचार व्यक्त किए तथा सुरेश पासवान ने 'आधुनिक संदर्भ में रामेश्वर के प्रभाव' पर विस्तार से चर्चा की। उषा चौधरी ने 'जीवाछ मिश्र की रचनाओं में महिलाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

अगला सत्र 'मैथिली बाल सहिती', मैथिली बाल लेखकों द्वारा पठन-पाठन को समर्पित था। विद्याधर मिश्र ने इस सत्र की अध्यक्षता की। अजीत मिश्र ने 'मैथिली भाषा की बाल साहित्यिक पत्रिकाओं' तथा मुरलीधर झा ने 'मैथिली बाल साहित्य का वर्तमान परिदृश्य' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

आलेख प्रस्तुति के पश्चात श्रोताओं के साथ संक्षिप्त विचार-विमर्श का सत्र हुआ। कार्यक्रम में कई जाने-माने लेखक, विद्वान तथा मीडियाकर्मी शामिल हुए। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

भाषांतर अनुभव

27 सितंबर 2019, मुंबई

साहित्य अकादेमी ने 27 सितंबर 2019 को अपने बेसमेंट सभागार में 'भाषांतर अनुभव' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें पश्चिमी क्षेत्र के गुजराती, कोंकणी, मराठी तथा सिंधी भाषाओं के प्रतिनिधि कवियों ने चार भाषाओं में अपनी कविताओं का अनुवाद किया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागी कवियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा 'भाषांतर अनुभव' कार्यक्रम के बारे में जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रख्यात मराठी अनुवादक प्रदीप गोपाल देशपांडे ने किया, जिन्होंने कहा कि अनुवाद के जोख़िम को केवल अनुवादक ही समझ सकता है। अनुवादक को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने यह भी कहा कि अनुवाद वह कला है जिसके माध्यम से हम दुनिया के विभिन्न हिस्सों की स्थानीयता और दुखों पर चर्चा करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य बिना किसी तिथि का समाचार है। अध्यक्षीय व्याख्यान साहित्य अकादेमी के पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल के संयोजक भूषण भावे ने प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में उन्होंने घोषणा की कि भाषायी विविधता वाले देश में अनुवाद के काम के लिए बड़ी चुनौतियाँ हैं। उन्होंने कहा कि अनुवाद का काम दो भाषाओं और संस्कृतियों के बीच एक सेतु के सामान है। आज नई तकनीक भी अनुवाद कार्य में मददगार साबित हो रही है।

कार्यक्रम का प्रथम सत्र *गुजराती पाठ* को समर्पित था। जिसमें गुजराती कवि योगेश दवे ने अपनी लंबी कविता *म्हारी शेरी* का पाठ प्रस्तुत किया। उन्होंने राजेंद्र पटेल की अनुपस्थिति में उनकी एक कविता *बाबूजी नी छत्री* का भी पाठ प्रस्तुत किया। उक्त गुजराती कविताओं का क्रमशः हनुमंत चोपडेकर, बबन भगत, गणेश विस्पुटे, नितिन भरत वाघ तथा रश्मि रमानी ने कोंकणी, मराठी तथा सिंधी भाषाओं में अनुवाद किया।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए प्रदीप देशपांडे

द्वितीय सत्र *कोंकणी पाठ* का था। इस सत्र में कोंकणी कवि हनुमंत चोपडेकर ने अपनी कविता *एक चिट्ठी माँ के नाम* का पाठ किया। द्वितीय कोंकणी कवि बबन भगत ने *माँ और रसोईघर* नामक अपनी कविता का पाठ प्रस्तुत किया। उक्त कवियों की कोंकणी कविताओं का गुजराती, मराठी तथा सिंधी भाषाओं में क्रमशः यग्नेश दवे, गणेश विस्पुते, नितिन भरत वाघ तथा रश्मि रमानी ने अनुवाद किया।

कार्यक्रम का तृतीय सत्र *मराठी कविता-पाठ* को समर्पित था। गणेश विस्पुते ने *उसका आकाश, अंगदेश में* आदि कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। दूसरे मराठी कवि नितिन वाघ ने अपनी कविता *बुद्ध* का पाठ प्रस्तुत किया। उक्त कवियों की मराठी कविताओं का गुजराती, कोंकणी तथा सिंधी भाषाओं में क्रमशः यग्नेश दवे, हनुमंत चोपडेकर, बबन भगत तथा रश्मि रमानी ने अनुवाद किया।

कार्यक्रम के चतुर्थ सत्र में कुछ सिंधी कविताओं का पाठ किया गया। लक्ष्मण दुबे ने अपनी सिंधी ग़ज़लों और दोहों का पाठ किया जबकि रश्मि रमानी ने *बाप* आदि कविताओं का पाठ किया। इन सिंधी कविताओं का गुजराती, कोंकणी तथा मराठी में क्रमशः यग्नेश दवे, हनुमंत चोपडेकर, बबन भगत, गणेश विस्पुते, नितिन भरत वाघ ने अनुवाद किया।

कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने साहित्य प्रेमियों तथा कार्यक्रम में शामिल होने आए अतिथि कवियों का आभार प्रकट किया।

'अंडमान में बाङ्ला साहित्य और संस्कृति' पर परिसंवाद

28 सितंबर 2019, पोर्ट ब्लेयर

साहित्य अकादेमी ने कला एवं संस्कृति निदेशालय, अंडमान और निकोबार प्रशासन के सहयोग से 28 सितंबर 2019 को अंडमान क्लब, पोर्ट ब्लेयर, दक्षिण अंडमान में 'बाङ्ला साहित्य और संस्कृति' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रस्तुत किया। आरंभिक व्याखान साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक सुबोध सरकार ने प्रस्तुत किया। बीज-भाषण बाङ्ला परामर्श मंडल के सदस्य आनंदिराजन बिस्वास ने प्रस्तुत किया। डॉ. सरकार तथा श्री बिस्वास दोनों ने कहा कि इस वैश्विक परिदृश्य में मुख्यभूमि तथा एक द्वीप के बीच कोई विभाजन नहीं होना चाहिए। साहित्यिक गतिविधियों को किसी प्रकार के अवरोधों से बाधित नहीं होनी चाहिए तथा इस बात का पूर्णतः ध्यान रखा जाना चाहिए। मत्स्य पालन के निदेशक, ए. एंड एन. प्रशासन, उत्पल कुमार सर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डॉ. सर ने अपने भाषण में सामाजिक मूल्यों के अभिभावक के रूप में लेखकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार लेखकों का यह कर्त्तव्य है कि वे नैतिक मूल्यों को कायम रखें तथा जब भी आवश्यकता हो उसके प्रति अपनी आवाज़ उठाएँ। रशीदा इकबाल ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापन किया। इस अवसर पर ए. एंड एन. प्रशासन की एकमात्र आर.एन.आई.—पंजीकृत त्रैमासिक बाङ्ला लघु-पत्रिका *बाकप्रोतिमा* के महोत्सव अंक का विमोचन भी किया गया। चित्तरंजन राय, नंदलाल देब शर्मा तथा शम्स-उज़-ज़मान ने अंडमान में बाङ्ला साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने उतार-चढ़ाव के विवरणों के साथ-साथ एक ऐतिहासिक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया।

उन्होंने अंडमान के कई समकालीन बाङ्ला लेखकों तथा उनके लेखन का भी ज़िक्र किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ज्योतिर्मय रॉय चौधरी ने की।

किसानी जीवन दा पंजाबी साहित (पंजाबी साहित्य में दर्शाया गया कृषिक जीवन) पर परिसंवाद

30 सितंबर 2019, बादल

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी तथा दशमेश गर्ल्स कॉलेज, बादल (श्री मुक्तसर साहिब) ने *किसानी जीवन दा पंजाबी साहित (पंजाबी साहित्य में कृषिक जीवन)* पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सहायक संपादक अजय कुमार शर्मा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। परिसंवाद के समन्वयक तथा साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य रवि रविंदर ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि पिछले दशकों के दौरान ऐसी ढेरों लेखन सामग्री मिल जाएगी जो समाज के हाशिये पर पड़े वर्गों के प्रति समर्पित है तथा जिनमें दलितों और महिलाओं को प्रभावी प्रतिनिधित्व मिला है, जबकि किसान उसमें ग़ायब है। उद्घाटन भाषण साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य मनमोहन ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि किसान वर्ग हमेशा कर्ज़ में डूबा रहा है और ग़लत नीतियों का शिकार हुआ है। उन्होंने राय व्यक्त की कि नीति निर्माण में निरक्षरता और सीधी भागीदारी की कमी भी इसकी स्थिति के लिए ज़िम्मेदार है। कृषि समाज को आप्रवास, अवसाद और आत्महत्याओं की ओर धकेल दिया जाता है। वर्तमान पीढ़ी को किसानों के सामने आनेवाले आंतरिक संघर्षों पर यथार्थवादी साहित्य लिखने की आवश्यकता है। उन्होंने इस क्षेत्र में गुरदयाल सिंह के योगदान की सराहना की। बीज भाषण पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के पूर्व प्रोफ़ेसर जसविंदर सिंह ने प्रस्तुत किया, उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि किसान जीवन का प्रतिनिधित्व हमेशा कविता, कहानी, उपन्यास और नाटक में रहा है। उन्होंने पाया कि कर्ज़, ग़लत नीतियाँ, प्राकृतिक आपदाएँ तथा बीमारी, अशिक्षा और अंधविश्वास तथा अधिक खर्च मुख्य अपराधी हैं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तथा साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य दीपक मनमोहन ने कहा कि किसान देश का पालन-पोषण करता है तथा पंजाबी साहित्य हमेशा उसका प्रतिनिधित्व करता रहा है। उपन्यास ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। साहित्य की ज़िम्मेदारी एक विशेष दिशा में काम करना है, मुद्दों को उठाना, समस्याओं पर चर्चा करना तथा समाधानों के लिए संकेत करना जो समय की माँग है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के पूर्व प्रोफ़ेसर सुरजीत ने अपने विचार प्रस्तुत किए कि उदारीकरण और वैश्वीकरण ने छोटे किसानों को बुरी तरह प्रभावित किया है। भारतीय सभ्यता यद्यपि एक कृषि प्रधान सभ्यता है फिर भी हमारी कृषि, समाज और संस्कृति टूट रही है। समकालीन भारत दो हिस्सों में बँटा हुआ है। उन्नत भारत एवं कौमी भारत तथा खाड़ी में वृद्धि हो रही है। आत्महत्या करने से मृतक का परिवार तबाह हो जाता है। हमें स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है तथा साहित्य को अनिवार्य रूप से कृषि समाज की मूल्य प्रणाली की रक्षा करने में प्रभावी भूमिका निभानी होगी। दशमेश

गर्ल्स कॉलेज, बादल के प्रधानाचार्य एस.एस. सांघा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ। प्रथम सत्र की अध्यक्षता गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के पूर्व प्रोफ़ेसर गुरमीत सिंह ने की। उन्होंने परिसंवाद में उपस्थित सभी की सराहना की तथा इस प्रकार की चर्चाओं की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किए। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के प्रोफ़ेसर बलदेव सिंह धालीवाल ने 'पंजाबी कहानी' पर अपने विचार प्रकट किए, जिनके द्वारा आर्थिक कठिनाइयों जिससे अस्तित्व का संकट, सामाजिक-सांस्कृतिक संवेदनाएँ एवं व्यवहार, आंतरिक पदानुक्रम, गुण तथा कृषि समाज में पैदा हुए विकारों को दर्शाया गया है। उपभोक्तावाद ने इस समाज को प्रभावित किया है तथा नई पीढ़ी की पंजाबी कहानी को इसका शिकार नहीं बनना चाहिए। पंजाबी ट्रिब्यून, बठिंडा के वरिष्ठ पत्रकार चरणजीत भुल्लर ने पंजाबी मीडिया और पत्रकारिता के संदर्भ में किसानों के प्रतिनिधित्व पर चर्चा की। समकालीन मीडिया किसानों से संबंधित मुद्दों को उजागर करने, व्याख्या करने तथा उनका विश्लेषण करने में विफल रहा है। मीडिया को प्रभावी भूमिका निभानी चाहिए तथा पत्रकारों को कृषि वर्ग के प्रति अपने कर्त्तव्य को समझना चाहिए। दविंदर सैफी ने कहा कि पंजाबी कविता में पंजाब के कृषक वर्ग को विभिन्न दृष्टिकोणों से दर्शाया गया है; रोमांटिक, यथार्थवादी तथा प्रगतिशील। जिन कवियों के पास खेती-बाड़ी जीवन के यथार्थवादी अनुभव हैं, वे किसान वर्ग की भावनाओं को बेहतर तरीके से समझेंगे तथा उसे कविता में अधिक अर्थपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करेंगे। पंजाबी यूनिवर्सिटी रीजनल सेंटर, बठिंडा के पूर्व प्रोफ़ेसर सतनाम सिंह जस्सल ने कहा कि कृषि जीवन चुनौतियों से भरा है तथा इसके बारे में लिखना भी चुनौतियों से भरा है। उन्होंने ऐसे विषयों पर आधारित पंजाबी नाटकों पर भी अपने विचार व्यक्त किए।

महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के अवसर पर 'गाँधी दृष्टि और पर्यावरण विमर्श' विषयक परिसंवाद

2 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

(बाएँ-दाएँ) आबिद सुरती, सत्यव्रत शास्त्री, माधव कौशिक तथा के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी ने 2 अक्तूबर 2019 को रवींद्र भवन, नई दिल्ली में महात्मा गाँधी जी की जयंती के अवसर पर एक दिवसीय परिसंवाद *गाँधी दृष्टि और पर्यावरण विमर्श* आयोजित किया। कार्यक्रम का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात संस्कृत विद्वान एवं साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य सत्यव्रत शास्त्री ने दिया और प्रख्यात समाजसेवी एवं लेखक आबिद सुरती विशिष्ट अतिथि के रूप उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा गाँधी सूत्र और पुस्तकें भेंट करके किया गया। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति विशेष आदर भाव रहा है। उन्होंने महात्मा गाँधी के 150वें जन्म वर्ष के दौरान विभिन्न भारतीय भाषाओं में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। अपने उद्घाटन व्याख्यान में *महाभारत, रामायण* और संस्कृत के विभिन्न कालजयी ग्रंथों से उदाहरण देते

हुए सत्यव्रत शास्त्री ने कहा कि हमारे सारे आदि ग्रंथ पर्यावरण संरक्षण पर बहुत गहनता और सूक्ष्मता से विचार-विमर्श करते रहे हैं। हमारे यहाँ पृथ्वी को माता और वृक्षों को देवता के रूप में पूजा जाता है, पंचतत्त्वों के साथ ही हमारे पशु-पक्षियों को पूरे मान-सम्मान के साथ सामाजिक व्यवहार में शामिल किया जाता रहा है। उन्होंने बताया कि 'स्वच्छता' शब्द संस्कृत से बना है जिसका अर्थ 'बहुत अच्छा' है। उन्होंने गाँधी की पर्यावरण दृष्टि को भी भारतीय संस्कृति से प्रेरित बताया। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे प्रख्यात लेखक एवं समाजसेवी आबिद सुरती ने उन व्यावहारिक मुश्किलों का ज़िक्र किया जिसके चलते गाँधी का पर्यावरण आदि के प्रति महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण अब भी सही रूप में आम जनता तक नहीं पहुँच सका है। आबिद सुरती ने कहा कि हम गाँधी जी को केवल आज़ादी दिलाने वाले महापुरुष के रूप में ही याद करते रहे जबकि गाँधी जी ने आज़ादी के अनेक स्तरों पर कार्य किया था जिससे हम अभी भी अंजान हैं। आबिद सुरती ने स्वयं द्वारा जल संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्हें कई बार अपनी बात आम जनता तक पहुँचाने के लिए लोगों की धार्मिक आस्थाओं को छूना पड़ता है। सत्र के अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि गाँधी का जीवन ही संदेश था। उनकी कथनी और करनी में अंतर न होने के कारण उनके विचार पूरे विश्व में प्रचारित हुए। गाँधी जी जीवन को समग्रता में देखते थे और वह हर प्रदूषित चीज़, चाहे वे विचार ही क्यों न हों, उनको शुद्ध करने पर बल देते थे। वे बाहरी सफाई के साथ-साथ आंतरिक स्वच्छता को महत्त्वपूर्ण मानते थे।

परिसंवाद के दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पत्रकार बनवारी ने की और सुशील त्रिवेदी, उषा उपाध्याय, शंभु जोशी और अरुण तिवारी ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। उषा उपाध्याय ने अपने आलेख में पर्यावरण की वर्तमान समस्या का इतिहास प्रस्तुत करते हुए कहा कि गाँधी जी प्रकृति के साथ स्वावलंबन का रिश्ता रखना चाहते थे न कि दोहन का। वे सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण की स्वच्छता पर उतना ही विश्वास करते थे जितना कि बाहरी स्वच्छता पर। शंभु जोशी ने कहा कि वर्तमान में हम आंतरिक उपनिवेशवाद के शिकार हैं और शहरीकरण हमें विनाश के कगार पर ले जा रहा है। अरुण तिवारी ने विभिन्न उदाहरणों से कहा कि गाँधी वर्तमान विकास की दौड़ में कभी भी शामिल नहीं होते और उनका नज़रिया हमेशा ग्राम विकास को प्राथमिकता देता रहा। उन्होंने कहा कि हमें लालच और ज़रूरत के बीच एक स्पष्ट रेखा खींचनी होगी। सुशील त्रिवेदी ने वर्तमान पर्यावरण संकट का उदाहरण देते हुए कहा कि जब तक हम गाँधी जी की सादगी और संयम के विचारों के अनुगामी नहीं होंगे तब तक हमारे पर्यावरण का बच पाना मुश्किल है। सत्र के अध्यक्ष बनवारी ने कहा कि गाँधी जी का पूरा पर्यावरण चिंतन उनकी व्यावहारिक सोच से जुड़ा हुआ है। वे जीवन के सभी अनुशासनों में स्वच्छता लाना चाहते थे। चाहे वो विचारों की स्वच्छता हो, नैतिक स्वच्छता हो या फिर सामाजिक स्वच्छता। उन्होंने उनकी पुस्तक *हिंद स्वराज* का हवाला देते हुए कहा कि गाँधी जी ने मशीनी सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहा था। वे जानते थे कि नैतिकता से मुक्त विज्ञान समाज को सबसे ज़्यादा नुकसान पहुँचाएगा। उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य के स्वभाव के विपरीत कोई भी विकास मर्यादित नहीं होगा। अगले सत्र की अध्यक्षता सुश्री सुपर्णा ने की और अज़ीज़ हाजिनी और कन्हैया त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। अज़ीज़ हाजिनी और कन्हैया त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में गाँधी जी के व्यक्तित्व और कार्यों के अनेक आयाम उद्घाटित किए। सुश्री सुपर्णा ने कहा कि गाँधी जी 20वीं शताब्दी की अनेक वैश्विक परिस्थितियों की 'विशिष्ट उपज' थे जिन्होंने अनेक समस्याओं का सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया था।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम में भारी संख्या में लेखक, छात्र एवं पत्रकार उपस्थित थे।

सिंधी साहित्य तथा मीडिया पर संगोष्ठी

5-6 अक्तूबर 2019, मुंबई

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए वासदेव मोही, साथ में हैं– कृष्णा किंबहुने, अनिला सुंदर तथा नामदेव ताराचंदाणी

साहित्य अकादेमी ने मुंबई में 5-6 अक्तूबर 2019 को *सिंधी साहित्य तथा मीडिया* पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने अतिथि वक्ताओं तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। संगोष्ठी का उद्घाटन सिंधी की प्रख्यात कोरियोग्राफर अनिला सुंदर ने किया, जिन्होंने कहा कि साहित्य-निर्माण भी एक कला रूप है। उन्होंने आगे कहा कि कला के किसी भी क्षेत्र में कार्य करने वाला व्यक्ति मूल रूप से एक सर्जक ही है। उन्होंने यह भी कहा कि आज के समय में मीडिया हमारे दैनिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है तथा किसी भाषा के साहित्य को व्यापक रूप से फैलाने के लिए विभिन्न मीडिया उपकरणों को बनाने की आवश्यकता है। सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदाणी ने अपने बीज भाषण में कहा कि मीडिया ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो इसमें रचित भाषा तथा साहित्य को बढ़ावा देने में सहायक हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य सामान्य अर्थों में भावना और विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। मीडिया के ऑडियो-विजुअल माध्यम से आज साहित्य की पहुँच बढ़ी है। सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य वासदेव मोही ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि यह निरंतर बदलाव का समय है। उन्होंने कहा कि सिंधी भाषा में वैश्विक सतही साहित्य मौजूद है। सिंधी साहित्य में ऐसी कई कहानियाँ हैं, जिन्हें विश्व साहित्य में शामिल किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि मीडिया के माध्यम से सिंधी साहित्य को विश्व मंच पर लाने की आवश्यकता है।

प्रथम सत्र में अतिथि विद्वानों ने 'प्रिंट मीडिया : अवधारणाएँ और चुनौतियाँ' विषय पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। आनंद लालचंदाणी ने 'सिंधी मुद्रण एवं प्रकाशन : वर्तमान और भविष्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि मोहन हिमथाणी ने 'वर्तमान सिंधी साहित्यिक पत्रिकाएँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता हरीश देवनाणी ने की।

द्वितीय सत्र 'सोशल मीडिया : अवधारणाएँ एवं चुनौतियाँ' विषय पर आधारित था, जिसमें अशोक मनवाणी ने 'व्हाट्सएप के माध्यम से सिंधी साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के द्वितीय आलेख वक्ता जयराम रूपाणी ने 'रंगमंच के माध्यम से सिंधी साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता हीना शाहदादपुरी ने की।

संगोष्ठी के दूसरे दिन आयोजित होनेवाले तृतीय सत्र का विषय था–'सिंधी साहित्य और मीडिया'। सत्र की प्रथम आलेख प्रस्तुतकर्ता सुनीता मोहनाणी ने 'रेडियो–टी.वी. तथा सिंधी साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया जबकि दूसरी आलेख प्रस्तुतकर्ता शोभा मल्ही चंदनाणी ने 'वृत्तचित्र तथा सिंधी साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता नारी लच्छवाणी ने की।

चतुर्थ सत्र 'डिजिटल मीडिया : अवधारणाएँ और चुनौतियाँ' विषय पर आधारित था। आशा चाँद ने 'ई-बुक, ऑडियो तथा सिंधी साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा नंदकुमार सनमुखाणी ने 'लिप्यंतरण : संगम सॉफ्टवेयर द्वारा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता मोहन हिमथाणी ने की।

संगोष्ठी का पंचम सत्र 'फ़िल्म-रंगमंच : अवधारणाएँ और चुनौतियाँ' विषय पर केंद्रित था। भावना राजपाल

ने 'सिंधी फ़िल्म तथा सिंधी साहित्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा एक दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति भी हुई। सत्र की अध्यक्षता शोभा मल्ही चंदनाणी ने की।

साहित्य अकादेमी, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पुर्तगाल में 5 सदस्यीय भारतीय लेखकों का प्रतिनिधिमंडल

11-15 अक्तूबर 2019, पुर्तगाल

भारत गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय तथा पुर्तगाली गणराज्य के संस्कृति मंत्रालय के बीच 2017-2022 की अवधि के लिए हुए एक समझौता ज्ञापन के प्रावधानों के अनुरूप, साहित्य अकादेमी को लिस्बन, पुर्तगाल में भारतीय दूतावास से एक ई-मेल प्राप्त हुआ, जिसमें पुस्तकों, अभिलेखागार तथा पुस्तकालयों (डी.जी.एल.ए. बी.) की महानिदेशक मारिया कार्लोस लौरेरियो ने भारतीय लेखकों के प्रतिनिधिमंडल को एफ.ओ.एल.आई.ओ. साहित्यिक समारोह 2019 में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। तदनुसार, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार द्वारा मनोनीत भारतीय लेखकों के निम्नलिखित प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों—प्रख्यात असमिया लेखक और विद्वान ध्रुव ज्योति बोरा, प्रख्यात बोडो लेखक अनिल कुमार बर', प्रख्यात बाङ्ला एवं स्पैनिश भाषा के विद्व ान श्यामा प्रसाद गांगुली, प्रख्यात अंग्रेज़ी विद्वान तथा अनुवादक मिनी कृष्णन तथा साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने समन्वयक के रूप में 11 से 15 अक्तूबर 2019 तक पुर्तगाल का दौरा किया।

दिसंबर 2015 में यूनेस्को ने ओबिडोस को एक साहित्यिक गाँव का दर्जा दिया, जो रचनात्मक शहरी नेटवर्क कार्यक्रम के हिस्से के रूप में शहरी विकास के लिए एक रणनीतिक कारक के रूप में रचनात्मकता की पहचान करने वाले शहरों के साथ तथा उनके बीच सहयोग को बढ़ावा देगा। फोलियो फेस्टिवल इस योजना का प्रत्यक्ष उदहारण है, एडिनबर्ग, बार्सिलोना, आयोवा सिटी, हीडलबर्ग, क्राको, डबलिन डुनेडिन, ग्रानेडा, परागुए तथा मेलबर्न अन्य साहित्यिक स्थान हैं।

12 अक्तूबर 2019 को प्रतिनिधिमंडल ने सैंटियागो चर्च (13 वीं शताब्दी) का दौरा किया जो अब एक किताब-घर है तथा जहाँ ओबिडोस की स्थानीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। राजदूत के. नंदिनी सिंगला के नेतृत्व में भारतीय दूतावास के सदस्यों के साथ सायं 5 बजे लिस्बन स्थित भारतीय दूतावास के सदस्यों के साथ *मेरा जीवन, मेरे कार्य* विषयक कार्यक्रम में भारतीय प्रतिनिधियों के लिए नियोजित सत्र में सभी भाग लेने पहुँचे। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव, मिनी कृष्णनन, ध्रुवज्योति बोरा, एस.पी. गांगुली तथा अनिल बर' ने बारी-बारी से अपनी बात रखी।

के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी के कार्यों तथा बहुसांस्कृतिक तथा बहुभाषी देश में साहित्य के प्रसार में अकादेमी द्वारा निभाई जा रही अहम भूमिका के बारे में बताया। मिनी कृष्णन ने संपर्क भाषा में अनुवाद के महत्व के बारे में चर्चा की जिस द्वारा भारतीय तथा ग़ैर-भारतीय साहित्य की समृद्धि हो तथा उसकी सराहना भी हो। डॉ. गांगुली ने स्पेनिश में पुर्तगाल और स्पेन के बीच साहित्यिक तथा ऐतिहासिक संबंधों के बारे में बताया। डॉ. बोरा ने पूर्वोत्तर के स्वरों पर चर्चा करते हुए कहा कि वह अपने उपन्यासों के शिल्प को ऐसे गढ़ना चाहते हैं कि देश के बाकी हिस्सों के लोग उन्हें पढ़ने के लिए विवश हो जाएँ तथा अनिल बर' ने अपनी कविता के बारे में बताया कि किस प्रकार उनकी कविताएँ उन समस्त लोगों के विरुद्ध हैं जो दूसरों की स्वतंत्रता में अवरोध उत्पन्न करना चाहते हैं। एक स्वयंसिद्ध पुर्तगाली सितार वादक रुई मार्टिन ने सितार वादन प्रस्तुत किया तथा स्वरचित रचना के पाठ के साथ सत्र का समापन हुआ।

13 अक्तूबर 2019 को प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को एक आधुनिक कला कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया, जिसका विषय था—'पैरा इमेजनर ओ मुंडो सेम मेडो' (बिना किसी भय के दुनिया की कल्पना करना)। सदस्यों ने मारिया की मदद से पुर्तगाली

कलाकारों तथा लेखकों से बातचीत की तथा बेस्ट बुक कवर डिजाइन के लिए पुरस्कार अर्पण समारोह भी देखा।

प्रतिनिधिमंडल ने 500 वर्ष पुरानी पुस्तकों, चर्मपत्रों तथा नक्शों के अभिलेखागार के साथ अजुदा पुस्तकालय का भी भ्रमण किया। 1824 में अपनी वर्तमान स्थिति में स्थापित यह वास्तव में एक बहुत प्राचीन संग्रहालय था जिसे पुर्तगाल के राजा ने नेपोलियन युग के दौरान ब्राजील में स्थानांतरित कर दिया था जब यूरोपीय राज्य फ्रांसीसी आक्रामकता के आगे हार रहे थे। भारत के बारे में कई अज्ञात रिकॉर्ड वहाँ उपलब्ध हैं। 15 अक्तूबर 2019 को प्रतिनिधिमंडल भारत के लिए रवाना हुआ।

'गिरिजा कुमार माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर संगोष्ठी

14-15 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

संगोष्ठी का एक दृश्य

गिरिजा कुमार माथुर की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में सा. हित्य अकादेमी ने 'गिरिजा कुमार माथुर : व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन 14 अक्तूबर 2019 को नई दिल्ली स्थित रवींद्र भवन में किया। प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अतिथियों को अंगवस्त्रम व पुस्तकें भेंट कर स्वागत किया।

इस अवसर पर उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रख्यात हिंदी आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर ने काव्य की सभी परंपराओं को तोड़ते हुए अपने वाक्य विधान पर विशेष ध्यान दिया। वह अनास्था के कवि नहीं थे और उन्होंने आधुनिकता को उचित संदर्भ में परिभाषित किया। वह अपनी कविता शब्दों से, लय से, छंद से तथा अन्य प्रतीकों को नए रूप में प्रस्तुत करके संभव करते थे।

अपने आरंभिक वक्तव्य में हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में गीतात्मकता है। वे कविता में 'अनुभूति के ताप' को महत्त्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने गीतों को एक नया संस्कार दिया। उन्होंने हिंदी साहित्य में विज्ञान लेखन की शुरुआत तो की ही बल्कि उपेक्षित विधा काव्य-नाटक आदि का सृजन भी किया।

अपने बीज भाषण में अजय तिवारी ने उनकी कविता के तीन प्रमुख तत्त्वों - रोमांटिकता, प्रकृति-सौंदर्य और यर्थाथवाद को विस्तार से व्याख्यायित किया। आगे उन्होंने कहा कि बिना रोमांटिक हुए प्रगतिवादी भी नहीं हुआ जा सकता। उनकी कविता एक-आयामी नहीं है बल्कि वे विभिन्न आयामों के कवि हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर 'लोकल' से लेकर 'ग्लोबल' तक के कवि हैं। उनकी बौद्धिक प्रखरता एवं सम्यक् दृष्टि उनको एक बड़े कवि के रूप में प्रतिष्ठित करती है। उन्होंने हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए आकाशवाणी के माध्यम से कई नए प्रयोग किए।

इस अवसर पर *गिरिजा कुमार माथुर रचना-संचयन* (संपादक : पवन माथुर) का लोकार्पण भी किया गया। गिरिजा कुमार माथुर के पुत्र एवं इसके संपादक पवन माथुर ने कहा कि संभव है कि गिरिजा प्रसाद माथुर की सर्जना के बाहुल्य को देखते हुए इस संकलन में आपको कुछ कम सामग्री दिखे लेकिन मेरी कोशिश रही है कि उनके अचिह्नित लेखन को मैं इस संचयन में प्रस्तुत कर सकूँ। इस अवसर पर गिरिजा कुमार माथुर की बेटी बीना बंसल एवं उनके छोटे पुत्र अमिताभ माथुर भी उपस्थित थे।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता सूर्य प्रसाद दीक्षित ने की और दिनेश कुशवाह ('तार सप्तक'

की पृष्ठभूमि) तथा आशीष त्रिपाठी ('तार सप्तक' के कवियों में गिरिजा कुमार माथुर की विशिष्टता) विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सौमित्र मोहन ने की और वशिष्ठ अनूप ने 'गिरिजा कुमार माथुर के काव्य में प्रयोगवाद और उनका गीति काव्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सौमित्र मोहन ने कहा कि उनके गीत तुकबंदी से मुक्त हैं। उनके काव्य की विवेचना उतनी व्यापकता से नहीं की गई जितनी की जानी चाहिए थी। उनकी सारी अभिव्यक्तियाँ युग के अनुकूल थीं और वे हमेशा नए के प्रति आकर्षित रहे।

संगोष्ठी के अंतिम दिन 15 अक्तूबर 2019 को तीन सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक चित्तरंजन मिश्र ने की और साधना अग्रवाल तथा ब्रज श्रीवास्तव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। ब्रज श्रीवास्तव ने 'गिरिजा कुमार माथुर की कविताओं में सामाजिक परिवेश और यथार्थ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनकी कविताओं में जो भी प्रयोग किए गए उनका लक्ष्य 'व्यापक सत्य' को सामने लाना था। उन्होंने अपनी कविताओं में यथार्थ और सौंदर्य का संतुलित समन्वय किया है। वे अपनी कविता में मौलिकता और अनुभव की सत्यता का सम्मान करते थे। हम उन्हें आधुनिक और नए भारत के स्वप्निल कवि के रूप में याद कर सकते हैं। उनका सामाजिक यथार्थ गहन परिवेश और रचना-प्रक्रिया की सघनता पर आधारित था। साधना अग्रवाल ने 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की कविता और गिरिजा कुमार माथुर' विषय पर सबसे पहले 'तार सप्तक' की पृष्ठभूमि के बारे में विस्तार से बताते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गिरिजा कुमार माथुर की कविता के विभिन्न आयामों की विस्तृत चर्चा की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि गिरिजा कुमार माथुर ने मार्क्सवाद को भारतीय परिवेश में रोपकर देखा है। उन्होंने उनकी कविताओं में आए मुख्य प्रतीकों—आग, रोशनी, चाँदनी और दीपक का ज़िक्र करते हुए कहा कि वे आग और रोशनी को जहाँ परिवर्तन के प्रतीक के रूप में देख रहे थे वहीं चाँदनी आशा के प्रतीक के रूप में थी। इस तरह उनकी कविताओं में सपनों को बचाने की आकुल पुकार को महसूस किया जा सकता है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता शरद दत्त ने की और सुरेश ढींगरा एवं सत्यकाम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुरेश ढींगरा ने 'गिरिजा कुमार माथुर नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में' विषय पर कहा कि उनके नाटकों और एकांकियों में पौराणिक संदर्भ नहीं हैं बल्कि उन्होंने निकट इतिहास की घटनाओं को कथ्य के रूप में प्रयुक्त किया है। रेडियो की समय-सीमा को देखते हुए उन्होंने छोटे नाटक लिखे हैं। लेकिन अपने कथ्य की व्यापकता में वे बड़े नाटक के रूप में भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं। उन्होंने अपने पात्रों को दैनिक बोलचाल की भाषा प्रदान की है, जो बेहद महत्त्वपूर्ण है। अतः हम उनके नाटकों को उनकी कविता से कमतर नहीं माप सकते। सत्यकाम ने 'गिरिजा कुमार माथुर : लेखकीय व्यक्तित्व के विविध आयाम' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका शृंगार मध्यवर्गीय व्यक्ति का है। वे कविता में निराला के बाद ध्वनि संगीत की परंपरा को प्रतिष्ठित करने वाले महत्त्वपूर्ण कवि हैं। उनके लेखकीय व्यक्तित्व पर रेडियो और दूरदर्शन की स्पष्ट छाया है। वे अपने सृजन में आध्यात्मिकता के बारे में बहुत संतुलित दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। अपने अध्यक्षीय भाषण में शरद दत्त ने उनके समय में आकाशवाणी में काम कर रहे महत्त्वपूर्ण लेखकों का ज़िक्र करते हुए कहा कि गिरिजा कुमार माथुर ने आकाशवाणी को एक परिवार के रूप में रूपांतरित किया और लेखकों एवं आकाशवाणी के बीच सेतु का काम किया। उन्होंने उनके रेडियो नाटकों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की अपील भी की, जिससे उनकी नाट्य प्रक्रिया को बेहतर रूप में समझा जा सके और उनकी प्रस्तुतियाँ भी की जा सकें।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता रवि भूषण ने की और कौशलनाथ उपाध्याय एवं अमिताभ माथुर ने अपने विचार व्यक्त किए। कौशलनाथ उपाध्याय ने 'गिरिजा कुमार माथुर आलोचक के रूप में' विषय पर बोलते हुए

कहा कि गिरिजा कुमार माथुर का आलोचक-व्यक्तित्व उनकी कविता में आता रहा है। वे किसी भी रचना का मूल्यांकन किसी खाँचे में रखकर नहीं करते हैं बल्कि वे उसके विश्लेषण के लिए 'नई राह' चुनते हैं जो एक आलोचक के रूप में उन्हें रामचंद्र शुक्ल के पास ले जाती है। वे अपनी आलोचना में किसी एक का पक्ष नहीं लेते हैं बल्कि वहाँ भी वे आधारभूत मूल्यों और तत्त्वों को खोजने-निकालने की कोशिश करते हैं। गिरिजा कुमार माथुर के पुत्र अमिताभ माथुर ने 'गिरिजा कुमार माथुर परिवार में' विषय पर बोलते हुए उनके पारिवारिक व्यक्तित्व का बहुत सुंदर चित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने उनकी कई रोचक आदतों का ज़िक्र करते हुए कहा कि वे अपने परिवार को बेहद प्यार करते थे और बहुत व्यस्त रहते हुए भी सभी के लिए समय निकालते थे। उन्होंने देर रात तक लिखने, घर आए प्रत्येक व्यक्ति की मदद करने आदि के कई रोचक संस्मरण भी सुनाए। अपने अध्यक्षीय भाषण में रवि भूषण ने कहा कि उनके आलोचकीय व्यक्तित्व में उनके बचपन, प्रारंभिक शिक्षा एवं निराला तथा रामविलास शर्मा के सान्निध्य का बहुत बड़ा हाथ है। उनका 'नाद सौंदर्य' विचारणीय है और जैसा कि उन्होंने ख़ुद कहा है कि कविता जीवन के आलोक की वाणी है। एक आलोचक के रूप में उनकी दृष्टि निरंतर विकसित होती रही है। उनकी आलोचना का सामाजिक पक्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा वे अपनी आलोचना में प्रयोगशीलता और आधुनिकता को साथ-साथ लेकर चलते हैं। गिरिजा कुमार माथुर का मूल्यांकन व्यापक और नई दृष्टि के साथ किया जाना आवश्यक है।

कार्यक्रम में विभिन्न लेखक एवं साहित्य प्रेमी—सुरेश ऋतुपर्ण, रणजीत साहा, राजेंद्र उपाध्याय, द्वारिका प्रसाद चारुमित्र, विवेकानंद के अतिरिक्त गिरिजा कुमार माथुर के परिवार के सदस्य एवं विभिन्न विश्वविद्यालय के छात्र उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

'साहित्य और लोकप्रियता' पर परिसंवाद

19 अक्तूबर 2019, अहमदाबाद

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए रघुवीर चौधरी

साहित्य अकादेमी ने गुजरात मानविकी एवं साइंस कॉलेज, अहमदाबाद के सहयोग से शनिवार, 19 अक्तूबर 2019 को 'साहित्य और लोकप्रियता' पर गुजराती संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने अतिथि प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों की जानकारी दी।

साहित्य अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक विनोद जोशी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि आज के युग में कई माध्यमों का बोलबाला है और ऐसी परिस्थितियों में रचनात्मक साहित्य की समृद्धि, उसकी लोकप्रियता तथा उसके स्वरूप पर भी चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि सच्चाई तथा ईमानदारी से किया गया लेखन हमेशा प्रासंगिक और लोकप्रिय रहता है। साहित्य अकादेमी के फेलो रघुवीर चौधरी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि साहित्य में जो पात्र मानवता और जीवन के मूल्यों के करीब थे, वे लोकप्रिय हो गए। उन्होंने कहा कि कविता या साहित्य की भावना जो भी हो, उसकी भावना का अहसास कराती है। कुछ लोकप्रिय गुजराती कहानियों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य में मानवीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व होता है।

प्रथम सत्र में सतीश व्यास ने 'लोकप्रिय साहित्य की अवधारणा' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया जबकि भद्रायु वाचरजनी ने 'स्तंभकार और साहित्य का संबंध' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र की अध्यक्षता रजनीकुमार पंड्या ने की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता विनोद जोशी ने की जबकि तुषार शुक्ल ने 'लोकप्रिय कविता और संगीत का संबंध' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के दूसरे आलेख वक्ता अजय सिंह चौहान ने 'लोकप्रिय उपन्यासों के आख्यान' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि अंकित त्रिवेदी ने 'साहित्य : वर्ग और जन' विषय पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी की गुजराती परामर्श मंडल के सदस्य निसर्ग अहीर ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में साहित्य प्रेमी, छात्र तथा मीडिया ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

गुरु नानक देव का 550वां प्रकाश पर्व : वर्तमान परिप्रेक्ष्य और प्रासंगिकता पर संगोष्ठी

19-20 अक्तूबर 2019, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी ने गुरु नानक देव की 550वीं जयंती के उपलक्ष्य में गौहाटी विश्वविद्यालय में 19 - 20 अक्तूबर 2019 को 'गुरु नानक देव : वर्तमान परिप्रेक्ष्य और प्रासंगिकता' विषय पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि गुरु नानक का दर्शन, धर्म और मानवता का मिश्रण है। उनके मन में सदैव पद-दलितों के प्रति सहानुभूति रही। उन्होंने मुख्यरूप से भाईचारे की भावना की वकालत की। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक वनीता ने अपने आरंभिक व्याख्यान में कहा कि गुरु नानक समाज सुधारक, पथिक तथा प्रभावी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे। आधुनिक समाज के मुद्दे जैसे—समानता,

व्याख्यान देती हुईं वनिता

लैंगिक चेतना, आधुनिकता, बहुसंस्कृतिवाद तथा हाशिये पर पड़े मुद्दों की वकालत गुरु नानक ने उन दिनों भी की थी। अपने बीज भाषण में जगबीर ने कहा कि गुरु नानक एक संस्थापक होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध कवि भी थे। उनकी कविताएँ विचारशीलता, दिव्यता, धार्मिक पहलुओं तथा वास्तविकता की दृष्टि को दर्शाती हैं। 'वाणी' सिर्फ़ साधारण कविता नहीं है। वर्तमान संदर्भ में गुरु नानक के दर्शन की प्रासंगिकता समाजशास्त्रीय है, वे समानता में विश्वास करते थे तथा समाज के पदानुक्रमित आदेश की अवहेलना करते थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में मनमोहन ने इस अवसर को प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे अपने लाभ के लिए गुरु नानक के विचारों अथवा व्याखानों पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए। अमरजीत सिंह गरेवाल ने संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें दो विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दिलीप बोरा ने 'गुरु नानक देव : दर्शन और प्रासंगिकता' तथा मनजिंदर सिंह ने 'गुरु नानक देव : सौंदर्यवादी परिप्रेक्ष्य' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गुरभजन गिल ने की। मनमोहन ने 'गुरु नानक देव : लौकिक चेतना' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

गुरभेज सिंह गुराया ने 20 अक्तूबर 2019 को संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता की। समुद्र गुप्त कश्यप ने 'सुदूर असम में गुरु नानक देव का प्रभाव' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अवतार सिंह ने 'गुरु नानक देव और मानव उद्देश्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। दीपक मनमोहन सिंह ने चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता की। बलजीत कौर ने 'गुरु नानक देव : साहित्यिक और भाषायी चेतना' पर आलेख प्रस्तुत किया। वनीता ने 'गुरु नानक देव : सबद, राग और रबाब' पर आलेख प्रस्तुत किया। अमरजीत सिंह गरेवाल ने 'गुरु नानक देव : उत्तर आधुनिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सिख धर्म नृवंशकेंद्रित संभावनाओं से इनकार करता है। रवि रविंदर ने 'गुरु नानक देव : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य और प्रासंगिकता' पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रख्यात पंजाबी विद्वान तेजवंत सिंह गिल ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। भीमिंदर सिंह ने 'गुरु नानक बानी तथा समकालीन समाज' पर आलेख प्रस्तुत किया। पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य रवि रविंदर ने साहित्य अकादेमी की ओर से सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया।

कुमारन आशान कृत 'चिंताविष्टायाया सीता' पर परिसंवाद

23 अक्तूबर 2019, अमलापुरी, केरल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने महिला लेखक समूह 'शब्दम' तथा चावरा सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से 23 अक्तूबर 2019 को चावरा सांस्कृतिक केंद्र में कुमारन आशान कृत 'चिंताविष्टायाया सीता' पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य मिनी प्रसाद ने परिसंवाद की अध्यक्षता की। मिनी प्रसाद ने कहा कि कुमारन आशान ने सीता के चरित्र को इतना दृढ़ स्त्री चरित्र बनाया है कि उसे पढ़ने वाला उसे हर बार एक नया परिप्रेक्ष्य से पढ़ता है।

उद्घाटन भाषण देते हुए के. सच्चिदानंदन

जाने माने कवि के. सच्चिदानंदन ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। उन्होंने इस कृति को प्रथम महिला केंद्रित कविता करार दिया। सीता, अपने दार्शनिक चिंतन के माध्यम से दूसरों से अलग है तथा यह करुण महाकाव्य हमें दूसरी सतह पर ले जाता है। यह अपनी प्रस्तुति में बहुत स्पष्ट तथा निर्बाध रूप से बहता है। जब हम वैदेही के दृढ़ चरित्र का विश्लेषण करेंगे तो हमें यह मूल वाल्मीकि रामायण की ओर ले जाएगी। पितृसत्तात्मक स्थापित करने में इतनी दृढ़ इरादों वाली महिला बनाने के लिए कवि ने अपनी विचार प्रक्रिया में बदलाव किए होंगे। सीता *रामायण* में पवित्रता का प्रतिनिधित्व करती हैं, वह सद्बुद्धि तथा सदाचारी स्त्री का अवतार हैं। सीता के चित्रण में आशान बहुत तर्कसंगत हैं तथा वह अपने परिवेश को भी चित्रित करने में अतिरिक्त सावधानी बरतते हैं। प्रथम भाग में सूक्ष्मता का उत्तरार्द्ध के साथ विपर्यास व्यतिरेक है। प्रकृति सीता की दयनीय स्थिति को प्रतिध्वनित करती है। वह कुमारन आशान द्वारा बनाए गए अन्य महिला पात्रों से बहुत अलग है जो बदले में पाठक को बार-बार इस पाठ में वापस जाने के लिए प्रेरित करता है।

एम.एम. बशीर ने अध्यक्षीय व्याख्यान की शुरुआत यह कहकर की कि कविता कवि के मानस की झलक देती है। हम पंक्तियों में कवि के संघर्ष का संस्मरण देख सकते हैं। नारायण गुरु के साथ उन्होंने जो मजबूत बंधन साझा किया, उसने कवि को ढाला लेकिन उसी

समय उस रिश्ते में टूटन आने से उनकी कविताओं को और अधिक गहरा और दंडात्मक बना दिया।

दोपहर के सत्र की शुरुआत सजय के.वी. द्वारा 'क्या वह है, किन्तु एक बेजान गुड़िया?' विषय पर आधारित आलेख से हुई। सीता द्वारा पूछे गए प्रसिद्ध प्रश्न में इसकी कई परतें हैं। कवि वाइलोपिल्ली ने अपनी कविता 'कुमारा कोकिलम' में भी यही भावना प्रस्तुत की है। सीता के लिए चुने गए शब्द उसे निर्जीव वस्तुओं के बिंब में चित्रित करते हैं। यहाँ तक कि उन्होंने उसे सती के रूप में यह समझाने के लिए भी दर्शाया है कि उसके ऊपर कोई बदलाव नहीं आया है। आशान ने उन्हें 'प्रमाद' के रूप में दर्शाया है, जो संगी हैं तथा जो समस्त सांसारिक अथवा शारीरिक सुख से बचना नहीं चाहतीं। वह भी हाड-माँस की एक महिला हैं।

एल. सुष्मा इस प्रश्न का उत्तर तलाशने का प्रयास कर रहे थे कि क्या यह महाकाव्य नारीवादी पाठ है। सीता का दावा है कि जंगल में बिताए चौदह वर्ष का उनका संबंध बराबरी का था, जब वे 'वनवास' काल से गुजर रहे थे। वह समीकरण तब बदलता है जब राम सत्ता संभालते हैं तथा उसके पश्चात वह पितृसत्ता के मूल्यों को गले लगाते हैं। उनके संबंध का यह द्वंद्व सीता को जीवन के बारे में सोचने का एक नया नज़रिया देता है और वह खुद को ठगा हुआ महसूस करती हैं। उन्होंने तर्क दिया, इस अर्थ में 'चिंताविष्टायाया सीता' निश्चित रूप से नारीवादी पाठ है।

'मोपिला रामायण', 'वायानंदन रामायण' मूल पाठ के कुछ अन्य पाठ हैं तथा लिसी मैथ्यू ने इन ग्रंथों में सीता के विविध चित्रण का विश्लेषण किया। डॉ. लिसी ने तर्क दिया की मुख्यधारा से बाहर के इन ग्रंथों में सीता अधिक जीवंत और जैविक हैं। रीजा ने 'चिंताविष्टायाया सीता में प्रकृति' शीर्षक से पर्यावरणीय पाठ प्रस्तुत किया। उन्होंने यह साबित करने का प्रयास किया कि सीता के विचारों और उसके आसपास की प्रकृति के मध्य एक प्रतिध्वनि है। सीता एक शाम अपना संस्मरण शुरू करती हैं जो अगली सुबह तक चलता रहता है। जब वह अलविदा कहती हैं तो उन्हें लगता है कि प्रकृति उसके जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है तथा वह कई प्राणियों में से एक हैं। के. रमेसन ने 'मन में चलने वाली अंधेरी गलियाँ' विषयक अपने आलेख में कहा कि हम सीता के विचारों को अंधेरा नहीं कह सकते तथा हमें इस संदर्भ में विस्तार से अध्ययन करना चाहिए। वह राजा के न्याय के विरुद्ध एकल युद्ध लड़ रही थीं। प्रसिद्ध लेखक बी.एम. सुहारा की अध्यक्षता में आलेख प्रस्तुत किए गए तथा जैनसी जोस ने 4 बजे समाप्त हुए परिसंवाद में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

30 अक्तूबर से 9 नवंबर 2019, शारजाह

साहित्य अकादेमी ने 30 अक्तूबर से 9 नवंबर 2019 तक आयोजित शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। नवीन कुमार गोयल, बिक्री प्रबंधक ने साहित्य अकादेमी का प्रतिनिधित्व किया।

सर्वोच्च परिषद के सदस्य तथा शारजाह के शासक महामहिम शेख सुल्तान बिन मोहम्मद अल कासिमी ने 38 वें पुस्तक मेले का उद्घाटन किया। शारजाह के शासक ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने संस्कृति के महत्व पर बात की। इस कार्यक्रम में शारजाह एक्सपो सेंटर में 81 देशों के 2,000 प्रकाशकों की भागीदारी की। एस.आई.बी.एफ. 2019 में 68 अरब देशों तथा विदेशों के 173 लेखकों ने एक साथ वैज्ञानिक, ज्ञान तथा साहित्यिक विषयों को प्रस्तुत करने वाली 987 गतिविधियों का प्रतिनिधित्व किया।

शारजाह वर्ल्ड बुक कैपिटल 2019 उत्सव में 'पुस्तक मेले' का विषय था—'ओपन बुक्स, ओपन माइंड्स'। पुस्तक मेले के दौरान साहित्य अकादेमी ने हिंदी, मलयाळम्, तमिळ, अंग्रेज़ी, उर्दू तथा अकादेमी की पत्रिकाओं में अपने प्रकाशनों का प्रदर्शन किया। आगंतुकों ने अकादेमी की पुस्तकों में मूल रूप से हिंदी

शारजाह पुस्तक मेला 2019 में साहित्य अकादेमी का स्टॉल

तथा तमिऴ भाषाओं में गहरी रुचि दिखाई। अकादेमी के स्टॉल पर यू.ए.ई., यू.के., सूडान, ईरान, स्पेन आदि कई देशों के आगंतुकों ने दौरा किया जिन्होंने अकादेमी की पुस्तकों में दिलचस्पी दिखाई। इसके अलावा इंडियन स्कूल, अजमान, गल्फ मॉडल स्कूल दुबई, भवन वाइज इंडियन एकेडमी, अजमान, भारतीय एकेडमी, दुबई जैसे यू.ए.ई. के कई स्कूल के शिक्षकों तथा छात्रों ने अकादेमी के स्टॉल का दौरा किया। इसके अलावा मलयाळम् में कन्नड़ पुस्तक *दातु* का अनुवाद कर चुके अकादेमी के लेखक सुधाकरन रामनथली जैसे विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों ने भी स्टॉल का दौरा किया। अन्य देशों के कुछ प्रकाशकों ने अकादेमी के *ट्रांसलेटिंग इंडिया* परियोजना में भाग लेने के लिए रुचि दिखाई तथा स्पेनिश, अरबी आदि भाषाओं में कुछ भारतीय कविताओं तथा कहानियों की पुस्तकों का अनुवाद करने की इच्छा व्यक्त की।

अकादेमी की पुस्तकों की कुल बिक्री का ब्यौरा इस प्रकार है—कुल आय : 4555.50; रियायत : 1099.90; नेट : 3455.60; तथा वैट : 150.90 (समस्त राशि ए.ई.डी. में)।

शेष बची पुस्तकों को शारजाह पुस्तक मेला प्राधिकरण को सौंप दिया गया, जो इन पुस्तकों को अपने पुस्तकालय में रखेंगे।

'दक्षिण भारतीय दलित आत्मकथाएँ' विषय पर संगोष्ठी

4-5 नवंबर 2019, कदागाँची, कलबुर्गी

उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कन्नड़ विभाग के सहयोग से 4-5 नवंबर 2019 को 'दक्षिण भारतीय दलित आत्मकथाएँ' विषय पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन प्रशासन भवन, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कदागाँची, कलबुर्गी में आयोजित किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि दलित आत्मकथाओं ने क्रांतिकारी बदलाव किए हैं, इसके अलावा उन्होंने सफलतापूर्वक उच्च लोगों की चेतना को भी जाग्रत किया है। दलित आत्मकथाओं ने ग़ैर दलित लेखकों को प्रभावित किया है तथा उन्हें दलित लेखकों के पक्ष में लिखने के लिए प्रेरित किया है। कन्नड़ समीक्षक नटराज हुलियार ने कन्नड़ तथा भारतीय दलित आत्मकथाओं के महत्त्व पर केंद्रित अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि ''भारतीय दलित आत्मकथाएँ क्षेत्रीय भाषाओं में लेखन के रूप में प्रबल हैं। उन्होंने भारतीय इतिहास को नए सिरे से परिभाषित किया है। दलित आत्मकथाओं में हम दलित आंदोलन का अस्तित्व देख सकते हैं। दलित आंदोलन को भारतीय इतिहास तथा उसके पुनर्जन्म के महत्त्वपूर्ण बदलावों के लिए स्मरण किया जाता है।''

बी.आर. अम्बेडकर ने प्रेरक ढंग से दलित साहित्य के प्रभारी के रूप में कार्य किया। दलित आत्मकथाएँ मनुष्य की मुक्ति की बात करती हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भालचंद्र मुंगेकर ने अपने बीजभाषण में महाराष्ट्र दलित आंदोलन व साहित्य के महत्त्व पर बात की। उन्होंने कहा कि ''महाराष्ट्र के दलित आंदोलन ने पद-दलित समुदाय पर शोषण का पुरज़ोर विरोध किया, महाराष्ट्र के दलित आंदोलन ने दलित पर शोषण की निंदा के माध्यम से पद-दलित समुदाय में स्वाभिमान की जागरूकता स्थापित की। दलित आंदोलन तथा साहित्य पर डॉ. अम्बेडकर का प्रभाव बहुत व्यापक है।''

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे सी.वी.के., के कुलपति एच.एम. महेश्वरिया ने कहा कि ''दलित आंदोलन तथा साहित्य पर बौद्धिक चर्चा होनी अत्यंत आवश्यक है।'' कर्नाटक सरकार की पब्लिक लाइब्रेरी के निदेशक डॉ. सतीशकुमार एस. होसमणि कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के कन्नड़ विभाग के एसोसिएट प्रोफ़ेसर अप्पागेरे सोमशेखर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। तमिलनाडु के प्रमुख दलित लेखकों में से एक अज़हागिया पेरियावन ने तमिळ दलित साहित्य के महत्त्व पर चर्चा की। इस विमर्श की अध्यक्षता अंग्रेज़ी विभाग के सहायक प्रोफेसर एम. महेंद्र ने की। द्वितीय सत्र में इंदिरन ने तमिळ दलित आत्मकथाओं की विरासत तथा उनके प्रभाव पर आलेख प्रस्तुत किया। डोक्का मणिक्यवरा प्रसाद की अनुपस्थिति में अंग्रेज़ी विभाग के महिमाराज ने तेलुगु दलित आत्मकथाओं पर डोक्का मणिक्यवरा प्रसाद का आलेख पढ़ा। तृतीय सत्र में आर. सत्यजीत ने मलयाळम् दलित आत्मकथाओं पर चर्चा की। बसवराज पी. दोनूर ने कन्नड़ दलित आत्मकथाओं पर चर्चा की। चतुर्थ सत्र में सिद्दलिंगय्या ने अपनी आत्मकथा *ऊरू केरी* के संदर्भ में अपने बचपन के अनुभवों को साझा किया तथा उन्होंने कर्नाटक दलित आंदोलन में अपनी भूमिका के बारे में भी बताया। इस सत्र का सफल संचालन अप्पागेरे सोमशेखर ने किया।

पंचम सत्र में एम.एस. शेखर ने 'कन्नड़ दलित आत्मकथाओं के प्रतिनिधि प्रतिमानों' पर आलेख प्रस्तुत किया। सूर्यकांता सुजयथ ने 'कन्नड़ दलित आत्मकथाओं की सांस्कृतिक पहचान' पर आलेख प्रस्तुत किया तथा एस. नरेंद्रकुमार ने 'कन्नड़ दलित आत्मकथाओं के वैचारिक सिद्धांत' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

षष्ठ सत्र में तेलुगु दलित आत्मकथाकार वाई.बी. सत्यनारायण के साथ एक वैचारिक सत्र का आयोजन किया गया। एन. नागराजू ने सत्र का संचालन किया।

'दलित आत्मकथाओं के अनुभव जगत' पर आधारित सप्तम सत्र में कन्नड़ दलित लेखकों—तुम्बदी रमैय्या, एस.पी. सुल्लद, दु. सरस्वती, हनुमंतराव बी. डोडामणि, कुप्पे नागराज ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने शोषण संबंधित अनुभवों को प्रभावी ढंग से व्यक्त किया जो उनकी आत्मकथाओं में दर्ज थे। सत्र की अध्यक्षता कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के गणेश पवार ने की।

संगोष्ठी के समापन सत्र में सिद्धलिंगय्या ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि ''समस्त भारतीय भाषाओं में और अधिक दलित आत्मकथाएँ लिखी जानी चाहिए। हमें भारतीय पद-दलित समुदाय के अनुभवों को विश्व के लिए संगृहीत करना चाहिए। हमें समस्त विश्वविद्यालयों में भारतीय दलित आत्मकथाओं पर अनुसंधान तथा अध्ययन के माध्यम से नव-विचार निर्मित करने चाहिए।'' अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय के समकुलपति जी.आर. नायक ने सुझाव दिया कि ''विश्वविद्यालय बौद्धिक चर्चाओं के केंद्र होने चाहिए। छात्रों और शोधकर्ताओं को इसका उपयोग करना चाहिए।''

तमिळ सौंदर्यशास्त्र पर परिसंवाद

6 नवंबर 2019, सलेम

चेन्नई में साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने तमिळ विभाग, पेरियार विश्वविद्यालय, सलेम के

परिसंवाद का एक दृश्य

सहयोग से विश्वविद्यालय परिसर में 6 नवंबर 2019 को 'तमिऴ सौंदर्यशास्त्र' पर परिसंवाद का आयोजन किया। तमिऴ विभाग के विभागाध्यक्ष टी. पेरियासामी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। विश्वविद्यालय के कुलपति पी. कोलनदईवेल ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि विद्वान जैसे - ते.पो. मीनाक्षीसुंदरम तथा मु. वरदराजन को तमिऴ विद्वानों के रूप में देखा जाता है। वे सदैव विश्वभर में तमिऴों के लिए एक प्रेरणास्रोत रहे हैं। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि विश्वभर में प्रत्येक भाषा, कबीले तथा संस्कृति के अपने अलग-अलग सौंदर्य-गुण हैं। कोई भी सौंदर्य को परिभाषित नहीं कर सकता। यह न केवल इसके अर्थ में अलग है बल्कि देखने वाले की आँखों पर भी निर्भर करता है। सौंदर्यशास्त्र सर्वव्याप्त है तथा छात्रों को सौंदर्य सिद्धांतों को समझने तथा उनका पालन करने तथा इस संबंध में कार्य करने का प्रयास करना चाहिए। अपने बीज भाषण में कवि और साहित्यिक समालोचक इंदिरन ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली के बारे में बताया जो मनुष्य को कर्त्तव्यनिष्ठ प्राणी बनने के लिए शिक्षित करती है। तमिऴ भाषा समृद्ध तथा सौंदर्यवादी मूल्यों में प्रचुर है। सौंदर्य न केवल साहित्य में पाया जाता है बल्कि वह संगीत, नृत्य, वास्तुकला, चित्रों तथा मूर्तियों जैसे अन्य कला रूपों में भी पाया जाता है। 'थोलकाप्पियम', सबसे प्राचीन तमिऴ व्याकरण कार्य है जिसे साहित्यिक आलोचना सिद्धांतों के बीच पहला माना जाता है। यद्यपि, इसके विषय-क्षेत्र को केवल व्याकरण की पुस्तक के रूप में सीमित करके छोटा कर दिया गया है। सौंदर्य के दृष्टिकोण से भी इस पर शोध तथा अध्ययन किया जाना चाहिए। रजिस्ट्रार (आई./सी.) के.के. थंगवेल ने कार्यक्रम में समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी चेन्नई के कार्यालय प्रभारी टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता ई. सुंदरमूर्ति ने की तथा उन्होंने 'संगम साहित्य में तमिऴ सौंदर्यशास्त्र' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संगम तमिऴ साहित्य में प्रेम, बड़प्पन तथा वीरता शामिल थी तथा इस बात पर चर्चा की गई कि प्राचीन तमिऴों ने किस प्रकार कई संगम कविताओं के माध्यम से सौंदर्य का उत्सव मनाया। अपने आलेख में उन्होंने बताया कि किस प्रकार संगम काल के लोग प्रकृति के समीप रहकर अपना जीवन जीते थे। संतलिंगम ने 'पुरातत्व में तमिऴ सौंदर्यशास्त्र' पर आलेख प्रस्तुत किया तथा जे.के. जयकुमार ने 'तबला वाद्ययंत्रों में सौंदर्यशास्त्र' पर अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता पी. मरुदानायगम ने की तथा उन्होंने 'तमिऴ सौंदर्यशास्त्र के वैश्विक परिप्रेक्ष्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनके बाद, एस.ए. वी. एलांचेज़हियन ने 'चित्रों तथा मूर्तियों में तमिऴ सौंदर्यशास्त्र' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उनके पश्चात एस. रामर ने 'थिनाई आलोचना में तमिऴ सौंदर्यशास्त्र' पर अपने विचार व्यक्त किए। तमिऴ विभाग के शिक्षकों, कवियों, लेखकों, तमिऴ अनुसंधान के विद्वानों तथा छात्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

तेलुगु-कन्नड कहानियाँ : वैश्वीकरण का प्रभाव पर परिसंवाद

8 नवंबर 2019, बेंगळुरु

साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु तथा तेलुगु अध्ययन विभाग, बैंगलोर विश्वविद्यालय, बेंगळुरु ने शुक्रवार, 8 नवंबर 2019 को बैंगलोर केंद्रीय विश्वविद्यालय, बेंगळुरु के ज्ञानज्योति सभागार में 'तेलुगु - कन्नड़ कहानियाँ :

परिसंवाद का एक दृश्य

वैश्वीकरण का प्रभाव' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद का आरंभ 'दीप प्रज्ज्वलन' के साथ हुआ। मंच पर गणमान्य लोगों को आमंत्रित किया गया। साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने परिसंवाद में उपस्थित समस्त अतिथियों, प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया तथा तेलुगु विभाग, बैंगलोर विश्वविद्यालय, बेंगळुरु के साथ मिलकर कार्य करने के लिए प्रसन्नता व्यक्त की।

बैंगलोर विश्वविद्यालय के तेलुगु अध्ययन विभाग की अध्यक्ष के. आशा ज्योति ने कार्यक्रम के विषय से सबको अवगत कराया। संगोष्ठी की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक के. शिवारेड्डी ने की। प्रसिद्ध तेलुगु लेखक विविना मूर्ति ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। बैंगलोर उत्तर विश्वविद्यालय कोलार के रजिस्ट्रार के. जनार्दनम परिसंवाद के मुख्य अतिथि थे, उन्होंने इस कार्यक्रम में भाग लेने पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा वैश्वीकरण पर अपने विचार भी साझा किए।

वासिरेड्डी नवीन ने 'तेलुगु कहानियों में वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ के साथ मानव संबंध', चल्लापल्ली स्वरूप रानी ने 'वैश्वीकरण के विशेष संदर्भ में तेलुगु दलित कहानियों में दलित महिलाओं का चित्रण', वसुधेंद्र ने 'कन्नड में समलैंगिक साहित्य', जयंत कैकिनी ने 'कथाना कुथुहला', अट्टादा अप्पलनाइडु ने 'उत्तर आंध्र की कहानियाँ - वैश्वीकरण का प्रभाव' तथा पेद्दिन्ति अशोक कुमार ने 'तेलंगाना की कहानियाँ - वैश्वीकरण का प्रभाव' विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

विभिन्न स्थानों तथा विभागों से पधारे लगभग 200 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। 'परिसंवाद' का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

भारतीय-मैक्सिकाई लेखक सम्मिलन

11 नवंबर 2019, नई दिल्ली

भारतीय-मैक्सिकाई लेखक सम्मिलन

साहित्य अकादेमी ने मैक्सिको दूतावास के सहयोग से 11 नवंबर 2019 को रवींद्र भवन, नई दिल्ली में अपने सभाकक्ष में 'भारतीय-मैक्सिकाई लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि दोनों देशों की संस्कृतियाँ बेहद प्राचीन हैं तथा दोनों देशों के काफ़ी लंबे समय से सार्थक संबंध रहे हैं। एस.पी. गांगुली ने 'साहित्यिक अनुवाद : संस्कृतियों के बीच सेतु निर्माण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। दोनों देशों की भाषाओं में अनुवाद की प्राचीन परंपरा के बारे में अवगत कराते हुए उन्होंने कहा कि भारत में अनुवाद की गतिविधि पश्चिमी देशों से थोड़ी अलग है क्योंकि भारत में एक हज़ार से अधिक भाषाएँ हैं। भारत में मैक्सिको के माननीय राजदूत फेदेरिको सालास लोत्फ़े कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में विचार-विमर्श के द्वारा हम दोनों देशों के बीच भविष्य की गतिविधियों पर फ़ैसला कर सकेंगे। मैक्सिको के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि देश में चौंसठ भाषाएँ हैं और यह समस्त स्वदेशी

भाषाएँ अपने अस्तित्व के लिए चुनौतियों का सामना कर रही हैं। उन्होंने इन स्वदेशी भाषाओं को बनाए रखने, बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के महत्त्व को रेखांकित किया। इसके बाद मैक्सिको के तीन कवियों—नादिया लोपेज़ गार्सिया, कोस्मे अल्वारोज़ तथा गुइलेरमो शावेज़ कोनेजो ने कविता-पाठ प्रस्तुत किया। भारत की ओर से प्रख्यात मलयाळम् कवि एवं अंग्रेज़ी विद्वान के. सच्चिदानंदन तथा साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार विजेता शुभ्र बंद्योपाध्याय ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। इस कार्यक्रम में दिल्ली के कुछ प्रख्यात लेखक जैसे—सत्यव्रत शास्त्री, मंगलेश डबराल, सविता सिंह, सुरेश ऋतुपर्ण, युयुत्सु, सुकृता पॉल कुमार तथा चंद्रमोहन भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में दिल्ली के साहित्य प्रेमियों ने बड़ी संख्या में सहभागिता की।

'ओड़िआ साहित्य में गाँधी' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

16-17 नवंबर 2019, पुरी

साहित्य अकादेमी ने पुरी के संस्कृति भवन में 16-17 नवंबर 2019 को 'ओड़िआ साहित्य में गाँधी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन 16 नवंबर 2019 की सुबह 'झंकार' के प्रधान संपादक तथा सांसद (लोकसभा) भर्तृहरि महताब ने किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य तथा प्रख्यात कवि अमरेश पटनायक ने की। ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने 'ओड़िआ साहित्य में गाँधी के प्रतिबिंब' पर अपना संक्षिप्त भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि ओड़िआ साहित्य में गाँधी का प्रभाव बहुत पुराना है तथा इसकी शुरुआत आज़ादी के पूर्व हुई थी। साहित्य अकादेमी कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अपने बीजभाषण में प्रख्यात गाँधी विद्वान दाश बेंहूर ने कहा कि ओड़िआ साहित्य ने गाँधी के विचार तथा दर्शन से कई मायनों में अपनी व्यापकता का विस्तार किया है। उनके विचार ओड़िआ निबंध, कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, जीवनियों, नाटकों, बाल साहित्य तथा गीतों में भी परिलक्षित होते हैं। बंछानिधि मोहांती जैसे कवि उन उत्तरपुस्तिकाओं को प्रसारित करने के लिए गाँव-गाँव जा रहे थे, जिनमें गाँधी वाणी को उन्होंने स्वयं लिखा था। वह समय स्वतंत्रता पूर्व का था। श्री दाश ने गाँधी जी पर ओड़िआ साहित्य में ग्रंथसूची प्रकाशित करने का सुझाव दिया। उद्घाटनकर्ता श्री महताब ने कहा कि उत्कलमणि गोपबंधु ने गाँधी के विचार को ओड़िआ साहित्य में प्रस्तुत किया। बैकुंठनाथ मोहांती गाँधी जी पर गीत लिख तथा गा रहे थे। उन्होंने ओड़िआ उपन्यासों और कहानियों के कई उदाहरण दिए, जिनमें पात्र गाँधी की राह का अनुसरण कर रहे हैं। अध्यक्षीय व्याख्यान में श्री पटनायक ने मायाधर मानसिंह, अनीता पटनायक जैसे कवियों को याद किया जिन्होंने गाँधी जी पर कई कविताएँ लिखी हैं। उद्घाटन सत्र में रंजीत परिडा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि एवं समालोचक शैलजा रवि ने की। पबाक कानूनगो ने अपना आलेख प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने अलग-अलग समय में गाँधी जी के ओडिशा दौरों पर चर्चा की। एक अन्य युवा प्रतिभागी क्षेत्रवासी नायक ने युवा ओड़िआ लेखकों की रचनाओं पर गाँधी जी के प्रभाव के बारे में बताया। उन्होंने अन्य लेखकों यथा- चिराश्री इंद्रसिंह, पबित्र मोहन दाश, पबित्र मोहन कर, अमरेंद्र माधब दाश, सुचेता मिश्र, सरोज बल, चित्तरंजन चरणजीत, चंद्रशेखर होता तथा अन्य लेखकों के साथ उनके नाम बताए, जिनके लेखन में गाँधी का प्रभाव परिलक्षित होता है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात स्तंभकार सत्यनारायण साहू ने की। बीरेंद्र मोहांती, गौरांग चरण परिडा तथा संग्राम जेना ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रख्यात लेखक बीरेंद्र मोहांती ने ओड़िआ बाल साहित्य

में गाँधी की उपस्थिति तथा उनकी सोच पर चर्चा की। जाने-माने गाँधी शोधकर्ता गौरांग चरण परिडा ने बताया की गाँधी एक विचार के रूप में हमारे लिए जितने प्रासंगिक हैं, शायद एक व्यक्ति के रूप में उतने नहीं हो सकते। संग्राम जेना ने ओड़िआ कविताओं पर गाँधी जी की अमिट छाप पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कई उदाहरण प्रस्तुत किए, जिनमें बापू पर कलात्मक प्रस्तुति में कविताओं को उत्कृष्टता प्राप्त हुई थी। डॉ. साहू ने समाज के लिए गाँधीवाद, स्वराज और अहिंसा की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने गाँधी पर लिखित ओड़िआ कविताओं के कुछ छंदों का गायन भी प्रस्तुत किया।

तृतीय सत्र 17 नवंबर 2019 को शुरू हुआ। ओडिशा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष हरिहर मिश्र ने इस सत्र की अध्यक्षता की। भाषा, साहित्य और संस्कृति विभाग के निदेशक बिजय नायक, युवा शोधकर्ता ज्ञानरंजन सामंतराय तथा प्रख्यात भाषाविद् कैलाश चंद्र टीकायात्रे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। बिजय नायक ने इस संगोष्ठी के एक महत्त्वपूर्ण पक्ष महात्मा और मातृभाषा पर चर्चा की, उन्होंने बड़े रोचक ढंग से बताया कि किस प्रकार गाँधी जी हमेशा स्कूलों में मातृभाषा के माध्यम से सीखने तथा सिखाने की व्यवस्था की बात करते थे। कैलाश टीकायात्रे ने भाषा और मातृभाषा के विषय को बहुत अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि मातृभाषा जाने बिना कोई भी साधारण व्यक्ति, अत्यधिक काम करने वाला तथा स्वाभिमानी नहीं हो सकता। ज्ञानरंजन सामंतराय ने उन ओड़िआ उपन्यासों की विस्तृत जानकारी दी, जिसमें गाँधी विचार प्रमुख था।

समापन सत्र में प्रख्यात गाँधीवादी तथा स्वतंत्रता सेनानी पद्मचरण नायक ने समापन भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने गाँधी जी की इच्छानुसार शराब पर प्रतिबंध लगाने पर बल दिया। उन्होंने लेखकों को अधिक से अधिक सामाजिक मुद्दों पर लिखने के लिए भी प्रोत्साहित किया। सत्यनारायण साहू ने इन दिनों सांप्रदायिक सौहार्द, गाँधीवाद तथा इसकी प्रासंगिकता पर भी अपना भाषण प्रस्तुत किया। ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक बिजयानंद सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने साहित्य के साथ-साथ जीवन में गाँधी जी के विचारों की उपयोगिताओं के बारे में बताया। धन्यवाद प्रस्ताव दलीप कुमार स्वेन ने प्रस्तुत किया।

'विगत पाँच वर्षों के सिंधी नाटक' पर परिसंवाद

17 नवंबर 2019, नागपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने भारतीय सिंधु सभा के सहयोग से बाबा हरदासराम धर्मशाला स्थित जारीपटका, नागपुर में 'विगत पाँच वर्षों के सिंधी नाटक' पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने अतिथि लेखकों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा किए गए विभिन्न कार्यक्रमों तथा गतिविधियों के बारे में बताया। परिसंवाद का उद्घाटन सिंधी भाषा के संवर्धन की राष्ट्रीय परिषद के उपाध्यक्ष घनश्याम कुकरेजा ने किया। उन्होंने कहा कि लोककला किसी भी संस्कृति की प्रतिनिधि हो सकती है तथा चूँकि नाटक लोककला का ही रूप होते हैं इसलिए लोककलाओं में उनका वर्णन किया जा सकता है। यह कला सिंधी विरासत तथा संस्कृति को दर्शाने का एक साधन है। साहित्य अकादेमी

व्याख्यान देते हुए विनोद असुदाणी, साथ में हैं किशोर लालवाणी, घनश्याम कुकरेजा तथा ओम प्रकाश नागर

के सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य किशोर लालवाणी ने अपने उद्घाटन भाषण में कई दशकों के सिंधी नाटकों के विकास की जानकारी दी।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता हरीश मैदासाणी ने की, तथा कविता इसरानी ने 'सिंधी नाटकों तथा उनकी प्रस्तुति' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा विषय से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। द्वितीय आलेख वक्ता तुलसी सेतिया ने 'सिंधी नाटक लेखन के विभिन्न रूपों' पर टिप्पणी की। आदिपुर के एक अन्य आलेख वक्ता साहब बिजाणी परिसंवाद में शामिल नहीं हो सके लेकिन उनके आलेख को किशोर लालवाणी ने पढ़कर सुनाया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता विनोद असुदाणी ने की तथा विनीता मोटवाणी ने 'विगत पाँच वर्षों में सिंधी नाट्य-लेखन के विकास' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन गुरमुख मोटवाणी द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

'नाओरिया फूलो का साहित्य' पर संगोष्ठी

19 नवंबर 2019, काछार, असम

साहित्य अकादेमी ने अपोकपा मारुप के सहयोग से 19 नवंबर 2019 को कम्युनिटी हॉल, पील्लापुल, लखिपुर, काछार, असम में 'नाओरिया फूलो का साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के पूर्वी क्षेत्र के प्रभारी अधिकारी मिहिर कुमार साहू ने संगोष्ठी की शुरुआत गणमान्य अतिथियों, शिक्षकों तथा विद्वानों का स्वागत करते हुए की। उन्होंने श्रोताओं को साहित्य अकादेमी की कई साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी दी।

फूलो पर आलेख प्रस्तुत करने वाले शिक्षकों तथा छात्रों ने उनके कई अनछुए तथ्यों को तलाशने का प्रयास किया। व्यापक चर्चाएँ हुईं तथा भारतीय साहित्य के संदर्भ में उनके योगदान पर विमर्श किया गया। साहित्य अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरण कुमार सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कवि एवं समालोचक थोकचोम बिश्वनाथ द्वारा दिए गए बीज भाषण में मणिपुरी कवि के दार्शनिक विचारों पर प्रकाश डाला गया। नाओरियो अमुसाना ने एपोक माररूप के मानवता, प्रेम और करुणा पर आधारित दर्शन पर अपने विचार व्यक्त किए। नाओरिया फूलो को जानने का अर्थ है मणिपुर की भूमि तथा पृथ्वी के ब्रह्मांडीय विकास के एक बड़े दृष्टिकोण को जानना।

प्रथम सत्र में अरिमबम मेमचोबी देवी, दिलीप मायेंगबम तथा ख. मणि साना सिंह ने नाओरिया फूलो के विभिन्न पहलुओं पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता एन. अरुणा देवी ने की। उन्होंने कहा की नाओरिया फूलो पुनरुत्थानवादी लेखन का हिस्सा थे। राजाओं और उसके आदमियों के प्रत्यक्ष अत्याचारों के परिणामस्वरूप मणिपुर में हुए आंदोलनों पर कुछ विस्तृत और व्यवस्थित कार्यों को संदर्भित किया गया। नाओरिया फूलो ने प्राचीन भारतीय साहित्य के माइति'स के साथ किरातों की उत्पत्ति की खोज की। वह गद्य और कविता के लेखक हैं तथा उनके उपन्यास लेखन की प्रविधि के लिए उनकी बहुत प्रशंसा की गई। द्वितीय सत्र के अध्यक्ष असम विश्वविद्यालय के रघुमणि सिंह ने फूलो को एक सारगर्भित कवि बताया तथा यह भी बताया कि उनके द्वारा कवि पर लिखित एक पुस्तक से उनके मूल गुणों का पता चलता है। देवदास मैरेंबम, एन. डी. होदम्बा तथा एस. लंचेंबा मीतेई ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने नाओरिया फूलो के जीवन तथा कार्यों के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

राजीव कुमार के साथ 'व्यक्ति और कृति' कार्यक्रम

19 नवंबर 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 19 नवंबर 2019 को नई दिल्ली में अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम 'व्यक्ति और कृति' के अंतर्गत प्रख्यात अर्थशास्त्री एवं नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव

'व्यक्ति और कृति' कार्यक्रम में व्याख्यान देते हुए राजीव कुमार

कुमार को आमंत्रित किया। साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अतिथि वक्ता का स्वागत किया तथा 'व्यक्ति और कृति' कार्यक्रम के उद्देश्य को संक्षेप में रेखांकित किया। राजीव कुमार ने कहा कि पुस्तकें उनके जीवन के विभिन्न चरणों में सदैव उनकी सबसे अच्छी मित्र बनकर रही हैं। उन्होंने कहा कि एक बालक के रूप में गीता प्रेस, गोरखपुर के प्रकाशनों ने उनमें कई जीवन मूल्यों को पैदा किया तथा बाद में बाल गंगाधर तिलक द्वारा लिखित पुस्तक 'गीता रहस्य' ने उनमें कई स्वस्थ विचारों का संचार किया जो उनके जीवन के विभिन्न चरणों में काम आए। राजीव कुमार ने कहा कि एक युवा के रूप में वह दर्शन, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद पर पुस्तकों की ओर आकृष्ट हुए तथा पुस्तकों की शृंखला, विशेषरूप से, कम्युनिस्ट घोषणापत्र का परिचय ने उनके जीवन में नए दृष्टिकोण विकसित किए। बाद के चरण में जिसे उन्होंने 'आध्यात्मिक चरण' कहा, जगदीश चंद्र बोस तथा किरलियन विधि तथा फोटोग्राफी पर लिखित पुस्तकों ने उनके प्रतिमानों को पूर्णतः बदल दिया। उन्होंने कहा कि इसके द्वारा उनके जीवन में एक नया झरोखा खुला तथा उन्होंने इस बात पर अफ़सोस भी जताया कि आज देश में लोग बोस तथा उनके द्वारा छोड़ी गई समृद्ध विरासत से परिचित नहीं हैं। उन्होंने बताया कि आदिशंकराचार्य कृत 'विवेक चूड़ामणि' ने उनके जीवन को पूर्णतः बदल दिया तथा उनके विचारों पर गहरा प्रभाव छोड़ा। उन्होंने अपने भाषण के अंत में कहा कि चूँकि देश और विश्व, मानवता के सामने आनेवाली गंभीर समस्याओं से जूझ रहे हैं, इसलिए हमें इसके स्थायी समाधान खोजने तथा लागू करने के लिए सभी क्षेत्रों में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों का गहराई से अध्ययन करना चाहिए। व्याख्यान के पश्चात् एक संक्षिप्त संवाद सत्र हुआ। के. श्रीनिवासराव ने राजीव कुमार तथा उपस्थित श्रोताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया।

टी.वी. सरदेशमुख की जन्मशताब्दी के अवसर पर परिसंवाद

22 नवंबर 2019, सोलापुर

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए निशिकांत ठकार

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने सोलापुर में संगमेश्वर कॉलेज तथा महाराष्ट्र साहित्य परिषद सोलापुर के सहयोग से टी.वी. सरदेशमुख की जन्मशताब्दी के अवसर पर 22 नवंबर 2019 को सोलापुर में परिसंवाद का आयोजन किया।

प्रारंभ में साहित्य अकादेमी, मुंबई के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी द्वारा की गई गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी। निशिकांत ठकार ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि आलोचकों को प्रोफेसर सरदेशमुख के लेखन सिद्धांतों का पता लगाना चाहिए, इससे हमें तत्कालीन सामाजिक बदलाव की स्थिति का पता चल पाएगा। उनकी लेखन क्षमता ने पाठकों को

ऊर्जा दी तथा कलाकृति के तल में जाकर परीक्षण किया उद्घाटन व्याख्यान संगमेश्वर कॉलेज की प्राचार्य शोभा राजमान्य तथा संगमेश्वर कॉलेज के मराठी विभाग प्रमुख सुहास पुजारी ने अपना अभिभाषण प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता विजय पदलकर ने की। रजनीश जोशी ने 'सरदेशमुख के संस्मरण' पर, नितिन वैद्य ने 'सरदेशमुख के विभिन्न उपन्यासों' पर, सुनील शिंखेड़े ने 'सरदेशमुख के लेखन की शैली' पर तथा मेधा शिंदे ने 'सरदेशमुख कृत उपन्यासों के विशिष्ट पात्र' विषयों पर आधारित अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता राजशेखर शिंदे ने की। राजा होलकुंडे तथा मनोज कुलकर्णी ने 'टी.वी. सरदेशमुख के लेखन में समालोचना' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि तीसरे आलेख वक्ता हेमकिरण पटकी ने 'टी.वी. सरदेशमुख की कविता में निहित भावनाएँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

बड़ी संख्या में उपस्थित छात्र-छात्राओं, साहित्यकारों तथा मीडिया ने कार्यक्रम का आनंद उठाया।

निरंकार देव सेवक और बाल साहित्य पर संगोष्ठी

26 नवंबर 2019, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 26 नवंबर 2019 को रवींद्र भवन, नई दिल्ली में प्रख्यात लेखक एवं बाल साहित्यकार निरंकार देव सेवक की जन्मशताब्दी के अवसर पर 'निरंकार देव सेवक और बाल साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात कवि एवं बाल साहित्यकार बालस्वरूप राही ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में बीज भाषण देने प्रकाश मनु जी को आना था लेकिन दुर्घटनावश चोट लगने के कारण वे नहीं आ सके। अतः उनके बीज भाषण का पाठ श्याम सुशील द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में निरंकार देव सेवक की पुत्रवधू एवं प्रख्यात संगीतकार पूनम सेवक विशेषरूप

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

से उपस्थित थीं। स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया।

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए बालस्वरूप राही ने कहा कि भारतीय बाल साहित्य को हेय दृष्टि से देखने की ज़रूरत नहीं है। भारतीय बाल साहित्य विश्व के किसी भी देश के श्रेष्ठ बाल साहित्य के समकक्ष है। उन्होंने कहा कि बाल साहित्य में दो विशेषताएँ अवश्य होनी चाहिए जिससे कि बाल मन की भावनाएँ और कामनाएँ प्रकट हो सकें। हमें बच्चों को उपदेश देने की बजाय संदेश देने की कोशिश करनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि सेवक जी की कविताओं में बच्चों की भावनाएँ और कामनाएँ दोनों ही हैं और उनकी कविताओं की एक-एक पंक्ति रसमय है, वे कहीं भी नीरस नहीं होतीं। निरंकार देव सेवक जी की पुत्रवधू ने उनकी दिनचर्या से जुड़े कई प्रसंगों को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वे बेहद साधारण जीवन व्यतीत करते थे।

प्रकाश मनु जी ने कहा कि सेवक जी केवल बाल कविताएँ लिखते ही नहीं थे वे बच्चों के सरल, जिज्ञासु मन और बाल कविता के मर्म, दोनों को ही बहुत गहराई से समझते थे। इसीलिए आज़ादी के बाद के कालखंड में वे स्वभावतः बच्चों के सर्वाधिक प्रिय और पसंदीदा कवियों में से एक थे, जिनकी कविताएँ गाँव-गाँव, गली-गली में गूँजा करती थीं। बच्चे जाने-अनजाने उनकी कविताएँ गाते-गुनगुनाते थे और आनंदित हो उठते थे। जाने कितनी ही पीढ़ियों के बच्चे सेवक जी की कविताओं के साथ झूम-झूमकर नाचते-गाते हुए बड़े हुए। इन कविताओं से ही उन्होंने जीवन के बड़े-बड़े पाठ सीखे। साथ ही बचपन को आनंद से जीने की कला, नायाब मस्ती और अनोखे

रंग-ढंग भी। आगे उन्होंने कहा कि सेवक जी ने मात्र अपने युग के अन्य बाल साहित्यकारों की तरह केवल बच्चों के लिए ही नहीं लिखा, बल्कि बाल साहित्य को सही दिशा देने का बड़ा चुनौती भरा काम भी किया। वे एक बड़े और मूर्धन्य बाल साहित्यकार हैं, तो साथ ही बाल साहित्य के दिग्दर्शक और युग-निर्माता भी। और दोनों ही मोर्चों पर उनका योगदान लासानी है।

कार्यक्रम के आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य अकादेमी बाल साहित्य का महत्त्व भली-भाँति समझती है और उसके विकास के लिए सतत प्रयत्नशील है। उन्होंने साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य के संवर्धन के लिए किए जा रहे कार्यों का भी ज़िक्र किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र में 'निरंकार देव सेवक एवं बाल कविता' विषय पर विचार-विमर्श हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि एवं बाल साहित्यकार दिविक रमेश ने की तथा कमलेश भट्ट 'कमल', जगदीश व्योम एवं रजनीकांत शुक्ल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में दिविक रमेश ने कहा कि बाल साहित्य बच्चों की आवाज़ है और हमें उसका उसी तरह से सम्मान और प्यार करना चाहिए जैसा कि हम बच्चों को करते हैं। उन्होंने सेवक जी द्वारा बच्चों के मनोविज्ञान को समझकर लिखी गई कविताओं की प्रशंसा करते हुए कहा कि बच्चे हमेशा स्वतंत्रता प्रिय होते हैं अतः हम बाल साहित्यकारों को उनकी इस प्रवृत्ति का सम्मान करते हुए ही उनके लिए कविताएँ लिखनी चाहिए। उन्होंने बच्चों के माता-पिताओं से भी बाल साहित्य पढ़ने की अपील करते हुए कहा कि इससे जहाँ वे अपने बच्चों के मनोविज्ञान को अच्छे से समझ पाएँगे साथ ही उनके लिए अच्छे बाल साहित्य का चयन भी कर पाएँगे।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में 'निरंकार देव सेवक की विचार-दृष्टि एवं बाल साहित्य' विषय पर विचार-विमर्श हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात लेखक सुधीर विद्यार्थी ने की और शकुंतला कालरा, उषा यादव एवं श्याम सुशील ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अध्यक्ष सुधीर विद्यार्थी ने कहा कि निरंकार देव सेवक का समग्र मूल्यांकन होना चाहिए। हमने उनके बाल साहित्य की तो चर्चा की है लेकिन उनके द्वारा लिखे गए महत्त्वपूर्ण प्रौढ़ साहित्य को अनदेखा किया है। उनके द्वारा लिखी गई कविताएँ, संपादकीय तथा अन्य कॉलम भी अद्वितीय हैं और उन पर विचार किया जाना ज़रूरी है।

कार्यक्रम में कई महत्त्वपूर्ण बाल साहित्यकार और लेखक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

मजरूह सुल्तानपुरी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

(बाएँ-दाएँ) के. श्रीनिवासराव, अर्जुमंद आरा, गोपी चंद नारंग तथा माधव कौशिक

साहित्य अकादेमी ने रवींद्र भवन, नई दिल्ली स्थित साहित्य अकादेमी सभागार में 29-30 नवंबर 2019 को प्रसिद्ध उर्दू शायर मजरूह सुल्तानपुरी की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

प्रख्यात उर्दू समालोचक, विद्वान एवं साहित्य अकादेमी के फ़ेलो गोपी चंद नारंग ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उद्घाटन भाषण में प्रो. नारंग ने कहा कि मजरूह को उनकी काव्य सिद्धि के लिए हमेशा याद किया जाएगा। मजरूह की शायरी अपने रचना-सौंदर्य के कारण सीधे दिल में उतरती है। प्रगतिशील लेखकों

ने उर्दू ग़ज़ल विधा का विरोध किया, लेकिन यह मजरूह का गुण है कि उन्होंने न तो प्रगतिशील लेखकों तथा न ही उर्दू ग़ज़ल को ही छोड़ा।

साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों व साहित्यप्रेमियों का स्वागत किया। डॉ. राव ने अपने संबोधन में मजरूह सुल्तानपुरी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश डाला। उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक शीन काफ़ निज़ाम ने आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत किया। अर्जुमंद आरा ने बीज भाषण प्रस्तुत किया, जिसकी सबने तारीफ़ की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने की।

दूसरे दिन, प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात उर्दू लेखक एवं पत्रकार नुसरत ज़हीर ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि मजरूह अन्य कवियों की लंबी कविताओं के स्थान पर ग़ज़ल की दो पंक्तियों का प्रयोग करते थे। इस सत्र में शाइस्ता यूसुफ़, हसन रज़ा तथा गुलाम नबी कुमार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता उर्दू के प्रसिद्ध लेखक, समालोचक तथा शायर अतीकुल्लाह ने की। उन्होंने कहा कि मजरूह भारतीय फ़िल्मी गीतों में क्रांति लेकर आए। इस सत्र में नुसरत जहाँ तथा ज़ुबैर शादाब ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय व अंतिम सत्र की अध्यक्षता जामिया मिलिया इस्लामिया के उर्दू विभाग के विभागाध्यक्ष शहज़ाद अंजुम ने की। रहमान अब्बास, ख़ालिद अशरफ़ तथा नौशाद मंज़र ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

केहरी सिंह मधुकर पर परिसंवाद तथा कवि गोष्ठी

30 नवंबर 2019, दरगली, जम्मू

साहित्य अकादेमी ने 30 नवंबर 2019 को ग्राम गुरसलथियां, मंडी उध, दरगली, जम्मू में डुग्गर मंच के सहयोग से डोगरी भाषा में 'केहरी सिंह मधुकर पर परिसंवाद तथा कवि गोष्ठी' का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबु के स्वागत भाषण से हुई। उन्होंने बताया कि 1977 में *मैं मेले रा जानू* के लिए प्रतिष्ठित साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित केहरी सिंह मधुकर ने डोगरी साहित्य में विलक्षण योगदान दिया तथा जम्मू-कश्मीर के साहित्यिक दिग्गजों के बीच गौरव का स्थान प्राप्त किया। साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक दर्शन दर्शी ने बताया कि केहरी सिंह मधुकर ग्राम गुरसलथियां (वर्तमान में सांबा ज़िला) के डोगरा राजपूतों के एक प्रतिष्ठित परिवार से थे तथा उनके पिता, जिन्होंने राज्य सेना में मेजर के रूप में कार्य किया था, मधुकर को और साहसी बना दिया था। शशि पठानिया ने बीजभाषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि मधुकर के पास डोगरी भाषा के लिए वास्तव में एक नया वैश्विक नज़रिया तथा उल्लेखनीय कमान थी, लय के प्रभावी उपयोग के साथ उनकी एक अलग शैली थी तथा उन्होंने आशा और मानवतावाद की गहरी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए रूपकों का शानदार उपयोग भी किया था। ''उनकी कविता की अधिकांश उपमाएँ कोमल विचारों के साथ समृद्ध हैं, उनकी कुछ कविताओं की सजावटी शैली अद्वितीय है। मधुकर हमेशा आशावादी रहे तथा उनकी अधिकांश कविताओं में कलात्मकता और बौद्धिक स्तर के संतुलन में डोगरी कविता का उत्साह और आकर्षण देखने को मिलता है।'' अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में एन.डी. जम्वाल ने कहा, ''1961 में मधुकर ने जे. एंड के. कला, संस्कृति और भाषा अकादेमी में शामिल होकर *शीराज़ डोगरी* के संपादक के रूप में कार्य किया तथा यह कार्य उन्होंने सन् 1974 तक किया। तेरह वर्षों की इस छोटी सी अवधि में उन्होंने लोक साहित्य के संग्रह और आधुनिक डोगरी साहित्य के विकास के लिए एक अविश्वसनीय कार्य किया।'' उद्घाटन सत्र का समापन डुग्गर मंच के अध्यक्ष मोहन सिंह द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी साहित्यकार ध्यान सिंह ने की। उन्होंने कहा कि मधुकर की कविता

आरंभिक व्याख्यान देते हुए दर्शन दर्शी

न केवल भक्ति के प्रति अनन्य थी बल्कि प्रकृति, देशभक्ति, दर्शन, रूमानिवाद, सामाजिक सरोकार आदि भी उनमें व्यापकता और गहराई से व्यक्त हुए। मोहन सिंह ने 'मधुकर के साथ मेरे व्यक्तिगत संबंध' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। शिवदेव सुशील ने केहरी सिंह मधुकर को प्रगतिशील कवि के रूप में व्याख्यायित किया। अशोक खजूरिया ने 'मधुकर की कविता में मानवीय भावनाओं तथा प्रकृति चित्रण' तथा आशुतोष पाराशर ने 'मधुकर की कविता में आध्यात्मिक और बौद्धिक तत्त्व' विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अगला सत्र कवि गोष्ठी का था, जिसमें 20 से अधिक कवियों ने भाग लिया तथा अपनी कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। अंत में, एन. सुरेश बाबु ने परिसंवाद के आयोजन में साहित्य अकादेमी के साथ सहयोग करने के लिए सभी प्रतिभागियों, साहित्य प्रेमियों तथा डुग्गर मंच का आभार व्यक्त किया।

गुआदालजारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में साहित्य अकादेमी

30 नवंबर से 8 दिसंबर 2019, गुआदालजारा, मैक्सिको

भारत की राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी ने मैक्सिको के गुआदालजारा में आयोजित गुआदालजारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में भाग लिया। मेले का आयोजन 30 नवंबर 2019 से 8 दिसंबर 2019 तक किया गया।

भारत वर्ष 2019 के इस मेले में 'गेस्ट ऑफ़ ऑनर' देश के रूप में आमंत्रित किया गया था और यह सम्मान पाने वाला वह पहला एशियाई देश है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत इस मेले के लिए भारतीय नोडल एजेंसी थी।

शनिवार, 30 नवंबर 2019 को एक्सपो गुआदालजारा के रूल्फो ऑडिटोरियम में गुआदालजारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले (फेरिया इंटरनेशनल डेल लिब्रो डी गुआदालजारा) के 33 वें संस्करण का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार के मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री संजय धोत्रे ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल के अग्रणी प्रतिनिधि के रूप में अपनी बात रखी, जिसमें भारत के सौ से अधिक प्रतिनिधि शामिल थे।

उन्होंने सदियों से चले आ रहे भारत-मेक्सिको के सौहार्दपूर्ण सांस्कृतिक संबंधों पर ज़ोर देते हुए कहा कि उन्हें खुशी है कि स्पेनिश भाषी विश्व के सबसे बड़े पुस्तक मेले में भारत को अतिथि देश के रूप में चुना गया, क्योंकि भारत पहला और एकमात्र एशियाई देश है जिसे यह सम्मान दिया गया है। इस वर्ष के दौरान भारत में मनाई जा रही महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि महात्मा गाँधी ने कहा था, ''हमारे जीवन को खुली किताब होने दें'', यह हमारा आदर्श वाक्य है क्योंकि यह अन्य बातों के साथ-साथ पुस्तक मेलों के मंचों द्वारा प्रदान किए गए बातचीत और संचार के पूरे माहौल का प्रतिनिधित्व करता है। संयोग से, इस उद्धरण का उपयोग पुस्तक मेले में भारत मंडप में किया गया था।

गुआदालजारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के अध्यक्ष और रोमनस भाषाओं में साहित्य के लिए एफ.आई.एल. पुरस्कार के सिविल एसोसिएशन के अध्यक्ष राउल पाडिल्ला लोपेजय; श्री रिचर्डो विल्लानुएवा लोमेली, गुआदालजारा विश्वविद्यालय के रेक्टर-जनरल; एनरिक अल्फारो रामिरेज़, जलिस्को राज्य के संवैधानिक गवर्नर; एलेजांद्रा फ्राउस्टो गुर्रेरो, मेक्सिको सरकार के संस्कृति सचिव; लुज एलिना गुटिएरेज, डे वेलास्को रोमोय, रोमनस भाषाओं में साहित्य के लिए जूरी की प्रवक्ता 2019 तथा रोमनस भाषाओं 2019 में साहित्य के लिए

गुआदाला जारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में साहित्य अकादेमी के प्रतिनिधि

एफ.आई.एल. पुरस्कार विजेता डेविड ह्यूर्टा, ने उद्घाटन समारोह में अपने-अपने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किए।

मुख्य सभागार में उद्घाटन समारोह के पश्चात् *भारत मंडप* का औपचारिक उद्घाटन भारत सरकार के मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री संजय धोत्रे ने फीता काटकर तथा दीप प्रज्जवलित करके किया तथा इस अवसर पर मैक्सिको में भारत के राजदूत मनप्रीत वोहरा, गुआदालजारा विश्वविद्यालय के रेक्टर रिकार्डो विल्लानुएवा लोमेली, एफ.आई.एल. गुआदालजारा के अध्यक्ष राउल पैडिल्ला लोपेज, मारिसोल शुल्ज, एफ.आई.एल. की महानिदेशक, नीरा जैन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की निदेशक तथा मेक्सिको के संस्कृति सचिव एलेजांद्रा फ्राउस्टो गुर्रेरो भी उपस्थित थे। उद्घाटन कार्यक्रम का संचालन मेक्सिको सिटी के भारतीय दूतावास के गुरुदेव टैगोर भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की निदेशक श्रीमती दास ने किया।

इस अवसर पर माननीय मंत्री ने स्पेनिश अनुवाद में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की दो पुस्तकों का विमोचन किया, जिसका शीर्षक है ''स्टोरीज़ फ्रॉम बापू'ज़ लाइफ'' (महात्मा गाँधी के जीवन से उपाख्यान) तथा ''हॉलीडेज हैव कम'' (ले. रवींद्रनाथ ठाकुर)। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने विशेषरूप से अपने 12 शीर्षकों को मैक्सिकन अनुवादकों से स्पेनिश में अनूदित करवाकर प्रकाशित किया है। उद्घाटन भारतीय शास्त्रीय संगीत तथा एक भारतीय नृत्य प्रदर्शन की प्रस्तुति के साथ संपन्न हुआ।

पुस्तक मेले में अकादेमी ने 4 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल भेजा था, जिसके सदस्य थे—प्रख्यात कवि तथा साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक, प्रख्यात गुजराती लेखक एवं विद्वान बलवंतलाल जानी, प्रख्यात लेखक एवं विद्वान ममंग दई तथा साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव।

पुस्तक मेले के दौरान प्रतिनिधि मंडल ने कई कार्यक्रमों में भाग लिया। भारतीय लेखकों द्वारा प्रथम रचना-पाठ कार्यक्रम में के. श्रीनिवासराव ने भारतीय लेखकों माधव कौशिक, ममंग दई, मकरंद परांजपे का स्वागत तथा परिचय दिया। दूसरे रचना-पाठ कार्यक्रम में बलवंतराय शांतिलाल जानी, प्रख्यात कवि लीलाधर जगूड़ी तथा प्रख्यात हिंदी लेखिका मंजुला राणा ने भाग लिया। दोनों कार्यक्रमों में भारतीय लेखकों ने अपनी-अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

पैनल चर्चा कार्यक्रम का शीर्षक था—''बियोंड गेस्ट कंट्री : इंस्टिट्यूशनलाईजिंग इंडिया - मेक्सिको पब्लिशिंग टाइम''। इसमें बीजभाषण प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक एवं नेहरू सेंटर, लंदन के निदेशक अमीश त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत किया गया तथा के. श्रीनिवासराव, सेंतिआगो रुऐ संचेज़, डेविड उंगर तथा गुरुदेव टैगोर कल्चरल सेंटर, मेक्सिको की निदेशक श्रीमती दास ने इस अपने विचार व्यक्त किए। के. श्रीनिवासराव ने वर्तमान परिदृश्य की जानकारी देते हुए दोनों देशों के बीच बेहतर रोडमैप बनाकर कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया।

''राइटिंग : पैशन ऑर प्रोफेशन'' विषय पर ममंग दई, अरूप कुमार दत्ता तथा श्री अमीश त्रिपाठी ने भाग लिया। पैनल चर्चा जिसका शीर्षक था—''बाई-लिंगग्वलइज़्म ट्राइलिंगग्वलइज़्म एंड म्लटीलिंगग्वलइज़्म : व्हाट इट मीन्स टू राइटर इन इंडिया'' का संयोजन मकरंद परांजपे ने किया तथा भारतीय लेखकों माधव कौशिक, लीलाधर जगूड़ी तथा योगेंद्रनाथ शर्मा ने इसमें सहभागिता की। कार्यक्रम में भारत की बहुभाषी प्रकृति तथा भारतीय संस्कृति की विविधता सामने आई।

''इंडो-मैक्सिकन लिटरेचर : आपर्चुनिटीज़ एंड चैलेंजिज़'' विषयक परिसंवाद में के. श्रीनिवासराव

तथा बलवंतराय शांतिलाल जानी ने स्पेनिश साहित्य को विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनूदित करते समय आनेवाली विभिन्न चुनौतियों की चर्चा की, साथ ही इस क्षेत्र में प्रचुर अवसरों के बारे में चर्चा हुई।

एक अन्य कार्यक्रम 'वाई डू आई राइट' दास द्वारा संयोजित किया गया, जिसमें तीन भारतीय लेखकों—ममंग दई, मकरंद परांजपे तथा मंजुला राणा ने भाग लिया तथा अपने विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम 'ट्रांसलेशन : यूनाइटिंग द कल्चर' में के. श्रीनिवासराव, ममंग दई तथा लीलाधर जगूड़ी ने अनुवाद के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुए अनुवाद के महत्व तथा विविधतापूर्ण समाज में विभिन्न संस्कृतियों के बीच यह एकता के लिए कैसे कार्य करता है, पर अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम 'माई लिटरेरी इन्स्पिरेशंस', जो बलवंतराय शांतिलाल जानी द्वारा संचालित किया गया, इसमें माधव कौशिक ने बताया कि कैसे लेखक प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

कार्यक्रम 'फ्रीडम एंड चैलेंजिज़ इन लिटरेचर', जो मंजुला राणा द्वारा संचालित किया गया, इसमें दो भारतीय लेखकों ममंग दई तथा मकरंद परांजपे ने लेखकों के लिए स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अपने विचार प्रकट किए।

पुस्तक मेले के दौरान प्रतिष्ठित भारतीय लेखकों तथा कवियों के योगदान वाली स्पेनिश पत्रिका *लुविना* के एक विशेष अंक का विमोचन भी किया गया। अकादेमी के प्रतिनिधिमंडल ने स्पेन के कई अनुवादकों और लेखकों के साथ संवाद भी किया।

'तमिऴ साहित्य में प्रवासन' विषय पर संगोष्ठी

6-7 दिसंबर 2019, मायलदुथुरई

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई ने ए.वी.सी. कॉलेज, मायलदुथुरई के सहयोग से कॉलेज परिसर में 6-7 दिसंबर 2019 को 'तमिऴ साहित्य में

(बाएँ-दाएँ) सा. कंदासामी, सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम, के. कार्तिकेयन तथा एस. तमिलवेलु

प्रवासन' विषय पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, चेन्नई के कार्यालय प्रभारी टी.एस. चंद्रशेखर राजू ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

ए.वी.सी. कॉलेज के प्राचार्य आर. नागराजन ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि जहाँ पक्षी भोजन और प्रजनन के लिए प्रवास करते हैं, वहीं मनुष्य आजीविका के लिए पलायन करते हैं। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अध्यक्षीय टिप्पणी देते हुए सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने कहा कि किसी न किसी कारण से पलायन हमेशा से आजीविका की एक आम घटना रही है। अलग-अलग मनोदशा और शत्रुतापूर्ण परिस्थितियों में लिखा, प्रवासन साहित्य सार्वभौमिक है तथा मानव-अनुभव को दर्शाता है। यह मातृभूमि से विमुख होने के बाद मानव दुर्दशा, कठिनाइयों और अभाव का इतिहास है, शक्ति और यथार्थवाद उनकी मिट्टी में निहित हैं तथा समकालीन अनुभव उनकी सच्चाई के गवाह हैं। साहित्य अकादेमी की तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य सा. कंदासामी ने बीजभाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रवासन की अवधारणा को संक्षेप में प्रस्तुत किया तथा सामाजिक-सांस्कृतिक और वैचारिक चिंताओं का विश्लेषण किया जिसके परिणामस्वरूप प्रवासन हुआ। उन्होंने कहा कि विस्थापन साहित्य या तो प्रवासियों द्वारा लिखा जाता है या प्रवासियों तथा उनके प्रवासन की कहानियाँ सुनाता है। महान तमिऴ महाकाव्य

सिलप्पाथिकरम 'कोवलन' तथा 'कन्नागी' के प्रवास का प्रतीक है, जो उस महाकाव्य के दो मुख्य पात्र हैं तथा जो मदुरै में बसने के लिए अपनी पैतृक भूमि से चले गए थे। उन्हें लगा कि साहित्यिक कार्य में पहचान की खोज, अलगाव का दर्द, मेजबान भूमि के साथ मिलनसार संबंध बनाए रखने की जद्दोजहद और जिस भावना में वे कभी फिट नहीं बैठ सकते, अक्सर प्रवासी लेखकों द्वारा अनुभव किया जाता है। ए.वी.सी. कॉलेज के सचिव के. कार्तिकेयन ने समापन भाषण प्रस्तुत किया तथा साहित्यिक परिदृश्य पर अपनी बात रखी। ए.वी.सी. कॉलेज के तमिऴ विभाग के विभागाध्यक्ष एस. तमिलवेलू ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता कार्लोस ने की तथा उन्होंने 'प्रवासन एवं साहित्य—नए आयाम' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने आलेख में उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि वैश्वीकरण ने दुनिया भर में परस्पर जुड़ाव को और अधिक गहरा किया है तथा किस प्रकार प्रवासन पूर्वी तथा पश्चिमी साहित्यिक कार्यों में औपनिवेशिक सिद्धांतों के साथ साहित्यिक संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। उनके पश्चात सी. मोहन ने 'दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में प्रवासन—पा. सिंगराम के संदर्भ में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने पुदुमईपिथन द्वारा लिखित कहानी 'थुंबक्केनी' के बारे में बताया। थुंबक्केनी चाय बागान के श्रमिकों की दुर्दशा तथा पीड़ाओं को चित्रित करता है। कहानी आजीविका की तलाश में महिलाओं द्वारा श्रीलंका पलायन तथा चाय बागानों में यौन उत्पीड़न तथा शोषण को दर्शाती है।

नल्लाथांबी ने 'प्रवासन साहित्य : तमिल और कन्नड़' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने तमिऴ ओली की कविता 'वीराई' पर बात की, जो एक ऐसी महिला के संघर्ष को बताती है जो चाय बागान में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीका में प्रवास करती है। उन्होंने तमिऴ तथा कन्नड़ भाषाओं में समानताएँ दर्शाने के लिए कुछ प्रवासी साहित्यकारों का भी हवाला दिया। की. राजानारायणन का उपन्यास 'गोपाल्ला ग्रामम' गाँव के उन लोगों के लचीलेपन की कहानी है, जो मुगल तानाशाहों से बच गए तथा किस प्रकार उन्होंने एक दूर स्थान पर जाकर एक नया गाँव बसाया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता गोपालकृष्ण पई द्वारा लिखित 'स्वप्न सारस्वत' भारत के पश्चिमी तट पर गौड़ा सारस्वत समुदाय के प्रवास का वर्णन करती है।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता मालन ने की जिन्होंने 'उपनिवेशवाद और प्रवासन' पर आलेख प्रस्तुत किया। मालन ने कवि भारती की कुछ कविताओं का भी पाठ प्रस्तुत किया जिनमें प्रवासी तमिऴों की दुर्दशा तथा अंग्रेज़ों, फ्राँसीसी एवं डच विजय के दौरान गुलामी के अधीन तमिऴों के जीवन को चित्रित करने वाले कुछ अन्य लोक गीतों का वर्णन किया गया है। आर. कुरिंजिवेन्धन ने 'तमिऴ में प्रवासन साहित्य - म्यांमार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तमिलमगन ने 'श्रीलंकाई मलयागातामिल साहित्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि भारतीय मूल के तमिऴ गरीबी, सूखे तथा अन्य सामाजिक बाध्यताओं के कारण काम की संभावनाओं की तलाश में दक्षिण अफ्रीका, मलेशिया, म्यांमार और श्रीलंका चले गए। इंबा सुब्रह्मण्यन ने 'माई नॉवेल एक्सपीरियंस एंड मलेशियाई माइग्रेशन लिटरेचर इन तमिऴ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उनके दादा-दादी द्वारा उन्हें बतलाई गई वास्तविक घटनाओं पर आधारित अपनी कहानी 'वैयासी 19' पढ़कर सुनाई। यह महिला नायिका मीना की कहानी है, जो भारत से मलेशिया में प्रवास करती है। यह कहानी भारत के प्रवासियों के लिए एक प्रेरणा है, विशेषकर भारतीय महिलाओं के लिए, जो जहाँ पर भी रहें, अपने जीवन को सफल बनाने में वे सक्षम हैं।

पी. सुबासचंद्र बोस ने तृतीय सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने 'सिलप्पाथिकरम में प्रवासन' पर आलेख प्रस्तुत किया। तमिऴ जनता की सबसे लोकप्रिय महाकाव्य गाथा, 'सिलप्पाथिकरम' प्राचीन तमिऴ शहर 'पुहार' का दिलचस्प लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है, जिसके

मलेशियाई राज्य कदाराम के साथ व्यापारिक संबंध थे। सुब्रभारतीमणियन ने 'प्रवासन के मेरे साहित्यिक अनुभव' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अपने साहित्यिक अनुभवों को साझा करते हुए सुब्रभारतीमणियन ने अपने दो उपन्यासों—'मात्रुम सिलार' जो नौकरी के अवसरों की तलाश में तमिलनाडु से हैदराबाद चले गए प्रवासी मजदूरों के कष्टों तथा 'सुदुमनाल' जो पानी की कमी के कारण एक राज्य से दूसरे राज्य में लोगों के आंतरिक प्रवासन का वर्णन करते हैं, के बारे में बताया। उला. बालसुब्रह्मण्यम ने 'तमिऴ साहित्य में प्रवासन' पर आलेख प्रस्तुत किया तथा श्री आर. वेंकटेशन ने 'तमिऴ-सिंगापुर साहित्य में प्रवासन' पर आलेख प्रस्तुत किया।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता संध्या नटराजन ने की तथा उन्होंने 'चयावनम-प्रवासन तथा पुनःप्रवासन' पर आलेख प्रस्तुत किया।

उपन्यास मनुष्य की ग़लतियों को मर्मज्ञ अंतर्दृष्टि के साथ व्यक्त करने तथा पारिस्थितिक प्रणाली को खराब करने में मानवीय हस्तक्षेप को दर्शाने के लिए महत्त्वपूर्ण है। एस. तमिलवेलू ने 'तमिऴ शास्त्रीय साहित्य में प्रवासन' पर आलेख प्रस्तुत किया तथा संगम काल की कृतियों जैसे—'पुराणनूरु', 'सिलप्पाथिकरम', 'मणिमेगलाई', 'पत्तिनाप्पालाई' तथा 'अगनानानूरू' के रोचक छंदों के उदाहरण प्रस्तुत किए। उनके बाद एस. सैमुअल असीर राज ने तमिलनाडु में आंतरिक और बाह्य प्रवास पर आलेख प्रस्तुत किया।

पंचम एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता के.आर. शंकरन ने की जिन्होंने 'तमिऴ प्रवासन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि' पर आलेख प्रस्तुत किया।

कल्पना सेक्किज्हर ने 'नाडू विट्टू नाडू—एक आत्मकथा' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। यह उपन्यास मलेशिया में श्रमिकों के रूप में गए लोगों द्वारा रबर बागानों में काम करने तथा उनके द्वारा सही जानेवाली कठिनाइयों पर प्रकाश डालता है। एस. ए. वेंगदा सोपराया नायगर ने 'पुदुचेरी के साहित्य में प्रवासन- फ्रेंच के संदर्भ में' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उल्लेख किया कि औपनिवेशिक काल की शुरुआत में, दास व्यापार के परिणामस्वरूप पुदुचेरी से मॉरीशस, रीयूनियन तथा कोरोम्बस द्वीपों में अधीनस्थ लोगों का प्रवास हुआ। पी.के. राजन ने 'वैश्विक साहित्य में प्रवासन' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने वैश्विक साहित्यिक परिदृश्य में प्रवासन साहित्य का अवलोकन प्रस्तुत किया तथा इसाबेल विल्करसन द्वारा 'द वॉर्म्थ ऑफ़ अदर सन्स', अपटोन सिंक्लेयर द्वारा 'द जंगल' तथा जॉन स्टेनबेक द्वारा 'द ग्रेप्स ऑफ़ रैथ' जैसे अंतरराष्ट्रीय कार्यों पर चर्चा की।

कार्यक्रम में कॉलेज के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों, स्थानीय विद्वानों तथा साहित्यकारों ने काफ़ी संख्या में भाग लिया।

नेपाली कहानियों के 100 वर्ष पर परिसंवाद

07 दिसंबर 2019, नामची, सिक्किम

साहित्य अकादेमी ने प्रेरणा प्रकाशन, नामची के सहयोग से 07 दिसंबर 2019 को नामची, सिक्किम में 'नेपाली कहानियों के 100 वर्ष' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक जीवन नामदुंग ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादेमी की गतिविधियों के बारे में, विशेषरूप से नेपाली भाषा पर चर्चा की। उद्घाटन भाषण साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य थिरू प्रसाद नेपाल ने प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता रुद्र पौड्याल ने की। आलेख वक्ता थे—नीना राय, संगमु लेप्चा, एम. नारायण प्रधान तथा उदय छेत्री। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता नयन राय ने की। प्रदीप गुरुंग, नवीन पौड्याल, दीपक तिवारी तथा नकुल छेत्री ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अमृता प्रीतम जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी

20-21 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

संगोष्ठी का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी तथा पंजाबी अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रख्यात पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ 20-21 दिसंबर 2019 को नई दिल्ली में आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पंजाबी लेखिका अजीत कौर ने की तथा उद्घाटन व्याख्यान प्रख्यात कवि सुरजीत पातर ने प्रस्तुत किया। आरंभिक व्याख्यान पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक वनीता ने प्रस्तुत किया। स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने तथा धन्यवाद ज्ञापन पंजाबी अकादेमी के सचिव गुरभेज सिंह गुराया ने किया।

अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि अमृता प्रीतम पंजाबी साहित्य की ही नहीं बल्कि भारतीय भाषाओं की बड़ी लेखिका थीं। पंजाब के विभाजन की त्रासदी को उन्होंने बहुत गहराई से महसूस किया और स्वतंत्रता तथा नारी की अस्मिता की स्थापना के लिए निरंतर संघर्षरत रहीं। अपने उद्घाटन व्याख्यान में प्रख्यात पंजाबी कवि सुरजीत पातर ने कहा कि अमृता प्रीतम ने 'रीत' की जगह 'प्रीत' को अहमियत दी। अमृता का लेखन औरत की शक्ति का प्रतीक है। उनकी कविताओं में इतिहास और वर्तमान के बीच ऐसे पुल बनते हैं जिनके सहारे हम बीते और आगामी समय की यात्रा बहुत आसानी से कर सकते हैं। प्रख्यात पंजाबी लेखिका अजीत कौर ने उनके साथ बिताए अपने बहुमूल्य समय को याद करते हुए कहा, ''उन्होंने सारा जीवन अपनी शर्तों पर जिया और आकाशवाणी तथा अपनी पत्रिका *नागमणि* के ज़रिये कई नए लोगों को साहित्य लेखन के लिए प्रेरित किया जो भविष्य में पंजाबी के प्रतिष्ठित साहित्यकार बने।''

अपने आरंभिक व्याख्यान में पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक वनीता ने कहा कि वे पंजाब की नहीं बल्कि पूरे देश की आवाज़ बनीं। उन्होंने सभी का दर्द महसूस किया और उसको बेबाकी से प्रस्तुत किया। उनका लेखन आने वाले समाज को हमेशा यह प्रेरणा देता रहेगा कि स्त्री और पुरुष के बीच प्रेम ही ऐसा आधार है जो दोनों के बीच एक ऐसी समरसता लाता है जो पूरे समाज के लिए बेहद आवश्यक है। उन्होंने देश की औरतों की ही नहीं बल्कि विश्व की औरतों की त्रासदियों को भी अंकित किया। पंजाबी अकादमी के सचिव गुरभेज सिंह गुराया ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि अमृता प्रीतम ऐसी लेखिका थीं जिन्होंने जिस तरह जिया उसी तरह लिखा और जिस तरह लिखा उसी तरह जिया।

दिन का द्वितीय सत्र जो 'अमृता प्रीतम के साहित्य' पर केंद्रित था, उसमें जसविंदर सिंह की अध्यक्षता में धनवंत कौर ने उनकी आत्मकथा 'रसीदी टिकट' पर केंद्रित अपना वक्तव्य तथा रेणुका सिंह ने उनसे संबंधित कुछ स्मृतियों को साझा किया। अगला सत्र जोकि 'लेखिकाओं की दृष्टि में अमृता प्रीतम' विषय पर केंद्रित सत्र की अध्यक्षता मालाश्री लाल ने की तथा निरुपमा दत्त एवं अमिया कुँवर ने उनके लेखकीय व्यक्तित्व का आकलन किया। सभी का कहना था कि उनके लेखन ने पंजाबी साहित्य ही नहीं बल्कि भारतीय भाषाओं की लेखिकाओं का क़द ऊँचा किया। उन्होंने पंजाबी लेखन का रुख तो बदला ही उसे स्त्री केंद्रित करने का प्रयास भी किया। कार्यक्रम का संचालन पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य रवि रविंदर ने किया। रवि रविंदर ने इस

संगोष्ठी की ख़ासियत पर अपने विचार भी व्यक्त किए। कार्यक्रम में पंजाबी लेखक, साहित्यकार एवं छात्र-छात्राएँ उपस्थित थे।

प्रथम सत्र 'अमृता प्रीतम के साहित्यिक विचार' पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता सुरजीत पातर ने की तथा कुलवीर (प्रतिरोधी साहित्य), यादविंदर (रोमांटिक साहित्य), नीतू अरोड़ा (नारीवादी साहित्य), मनजिंदर सिंह (भाषा) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। यादविंदर ने अमृता प्रीतम के रोमांटिक साहित्य पर बेहद सार्थक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम सभी के दो जिस्म होते हैं, एक वह जो कुदरती होता है और एक वह जो वैचारिक होता है। हम हमेशा एक संपूर्ण नायक की तलाश में रहते हैं जो कि संभव नहीं है। नीतू अरोड़ा ने अमृता प्रीतम के नारीवादी विचारों पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि अमृता प्रीतम नारी से जुड़े सभी विमर्शों को बेहद निर्भीकता से प्रस्तुत करती हैं और जीवन में भी सारी वर्जनाओं का निषेध करती हैं। इस सत्र की अध्यक्षता सुरजीत पातर ने की।

अमृता प्रीतम की स्मृतियों पर केंद्रित अगले सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि मोहनजीत ने की तथा किरपाल कज़ाक, बीबा बलवंत, रेणुका सिंह तथा अजीत सिंह ने अपनी-अपनी स्मृतियों को साझा किया। इन सभी ने अमृता प्रीतम द्वारा संपादित पत्रिका *नागमणि* का ज़िक्र किया, साथ ही इमरोज़ से उनके संबंध तथा कृष्णा सोबती के साथ हुए उनके विवाद का भी ज़िक्र किया। सभी का यह मानना था कि अमृता प्रीतम के लेखन पर ध्यान देने की बजाय हमने उनके निजी जीवन में ज़्यादा ताक-झाँक की।

समापन सत्र की अध्यक्षता दीपक मनमोहन सिंह ने की तथा मनमोहन एवं गुरबचन भुल्लर ने क्रमशः समापन वक्तव्य एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी बात रखी। मनमोहन का कहना था कि उनके लेखन का पुनर्मूल्यांकन बेहद ज़रूरी है। पंजाबी आलोचकों और लेखकों ने अभी तक उनका समग्र मूल्यांकन नहीं किया है। गुरबचन भुल्लर ने कहा कि उनका सबसे बड़ा योगदान पंजाबी को अंतरराष्ट्रीय व्याप्ति प्रदान करना था, लेकिन हमने उनकी निजी ज़िंदगी को ज़्यादा अहमीयत दी बनिबस्त उनके साहित्य के। राज्यसभा के पूर्व सांसद एच.एस. हंसपाल ने कहा कि नई पीढ़ी को उनके व्यक्तित्व की बजाय उनके कृतित्व को अपना आदर्श बनाना चाहिए। कार्यक्रम के अंत में पंजाबी अकादमी की उपसचिव हरप्रीत कौर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। समापन सत्र का संचालन पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य हरविंदर सिंह ने किया। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी द्वारा अमृता प्रीतम पर निर्मित वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया।

'राजस्थानी नाटकों के दो दशकों' पर परिसंवाद

21 दिसंबर 2019, बीकानेर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय (एम.जी.एस.यू.) बीकानेर के सहयोग से महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के महर्षि शोनक भवन सभागार में 21 दिसंबर 2019 को 'राजस्थानी नाटकों के दो दशकों' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

एम.जी.एस.यू. के राजस्थानी विभाग की प्रभारी मेघना शर्मा ने अपने स्वागत भाषण से परिसंवाद की शुरुआत की। महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति भागीरथ सिंह उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि थे। साहित्य अकादेमी की राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक मधु आचार्य 'आशावादी' ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। एम.जी.एस.यू. की ओर से अमरनाथ अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता साबिर खान ने की। राम सहाय हर्ष ने 'आधुनिक राजस्थानी नाटकों में लोक का प्रयोग', दीपक भटनागर ने 'दो दशकों के राजस्थानी नाटकों में युगबोध' तथा लायक हुसैन ने 'लोक नाट्य शैली, लोक रंगमंच और आधुनिक राजस्थानी नाटक' पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दिनेश पांचाल ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की। हरीश शर्मा द्वारा 'आधुनिक राजस्थानी रंगमंच : दशा और दिशा', अंबिका दत्त ने 'लोक नाट्य रूपों में आधुनिक कथानकों का प्रयोग' तथा भूपेंद्र सिंह ने 'राजस्थानी नाट्य परंपरा और आधुनिक राजस्थानी रंगमंच' पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। परिसंवाद का समापन मधु आचार्य 'आशावादी' के समापन भाषण के साथ हुआ।

'कन्नड कहनियों का उद्‌गम और विकास' पर परिसंवाद

24 दिसंबर 2019, अथानी

व्याख्यान देते हुए चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने जे. ई. सोसायटी के कृष्णाराव ए. लोकापुर डिग्री कॉलेज, अथानी के सहयोग से जे.ई. सोसायटी के ए. कृष्णाराव लोकापुर डिग्री कॉलेज के आर.एच. कुलकर्णी सभाभवन, अथानी में 'कन्नड कहानियों का उद्‌गम और विकास' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

बेंगळुरु के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों तथा विशेषरूप से अकादेमी द्वारा पूरे देश में आयोजित की जानेवाली संगोष्ठियों तथा परिसंवादों के बारे में बताया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। उन्होंने भारतीय साहित्य में कहानी द्वारा योगदान देने की सराहना की। भारत में कहानियों का ख़ज़ाना है तथा प्राचीन कहानियाँ जैसे—*पंचतंत्र, जातक कथाएँ* आदि पूरी दुनिया में बहुत लोकप्रिय हैं। पश्चिम के ज्ञान ने आदमी को भटकाया, इसके लिए उन्होंने आदम और हव्वा के साथ-साथ ओडिपस के उदाहरण प्रस्तुत किए। किंतु, भारत में, साहित्य, विशेषरूप से कहानियाँ हमारी परंपरा की स्मृतियों और स्वप्नों से भरी हुई हैं तथा हमें रसानुभूति (रस) प्रदान करती हैं। उन्होंने भारत के सभी कहानीकारों को शुभकामनाएँ देते हुए अपने संबोधन का समापन किया।

इस अवसर पर प्रसिद्ध कहानीकार अमरेश नुगादोनी ने अपने बीज भाषण में नवोदय (20वीं सदी के प्रारंभ में) से कन्नड कहानी के इतिहास के बारे में बताया तथा दलित, बंदया कहानियों को कन्नड के ख़ज़ाने के रूप में विश्लेषित किया। साहित्य की अन्य शैलियों की तुलना में कन्नड कहानियों को व्यापक रूप से पढ़ा जाता है।

कन्नड साहित्य परिषद के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध कहानी लेखक मनु बालीगर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कन्नड की वर्तमान साहित्यिक स्थितियों के बारे में बताया और कहा कि कन्नड को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को लाभ पहुँचाते हुए लेखकों के प्रयासों के साथ आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक परिवर्तन भी शक्तिशाली लेखन से संभव है। शिक्षा न्यास के लेखक एवं पूर्व अध्यक्ष अरविंद देशपांडे ने उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने अपनी कहानियों, नाटकों तथा कविता के माध्यम से डॉ. कंबार के योगदान की सराहना की। इससे पूर्व, साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल तथा सामान्य परिषद के सदस्य बालासाहेब लोकापुर ने कार्यक्रम के विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा मीरजी अन्नाराय, भुजंगावाड़ी, भगोजी तथा डॉ. कंबार जैसे लेखकों को मिट्टी से जुड़े सपूतों के रूप में रेखांकित किया, जिन्होंने कन्नड साहित्य को अपनी रचनाओं के माध्यम से परिष्कृत किया है।

प्रथम सत्र में चन्नप्पा कट्टी ने अध्यक्षता की तथा नैतिक कहानियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

वेंकटगिरी दलवई ने *नव्या* की कहानियों में अस्तित्ववाद पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उभरती हुई कहानी लेखिका दीप्ति भद्रावती ने अपनी कहानी प्रस्तुत की तथा कार्यक्रम के प्रतिभागियों ने छात्रों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए।

गीता बसंत ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की तथा महिला कहानी जगत पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कल्पेश कुमार ने अपनी कहानी प्रस्तुत की। तत्पश्चात, प्रश्न-उत्तर का सत्र हुआ।

समापन सत्र में बालासाहेब लोकापुर ने लेखकों तथा अकादेमी की सराहना की तथा समस्त कार्यवाही का समाहार प्रस्तुत किया।

पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी कवि सम्मिलन

28-29 दिसंबर 2019, बेंगळुरु

साहित्य अकादेमी ने 28-29 दिसंबर 2020 को बेंगळुरु में 'पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी कवि सम्मिलन' का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। अपने उद्घाटन भाषण में साहित्य अकादेमी की तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने भारत की सांस्कृतिक विरासत की जटिल प्रवृत्तियों तथा परंपराओं को संकलित कर प्रस्तुत करने में साहित्य के योगदान के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार भारतीय साहित्य कई संस्कृतियों मुख्यधारा तथा लोक की उपज है। उन्होंने अपने भाषण के अंत में कहा कि कवि चाहे वह जिस भी क्षेत्र या भाषा का हो किंतु उसके द्वारा कविता के माध्यम से दिया गया संदेश समाज के विभिन्न मनोभावों से संबंधित होता है।

साहित्य अकादेमी की कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक सिद्दलिंगय्या ने भारत के साहित्यिक ताने-बाने में पूर्वोत्तर कविता के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि किस प्रकार से मातृभाषा तथा अंग्रेज़ी दोनों में कविता-पाठ का इस प्रकार का मंच और अधिक समझ को बढ़ावा देता है तथा इस प्रकार कवियों की कल्पना

स्वागत भाषण देते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव

और रचनात्मकता को सबसे सुंदर ढंग से प्रस्तुत करने से कवियों के मध्य आपसी एकता को बढ़ावा मिलता है।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने विश्व मानचित्र में भारत की अनूठी स्थिति की ओर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट किया कि भारत में सैंकड़ों-प्रधान, लघु तथा कई प्रकार की बोलियाँ हैं। इसलिए भारत हज़ारों वर्षों से कई भाषाओं में लिख रहा है। इस भाषायी विविधता को ऐसे आयोजनों के माध्यम से सम्मानपूर्वक मनाया जाना चाहिए। उन्होंने अकबर इलाहाबादी की एक ग़ज़ल—''दर्द को दिल में दे जगह 'अकबर', इल्म से शायरी नहीं आती'', का उदाहरण भी प्रस्तुत किया। माधव कौशिक ने बताया कि किस प्रकार करुणा, दर्द महसूस करना एक कवि की पहचान है, चाहे वह किसी भी संस्कृति या भाषा का हो।

उद्घाटन सत्र में समापन भाषण ''जैन'' (विश्वविद्यालय के लिए विचाराधीन) की डीन-भाषा की मैथिली पी. राव ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कवि को एक योद्धा की भूमिका निभाने पर बल दिया जो कलम को एक हथियार की भाँति चलाता है, क्योंकि वह शब्द ही हैं जो हथियार से भी अधिक शक्तिशाली होते हैं, क्योंकि हथियार केवल शारीरिक रूप से ही आहत कर सकते हैं।

प्रथम सत्र में 'पूर्वोत्तर भारतीय कविता की रचनात्मकता और पर्यावरण में नई प्रवृत्तियाँ' विषय पर तीन विद्वानों द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। मणिपुर के ख. कुंजो सिंह ने मणिपुर की भाषा, भूमि तथा संस्कृति पर प्रकाश डाला।

असमिया के प्रसिद्ध कवि अरिंदम बोरकटकी ने असमिया लेखकों की नई नस्ल के बारे में बताया जो प्रयोगधर्मी है तथा निर्भीकता से कई विषयों पर लिखकर अपनी अभिव्यंजना कर रही है।

धनंजय ब्रह्म ने समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक संकट से उत्पन्न हुए बोडो साहित्य के नए रुझानों के बारे में बताया। देश और दुनिया के हालिया साहित्यिक आंदोलन बोडो कविता को प्रभावित कर रहे थे। उन्होंने साहित्यिक गतिविधियों तथा जीवंत बोडो साहित्य के उद्‌भव में सामाजिक-साहित्यिक संगठन और सरकारी योजनाओं की भूमिका को भी स्वीकार किया।

रूपेश शर्मा ने अपने आलेख के माध्यम से 150 वर्ष के नेपाली साहित्य तथा कविता पर प्रकाश डाला। उन्होंने नेपाली काव्य आंदोलन के विभिन्न चरणों तथा नेपाली कविता के नए रुझानों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की।

द्वितीय सत्र कविता-पाठ को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता मकरंद परांजपे ने की। अपने उद्‌घाटन भाषण की शुरुआत परांजपे ने ''मिले सुर मेरा तुम्हारा तो सुर बने हमारा'' के लोकप्रिय संगीत गायन के साथ की ताकि इस बात को सिद्ध किया जा सके कि कवियों के एकजुट होने से तालमेल पैदा होता है, जो भाषा की बाधा से परे है। उन्होंने कविता के 'ध्वनि' पक्ष पर बल दिया जो 'शब्द' से अधिक शक्तिशाली होता है। कवियों में सबसे पहले मलयाळम् कवि एस. वी. आर्याम्बिका ने 'ब्राउन फ्लावर्स' तथा 'द ट्रेन्स' विषयक दो कविताएँ पढ़ीं। पलाखी बसुमतारी ने बोडो में कविता पढ़ी; असमिया में कौशिक किसलय; कन्नड में कथायनी कुंजिबेट्टु; मणिपुरी में ख्वाईराकपम सुनीता देवी; नेपाली, हिंदी तथा अंग्रेज़ी में कमला तमांग; तमिळ में अंडाल प्रियदर्शनी तथा तेलुगु में सिद्धार्थ ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। परांजपे ने धागे में मोतियों की भाँति बड़ी ही ख़ूबसूरती के साथ एक कविता से दूसरी कविता के प्रवाह में बाँधे रखा, जिसने दर्शकों को कल्पना, रूपकों और भाषाओं की सुंदरता के साथ मंत्र-मुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम का समापन हिंदी के कवि माधव कौशिक के कविता-पाठ के साथ हुआ। उन्होंने सत्र का समापन अपनी एक ग़ज़ल ''दिल में हर दम चुभने वाला दर्द सही सलामत है'', सुनाकर किया।

अगले सत्र की शुरुआत तेलुगु साहित्य के विख्यात विचारक जी. लक्ष्मीनरसिंह द्वारा प्रस्तुत आलेख से हुई। उन्होंने स्पष्ट किया कि कविता वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक गतिशीलता का जवाब दे रही है। मानवता, मनोदशा तथा क्षण, अमूर्त दार्शनिक विचार कविता में अपना प्रमुख स्थान बना रहे हैं। तेलुगु कविता में क्षेत्रवाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है, उदाहरण स्वरूप रायलसीमा जो कई चुनौतियों का सामना कर रहा है जैसे—सूखा, ग़रीबी, जल संकट, गुटबाजी आदि।

कन्नड के प्रख्यात समालोचक एस.आर. विजयशंकर ने 'कन्नड कविता में नए रुझान' पर अपने विचार व्यक्त किए। अपने विश्लेषण में उन्होंने कन्नड साहित्य की क्षमता को प्रस्तुत करते हुए बताया कि कन्नड साहित्य ने विश्व तथा देश के अन्य समस्त भौगोलिक क्षेत्रों के विचारों का स्वागत किया है तथा उन्हें आत्मसात किया है। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा स्थान है जो कई कालों, मतों, प्रथाओं, मान्यताओं में एक ही समय में 'बहुत्व' का प्रतिनिधित्व करता है।

द्विदिवसीय 'कवि सम्मिलन' के अंतिम सत्र में असमिया में दिगंत शइकीया ने 'दिस माई टाउन' तथा 'मदर'; न्यूटन के. बसुमतारी ने बोडो में 'व्हेन फायर एंड सैक्रिफासिंग'; कन्नड में महादेव शंकनपुरा ने 'अ लैटर टू फादर' तथा संतोष कुमार ने 'लैंग्वेज ऑफ़ अर्थ तथा विद हर, वाई डोंट यू क्राई अलाउड' शीर्षक से अपनी कविताएँ पढ़ीं। इनके अलावा मणिपुर की सुबदनी देवी ने बताया की उनकी कविता 'एटम बम टीयर्स' के माध्यम से किस प्रकार महिलाएँ सच्चाई का अनुभव करती हैं; सत्यमोहन ने तमिळ में 'पदयात्रा बाई बैलून' शीर्षक से अपनी कविता पढ़ी जो जीवन की वास्तविकताओं से परिपूर्ण थी; बालसुधाकर मौली ने 'ब्लैक फ्लावर्स' शीर्षक से कविता पढ़ी जिसमें हाशिये पर पड़े लोगों के दर्द को दर्शाया गया है तथा एक अन्य कविता 'बिसाईड द रिवर' भी प्रस्तुत की जिसमें किसानों के पलायन के बारे में बताया गया था।

अंतिम सत्र में धन्यवाद प्रस्ताव शब्दना के निदेशक एस. आर. विजयशंकर ने प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह दो दिन इस बात का प्रमाण थे कि भौगोलिक क्षेत्रों से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, अनुभव, प्रतीक तथा कल्पना हमें एकजुट करते हैं। भारत अनुभवों की बहुलता वाला एक विशाल देश है, लेकिन स्वीकृति से सह-अस्तित्व बढ़ेगा तथा इसके लिए हमें सबके प्रति प्रेम और सम्मान का भाव रखना होगा। इन दो दिनों में, चाहे हम जिस भूमि या भाषा से संबंधित हों, हमने आपसी विचार-विमर्श द्वारा संभावनाओं का एक सेतु निर्मित किया है।

'भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में भारतीय विषय : परिप्रेक्ष्य तथा चुनौतियाँ' विषय पर परिसंवाद

7 जनवरी 2020, कोयंबटूर

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने कोयंबटूर में 7 जनवरी 2020 को अंग्रेज़ी विभाग, रथिनम कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साइंस, कोयंबटूर के सहयोग से 'भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में भारतीय विषय : परिप्रेक्ष्य तथा चुनौतियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

अंग्रेज़ी विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष ए.के. नलिना ने सबका स्वागत किया तथा कार्यक्रम का उद्घाटन साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की अंग्रेज़ी परामर्श मंडल की संयोजक संजुक्ता दासगुप्ता ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने पूर्व औपनिवेशिक लेखन, औपनिवेशिक लेखन के बाद तथा 21वीं सदी के लेखन तथा उसके अनुवादों के संदर्भ में अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन के महत्व तथा उसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। उन्होंने राजा राव से लेकर अरुंधति रॉय तक कई लेखकों की चर्चा की, जिनके साहित्य में कोई भी भारतीय समाज के विषयों में मतभेदों को जानने तथा विभिन्न संस्कृति का सम्मान करने के लिए रचनात्मक रूप से स्वयं उसकी पहचान कर सकता है क्योंकि भारत एक अनूठा राष्ट्र है। दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफ़ेसर तथा भारतीय अंग्रेज़ी लेखन के प्रख्यात हस्ताक्षर सुमन्यु सत्पथी ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र का समापन अंग्रेज़ी की सहायक प्रोफ़ेसर एस. कविता द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, उन्होंने इस अद्भुत परिसंवाद के लिए रथिनाम कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड साइंस के अंग्रेज़ी विभाग के साथ सहयोग करने तथा इसके सार्थक परिणामों के लिए आयोजन समिति के सदस्यों तथा साहित्य अकादेमी का आभार प्रकट किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुमन्यु सत्पथी ने की। सत्र की प्रथम वक्ता कोयंबटूर के कोंगुंडु आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज की अंग्रेज़ी की पूर्व प्रोफ़ेसर पूंगोथाई थीं। उनके आलेख का शीर्षक 'भारतीय अवधारणाएँ : अनंत प्रकृति' था। दूसरी वक्ता कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़ की अंग्रेज़ी की प्रोफ़ेसर कृष्णा कुमारी मंडावली थीं। उन्होंने 'कार्नाड तथा कंबार : मिथक और इतिहास वृत्तांत वर्णन' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

सत्र की तीसरी वक्ता लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ के अंग्रेज़ी विभाग की प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष रानू उनियाल पंत थीं। उन्होंने 'प्रत्येक सत्य एक प्रश्न के साथ समाप्त होता है : भारतीय अंग्रेज़ी लेखन में मिली भगत, टकराव और सुलह' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. रानू ने बताया कि सरोजिनी नायडू, निसिम इज़ेकिल, आर.के. नारायण तथा भारतीय अंग्रेज़ी के अन्य लेखकों ने भारतीय समाज की सच्चाइयों पर प्रकाश डाला है तथा उन्हें आकार भी दिया है। अंतिम

वक्ता पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी की प्रोफ़ेसर एवं अंग्रेज़ी विभागाध्यक्ष एच. कल्पना ने 'भारत का भारतीय अंग्रेज़ी लेखन का विचार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता रानू उनियाल पंत ने की। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी की अंग्रेज़ी की प्रोफ़ेसर अनीता सिंह ने 'भारतीय अंग्रेज़ी प्रदर्शन में सीता का पुनर्निर्माण' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने भारतीय अंग्रेज़ी लेखन में सीता के विभिन्न चरित्रों के आदर्श रूपों पर प्रकाश डाला। आई.आई.टी. मद्रास, चेन्नई में अंग्रेज़ी के सहायक प्रोफेसर अविशेक पारुई ने भारतीय अंग्रेज़ी लेखन के एक बहुत ही अलग पहलू पर आधारित अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने 'भारतीय अंग्रेज़ी लेखन में स्मृति : भविष्य की संभावनाएँ' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने इतिहास में विस्मरण के पहलुओं की पड़ताल की। उन्होंने यह व्याख्यायित किया कि स्मृति तथा स्मरण करना एक महत्वपूर्ण विषय बन जाता है तथा वह किस प्रकार से एक व्यक्ति को प्रभावित करता है।

समापन भाषण अंग्रेज़ी विभाग के विभागाध्यक्ष ए.के. नलिना ने प्रस्तुत किया। परिसंवाद ने ऐसा प्रभाव पैदा किया और यह स्पष्ट किया कि जो भारतीय लेखक रचनात्मक रूप से स्वयं को अंग्रेज़ी भाषा में शामिल कर सकते हैं उन भारतीयों के लिए अंग्रेज़ी भाषा कभी बाधा नहीं रही तथा अधिकतर यह भारत के लोगों को मूल्यों और सांस्कृतिक मतभेदों को अधिक निकटता से बनाए रखने तथा जुड़ने में मदद करता है।

'कोंकणी पाठ्य पुस्तकों की तुलना में कोंकणी साहित्य' पर परिसंवाद

22 जनवरी 2020, पोरवोरिम, गोवा

साहित्य अकादेमी ने गोवा माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहयोग से 'कोंकणी पाठ्य पुस्तकों की तुलना में कोंकणी साहित्य' पर एस.सी.ई.आर.टी.

स्वागत भाषण देते हुए भूषण भावे, साथ में हैं रामकृष्ण सामंत तथा नंदकुमार कामत

सभागार, पोरवोरिम, गोवा में परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कोंकणी की समृद्ध मौखिक साहित्यिक परंपरा पर प्रकाश डाला तथा उपस्थित शिक्षाविदों तथा विद्वानों से आग्रह किया कि वे गोवा के समाज और संस्कृति के पहलुओं को दर्शाने वाले इस परिसंवाद की कार्यवाही पर अनुसंधान करें तथा उसे प्रलेखित भी करें। परिसंवाद का उद्घाटन गोवा बोर्ड के अध्यक्ष रामकृष्ण सामंत ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने समृद्ध कोंकणी साहित्य तथा परंपरा को संरक्षित करने वाली विभिन्न कोंकणी पाठ्य पुस्तकों का संदर्भ प्रस्तुत किया। जानेमाने शोधकर्ता तथा विद्वान नंदकुमार कामत ने बीज भाषण प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था—'कोंकणी पाठ्य पुस्तकों में परिलक्षित साहित्य'। इस सत्र की अध्यक्षता शेखर जी. देसाई ने की। अपर्णा गरुड़ तथा दिलीप पलसरकार ने उक्त विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। उन्होंने विभिन्न संदर्भ प्रस्तुत किए जिनके द्वारा कोंकणी पाठ्य पुस्तकों में साहित्य के बारे में पता चला।

द्वितीय सत्र का विषय था—'पाठ्य पुस्तकों में साहित्य की संभावना तथा उपयोग'। श्रीकांत पलसरकार ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रकाश दत्ताराम नायक तथा प्रमोद सुरलाकर ने उक्त विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता कविंद्र फलदेसाई ने की। यह सत्र एक खुला मंच था, जिसमें विद्वानों ने पाठ्य पुस्तक निर्माण संबंधित अपने अनुभव साझा किए। गोवा बोर्ड के सचिव भागीरथ शेट्ये कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे।

परिसंवाद में विद्वानों, शिक्षाविदों, छात्रों तथा कोंकणी साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया।

एस. गुप्तन नायर की जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी

6 फ़रवरी 2020, त्रिवेंद्रम

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

साहित्य अकादेमी ने एस. गुप्तन नायर फाउंडेशन के सहयोग से 'एस. गुप्तन नायर की जन्मशताब्दी' के अवसर पर 6 फ़रवरी 2020 को त्रिवेंद्रम में संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने उपस्थितगणों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक प्रभा वर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय व्याखान में प्रभा वर्मा ने भाषा में साहित्यिक क्षेत्र के विस्तार के लिए एस. गुप्तन नायर के विभिन्न योगदानों पर विस्तार से चर्चा की।

केरल सरकार के लोक निर्माण एवं पंजीकरण मंत्री जी. सुधाकरन ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उन्होंने अपने ज्ञानवर्धक भाषण में एस. गुप्तन नायर के साहित्यिक योगदान का समालोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि एक प्रसिद्ध कवि होने के नाते तथा जब वे सहकारी मंत्री थे, तब उन्होंने साहित्य प्रवर्तक सहकारी समिति (एस.पी.सी.एस.) के सहयोग से लेखकों के हितों की रक्षा करने के अथक प्रयास किए थे। उन्होंने स्वतंत्रता के बाद से विभिन्न लेखकों के समूह गठन का विवरण भी प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सभी लेखकों ने भाषा तथा साहित्य की बेहतरी के लिए कार्य किया है; हालाँकि इन विन्यासों के कारण काफी कुछ उभर के भी सामने आया किंतु उसे प्रगतिशील नहीं कहा जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र में पूर्व राजदूत टी.पी. श्रीनिवासन, एस. गुप्तन नायर फाउंडेशन के संयुक्त सचिव एम.जी. शशिभूषण, कायमकुलम यूनुस तथा साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य अजयपुरम ज्योतिष कुमार ने भी उद्घाटन सत्र में अपने विचार व्यक्त किए।

अगला सत्र 'लेखक से जुड़ी स्मृतियों' पर आधारित था। केरल सरकार के इनसाइक्लोपीडिक प्रकाशन के वयोवृद्ध लेखक एवं पूर्व निदेशक जॉर्ज ओनाक्कूर, केरल स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ़ लैंग्वेज के पूर्व निदेशक एम.आर. थम्पन, वयोवृद्ध इतिहासकार एवं साहित्यकार टी. जमाल मोहम्मद, पूर्व प्रोफ़ेसर तथा एस. गुप्तन नायर की बेटी बी. लक्ष्मी कुमारी ने लेखक के साथ अपनी स्मृतियों को साझा किया। उनमें से प्रत्येक ने लेखक की बहुमुखी प्रतिभा तथा उनके गहन ज्ञान, विनम्रता तथा संगीत, टेनिस खेलने आदि के प्रति विशेष झुकाव के बारे में बताया। इस सत्र का उद्घाटन पूर्व मुख्य सचिव तथा जाने-माने कवि के. जयकुमार ने किया।

'समालोचकों का सम्मिलन' विषयक सत्र का आयोजन दोपहर में आयोजित किया गया। चूकि एस. गुप्तन नायर एक समालोचक के रूप में जाने जाते हैं तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी उन्हें समालोचना की पुस्तक के लिए प्रदान किया गया था, इसलिए सत्र को काफी महत्त्व मिला। अजयपुरम ज्योतिष कुमार ने इस सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के मलयाळम्

परामर्श मंडल के सदस्य बालचंद्रन वडक्केदात ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्यिक समालोचना में हाल के रुझानों पर चर्चा की तथा साहित्यिक आलोचना के गुणों पर बल दिया। केरल विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी भाषा तथा साहित्य विभाग की पूर्व प्रमुख ए. जमीला बेगम ने सत्र के विषय पर अपने विचार व्यक्त किए तथा विश्वभर के नए रुझानों को विस्तार से बताया। भाषा के वयोवृद्ध समालोचकों पी.के. राजशेखरन तथा एम. कृष्णन नंपूथिरी ने भी सत्र के विषय का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य एन. अजित कुमार ने की तथा सत्र के वक्ताओं—एस.एस.ए. अज़ीम, वी. प्रसन्नामारी ने आलेख वाचन किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य आभार व्यक्त एल.वी. हरिकुमार ने उपस्थित प्रतिभागियों तथा श्रोताओं के प्रति किया।

(महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर) 'महात्मा के पथ पर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी

9 फ़रवरी 2020, तिरूर, केरल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु ने थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट, तिरूर के सहयोग से महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती के अवसर पर 9 फ़रवरी 2020 को थुंचन परम्बु, थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट, तिरूर, ज़िला मलाप्पुरम, केरल में 'महात्मा के पथ पर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु के कार्यक्रम अधिकारी पी. राधाकृष्णन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने अकादेमी के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में विस्तार से बताया।

संगोष्ठी का एक दृश्य

सत्र की अध्यक्षता करने वाले प्रख्यात मलयाळम् लेखक समालोचक एम.आर. राघव वॉरियर ने कहा कि गाँधी का मार्ग औपनिवेशिक दृष्टिकोण तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध था जो भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान तथा वेदों, उपनिषदों, इतिहास, पुराणों आदि जैसे लेखन को अंधविश्वास मानते थे।

अपने उद्घाटन भाषण में प्रख्यात मलयाळम् उपन्यासकार तथा लेखक सी. राधाकृष्णन ने कहा कि गाँधी ने निःसंदेह हमें स्वतंत्रता दिलाई, किंतु गाँधी विज्ञान की शक्ति को देखने में विफल रहे जो भारत में बदलाव और विकास ला सकती थी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, हमें गाँधी के पथ पर पुनर्विचार करना होगा।

अगले वक्ता एम.एन. करासेरी सी. राधाकृष्णन से सहमत नहीं थे। उन्होंने कहा कि गाँधी मशीन, विज्ञान तथा आधुनिकता के विरुद्ध नहीं थे। उन्होंने आगाह किया कि हमें इनका ग़ुलाम नहीं बनना चाहिए। गाँधी ने अहिंसा और शांति की दृढ़तापूर्वक वकालत की। राम मोहन ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र में मानम्बूर राजन बाबू ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी का स्वागत किया। मधुकर उपाध्याय ने अपने भाषण में कहा कि गाँधी ने हमारे वेदों, पुराणों तथा इतिहास से अपने दर्शन को विकसित किया। उन्होंने यह भी कहा कि गाँधी का पथ कठोर नहीं है। वह सदा से ही लचीला है। यही उनके पथ की महानता

है। गाँधी के पथ पर तुरंत परिणाम नहीं दिखेगा किंतु कुछ समय पश्चात इसका स्थिर परिणाम मिलेगा। उन्होंने दलितों के बारे में गाँधी की दृष्टि को भी समझाया।

के.एम. अनिल ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि गाँधी ने सिद्धांतों को समक्ष नहीं रखा। उनके स्थान पर उन्होंने अनुकरणीय व्यक्तियों के आदर्श स्थापित किए। वह समस्त सिद्धांतों से दूर ही रहे तथा साथ ही उन्होंने कोई सिद्धांत भी नहीं बनाया। वह उन अनुकरणीय व्यक्तियों पर विश्वास करते थे जिन्हें हम देख सकते हैं। गाँधी का मानना था कि सिद्धांत हिंसा तथा दंगों को बढ़ावा देंगे।

अपने भाषण में नटराज हुलियार ने कहा कि आज भी युवा पीढ़ी गाँधी को पढ़ती है तथा उनके बताए मार्ग पर चलने में रुचि रखती है। उन्होंने गाँधी के दलित दृष्टिकोण पर भी विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने विभिन्न कन्नड पुस्तकों से गाँधी के मार्ग तथा दृष्टि के संबंध में लेखकों के विचारों का हवाला दिया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि जब भी हम मुसीबत में होते हैं तब हम गाँधी के बारे में सोचते हैं।

टी. कृष्णनुन्नी ने 'गाँधी तथा संविधान' पर बात करते हुए कहा कि संविधान और गाँधी जी के संबंध को समझना बहुत आवश्यक है। उनके विचार में गाँधी के दृष्टिकोण पर विचार करते हुए संविधान को अंगीकृत किया जाना चाहिए। दिलीप कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'कोंकणी मीडिया तथा साहित्य' पर परिसंवाद

15 फ़रवरी 2020, पोंडा, गोवा

साहित्य अकादेमी ने अंतरुज पत्रकार संघ, पोंडा तथा राजीव गाँधी कला मंदिर के सहयोग से 'कोंकणी मीडिया तथा साहित्य' विषय पर 15 फ़रवरी 2020 को राजीव गाँधी कला मंदिर के कांफ्रेंस हॉल, पोंडा, गोवा में परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने अतिथि वक्ताओं तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों तथा योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने इस विषय पर आगे कहा कि साहित्य के प्रसार और प्रचार में मीडिया प्रमुख रहा है। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा पर्यावरणविद् राजेंद्र केरकर ने दैनिक पाठकों से दैनिक समाचार पत्रों को पढ़ने के लिए निरंतर प्रिंट मीडिया का समर्थन करने का आग्रह किया। अध्यक्षीय व्याख्यान अंतरुज पत्रकार संघ के अध्यक्ष अजय बागकर ने प्रस्तुत किया। सदानंद सतारकर ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

परिसंवाद का प्रथम सत्र 'मीडिया तथा कथा साहित्य' को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता परेश प्रभु ने की। इस विषय पर राजू भिकाराव नायक तथा नरेंद्र तारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय था—'मीडिया एवं कविता तथा कथेतर साहित्य'। इस सत्र की अध्यक्षता पांडुरंग गाँवकर ने की। दर्शन लोलिएंकर तथा संजीव वेरेनकर ने इस विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'मीडिया-साहित्य संबंध : कार्यक्षेत्र, सीमाएँ तथा आवश्यकता' विषय पर एक परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें श्रोताओं ने विद्वानों के साथ विमर्श किया। अजय बुवा तथा प्रभाकर धागे प्रतिभागी थे।

परिसंवाद में विद्वानों, कोंकणी साहित्य प्रेमियों तथा मीडिया कर्मियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

22 फ़रवरी 2020, भोपाल

आरंभिक व्याख्यान देते हुए अभिराज राजेंद्र मिश्र

साहित्य अकादेमी ने 22 फ़रवरी 2020 को गोकुल जन कल्याण समिति तथा राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर के सहयोग से आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की जन्मशतवार्षिकी के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान सभागार, भोपाल, मध्य प्रदेश में परिसंवाद का आयोजन किया। अपने स्वागत भाषण में प्रख्यात लेखक, विद्वान तथा आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी के पुत्र राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि उनके पिता ने संस्कृत साहित्य में उनकी रुचि विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। तत्पश्चात, सबीहुल हसनैन ने गोकुल प्रसाद त्रिपाठी की साहित्यिक यात्रा पर एक स्मृति खंड का विमोचन किया। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक अभिराज राजेंद्र मिश्र ने आरंभिक व्याख्यान देते हुए कहा कि गोकुल प्रसाद त्रिपाठी एक सक्षम बहुभाषी थे तथा संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू भाषाओं में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। मध्य प्रदेश कालिदास संस्कृत अकादमी के पूर्व निदेशक कृष्णकांत चतुर्वेदी ने गोकुल प्रसाद त्रिपाठी के साहित्य का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर पंडित बलराम शुक्ल को गोकुल प्रसाद त्रिपाठी सम्मान से सम्मानित किया गया। उद्घाटन सत्र धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ।

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के प्राचार्य प्रकाश पांडेय ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। धर्मेंद्र कुमार सिंहदेव, बलराम शुक्ल, विजय बहादुर सिंह तथा मनोहर लाल शास्त्री ने गोकुल प्रसाद त्रिपाठी के साहित्यिक योगदानों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। महेश कुमार त्रिपाठी ने सत्र का समन्वयन किया तथा बालकृष्ण त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई।

'मैथिली में साहित्यिक समालोचना की समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर परिसंवाद

1 मार्च 2020, राँची, झारखंड

व्याख्यान देते हुए अशोक प्रियदर्शी

साहित्य अकादेमी ने संपर्क, राँची के सहयोग से 1 मार्च 2020 को 'मैथिली में साहित्यिक समालोचना की समकालीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर मंदिर हॉल, मंदिर मार्ग, अशोक नगर, राँची, झारखंड में परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत सभी अतिथियों द्वारा पारंपरिक दीप प्रज्वलित करने के साथ हुई। संपर्क, राँची के संयुक्त संयोजक अरविंद कुमार झा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य कुमार मनीष अरविंद ने अपने आरंभिक व्याख्यान में समकालीन मैथिली साहित्य के संवर्धन के लिए साहित्यिक समालोचना की भूमिका पर प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श

मंडल के संयोजक अशोक कुमार झा 'अविचल' ने अपने बीज भाषण में मैथिली भाषा तथा साहित्य में प्राचीन साहित्यिक समालोचना तथा समकालीन प्रवृत्तियों दोनों पर अपने विचार व्यक्त किए। हिंदी एवं मैथिली के प्रख्यात लेखक अशोक प्रियदर्शी ने मैथिली भाषा तथा साहित्य की विशिष्टता पर प्रकाश डाला। प्रख्यात मैथिली कवि बुद्धिनाथ मिश्र ने अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। आत्मेश्वर झा ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

भोजनोपरांत अगले सत्र की अध्यक्षता कुमार मनीष अरविंद ने की। इस सत्र में प्रख्यात मैथिली लेखकों सियाराम झा 'सरस', हितनाथ झा तथा कृष्ण मोहन झा ने मैथिली साहित्य में 'साहित्यिक समालोचना', 'साहित्यिक समालोचना तथा मैथिली भाषा', तथा 'मैथिली में तुलनात्मक साहित्यिक समालोचना का परिदृश्य' विषयों पर क्रमशः अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंत में अशोक कुमार झा 'अविचल' ने साहित्य अकादेमी के साथ परिसंवाद के आयोजन में सहयोग करने के लिए संपर्क, राँची का आभार व्यक्त किया।

धनीकोंडा हनुमंत राव की जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी

11 मार्च 2020, चेन्नई

धनीकोंडा हनुमंत राव की पुस्तक का लोकार्पण

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळुरु ने मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई के तेलुगु विभाग के सहयोग से तेलुगु लेखक धनीकोंडा हनुमंत राव की जन्मशताब्दी के अवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के मरीना परिसर स्थित प्लेटिनम जुबली सभागार में संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मद्रास विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग के प्रोफ़ेसर तथा विभागाध्यक्ष एम. संपत कुमार ने की। उन्होंने बताया कि धनीकोंडा हनुमंत राव तथा उनके कार्यों पर उनके शताब्दी समारोह के एक भाग के रूप में 21 खंडों में पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नल्ली सिल्क्स के अध्यक्ष नल्ली कुप्पुस्वामी चेट्टी थे। उन्होंने धनीकोंडा हनुमंत राव की दो पुस्तकों का विमोचन किया तथा पहली प्रति वयोवृद्ध समालोचक वी.ए.के. रंगा राव को दी गई तथा दूसरी पुस्तक प्रख्यात महिला समीक्षक जी. सुधा को दी गई और उन्होंने धनीकोंडा हनुमंत राव तथा उनके परिवार के साथ अपने अनुभवों तथा संबंधों को साझा भी किया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता केतु विश्वनाथ रेड्डी ने के. शिवा रेड्डी के स्थान पर बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि धनीकोंडा एक विस्मृत लेखक हैं, हालाँकि वह एक कुशल तथा सामाजिक रूप से ज़िम्मेदार लेखक रहें हैं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तेलुगु दैनिक *आंध्र ज्योति* के संपादक के. श्रीनिवास ने बताया कि धनीकोंडा हनुमंत राव एक बहुआयामी लेखक थे। उनकी प्रतिभा किसी एक क्षेत्र या एक शैली तक सीमित नहीं थी। धनीकोंडा नरसिम्हा राव ने धन्यवाद प्रस्तावित किया तथा अपने पिता की जीवन शैली के बारे में बताया।

प्रथम सत्र में दो आलेख प्रस्तुत किए गए तथा जी.वी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि धनीकोंडा चरित्रवान व्यक्ति थे तथा वह अपने जीवन के अंत में भी अपनी नीति पर अडिग रहे। एलचुरी मुरलीधर राव ने धनीकोंडा हनुमंत राव के *वात्स्यायन कामसूत्र* के अनुवाद पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उनके अनुवाद के बारे में बताया कि उन्होंने यह अनुवाद बहुत शालीन भाषा में किया है। टी. अमुक्तमालियादा ने धनीकोंडा के लघु उपन्यासों पर

अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उनके ऐतिहासिक और सामाजिक लघु उपन्यासों पर एक व्यापक आलेख प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र में जी.वी. पूर्णचंदू, जी. लक्ष्मी, आर. वेंकटरमय्या ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता करते हुए जी.वी. पूर्णचंदू ने धनीकोंडा हनुमंत राव के उपन्यासों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने आलेख में उन्होंने उनके उपन्यासों का गहराई से विश्लेषण प्रस्तुत किया। यू.एस.ए. से पधारीं डॉ. जी. लक्ष्मी ने धनीकोंडा के संपादकीय पर किए गए गहन अध्ययन को प्रस्तुत किया। धनीकोंडा ने तीन पत्रिकाओं का संपादन किया, जिनमें *अभिसारिका* सबसे अधिक लोकप्रिय थी। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में समझाया कि इसने आम लोगों को यौन शिक्षा दी, जब लोग उन दिनों इस विषय के बारे में सोचने से भी डरते थे। वेंकट रमैय्या ने धनीकोंडा हनुमंत राव के नाटकों का महत्त्वपूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया। अपने भाषण में उन्होंने उनके समस्त नाटकों का विस्तृत आकलन प्रस्तुत किया। तृतीय सत्र की अध्यक्षता एल.बी. शंकर राव ने की तथा दो वक्ताओं नागसूरी वेणुगोपाल तथा पुष्पा दरभा ने 'धनीकोंडा के अनुवाद' तथा हैवलॉक एलिस ने 'धनीकोंडा हनुमंत राव द्वारा किए गए अनुवाद' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। एल.बी. शंकर राव ने धनीकोंडा हनुमंत राव के साथ अपने अनुभवों का स्मरण किया, वहीं नागसूरी ने धनीकोंडा हनुमंत राव द्वारा उपयोग की जाने वाली अनुवाद-तकनीकों के बारे में बताया। उन्होंने धनीकोंडा हनुमंत राव की अनुवाद विधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया, जिन्होंने हैवलॉक एलिस की कई पुस्तकों का अनुवाद किया है। पुष्पा ने बताया कि धनीकोंडा ने किस प्रकार तेलुगु भाषा में मनोवैज्ञानिक विषयों को शामिल किया। उन दिनों ये पुस्तकें तेलुगु पाठकों के लिए नई थीं तथा तेलुगु पाठकों के लिए मनोविज्ञान भी एक नया विषय था। धनीकोंडा ने इस प्रकार भी तेलुगु साहित्य को एक नया आयाम दिया। वी. शंकर राव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'संस्कृत साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का योगदान' पर परिसंवाद

12 मार्च 2020, नलबाड़ी, नमति, असम

आलेख वाचन करती हुईं मानसी शर्मा

साहित्य अकादेमी ने कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबाड़ी, नमति, असम के सहयोग से 'संस्कृत साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का योगदान' विषय पर 12 मार्च 2020 को कांफ्रेंस हॉल, के.बी.वी. संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबाड़ी, नमति, असम में परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद का आरंभ मंच पर आसीन समस्त गणमान्य लोगों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र के कुछ नामों की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है, जैसे अरुणाचल प्रदेश - उगते सूर्य की भूमि, मणिपुर - मणि अथवा रत्नों की बहुतायत वाली भूमि, मेघालय - बादलों का निवास, त्रिपुरा - पानी के पास की भूमि आदि। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि पूर्वोत्तर के कई भारतीय देशज समुदायों के पास लोककथाओं की प्राचीन विरासत है जो उनके मूल, अनुष्ठानों, मान्यताओं आदि की कथा सुनाती है। ये कथाएँ मौखिक रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रसारित होती हैं। ये आदिवासी ज्ञान तथा कल्पना के उल्लेखनीय उदाहरण हैं। बीज भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य रमाकांत पांडेय ने कहा कि माधव कांदली कृत असमिया में *सप्तकांड रामायण* को संस्कृत रामायण का

आधुनिक इंडो-आर्यन भाषा में पहला अनुवाद माना जाता है। *कार्बी रामायण* असम में लिखित साहित्य की पुरानी विरासत का गवाह है। के.बी.वी. संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति एवं साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य दीपक कुमार शर्मा ने बताया कि बीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य तथा मामोनिम रायसोम गोस्वामी जैसे कई महान कवियों को उनकी साहित्यिक कृतियों के लिए भारत के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया है। नगेन शइकीया असम तथा पूर्वोत्तर भारत के प्रथम लेखक हैं, जिन्हें साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया गया है। उद्घाटन सत्र का समापन परिसंवाद के समन्वयक रातुल बुजर बरुआ द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। मानसी शर्मा ने 'संस्कृत छंद के क्षेत्र में असम का योगदान' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अपनी प्रस्तुति में उन्होंने संस्कृत छंद की अनूठी विशेषताओं, विशेष रूप से मीटर के अभिनव तरीकों पर प्रकाश डाला। प्रख्यात संस्कृत तथा मणिपुरी समालोचक असेम उपेंद्रो मताई ने 'मणिपुरी समाज पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। पूर्वोत्तर के प्रख्यात संस्कृत कवि बसंत कुमार देव गोस्वामी ने कहा कि मनोरंजन शास्त्री का संस्कृत साहित्य में बेहद योगदान रहा। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्रीकांत पांडेय ने की। मणिपुर के प्रख्यात संस्कृत समीक्षक शांति पोखरेल ने 'संस्कृत साहित्य में बराक घाटी का योगदान' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य केमराज नेपाल ने संस्कृत साहित्य को बढ़ावा देने में असम के द्रंग तथा लखिमपुर ज़िलों की प्रमुखता बताई। उन्होंने संस्कृत के कुछ खजूर शिलालेखों का भी प्रदर्शन किया जो वर्षों पूर्व लिखे गए थे। बिनिमा बुजर बरुआ ने 'संस्कृत साहित्य में बिस्वनारायण शास्त्री का योगदान' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अंत में साहित्य अकादेमी के उपसचिव एन. सुरेश बाबू ने संस्कृत संगोष्ठी के आयोजन में साहित्य अकादेमी का सहयोग करने के लिए कुलपति तथा विश्वविद्यालय के अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

'आनंद नारायण मुल्ला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर परिसंवाद

14 मार्च 2020, नई दिल्ली

स्वागत भाषण देते हुए के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात उर्दू शायर 'आनंद नारायण मुल्ला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुल्ला जी की पौत्री अमीता मुल्ला वाट्टल, प्रतिष्ठित उर्दू समालोचक तथा साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष तथा महत्तर सदस्य गोपीचंद नारंग, मौलाना आज़ाद उर्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं योजना आयोग की पूर्व सदस्य सैयदा सैयदैन हमीद, साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक प्रख्यात उर्दू शायर शीन काफ़ निज़ाम, प्रख्यात उर्दू लेखक व आलोचक एवं इस वर्ष के अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित उर्दू लेखक शाफ़े क़िदवई, ज़हीर अली एवं दानिश इलाहाबादी ने भाग लिया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए सैयदा सैयदैन हमीद ने कहा कि उनकी शायरी पर किसी का प्रभाव नहीं था बल्कि उन्होंने ख़ुद अपनी अलग राह बनाई। उनकी ज़िंदगी और शायरी में कोई फ़र्क़ नहीं था और उन्होंने हमेशा एक ज़िम्मेदारी शहरी को फ़नकार से भी ऊपर माना। उन्होंने उनके वैचारिक नज़रिये को स्पष्ट करते हुए कहा कि वह किसी भी विचारधारा से प्रभावित नहीं थे और वे मानते थे कि ऐसा करने पर फ़नकार का लेखन प्रभावित होता है और उसकी धार कमज़ोर होती है। बीजभाषण देते हुए शाफ़े क़िदवई ने कहा कि वर्तमान में मानवता पर जो ख़तरा है उसे आनंद नारायण मुल्ला ने बहुत पहले पहचान लिया था। अब ज़रूरत यह

है कि हम उनकी शायरी को फिर से परखें और उस पर दोबारा विचार-विमर्श करें। आनंद नारायण मुल्ला की पौत्री अमीता मुल्ला वाट्टल ने कहा कि यह उनके लिए गर्व की बात है कि उनकी विरासत को एक बार फिर साहित्य अकादेमी द्वारा याद किया जा रहा है और उस पर बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा विचार-विमर्श किया जा रहा है। उन्होंने आनंद नारायण मुल्ला से संबंधित कई संस्मरण प्रस्तुत किए। अपने उद्घाटन व्याख्यान में गोपी चंद नारंग ने कहा कि आनंद नारायण मुल्ला को गंगा-जमुनी तहज़ीब के लिए याद रखना बेहद ज़रूरी है। उन्होंने मुल्ला के व्यक्तित्व पर टिप्पणी करते हुए कहा कि उन्होंने मानवतावाद को प्राथमिकता दी और हर तरह की हिंसा का विरोध किया। इस संदर्भ में वे गाँधी के अनुयायी हैं। उन्होंने शायरी पर इकश्बाल के प्रभाव को बताते हुए कहा कि उन्होंने विभाजन की त्रासदी पर जो महसूस किया उसे बहुत पारदर्शिता के साथ प्रस्तुत किया और वह आनेवाली नस्लों को राह दिखाता रहेगा। साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक शीन काफ़ निज़ाम ने आरंभिक वक्तव्य देते हुए कहा कि आनंद नारायण मुल्ला ने अपनी शायरी में मुहब्बत को तरजीह दी और हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि उर्दू को अपने मज़हब से ज़्यादा अहमियत देने के उनके फ़लसफ़े ने एक पूरी पीढ़ी को प्रभावित किया और उससे प्रेरणा लेने को मजबूर किया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत अंगवस्त्रम और पुस्तकें भेंट कर किया। कार्यक्रम के दूसरे सत्र की अध्यक्षता शीन काफ़ निज़ाम ने की और ज़हीर अली एवं दानिश इलाहाबादी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया। कार्यक्रम में उर्दू जगत से जुड़े हुए महत्त्वपूर्ण लेखक, पत्रकार एवं विद्वान—मनोरमा नारंग, चंद्रभान ख़याल, हक़्क़ानी अल क़ासमी, सरवरुल हुदा, अहमद अल्वी, नारंग साक़ी, ज़हीर बर्नी, मोईन शादाब, परवेज़ शहरयार, अबू ज़हीर रब्बानी, अतहर अंसारी, गुलाम नबी कुमार इत्यादि उपस्थित थे।

वर्ष 2019-2020 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

बहुभाषी कहानी-पाठ
7 मई 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बाङ्ला लेखिकाएँ
18 जुलाई 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

असमिया लेखिकाएँ
16 अगस्त 2019, जोरहाट, असम

बोडो लेखिकाएँ
19 अगस्त 2019, गुवाहाटी, असम

बोडो लेखिकाएँ
8 सिंतबर 2019, कार्बी अंगलौंग, असम

संताली लेखिकाएँ
15 सितंबर 2019, झारग्राम, पश्चिम बंगाल

ओड़िया लेखिकाएँ
15 सितंबर 2019, बालासोर, ओड़िशा

मणिपुरी लेखिकाएँ
13 अक्तूबर 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

असमिया लेखिकाएँ
23 अक्तूबर 2019, गुवाहाटी, असम

असमिया लेखिकाएँ
2 नवंबर 2019, दुलिजान, असम

डोगरी लेखिकाएँ
14 दिसंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

मैथिली लेखिकाएँ
15 दिसंबर 2019, जमशेदपुर, झारखंड

आविष्कार

रामानंद रायकर एवं उनकी मंडली द्वारा मनोहर राय सरदेसाई कृत काव्य की संगीतात्मक प्रस्तुति
21 दिसंबर 2019, गोवा

पुरस्कार एवं महत्तर सदस्यताएँ

प्रख्यात अंग्रेज़ी एवं ओड़िआ लेखक जयंत महापात्र को महत्तर सदस्यता अर्पित
25 मई 2019, कटक ओड़िशा

प्रख्यात डोगरी एवं हिंदी लेखिका पद्मा सचदेव को महत्तर सदस्यता अर्पित
12 जून 2019, नई दिल्ली

अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह
14 जून 2019, अगरतला, त्रिपुरा

प्रख्यात असमिया लेखक नगेन शइकीया को महत्तर सदस्यता अर्पित
7 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

युवा पुरस्कार अर्पण समारोह
8 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

प्रख्यात हिंदी कवि एवं समालोचक विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को महत्तर सदस्यता अर्पित
29 सितंबर 2019, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

बाल साहित्य पुरस्कार 2019 अर्पण समारोह
14 नवंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

24 भारतीय भाषाओं में साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2019 प्रदत्त
25 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

बाल साहिती

जानेमाने बोडो बाल लेखकों के साथ बाल साहिती
15 सितंबर 2019, ज़िला-बिस्वनाथ, असम

जानेमाने मैथिली बाल लेखकों के साथ बाल साहिती
26 सितंबर 2019, दरभंगा, बिहार

बाल साहिती
7 नवंबर 2019, कार्बी अंगलौंग, असम

बाल साहित्य और न्यू मीडिया पर बाल साहिती
14 नवंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात बाल लेखकों के साथ बाल साहिती
7 जनवरी 2020, नई दिल्ली

भाषांतर अनुभव

गुजराती, कोंकणी, मराठी तथा सिंधी में बहुभाषी कविता-पाठ, तत्पश्चात उन्हीं कविताओं का विभिन्न भाषाओं में किए गए अनुवाद का पाठ
27 सितंबर 2019, मुंबई

डोगरी, अंग्रेज़ी, हिंदी, कश्मीरी, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत तथा उर्दू में बहुभाषी कविता-पाठ, तत्पश्चात उन्हीं कविताओं का विभिन्न भाषाओं में किए गए अनुवाद का पाठ
28-29 नवंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

पुस्तक चर्चा

'कापस फूल ओ अन्यान्य कबिता' पर अमित कुमार भट्टाचार्जी और सुश्री सोमा बंद्योपाध्याय
23 अप्रैल 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कन्नड उपन्यास के तमिळ अनुवाद 'ओडई' पर सा. कंदासामी
21 अप्रैल 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

तमिज़हिल सूयासारिथिरंगळ पर प्रख्यात तमिळ समालोचक चारु निवेदिता
16 मई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

चा.सो. विन थेरनथेदुथा सिरुकथाइगळ पर प्रख्यात तमिळ समालोचक आर. वेंकटेश
30 मई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

बाङ्ला अनुवाद 'भील महाभारत' पर प्रख्यात कथाकार नलिनी बेरा
10 जून 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

पेन एज़हुथू : वलियूम ओलीचुम पर आर. प्रेमा
13 जून 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अकादेमी द्वारा पुरस्कृत हिंदी उपन्यास 'मिलजुल मन' के तमिळ अनुवाद पर रुद्र तुलसीदास
21 जून 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अकादेमी द्वारा पुरस्कृत गुजराती कविता-संग्रह 'जटायु' के मराठी अनुवाद पर जानेमाने गुजराती लेखक एवं अनुवादक कमल वोहरा
26 जून 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'हमपियिन पाराइगळ' पर जानेमाने तमिळ लेखक रवि सुब्रह्मण्यन
18 जुलाई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अकादेमी द्वारा पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास 'शैडो लाइन्स' ले. अमिताव घोष के मराठी अनुवाद 'मृग रेखा' पर विनोद घावंदे और वेदांत कुलकर्णी
29 जुलाई 2019, जालना, महाराष्ट्र

'तमिल इल्लाकिया कोटपादुगळ : माराबुम पुदुमइयुम' पुस्तक पर जानेमाने तमिऴ लेखक के. पंजनगम
1 अगस्त 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

'मा.पा. पेरिचासामी धूरानिन निनाइवु कुरिप्पुगळ' पर जानेमाने तमिऴ लेखक थिरूप्पूर कृष्णन
12 सितंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अभय दोशी द्वारा संपादित 'मध्यकालीन जैन कविता संचयन' पर गुजराती समालोचक सेजल शाह
11 अक्तूबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

कविता महाजन द्वारा संकलित एवं संपादित 'वारली लोकगीत' पर जानीमानी मराठी कवयित्री पुष्पा गावित
11 अक्तूबर 2019, धुळे, महाराष्ट्र

अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कन्नड उपन्यास के मराठी अनुवाद 'ओम नमो' पर जानीमानी मराठी कवयित्री प्रतिभा सराफ
16 अक्तूबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

आर. कामरासु द्वारा संपादित 'तमिज़ चेम्मल वा. सूपा. मनीक्कानारिन तमिज़हियळ पंगालिप्पु' पर जानेमाने तमिऴ लेखक अरंगा रामलिंगम
24 अक्तूबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

'पूवी एनगुम तमिज़ कविथाइ' पर प्रख्यात तमिऴ लेखिका अंडाल प्रियदर्शिनी
28 नवंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

नारीवादी कहानी-संग्रह 'पेनन माइया सिरुकथाइगळ' पर जानीमानी तमिऴ लेखिका मूबीन साधिका
19 दिसंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अकादेमी द्वारा पुरस्कृत हिंदी उपन्यास 'तमस' के तमिऴ अनुवाद पर पी. सरस्वती
10 जनवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

'कू. पा. राजगोपालनिन थेरथेदूथा सिरुकथाइगळ' (तमिऴ कहानी संकलन) पर संध्या नटराजन
13 फ़रवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

सृजनात्मक लेखन कार्यशालाएँ

सृजनात्मक लेखन कार्यशाला–क़िस्सा-ओ-क़लम विचारों की खोज : संभावित विषयों को देखते हुए, बच्चों के लिए विविधता में रचनात्मकता
20-24 मई 2019, नई दिल्ली

बच्चों के लिए सृजनात्मक लेखन कार्यशाला
7-9 जुलाई 2019, युसमर्ग, जम्मू-कश्मीर

सृजनात्मक बाल लेखन कार्यशाला
6-8 दिसंबर 2019, ग्राम : जौरियाँ, तहसील : अखनूर, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

अबू धाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले 2019 में 5 सदस्यीय भारतीय लेखकों का प्रतिनिधिमंडल
24-30 अप्रैल 2019, अबू धाबी

5वाँ विश्व महाकाव्योत्सव
26-30 जून 2019, किर्गिज़स्तान

भारतीय तथा 30 चीनी लेखक प्रतिनिधिमंडल के मध्य साहित्यिक विमर्श कार्यक्रम
7 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

पुर्तगाल के लिए समन्वयक के रूप में साहित्य अकादेमी के सचिव तथा 6 सदस्यीय भारतीय लेखकों के प्रतिनिधिमंडल के मध्य
11-15 अक्तूबर 2019, पुर्तगाल

इंडो-मैक्सिकन लेखक सम्मिलन
11 नवंबर 2019, नई दिल्ली

गुआदालजारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले 2019 के दौरान 4 सदस्यीय भारतीय लेखकों का प्रतिनिधिमंडल गुआदालजारा, मैक्सिको का दौरा
30 नवंबर-7 दिसंबर 2019, गुआदालजारा, मैक्सिको

दलित-चेतना

दलित-चेतना
26 नवंबर 2019, चामराजनगर, कर्नाटक

दलित-चेतना
7 दिसंबर 2020, रायचूर, कर्नाटक

दलित-चेतना
23 जनवरी 2020, चेन्नई

दलित-चेतना
26 जनवरी 2019, अट्टाप्पडी, पालक्कड, केरल

वृत्तचित्र प्रदर्शन

पु. ति. नरसिम्हाचार
21 अप्रैल 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

नील पद्मनाभन
16 मई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

सी. नारायण रेड्डी
24 मई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

वृत्तचित्र फ़िल्मोत्सव
1 जून 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

डी. जयकांतन
13 जून 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

इंदिरा गोस्वामी
21 जून 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अर्जन हासिद
13 जुलाई 2019, अहमदाबाद, गुजरात

कुवेम्पु
18 जुलाई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अशोक मित्रन
1 अगस्त 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

इंदिरा पार्थसाथी
12 सितंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अय्यप्पा पणिक्कर
24 अक्तूबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

सुनील गंगोपाध्याय
27 नवंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बालमणि अम्मा
28 नवंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

शशि देशपांडे
19 दिसंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
31 दिसंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

वृत्तचित्र फ़िल्मोत्सव
2-4 जनवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

खुशवंत सिंह
10 जनवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
31 जनवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

पोन्नेलन
13 फ़रवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

नीरेंद्रनाथ चक्रवर्ती
28 फ़रवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

साहित्योत्सव 2020
(24-29 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली)

साहित्य अकादेमी प्रदर्शनी 2019 का उद्घाटन। प्रख्यात हिंदी लेखिका मन्नू भंडारी ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।
24 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन
24-26 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

सांस्कृतिक कार्यक्रम : लोकापुर, कर्नाटक के दुर्गव्वा मुधोळ एवं साथी कलाकारों द्वारा पारंपरिक लोकसांगीतिक नाटक 'श्रीकृष्ण पारिजात' की प्रस्तुति
24 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

वर्ष 2019 के पुरस्कार विजेताओं से मीडिया की बातचीत
25 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी : उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन
25 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन
26 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

नाट्य लेखन का वर्तमान परिदृश्य पर परिचर्चा
26 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

संवत्सर व्याख्यान
26 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

आमने-सामने
27 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

प्रादेशिकता, पर्यावरण और साहित्य पर त्रिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
27 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

अखिल भारतीय एलजीबीटीक्यू कवि सम्मिलन
27 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

सांस्कृतिक कार्यक्रम : पेरावली जय भास्कर द्वारा ताल वाद्य कचेरी, भारतीय वाद्य यंत्रों की समेकित प्रस्तुति
27 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

अनुवाद कला : सांस्कृतिक दायित्व विषय पर परिचर्चा
28 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

मीडिया और साहित्य : सूचना एवं संवेदना विषय पर परिचर्चा
28 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

सांस्कृतिक कार्यक्रम : महमूद फ़ारूक़ी द्वारा दास्तानगोई की प्रस्तुति
28 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

आओ कहानी बुनें : बाल गतिविधियाँ
29 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

भारत में प्रकाशन की स्थिति पर परिचर्चा
29 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

नई फ़सल (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)
29 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

स्थापना दिवस

स्थापना दिवस व्याख्यान : इंद्रनाथ चौधुरी द्वारा 'भारतीय पुनर्जागरण की विभिन्न धाराएँ' विषय पर व्याख्यान
12 मार्च 2020, नई दिल्ली

स्थापना दिवस व्याख्यान : एम. राजेंद्रन द्वारा 'समाज और साहित्य' विषय पर व्याख्यान
12 मार्च 2020, चेन्नई

सोमा बंद्योपाध्याय द्वारा 'अनुवाद का सार : भारतीय साहित्य' विषय पर स्थापना दिवस व्याख्यान
12 मार्च 2020, कोलकाता

साहित्य मंच : साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस पर व्याख्यान तथा एस.एल. भैरप्पा पर बनी वृत्तचित्र फ़िल्म का प्रदर्शन
12 मार्च 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

स्थापना दिवस के अवसर पर सदानंद मोरे के साथ लेखक से भेंट कार्यक्रम
12 मार्च 2020, मुंबई, महाराष्ट्र

ग्रामालोक

ग्राम जगती, जम्मू, जम्मू-कश्मीर
19 अप्रैल 2019

ग्राम मार्चोला, सुंदरबानी, ज़िला राजौरी, जम्मू, जम्मू-कश्मीर
21 अप्रैल 2019

ग्राम अवांग पोटसंगबम, नीलाकुठी, इंफ़ाल, मणिपुर
26 अप्रैल 2019

ग्राम सागोलबंद लुकराम लेइराक, लमजाओतोंगबा ग्राम पंचायत इंफ़ाल, मणिपुर
11 मई 2019

ग्राम वेल्लंगल, ओट्टाशेखरमंगलम, ज़िला त्रिवेंद्रम, केरल
19 मई 2019

ग्राम अग्रपद, भद्रक, ओड़िशा
29 मई 2019

ग्राम कांगला, पूर्वी इंफ़ाल, मणिपुर
29 जून 2019

ग्राम ब्रह्मचारी, ज़िला बक्सा, असम
7 जुलाई 2019

ग्राम चूनमबेदु, चेय्यूर तालुका, ज़िला चेंगळपट्टु, तमिलनाडु
26 जुलाई 2019

ग्राम जौरियाँ, ज़िला जम्मू, जम्मू-कश्मीर
27 जुलाई 2019

ग्राम उचिवा लेइराक अचोउबा, ज़िला इंफ़ाल, मणिपुर
29 जुलाई 2019

ग्राम थामबलखोंग ग्राम पंचायत, पूर्वी इंफ़ाल, मणिपुर
10 अगस्त 2019

ग्राम राजेंद्र प्रसाद रोड, दुर्गापुर, बुर्दवान, पश्चिम बंगाल
11 अगस्त 2019

ग्राम नगीररंगबम, मणिपुर
26 अगस्त 2019

ग्राम जलगाँव मेते, तालुका फूलमबरी, महाराष्ट्र
26 अगस्त 2019

ग्राम तपलाल, रामनगर तहसील, जम्मू
29 अगस्त 2019

ग्राम कार्बी अंगलौंग, असम
31 अगस्त 2019

ग्राम मेनदिपाथर, नॉर्थ गारो हिल्स, मेघालय
31 अगस्त 2019

ग्राम चिट्टा, बिदर, कर्नाटक
7 सितंबर 2019

ग्राम लाइमनाइ, याइरिपोक, मणिपुर
9 सितंबर 2019

ग्राम विल्यिमनगर सरकारी महाविद्यालय, ईस्ट गारो हिल्स, मेघालय
14 सितंबर 2019

ग्राम अमपाती डिग्री कॉलेज, अमपाती, साउथ वेस्ट गारो हिल्स, मेघालय
14 सितंबर 2019

ग्राम गोहपुर (बरपुखूरी), ज़िला बिस्वनाथ, असम
15 सितंबर 2019

ग्राम जीवनानंदपुरम, पुदुचेरी
23 सितंबर 2019

ग्राम मयनागुड़ी, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल
23 सितंबर 2019

ग्राम वांगजिंग, होदांबा मायाइ लेइकइ, मणिपुर
27 सितंबर 2019

ग्राम धामा, संबलपुर, ओड़िशा
28 सितंबर 2019

ग्राम गोदा, जगतसिंहपुर, ओड़िशा
30 सितंबर 2019

ग्राम हेइरोक, ज़िला थोउबल, मणिपुर
5 अक्तूबर 2019

ग्राम नोउबाद, बिदर, कर्नाटक
5 अक्तूबर 2019

ग्राम नागाँव, असम
16 अक्तूबर 2019

ग्राम गोरजोगा, हावड़घाट तिनिआली, कार्बी अंगलौंग, असम
21 अक्तूबर 2019

ग्राम इशोक, ज़िला बिष्णुपुर, मणिपुर
25 अक्तूबर 2019

ग्राम मदनपुर, पट्टामुंदाइ, केंद्रपाड़ा, ओड़िशा
26 अक्तूबर 2019

ग्राम टीक्री, ज़िला रायगढ़, ओड़िशा
27 अक्तूबर 2019

ग्राम सयमागुड़ी चेलाबोन, कार्बी अंगलौंग, असम
31 अक्तूबर 2019

ग्राम बोबासर, ज़िला चुरु, राजस्थान
11 नवंबर 2019

ग्राम लेत्तार, ज़िला रियासी, जम्मू
16 नवंबर 2019

ग्राम अमोनिगाँव, कार्बी अंगलौंग, असम
16 नवंबर 2019

ग्राम फातूही श्रीगंगानगर, राजस्थान
20 नवंबर 2019

ग्राम थांगा थोंगबह्म ज़िला बिष्णुपुर, मणिपुर
29 नवंबर 2019

ग्राम काकद्वीप, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल
6 दिसंबर 2019

ग्राम सिम्बरगाँव, असम
7 दिसंबर 2019

ग्राम बुडगे बुडगे, दक्षिण 24 परगना, पश्चिम बंगाल
14 दिसंबर 2019

ग्राम गोलमूरी, जमशेदपुर, झारखंड
15 दिसंबर 2019

ग्राम वाइटन जी. पी. मणिपुर
16 दिसंबर 2019

ग्राम नाएगारिया, रानिर बाज़ार, त्रिपुरा
21 दिसंबर 2019

ग्राम माये, गोवा
22 दिसंबर 2019

ग्राम बोदेला, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश
28 दिसंबर 2019

ग्राम बिजनी, ज़िला चिरांग, असम
29 दिसंबर 2019

ग्राम सरकारी माध्यमिक विद्यालय गुलशनाबाद अस्वारा, तहसील बिजबेहरा, ज़िला अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर
8 जनवरी 2020

ग्राम वाघमा, तहसील बिजबेहरा, ज़िला अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर
10 जनवरी 2020

ग्राम तेनथा, ज़िला थोउबल, मणिपुर
25 जनवरी 2020

ग्राम कमरपुर, चंद्रकोना, पश्चिम मेदिनापुर, पश्चिम बंगाल
6 फ़रवरी 2020

ग्राम कंगमोंग माइसनम मायाइ लेइकाइ, इंफ़ाल, मणिपुर
29 फ़रवरी 2020

कथासंधि

जानेमाने कश्मीरी लेखक एम.एल. पंडित
18 अप्रैल 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात बाङ्ला लेखक तपन बंद्योपाध्याय
27 जून 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात मराठी लेखक आनंद विंगकर
5 जुलाई 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

जानेमाने संताली लेखक मंगत मुर्मु
7 जुलाई 2019, राँची, झारखंड

प्रख्यात नेपाली लेखक नंद हांगखिम
19 जुलाई 2019, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात बोडो लेखक दीनानाथ बसुमतारी
24 अगस्त 2019, रायगंज, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात सिंधी लेखक ऋतु भाटिया
1 सितंबर 2019, कच्छ, गुजरात

प्रख्यात पंजाबी लेखक परमजीत सिंह मान
3 सितंबर 2019, नई दिल्ली

जानेमाने बोडो लेखक गोबिंद बसुमतारी
6 सितंबर 2019, कोकराझार, असम

प्रख्यात मराठी लेखक अमिताभ
17 सितंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात डोगरी लेखक शंभु राम प्यासा
19 अक्तूबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात सिंधी लेखक मानसिंह माझी
20 अक्तूबर 2019, रायरंगपुर, ओड़िशा

प्रख्यात पंजाबी लेखक मनमोहन बावा
15 नवंबर 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात असमिया लेखक अपूर्व कुमार शइकिया
29 दिसंबर 2019, जोरहाट, असम

प्रख्यात मणिपुरी लेखिका निनगोमबम सुनीता देवी
31दिसंबर 2019, थोउबल, मणिपुर

प्रख्यात कश्मीरी लेखक मोही-उद-दीन ऋषी
31 दिसंबर 2019, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात हिंदी लेखक महेश कात्रे
8 जनवरी 2020, नई दिल्ली

जानीमानी मराठी लेखक प्रतिमा जोशी
10 जनवरी 2020, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात हिंदी लेखक प्रदीप पंत
12 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

कवि अनुवादक

प्रख्यात मलयाळम् कवि प्रभा वर्मा ने अपनी मलयाळम् कविताओं का पाठ किया तथा प्रख्यात अनुवादक अजीर कुट्टि ने उनका तमिऴ अनुवाद प्रस्तुत किया
29 अगस्त 2019, ज़िला कन्याकुमारी, तमिलनाडु

कविसंधि

प्रख्यात कश्मीरी कवि लेखक फ़ैयाज़ दिलबर
16 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात मराठी कवि प्रफुल्ल शिलेदर
4 जून 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात हिंदी कवि एवं नाटककार नरेंद्र मोहन
12 जुलाई 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात बोडो कवि गोविंद कुमार ब्रह्म
14 जुलाई 2019, कोकराझार, असम

प्रख्यात सिंधी कवयित्री नादिया मसंद
22 जुलाई 2019, भोपाल, मध्यप्रदेश

प्रख्यात ओडिया कवि आशुतोष परिडा
27 जुलाई 2019, भुवनेश्वर, ओड़िशा

प्रख्यात डोगरी कवयित्री उषा किरण 'किरण'
3 अगस्त 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात बोडो कवयित्री इंदिरा बर'
4 अगस्त 2019, ज़िला चिरांग, बोडोलैंड, असम

प्रख्यात मराठी कवि खलील मामून
9 अगस्त 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात बाङ्ला कवयित्री कृष्णा बसु
22 अगस्त 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात कोंकणी कवि प्रसाद लोलायेकर
24 अगस्त 2019, गोवा

प्रख्यात हिंदी लेखक राजेंद्र मिश्र
17 सितंबर 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात सिंधी कवि एन. लाछवाणी
6 अक्तूबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात डोगरी कवि विजय शर्मा
19 अक्तूबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात संताली कवि गणेश ठाकुर हांसदा
19 अक्तूबर 2019, रायरंगपुर, ओड़िशा

प्रख्यात कश्मीरी कवि ओंकार नाथ शबनम
30 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात मराठी लेखक वाहरू सोनवणे
8 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात पंजाबी कवि मोहनजीत
15 नवंबर 2019

प्रख्यात डोगरी कवि एन.डी. जामवाल
1 दिसंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात उर्दू कवि शीन काफ़ निज़ाम
7 जनवरी 2020, नई दिल्ली

भाषा सम्मेलन

साद्री भाषा सम्मेलन
14-15 सितंबर 2019, राँची, झारखंड

साहित्य मंच

साहित्य मंच : प्रश्नों के माध्यम से यात्रा की ओर
5 अप्रैल 2019, मगादी, ज़िला रामानगर, कनार्टक

स्टॉफ के लिए 15 दिवसीय योग कार्यशाला
8-26 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

स्वच्छता पखवाड़ा
16-30 अप्रैल 2019, कोलकाता

स्वच्छता पखवाड़ा
16-30 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

स्वच्छता पर व्याख्यान
16-30 अप्रैल 2019, बेंगळुरु

स्वच्छता पखवाड़ा
16-30 अप्रैल 2019, चेन्नई

साहित्य मंच
21 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
23 अप्रैल 2019, सुंदरबनी, ज़िला राजौरी, जम्मू

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
23 अप्रैल 2019, तमिलनाडु, चेन्नई

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
23 अप्रैल 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : कोंकणी-कन्नड अनुवादों के माध्यम से सांस्कृतिक विनिमय
23 अप्रैल 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच
24 अप्रैल 2019, इरनाकुलम, केरल

साहित्य मंच : गाँधी जी की स्मृतियों तथा विचारों का अनुस्मरण
28 अप्रैल 2019, मालप्पुरम, केरल

समकालीन तमिळ साहित्य पर साहित्य मंच
28 अप्रैल 2019, कोयंबटूर, तमिलनाडु

स्वच्छता पर व्याख्यान
28 अप्रैल 2019, सुंदरबनी, ज़िला राजौरी, जम्मू

स्वच्छता पर व्याख्यान
30 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : समकालीन कविता और कहानी की समझ के विकास पर एक रचनात्मक संवाद
1 मई 2019, नारूवामूदु, ज़िला त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : समकालीन महिलाओं का गद्य : नई अंतर्दृष्टि
3 मई 2019, चित्रदुर्ग, कर्नाटक

साहित्य मंच : जीवन और साहित्य
3 मई 2019, कुंद्राथूर, तमिलनाडु

साहित्य मंच : *चिंताविष्टयाया सीता* के शताब्दी वर्ष के अवसर पर
7 मई 2019, कोषिकोड, केरल

साहित्य मंच : जे. श्रीनिवास मूर्ति के साथ कालीदास कृत शाकुंतलम का काव्य और दर्शनशास्त्र
8 मई 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : रवींद्रनाथ ठाकुर का स्मरण : पाठ और अनुवाद
9 मई 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : कथानेरन
19 मई 2019, वेल्लनाड, केरल

साहित्य मंच : आधुनिक तेलुगु कवि तथा उनके काव्यात्मक सिद्धांत
19 मई 2019, अनंतपुर, आंध्र प्रदेश

साहित्य मंच : प्रख्यात हिंदी लेखक मृत्युंजय प्रभाकर ने कबीर की प्रासंगिकता पर व्याख्यान दिया
24 मई 2019, नई दिल्ली

जयंत महापात्र के जीवन और कार्यों पर संवाद कार्यक्रम
25 मई 2019, कटक, ओड़िशा

साहित्य मंच
26 मई 2019, कंचियार, केरल

साहित्य मंच : वचन साहित्य का दर्शनशास्त्र
29 मई 2019, चामराजनगर, कर्नाटक

साहित्य मंच : क्षेत्रीय भाषाओं से संस्कृत में अनुवाद
31 मई 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

जानेमाने समालोचक श्रीभगवान सिंह के साथ साहित्य, कला और सत्यग्रह पर साहित्य मंच कार्यक्रम
11 जून 2019, नई दिल्ली

चित्रा मुद्गल, इंद्रनाथ चौधुरी तथा मोहन सिंह के साथ पद्मा सचदेव के जीवन और कार्यों पर संवाद कार्यक्रम
12 जून 2019, नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2019, नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

साहित्य मंच : रायलसीमा की बौद्ध कविताएँ
22 जून 2019, अनंतपुर, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : रोचेल्ले पोतकर, सर्बजीत गारचा तथा साईमा आफ्रीन ने कार्यक्रम में भाग लिया तथा अपने कार्यों के बारे में बताया
27 जून 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : उपन्यास : कला, समय और राजनीति
28 जून 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : तेलुगु-कन्नड अनुवाद : एक अंतःक्रिया
28 जून 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : बोडो कहानी में वर्तमान प्रवृत्तियाँ
13 जुलाई 2019, कोकराझार, असम

साहित्य मंच : कावेरी क्षेत्र के साहित्य के अग्रदूत
13 जुलाई 2019, तंजावूर, तमिलनाडु

प्रख्यात संस्कृत कवियों के साथ साहित्य मंच
15 जुलाई 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : लूइस सावीनेन डूपुइस
19 जुलाई 2019, पुदुचेरी

मा. अरंगनाथन के साहित्यिक कार्यों पर साहित्य मंच
20 जुलाई 2019, पुदुचेरी

साहित्य मंच
21 जुलाई 2019, कंचियार, केरल

साहित्य मंच
21 जुलाई 2019, इद्दुकी, केरल

उलेल मितेई के जीवन और कार्यों पर साहित्य मंच
21 जुलाई 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य मंच
21 जुलाई 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : कवि की प्रकृति
25 जुलाई 2019, जामाखांडी, कर्नाटक

साहित्य मंच : गिरीश कार्नाड : अनुवाद की दृष्टि से
26 जुलाई 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : तेलुगु काव्यों में प्रतिबिंबित राष्ट्रीय नेताओं की छवि
26 जुलाई 2019, ज़िला कडपा, आंध्रप्रदेश

जानेमाने सिंधी लेखकों पर साहित्य मंच
28 जुलाई 2019, अमरावती, महाराष्ट्र

साहित्य मंच
28 जुलाई 2019, तिरुवनंतपुरम, केरल

साहित्य मंच
28 जुलाई 2019, अमरावती, महाराष्ट्र

साहित्य मंच : मणिपुरी कवि विष्णुप्रिया का कविता-पाठ
2 अगस्त 2019, सिल्चर, असम

साहित्य मंच : कारीचन कुंजु
3 अगस्त 2019, कुमबाकोणम, तमिलनाडु

साहित्य मंच : बोडो काव्य
4 अगस्त 2019, ज़िला चिरांग, बोडोलैंड, असम

साहित्य मंच : पूर्वोत्तर भारत में बाङ्ला साहित्य
4 अगस्त 2019, गुवाहाटी, असम

जानेमाने बाङ्ला कथाकारों के साथ साहित्य मंच
6 अगस्त 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

जानेमाने पंजाबी लेखकों के साथ साहित्य मंच
7 अगस्त 2019, नई दिल्ली

के.पी. अरावनन के साहित्यिक कार्यों पर साहित्य मंच
8 अगस्त 2019, पुदुचेरी

पत्रकारिता और साहित्यिक लेखन पर साहित्य मंच
9 अगस्त 2019, कोट्टयम, केरल

साहित्य मंच : समकालीन कन्नड सन्ना कथेगळु
11 अगस्त 2019, कलबुर्गी, कर्नाटक

असम की ब्रह्मपुत्र घाटी की बाङ्ला कविता पर साहित्य मंच
19 अगस्त 2019, गुवाहाटी, असम

कन्नड साहित्य और संस्कृति के समकालीन परिप्रेक्ष्य पर साहित्य मंच
20 अगस्त 2019, चमराजनगर, कर्नाटक

थोप्पिल मोहम्मद मीरान के साहित्यिक योगदानों पर साहित्य मंच
22 अगस्त 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

साहित्य मंच
23 अगस्त 2019, कासरगोड, केरल

साहित्य मंच : साहित्यिक सृजनात्मकता पर व्याख्यान
23 अगस्त 2019, कासगोड, केरल

साहित्य मंच : प्रगतिशील साहित्य तथा सामाजिक विचार
24 अगस्त 2019, चिक्कामंगळुरु, कर्नाटक

बोडो (मेच) समुदाय के विशेष संदर्भ में बोडो भाषा की विभिन्नताओं पर साहित्य मंच
24 अगस्त 2019, रायगंज, पश्चिम बंगाल

खगेश्वर सेठ पर साहित्य मंच
24 अगस्त 2019, बारगढ़, ओड़िशा

महाश्वेता देवी के कथासाहित्य लेखन पर साहित्य मंच
27 अगस्त 2019, सिल्चर, असम

तेलुगु में विषयगत कहानियाँ विषय पर साहित्य मंच
28 अगस्त 2019, अनंतपुर, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : बिष्णुपर के राजा : उनका मणिपुरी साहित्य को योगदान
28 अगस्त 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

साहित्य मंच : तेलुगु प्रबंधों का पुनर्मूल्यांकन
29 अगस्त 2019, राजामुंद्री, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : स्वातंत्र्योत्तर तमिऴ कविता की प्रवृत्तियाँ
29 अगस्त 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

साहित्य मंच : अनुवाद : कन्नड और उर्दू
30 अगस्त 2019, बेंगळूरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : हिंदी दलित कवि
30 अगस्त 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : मलयाळम् भाषा और साहित्य - परिचर्चा
31 अगस्त 2019, केरलआदित्यपुरम, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : प्रख्यात हिंदी लेखक श्री मृत्युंजय कुमार सिंह तथा सुश्री आभा बोधीसत्व
6 सितंबर 2019, नई दिल्ली

संवाद कार्यक्रम जहाँ पर कार्बी डेका हाज़रिका, प्रदीप ज्योति महंत तथा मदन शर्मा ने नगेन शइकीया के जीवन और कार्यों पर अपने विचार व्यक्त किए
7 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

साहित्य मंच : आधुनिक तेलुगु साहित्य में प्रतिबिंबित कलाकारों की छवि
7 सितंबर 2019, कडपा, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच
7 सितंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : बोडो में पर्यायची और विलोम
8 सितंबर 2019, कार्बी अंगलौंग, असम

साहित्य मंच : सिनेमा में प्रदर्शित तेलुगु उपन्यास
13 सितंबर 2019, कडपा, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : तेलुगु कहानियाँ
13 सितंबर 2019, अनंतपुर, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : कन्नड नाटकों, साहित्य और रंगमंच गतिविधियों पर पुनर्विचार
14 सितंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : कन्नड साहित्यिक अनुसंधान कार्यों की विधि
14 सितंबर 2019, संकेश्वर, कर्नाटक

लक्ष्मीनारायण मोहंती की जन्मशतवार्षिकी पर साहित्य मंच
14 सितंबर 2019, भद्रक, ओड़िशा

साहित्य मंच
14 सितंबर 2019, बिदर, कर्नाटक

द्वारकानाथ विद्याभूषण पर साहित्य मंच
15 सितंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

स्वच्छता पखवाड़ा
16-30 सितंबर 2019, नई दिल्ली

स्वच्छता पखवाड़ा
16-25 सितंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

संगम साहित्य पर साहित्य मंच
18 सितंबर 2019, पट्टाबिराम, तमिलनाडु

साहित्य मंच : कोडव भाषा और साहित्य
21 सितंबर 2019, मैसूर, कर्नाटक

साहित्य मंच
21 सितंबर 2019, पालाक्कड, केरल

साहित्य मंच
21 सितंबर 2019, कुरनूल, आंध्रप्रदेश

स्वच्छता पखवाड़ा
24 सितंबर 2019, कोलकाता

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के जीवन और कार्यों पर 'संवाद' कार्यक्रम
26 सितंबर 2019, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

साहित्य मंच : ओरहान पामुक का अनुवाद - उनके उपन्यास 'स्नो' के विशेष संदर्भ के साथ
27 सितंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

दलित चेतना कार्यक्रम
27 सितंबर 2019, नई दिल्ली

स्वच्छता पर व्याख्यान तथा पुरस्कार वितरण
30 सितंबर 2019, नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
30 सितंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर 'अनुवाद और देशज भाषाएँ' विषय पर साहित्य मंच
30 सितंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

साहित्य मंच : गाँधी और हिंदी (महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर)
2 अक्तूबर 2019, चित्तौड़गढ़, राजस्थान

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'गाँधी जी की विचारधाराओं की वर्तमान प्रासंगिकता' पर साहित्य मंच
4 अक्तूबर 2019, चामराजनगर, कर्नाटक

साहित्य मंच : अट्टूर रवि वर्मा
4 अक्तूबर 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

जानेमाने डोगरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
12 अक्तूबर 2019, उधमपुर, जम्मू

पाचा मेतेई कृत उपन्यासों का समालोचनात्मक विश्लेषण पर साहित्य मंच
14 अक्तूबर 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

जानेमाने मैथिली लेखकों के साथ साहित्य मंच
16 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : प्राचीन कन्नड शासनगळु-मानवीय संबंद्धगळु
18 अक्तूबर 2019, चिक्काबाल्लापुर, कर्नाटक

प्रख्यात गुजराती नाटककार सतीश वत्स के साथ साहित्य मंच
19 अक्तूबर 2019, अहमदाबाद, गुजरात

साहित्य मंच : साहित्यिक समालोचना के विविध आयाम : एक परिचर्चा
19 अक्तूबर 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच
20 अक्तूबर 2019, बिदर, कर्नाटक

साहित्य मंच : बोडो साहित्य में नारीवाद
21 अक्तूबर 2019, कोकराझार, असम

साहित्य मंच : एक शैक्षिक अनुयायी के रूप में शंकरदेव पर हुए सृजनात्मक कार्य
23 अक्तूबर 2019, गुवाहाटी, असम

साहित्य मंच : 21वीं सदी का महिला लेखन
23 अक्तूबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

प्रख्यात बाङ्ला लेखकों के साथ साहित्य मंच
24 अक्तूबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

दलित चेतना कार्यक्रम
25 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'कन्नड तथा अनुवादों में महात्मा गाँधी' विषय पर साहित्य मंच
25 अक्तूबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

कवि सीतन पर शतवार्षिकी साहित्य मंच
25 अक्तूबर 2019, पुदुचेरी

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
26 अक्तूबर 2019, चरारे शरीफ़, जम्मू-कश्मीर

साहित्य मंच
27 अक्तूबर 2019, पालक्कड, केरल

साहित्य मंच : कन्नड साहित्य में लोक परंपराएँ
27 अक्तूबर 2019, अथानी, कर्नाटक

प्रख्यात कश्मीरी लेखकों के साथ साहित्य मंच
30 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच
31 अक्तूबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : आधुनिक तेलुगु कविता में प्रतिबिंबित निम्न श्रेणी का कार्य करने वाले श्रमिक
3 नवंबर 2019, अनंतपुर, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : काव्यात्मक वसंत की खिलती कहानियाँ
3 नवंबर 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : बहुभाषी लेखक
5 नवंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

साहित्य मंच : कन्नड महाकाव्य–परंपारे माथु हरीशचंद्र काव्य
6 नवंबर 2019, अनेकल, कर्नाटक

साहित्य मंच : लोकसाहित्य तथा साहित्यिक व्याख्यान
10 नवंबर 2019, कोझीकोड, केरल

साहित्य मंच : बाङ्ला कविता
13 नवंबर 2019, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

साहित्य मंच : वाचिक साहित्य के लिए पूर्वोत्तर केंद्र में साहित्यिक सम्मिलन
17 नवंबर 2019, अगरतला, त्रिपुरा

फीजी विश्वविद्यालय के प्रख्यात हिंदी लेखक एवं प्रोफ़ेसर सुब्रमणि के साथ साहित्य मंच
18 नवंबर 2019

मणिपुरी कविता में पारिस्थितिक परिप्रेक्ष्य पर साहित्य मंच
18 नवंबर 2019, सिल्चर, असम

साहित्य मंच : बाल साहित्य का महत्व
18 नवंबर 2019, कछार, असम

साहित्य मंच : मलयाळम् में लेखन तथा कविता की सराहना
21 नवंबर 2019, कालीकट, केरल

साहित्य मंच : असमिया कहानियाँ तथा उनका वर्तमान परिदृश्य
21 नवंबर 2019, डिब्रूगढ, असम

साहित्य मंच
24 नवंबर 2019, अलाक्कोडे, केरल

'भारतीय संविधान दिवस' के अवसर पर साहित्य मंच
26 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

साहित्य मंच : 'भारतीय संविधान दिवस' के अवसर पर
26 नवंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बी.एम. श्री कृत अंग्रेज़ी *गीतेगाळु* पर साहित्य मंच
29 नवंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

नारी चेतना कार्यक्रम
29 नवंबर 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : एम.के. इंदिरा, साहित्य अवलोकन
30 नवंबर 2019, चिक्कामंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच
1 दिसंबर 2019, कोट्टयम, केरल

साहित्य मंच : नबनीता देव सेन
3 दिसंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

दलित चेतना कार्यक्रम
5 दिसंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

दलित चेतना कार्यक्रम
7 दिसंबर 2019, रायचूर, कर्नाटक

13वें दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव के अवसर पर साहित्य मंच
9 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

13वें दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव के अवसर पर साहित्य मंच
12 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच
14 दिसंबर 2019, त्रिवेंद्रम, केरल

साहित्य मंच : तेलुगु में जनजातीय उपन्यास
15 दिसंबर 2019, ज़िला चित्तूर, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : सामाजिक बदलाव और तेलुगु लेखक (कालजयी तथा आधुनिक)
21 दिसंबर 2019, कुरनूल, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : गारिमेल्ला कृत साहित्य
22 दिसंबर 2019, श्रीकाकूलम, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : केइथेल्लाकपम चंद्रकुमार का जीवन और कार्य
22 दिसंबर 2019, अगरतला, त्रिपुरा

साहित्य मंच : कुमारव्यास कृत कार्यों का अनुवाद
27 दिसंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

दलित चेतना कार्यक्रम
27 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

साहित्य मंच : स्वातंत्र्योत्तर तेलुगु कवियों द्वारा व्याख्यायित गाँधी की छवियाँ
29 दिसंबर 2019, अनंतपुर, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच
31 दिसंबर 2019, थोउबल, मणिपुर

साहित्य मंच
3 जनवरी 2020, सिनदगी, कर्नाटक

साहित्य मंच : विमर्श कार्यक्रम–गाँधी : लेखकों के लेखक
7 जनवरी 2020, नई दिल्ली

साहित्य मंच
5 जनवरी 2020, चामराजनगर, कर्नाटक

साहित्य मंच : एस. आर. सुब्रह्मण्यन के साहित्यिक कार्यों पर
7 जनवरी 2020, कुड्डालोर, तमिलनाडु

साहित्य मंच : विवेकानंद जयंती के अवसर पर
12 जनवरी 2020, नई दिल्ली

साहित्य मंच
18 जनवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

दलित चेतना कार्यक्रम
23 जनवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

दलित चेतना कार्यक्रम
26 जनवरी 2020, ज़िला पलाक्कड, केरल

साहित्य मंच : प्रख्यात शोधकर्त्ता एवं विद्वान श्री शीमोन लेव द्वारा 'वाइरिंग अबाउट इंडिया इन इज़राइल' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया
29 जनवरी 2020, नई दिल्ली

साहित्य मंच : साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत तेलुगु लेखिकाओं के लेखन पर
29 जनवरी 2020, हैदराबाद, तेलंगाना

साहित्य मंच : तेलुगु साहित्य में लेखन तथा प्रति-लेखन
29 जनवरी 2020, तिरुपति, आंध्रप्रदेश

साहित्य मंच : कन्नड और मराठी नाटक : अनुवाद और पारस्परिक अंतःक्रिया
31 जनवरी 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : अनुवाद पर विचार-विमर्श
3 फ़रवरी 2020, चंडीगढ़

साहित्य मंच : स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसिज़ यूनिवर्सिटी ऑफ़ सनशाइन कोस्ट, ऑस्ट्रेलिया के उप-प्रमुख मारकस बुस्सेय ने 'परिवर्ती पहचान : जहाँ भूतकाल, वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल मिलते हैं'' पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया।
6 फ़रवरी 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : कन्नड कहानियों में देशीयता
15 फ़रवरी 2020, बेलहोंगल, कर्नाटक

मलयाळम् उपन्यासों पर साहित्य मंच
18 फ़रवरी 2020, नीलामबूर, केरल

'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर साहित्यिक विमर्श कार्यक्रम
21 फ़रवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर साहित्य मंच कार्यक्रम
21 फ़रवरी 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर साहित्य मंच कार्यक्रम
21 फ़रवरी 2020, चेन्नई, तमिलनाडु

'अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' के अवसर पर साहित्य मंच कार्यक्रम
21 फ़रवरी 2020, मुंबई, महाराष्ट्र

साहित्य मंच : सरगस्याहनम - एक सृजनात्मक साहित्यिक संध्या
01 मार्च 2020, कोल्लम, केरल

साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान प्राप्तकर्त्ता इतिहासकार, लेखक एवं शोधकर्त्ता एस. शेट्टर तथा विद्वान पंडित सुधाकर चतुर्वेदी की शोकसभा
02 मार्च 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

साहित्य मंच : 'अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस' के अवसर पर
08 मार्च 2020, चेन्नई

साहित्य मंच के अंतर्गत युवा भारतीय लेखकों द्वारा 'मॉड्रन इंग्लिश पोएट्री' पुस्तक का लोकार्पण
08 मार्च 2020, कोलकाता

साहित्य मंच : मलयाळम् साहित्य में आधुनिकतावाद
09 मार्च 2020, अलप्पुज़हा, केरल

साहित्य मंच : कन्नड समकालीना संदर्भदल्लि श्री रंगरा शोकचक्र नाटका
10 मार्च 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

वरिष्ठ कन्नड लेखक, विद्वान एवं पत्रकार पाटिल पुट्टप्पा तथा वरिष्ठ मलयाळम् कवि, लेखक, विद्वान एवं साहित्य अकादेमी के भाषा सम्मान प्राप्तकर्त्ता पुथुस्सेरी रामचंद्रन की शोकसभा
17 मार्च 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

लोक : विविध स्वर

लोक : विविध स्वर के अंतर्गत पारंपरिक बोडो नृत्य– बागुरूमबा प्रस्तुत किया गया तथा जगेश्वर ब्रह्म ने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया।
14 जुलाई 2019, कोकराझार, असम

लोक : विविध स्वर के अंतर्गत बोडो लोकनृत्य 'ना गुरनाई' प्रस्तुत किया गया।
22 अक्तूबर 2019, पर्बतझोरा, बीटीसी, असम

लोक : विविध स्वर
13-14 नवंबर 2019, पुरुलिया, पश्चिम बंगाल

लोक : विविध स्वर
26 नवंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

लोक : विविध स्वर
10 दिसंबर 2019, राजौरी, जम्मू-कश्मीर

लोक : विविध स्वर
21 दिसंबर 2019, नरगारिया, रानिर बाज़ार, त्रिपुरा

लोक : विविध स्वर के अंतर्गत अतीरवुगल कलाइक्कुज़हु द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों पर थाप्पाट्टम की प्रस्तुति प्रस्तुत की गई तत्पश्चात् प्रख्यात लोकसाहित्यकार तथा संगीतकार पी. मुरुगावेल ने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3 जनवरी 2020, पुदुचेरी

लेखक से भेंट

प्रख्यात सिंधी लेखिका माया राही
24 मई 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात नेपाली लेखक लोकनाथ उपाध्याय
21 जुलाई 2019, सिलीगुड़ी, पश्चिमी बंगाल

प्रख्यात तमिऴ लेखक डी. सेल्वराज
7 अगस्त 2019, डिंडिगुल, तमिलनाडु

प्रख्यात संताली लेखक जमदार किस्कू
15 सितंबर 2019, झारग्राम, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात मराठी लेखक अनिल अवचट
14 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात गुजराती लेखक रतीलाल बोरीसागर
19 दिसंबर 2019, अहमदाबाद, गुजरात

प्रख्यात मराठी साहित्यकार सदानंद मोरे
12 मार्च 2020, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रेमानंद मुसाहारी
15 मार्च 2020, गोलघाट, असम

मुलाकात

युवा बोडो लेखक
14 जुलाई 2019, कोकराझार, असम

युवा असमिया कवि
15 जुलाई 2019, गुवाहाटी, असम

विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखक
30 जुलाई 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

युवा बोडो लेखक
19 अगस्त 2019, गुवाहाटी, असम

युवा ओड़िआ लेखक
13 सितंबर 2019, क्योंझार, ओड़िशा

युवा मणिपुरी लेखक
13 अक्तूबर 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

युवा असमिया लेखक
29 दिसंबर 2019, जोरहाट, असम

युवा बाङ्ला लेखक
24 जनवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बहुभाषी सम्मिलन

डॉ. बी.आर. अंबेडकर की 128वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर बहुभाषी सम्मिलन
14 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

बहुभाषी लेखक सम्मिलन
2-3 नवंबर 2019, पासिघाट, अरुणांचल प्रदेश

13वें दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला उत्सव के अवसर पर बहुभाषी लेखक सम्मिलन
11 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

कोलकाता अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के दौरान अपने नवप्रकाशनों के साथ बहुभाषी कवि सम्मिलन
4 फ़रवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

नारी चेतना

नारी चेतना : निर्मला भट्टल, मीनाक्षी मिश्रीकोटी, प्रिया पुरानिका तथा यमुना कंबार
29 अप्रैल 2019, बेलागावी, कर्नाटक

जानीमानी कश्मीरी लेखिकाएँ–नसीम शिफ़ई, रेहाना कौसर, सबा शाहीन शाइस्ता अख़्तर तथा शमीमा तबस्सुम
20 जून 2019, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर

जानीमानी संताली लेखिकाएँ–बीरबाह हांसदा, छिता बेसरा, मालती मुर्मु, पूर्णिमा हेम्ब्रम तथा पद्मश्री जमुना टुडु
7 जुलाई 2019, राँची, झारखंड

जानीमानी बोडो लेखिकाएँ–बनबीना ब्रह्म, भबानी बगलारी, प्रतिभा ब्रह्म, सुनीति बसुमतारी, उत्तरा बविश्वमुथियारी तथा अंजली बसुमतारी
13 जुलाई 2019, कोकराझार, असम

प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी लेखिकाएँ–उदिप्पना गोस्वामी, संगीता गोयल, मोलीश्री तथा नबीना दास
2 अगस्त 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात ओड़िआ लेखिकाएँ–जयंती दीप, जयंती प्रधान, पद्मिनी डोगरा, रेखा डे, तपस्विनी गुरु तथा बिजयानंद सिंह
24 अगस्त 2019, बारगढ़, ओड़िशा

प्रख्यात संताली लेखिकाएँ–दिखुमणि, सोरेन, लक्ष्मी हांसदा, रायमणि मरांडी तथा सुमित्रा सोरेन
20 अक्तूबर 2019, रायरंगपुर, ओड़िशा

प्रख्यात बोडो लेखिकाएँ–अंजली बोडोसा, प्रमिला नार्ज़ारी, राहिला ब्रह्म तथा वर्जिन जेकोवा मुसाहारी
21 अक्तूबर 2019, कोकराझार, असम

प्रख्यात कश्मीरी लेखिकाएँ–शहनाज़ काद्री, संतोष नंदन, रूबी निसा तथा कुसुम टिकू
25 नवंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात बाङ्ला कवि तथा अन्य कलाकार–इशिता बहादुरी, लोपामुद्रा मित्रा, प्रांती टैगोर, संचिता भट्टाचार्य, उमा झुनझुनवाला तथा सुबोध सरकार
16 दिसंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात हिंदी लेखिकाएँ–पुष्पिता अवस्थी, आकांक्षा पारे काशिव, लीना मल्होत्रा राव तथा सुजाता
16 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात डोगरी लेखिकाएँ–उषा किरण 'किरण', विजया ठाकुर, निर्मल विक्रम, सुनीता भदवाल तथा सोनिया खजूरिया
15 फ़रवरी 2020, सांबा, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात मैथिली लेखिकाएँ–नंदिनी पाठक, परिता अरविंद, चेतना झा, सुष्मिता झा, रेणु झा, नूतन झा तथा शैल झा
01 मार्च 2020, अशोक नगर, राँची, झारखंड

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'नारी चेतना' कार्यक्रम में अनुराधा पाटिल, सुमति लानडे, शारायु असोलकर, उषाकिरण अतराम तथा पद्मरेखा बनकर
08 मार्च 2020, मुंबई, महाराष्ट्र

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर–राजी पी. राय, सीना श्रीवलसन, शांति पट्टाथिल, सुनीता गणेश, सुधा थेक्केमादोम तथा सिंधु सजन
08 मार्च 2020, बेंगळुरु, कर्नाटक

नारी चेतना : रेखा पी. मोहन, रोहिणी सत्या, एम. प्रेमा तथा उषा रानी राव
08 मार्च 2020, पलक्कड, केरल

नारी चेतना : बोडो लेखिकाएँ–बिभा रानी नार्ज़ारी, चंपा बोरो, लिपिका ब्रह्म, गुनोश्री बसुमतारी, छायाश्री बसुमतारी तथा भबानी बगलारी
15 मार्च 2020, गोलघाट, असम

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2019

14-20 नवंबर 2019 : अकादेमी ने अपने नई दिल्ली तथा बेंगळुरु, कोलकाता, मुंबई स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों एवं चेन्नई स्थित अपने उप-कार्यालय में राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2019 का आयोजन किया तथा पुस्तक सप्ताह के दौरान निम्नलिखित साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया।

नई दिल्ली

आई.आई.टी. कैंपस में साहित्य मंच
15 नवंबर 2019, नई दिल्ली

केदारनाथ सिंह तथा शहरयार पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
19 नवंबर 2019, नई दिल्ली

मुंबई, महाराष्ट्र

विंदा करंदिकर पर वृत्तचित्र का प्रदर्शन
14 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

गुलज़ार, गिरीश कार्नाड तथा भालचंद्र नेमाडे पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
15 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

विजय तेंदुलकर तथा महेश एलकुंचवार पर वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
16 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

मराठी युवा लेखक उत्सव
15-16 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

पूर्वोत्तर तथा क्षेत्रीय सम्मिलन

पूर्वोत्तर तथा पश्चिमी काव्योत्सव
20-21 अप्रैल 2019, गोवा

पूर्वोत्तर तथा पूर्वी क्षेत्रीय जनजातीय लेखक सम्मिलन
24-25 अगस्त 2019, राँची, झारखंड

कोच्ची अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले के दौरान पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी लेखक सम्मिलन
5 दिसंबर 2019, कोच्ची, केरल

पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी कवि सम्मिलन
28-29 दिसंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

पूर्वोत्तर तथा उत्तरी भाषाओं के प्रख्यात लेखकों के साथ पूर्वोत्तरी कार्यक्रम
9 जनवरी 2020, नई दिल्ली

व्यक्ति और कृति

डॉ. एम.जी.आर. मेडिकल यूनिवर्सिटी की कुलपति सुधा शेषाय्यन
22 मई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

प्रख्यात ग्राफिक डिज़ाइनर मानेश्वर ब्रह्म
4 अगस्त 2019, ज़िला चिरांग, बोडोलैंड, असम

भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश अरिजीत पसायत ने जिन पुस्तकों ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए।
11 अक्तूबर 2019, कटक, ओड़िशा

प्रख्यात गायिका सुलेखा बसुमतारी ने जिन पुस्तकों ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए।
22 अक्तूबर 2019, पर्बतझोरा, बीटीसी, असम

प्रख्यात अर्थशास्त्री तथा नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने जिन पुस्तकों ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए
19 नवंबर 2019, नई दिल्ली

संस्कृति मणिपुर विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष था. खोमदन सिंह ने जिन पुस्तकों ने उन्हें सबसे अधिक प्रभावित किया, पर अपने विचार व्यक्त किए
31 दिसंबर 2019, थोउबल, मणिपुर

पूर्व परीक्षा नियंत्रक बनवारी लाल गुप्ता
29 फ़रवरी 2020, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रवासी मंच

यू.के. से प्रख्यात पंजाबी लेखक अमर ज्योति
9 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

नॉर्वे से प्रख्यात हिंदी लेखक सुरेश चंद्र शुक्ल
25 सितंबर 2019, नई दिल्ली

यू.के. से प्रख्यात तमिऴ लेखिका राजेश्वरी बालसुब्रह्मण्यम
27 सितंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

यू.के. से प्रख्यात हिंदी लेखक तेजेंद्र शर्मा
15 नवंबर 2019, नई दिल्ली

डेनमार्क से प्रख्यात हिंदी लेखिका अर्चना पेन्यूली
19 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया से प्रतिष्ठित गुजराती लेखिका तथा विशिष्ट मीडिया शख़्सियत आराधना भट्ट
24 जनवरी 2020, भावनगर, गुजरात

राजभाषा

राजभाषा कार्यशाला
7 मई 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

राजभाषा मंच
28 जून 2019, नई दिल्ली

हिंदी सप्ताह तथा उसके अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएँ
16-23 सितंबर 2019, नई दिल्ली

'महात्मा गाँधी तथा भारतीय भाषाएँ' विषय पर राजभाषा मंच
24 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

हिंदी सप्ताह
20-23 सितंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

हिंदी दिवस
23 सितंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

हिंदी दिवस
24 सितंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

संगोष्ठियाँ

शिव कुमार राइ पर संगोष्ठी
24 अप्रैल 2019, कुर्सियाँग, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल

कोंकणी भाषा में महिला साहित्य पर संगोष्ठी
27-28 अप्रैल 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

'गाँधी और 1980 के बाद का हिंदी-गुजराती साहित्य' पर संगोष्ठी
10-11 मई 2019, गाँधीनगर, गुजरात

धीरूभाई ठाकर की जन्मशती पर संगोष्ठी
10-11 मई 2019, अहमदाबाद, गुजरात

'साहित्य में प्रतिबिंबित ओड़िशा का जनजातीय समाज और संस्कृति' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
26-27 जुलाई 2019, भुवनेश्वर, ओड़िशा

'कन्नड में बाल गौरवग्रंथों का पुनःपाठ' पर संगोष्ठी तथा अनुवाद कार्यशाला
5-6 अगस्त 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

'संस्कृत साहित्य में 21वीं सदी की लेखन प्रवृत्तियाँ' पर संगोष्ठी
07-08 अगस्त 2019, पुदुचेरी

राजभाषा शृंखला के अंतर्गत 'गाँधी और हिंदी' पर संगोष्ठी
16 अगस्त 2019, हैदराबाद, तेलंगाना

'मार्क्सवाद आणि मराठी साहित्य' पर संगोष्ठी
24-25 अगस्त 2019, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

बिनोद चंद्र नायक जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
25 अगस्त 2019, संबलपुर, ओड़िशा

'मलयाळम् साहित्य में गाँधी जी' पर संगोष्ठी
26-27 अगस्त 2019, कोट्टयम, केरल

'विचारात्मक निबंध : विधा और परंपरा' पर संगोष्ठी
26-27 अगस्त 2019, नई दिल्ली

'सीमा के पार : पूर्वी भारतीय साहित्य में बहुसंस्कृतिवाद' पर संगोष्ठी
01-02 सितंबर 2019, अगरतला, त्रिपुरा

सी.जे. थॉमस जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
02 सितंबर 2019, कुराविलंगद, केरल

'गाँधी और नारी' पर संगोष्ठी
06 सितंबर 2019, नई दिल्ली

बोडो साहित्य में महिला लेखन पर संगोष्ठी
07 सितंबर 2019, कोकराझार, असम

'सार्वभौमिक परिदृश्य में मैथिली भाषा और साहित्य' पर संगोष्ठी
08-09 सितंबर 2019, मधेपुरा, बिहार

कन्हैयालाल सेठिया जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
11-12 सितंबर 2019, सुजानगढ़, राजस्थान

लक्ष्मीनारायण महांति जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
14 सितंबर 2019, भद्रक, ओड़िशा

'गाँधी और मराठी साहित्य' पर संगोष्ठी
14-15 सितंबर 2019, नागपुर, महाराष्ट्र

सुबल चंद्र हांसदा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
15 सितंबर 2019, झारग्राम, पश्चिम बंगाल

सुभाष मुखोपाध्याय जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
18-19 सितंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

'लोक साहित्य : परंपरा और विकास' पर संगोष्ठी
22 सितंबर 2019, उदयपुर, राजस्थान

'तमिऴ साहित्य में महात्मा गाँधी' पर संगोष्ठी
26-27 सितंबर 2019, डिंडिगुल, तमिलनाडु

'सिंधी साहित्य और मीडिया' पर संगोष्ठी
05-06 अक्तूबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

गिरिजा कुमार माथुर के जीवन और कार्यों पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
14-15 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

गुरु नानक देव के 550वें प्रकाश पर्व के अवसर पर 'गुरु नानक देव : वर्तमान परिप्रेक्ष्य तथा प्रासंगिकता' विषय पर संगोष्ठी
19-20 अक्तूबर 2019, गुवाहाटी, असम

सुंदर मोहन हेम्ब्रम जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
20 अक्तूबर 2019, रायरंगपुर, ओड़िशा

'दक्षिण भारतीय दलित आत्मकथाएँ' पर संगोष्ठी
4-5 नवंबर 2019, कलबुर्गी, कर्नाटक

'बोडो साहित्य में गाँधी' पर संगोष्ठी
8 नवंबर 2019, गुवाहाटी, असम

पी.एल. देशपांडे जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
10-11 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

'ओड़िशा साहित्य में गाँधी' पर संगोष्ठी
16-17 नवंबर 2019, पुरी, ओड़िशा

'नाओरिया फूलो के साहित्य' पर संगोष्ठी
19 नवंबर 2019, कछार, असम

त्रियम. वी. सरदेशमुख जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
22 नवंबर 2019, सोलापुर, महाराष्ट्र

'निरंकार देव सेवक जन्मशतवार्षिकी तथा बाल साहित्य' पर संगोष्ठी
26 नवंबर 2019, नई दिल्ली

अहमद बटवारी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
26 नवंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

बेनीमाधव पाधी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
27 नवंबर 2019, भुवनेश्वर, ओड़िशा

मजरूह सुल्तानपुरी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
29-30 नवंबर 2019, नई दिल्ली

दलपतराम जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
30 नवंबर 2019-01 दिसंबर 2019, अहमदाबाद, गुजरात

'मलयाळम् कहानियाँ : शोकांतक तथा विचार' पर संगोष्ठी
2-3 दिसंबर 2019, ज़िला इडुक्की, केरल

'तमिऴ साहित्य में विस्थापन' पर संगोष्ठी
6-7 दिसंबर 2019, मयीलाडूतुरै, तमिलनाडु

अमृता प्रीतम जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
20-21 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

'कश्मीरी नाटक' पर संगोष्ठी
30-31 दिसंबर 2019, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर

'महात्मा गाँधी : मिथिला और मैथिली' पर संगोष्ठी
9-10 जनवरी 2020, दरभंगा, बिहार

'पश्चिमी भारत के मिथक' पर संगोष्ठी
18-19 जनवरी 2020, गोवा

एस. गुप्तन नायर जन्मशवार्षिकी संगोष्ठी
6 फ़रवरी 2020, त्रिवेंद्रम, केरल

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'महात्मा के पथ पर' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी
9 फ़रवरी 2020, तिरूर, केरल

धनिकोंडा हनुमंत राव जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
11 मार्च 2020, चेन्नई

परिसंवाद

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर 'पुस्तकें जो हमारी दुनिया को आकार देती हैं' पर परिसंवाद
23 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

पाँच सदस्यीय भारतीय लेखकों के प्रतिनिधिमंडल ने 'मैं क्यों लिखता हूँ' परिसंवाद में भाग लिया
25 अप्रैल 2019, अबु धाबी

पाँच सदस्यीय भारतीय लेखकों के प्रतिनिधिमंडल ने 'लेखन : जुनून या व्यवसाय' विषयक परिसंवाद में भाग लिया
26 अप्रैल 2019, अबु धाबी

'बी. पुट्टस्वामय्या के जीवन और लेखन' पर परिसंवाद
17 मई 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

क़िर्गिस्तान में भारत उत्सव के भाग के रूप में 5वें विश्व महाकाव्य उत्सव के अंतर्गत 'वास्तविकता के प्रतिबिंब के रूप में विश्व के मिथक काव्य तथा महाकाव्य के चित्र' पर परिसंवाद
26-30 जून 2019, क़िर्गिस्तान

'संताली साहित्य में जीवनी और आत्मकथा' पर परिसंवाद
7 जुलाई 2019, राँची, झारखंड

'कश्मीरी साहित्य में नारीवाद' पर परिसंवाद
12 जुलाई 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

'चिनाब घाटी में कश्मीरी साहित्य का सफल विकास' पर परिसंवाद
15 जुलाई 2019, बनिहाल, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात कश्मीरी कथाकार हरि कृष्ण कौल पर परिसंवाद
19 जुलाई 2019, नई दिल्ली

'मराठी में बाल साहित्य' पर परिसंवाद
19 जुलाई 2019, नानदेड़, महाराष्ट्र

'भारतीय नेपाली साहित्य में यात्रा लेखन' पर परिसंवाद
19 जुलाई 2019, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल

गोरा शास्त्री जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
20 जुलाई 2019, हैदराबाद, तेलंगाना

'एम. आनंदमोहन सिंह के जीवन और कार्यों' पर परिसंवाद
20 जुलाई 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

'राजस्थानी कहानियों के दो दशक' पर परिसंवाद
27 जुलाई 2019, श्रीगंगानगर, राजस्थान

'राजस्थानी उपन्यासों के दो दशक' पर परिसंवाद
28 जुलाई 2019, रायसिंह नगर, राजस्थान

'सिद्धय्या पुरानिक, मीरजी अन्नाराय और रा. या. धारवड़कर' की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
1 अगस्त 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

'पूर्वी तथा पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांत, काव्य तथा सौंदर्यपरकता का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर परिसंवाद
1 अगस्त 2019, तिरूर, केरल

सुब्रह्मण्य भारतीयार कृत 'भारत ज्ञान सभाई' पर परिसंवाद
2 अगस्त 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

'तमिऴ़ उपन्यास लेखन की नवीन प्रवृत्तियाँ' पर परिसंवाद
8 अगस्त 2019, तंजावूर, तमिलनाडु

'लोकप्रिय साहित्य' पर परिसंवाद
13 अगस्त 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

'कहे हुसैन फ़कीर साईं दा : शाह हुसैन' पर परिसंवाद
14 अगस्त 2019, नई दिल्ली

'भारत : स्वतंत्रता तथा उसके बाद' पर परिसंवाद
15 अगस्त 2019, नई दिल्ली

'असम की कविता की प्रवृत्तियों तथा प्रकृतियों' पर परिसंवाद
16 अगस्त 2019, जोरहाट, असम

'असमिया उपन्यास : उसकी व्युत्पत्ति तथा विकास' पर परिसंवाद
17 अगस्त 2019, गुवाहाटी, असम

चंद्रकुँवर बड़थ्वाल जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद
20 अगस्त 2019, रुद्रप्रयाग, उत्तराखंड

'गुजराती साहित्य में हास्य' पर परिसंवाद
21 अगस्त 2019, भुज, गुजरात

'साहित्य और पत्रकारिता' पर परिसंवाद
22 अगस्त 2019, नई दिल्ली

'सिंधी साहित्य को गोविंद मल्ही, ए.जे. उत्तम तथा कीरत बबाणी का योगदान' पर परिसंवाद
25 अगस्त 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

'प्रगतिशील ओड़िआ साहित्य' पर परिसंवाद
26 अगस्त 2019, राउरकेला, ओड़िशा

'आर.के. प्रियॅगोपालसना के जीवन और कार्यों' पर परिसंवाद
29 अगस्त 2019, नई दिल्ली

नेमीचंद्र जैन जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद
30 अगस्त 2019, नई दिल्ली

बोडो में बाल साहित्य पर परिसंवाद
6 सितंबर 2019, कोकराझार, असम

'गाँधी तथा भारतीय क्षेत्रीय साहित्यों के निर्माण में उनका योगदान' पर परिसंवाद
9 सितंबर 2019, पुदुचेरी

'संस्कृत साहित्य में गाँधी' पर परिसंवाद
9-10 सितंबर 2019, नलबारी, असम

'ओड़िआ भाषा के जनजातीय उपन्यासों' पर परिसंवाद
13 सितंबर 2019, क्योंझार, ओड़िशा

'ओड़िआ भाषा और साहित्य आंदोलन' पर परिसंवाद
15 सितंबर 2019, बालासोर, ओड़िशा

असमिया लिपि में पठन और लेखन हेतु असम के चाय बागानों की आमभाषा के रूप में असमिया भाषा के विकास संबंधी मुद्दों पर परिसंवाद
22 सितंबर 2019, तेजपुर, असम

'आधुनिकता और जीवाछ मिश्र' पर परिसंवाद
26 सितंबर 2019, दरभंगा, बिहार

'बाङ्ला साहित्य तथा अंडमान की संस्कृति' पर परिसंवाद
28 सितंबर 2019, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

'अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस के अवसर पर 'अनुवाद : दो संस्कृतियों के मध्य एक सेतु' विषय पर परिसंवाद
30 सितंबर 2019, नई दिल्ली

'किसानी जीवन दा पंजाबी साहित्य' पर परिसंवाद
30 सितंबर 2019, बादल, पंजाब

'तमिऴ मुद्रण संस्कृति का इतिहास' पर परिसंवाद
1 अक्तूबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'गाँधी की दृष्टि तथा पर्यावरण पर व्याख्यान' विषय पर परिसंवाद
2 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

'16वीं तथा 17वीं शताब्दी में कैथोलिक मिश्नरियों द्वारा लिखित कोंकणी साहित्य' पर परिसंवाद
7 अक्तूबर 2019, मार्सेल, गोवा

'महाकवि पंपा और कुमारव्यास के महाकाव्यों का पुनर्मूल्यांकन' पर परिसंवाद
11 अक्तूबर 2019, चन्नापटना, कर्नाटक

'राजस्थानी निबंध में सांस्कृतिक चेतना' पर परिसंवाद
12 अक्तूबर 2019, अजमेर, राजस्थान

'साहित्य और लोकप्रियता' पर परिसंवाद
19 अक्तूबर 2019, अहमदाबाद, गुजरात

'मीराजी की असली मानवीयत : मौजूदा दौर में' पर परिसंवाद
19 अक्तूबर 2019, जोधपुर, राजस्थान

महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 'महात्मा गाँधी और उर्दू' पर परिसंवाद
20 अक्तूबर 2019, जोधपुर, राजस्थान

कुमारन आशान कृत 'चिंताविष्टायाय सीता' पर परिसंवाद
23 अक्तूबर 2019, कोझिकोड, केरल

'आधुनिक तमिऴ और तेलुगु के कथासाहित्य की तुलना' पर परिसंवाद
31 अक्तूबर 2019, यानम, पुदुचेरी

तेलुगु कविता पर परिसंवाद
2-3 नवंबर 2019, अनंतपुर, आंध्र प्रदेश

'तमिऴ सौंदर्यशास्त्र' पर परिसंवाद
6 नवंबर 2019, सेलम, तमिलनाडु

'तेलुगु-कन्नड कहानियाँ : वैश्वीकरण का प्रभाव' पर परिसंवाद
8 नवंबर 2019, बेंगलुरु, कर्नाटक

'स्वतंत्रता के बाद असमिया विज्ञान साहित्य और यात्रा' पर परिसंवाद
11 नवंबर 2019, लखीमपुर, असम

'विगत पाँच वर्षों के दौरान सिंधी नाटकों की विभिन्न विधाओं' पर परिसंवाद
17 नवंबर 2019, नागपुर, महाराष्ट्र

'केहरी सिंह मधुकर' पर परिसंवाद
30 नवंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

'संस्कृत साहित्य में चित्रकूट' पर परिसंवाद
1 दिसंबर 2019, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

'सिंधी उपन्यासों के विगत पाँच वर्षों के चेहरे और चरणों' पर परिसंवाद
4 दिसंबर 2019, उल्हासनगर, महाराष्ट्र

'नेपाली कहानियों के सौ वर्ष' पर परिसंवाद
7 दिसंबर 2019, नामची, सिक्किम

'पीर पंजल क्षेत्र में कश्मीरी भाषा और साहित्य के विकास' पर परिसंवाद
10 दिसंबर 2019, राजौरी, जम्मू-कश्मीर

'ऐतिहासिक उपन्यासों के औपनिवेशिक प्रभावों' पर परिसंवाद
12 दिसंबर 2019, पुडुचेरी

'सिंधी साहित्य में वासुदेव निर्मल के योगदान' पर परिसंवाद
13 दिसंबर 2019, ठाणे, महाराष्ट्र

'राजस्थानी नाटकों के दो दशकों' पर परिसंवाद
21 दिसंबर 2019, बीकानेर, राजस्थान

'कन्नड कहानियों का उद्गम और विकास' पर परिसंवाद
24 दिसंबर 2019, अथानी, ज़िला बेलगाम, कर्नाटक

'कश्मीरी साहित्यिक समालोचना' पर परिसंवाद
27 दिसंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

'गंगाराम सम्राट' पर परिसंवाद
29 दिसंबर 2019, अहमदाबाद, गुजरात

'राजस्थानी कथेतर साहित्य के दो दशकों' पर परिसंवाद
29 दिसंबर 2019, कोटा, राजस्थान

'कश्मीरी लोक साहित्य' पर परिसंवाद
2 जनवरी 2020, बानिहाल, जम्मू-कश्मीर

'अंग्रेज़ी में भारतीय साहित्य में भारतीय विषय : दृष्टिकोण और चुनौतियाँ' पर परिसंवाद
7 जनवरी 2020, कोयंबटूर, तमिलनाडु

'नगरोत्सव : भारतीय साहित्य में कोलकाता का अभ्यावेदन' पर परिसंवाद
9 जनवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

'अटल बिहारी वाजपेयी के विशेष संदर्भ के साथ पत्रकारिता और साहित्य' पर परिसंवाद
10 जनवरी 2020, मोतिहारी, बिहार

'सिंधी साहित्य को गोवर्धन भारती का योगदान' पर परिसंवाद
12 जनवरी 2020, अजमेर, राजस्थान

'कोंकणी पाठ–कोंकणी साहित्य और पुस्तकें' पर परिसंवाद
22 जनवरी 2020, गोवा

'सुवर्ण महोत्सव मराठी कविता : बीसवीं सदी की मराठी कविता' पर परिसंवाद
24 जनवरी 2020, मुंबई, महाराष्ट्र

'मीडिया और साहित्य' पर परिसंवाद
15 फ़रवरी 2020, गोवा

आचार्य गोकुल प्रसाद त्रिपाठी जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद
22 फ़रवरी 2020, भोपाल, मध्य प्रदेश

'मैथिली साहित्यिक समालोचना में समकालीन प्रवृत्तियाँ' पर परिसंवाद
01 मार्च 2020, अशोक नगर, राँची, झारखंड

मधुपंतुला सत्यनारायण शास्त्री जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद
05 मार्च 2020, पल्लिपालेम, ज़िला पूर्व गोदावरी, आंध्र प्रदेश

'संस्कृत साहित्य में पूर्वोत्तर भारत का योगदान' पर परिसंवाद
12 मार्च 2020, नलबाड़ी, नमति, असम

मेरे झरोखे से

प्रख्यात सिंधी लेखिका संध्या कुंदनाणी ने प्रतिष्ठित सिंधी लेखक कला प्रकाश के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
13 जुलाई 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

प्रख्यात सिंधी लेखक हुंदराज बलवाणी ने विख्यात सिंधी लेखक घनश्याम सागर के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
13 जुलाई 2019, अहमदाबाद, गुजरात

प्रख्यात तेलुगु विद्वान सी. मृणालिनी ने प्रख्यात तेलुगु लेखक अब्बुरी छायादेवी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
16 जुलाई 2019, हैदराबाद, तेलंगाना

प्रख्यात ओड़िशा समीक्षक बिजॉय शतपथी ने प्रख्यात भाषाविद् धनेश्वर महापात्र के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
26 जुलाई 2019, कटक, ओड़िशा

प्रख्यात कश्मीरी लेखक रशीद आफ़ाक़ ने जानेमाने पत्रकार एवं लेखक सैयद शुजात बुखारी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
31 जुलाई 2019, सोपोर, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात बोडो लेखक राखाओ बसुमतारी ने प्रख्यात बोडो लेखक आनंदराम मुसाहारी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
8 सितंबर 2019, कार्बी अंगलौंग, असम

प्रख्यात पंजाबी लेखक रवेल सिंह ने पंजाबी लेखक एवं साहित्य अकादेमी के पूर्व उपाध्यक्ष सुतिंदर सिंह नूर के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
16 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

प्रख्यात बोडो लेखक अजीत बोरो ने प्रख्यात बोडो लेखक कामेश्वर ब्रह्म के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
22 अक्तूबर 2019, पर्बतझोरा, बीटीसी, असम

प्रख्यात तमिळ लेखक श्री सा. कंदसामी ने प्रतिष्ठित तमिळ लेखक श्री सुंदर रामसामी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
21 नवंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

उर्दू के प्रख्यात लेखक साहेब अली ने उर्दू के प्रख्यात लेखक मोहम्मद अल्वी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
24 दिसंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

दिलीप बोरकर ने (स्वर्गीय) रमेश वेलुस्कर के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
9 जनवरी 2020, गोवा

प्रख्यात बाङ्ला कवि शंकर चक्रवती ने प्रख्यात बाङ्ला लेखक सुनील गंगोपाध्याय के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
24 जनवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

उर्दू के जानेमाने लेखक अनीस अशफाक ने उर्दू के प्रख्यात लेखक नय्यर मसूद के जीवन और कार्यों पर चर्चा की
14 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

अनुवाद कार्यशालाएँ

पंजाबी-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला : समकालीन पंजाबी कहानियों का अनुवाद
3-5 अप्रैल 2019, नई दिल्ली

बाङ्ला-अंग्रेज़ी अनुवाद कार्यशाला : भारतीय लोककथाओं के संकलन का बाङ्ला से अंग्रेज़ी में अनुवाद
09-12 अगस्त 2019, अगरतला, त्रिपुरा

अनुवाद कार्यशाला : उत्तर भारतीय भाषाओं से अंग्रेज़ी में चयनित कविताओं का अनुवाद
14-16 नवंबर 2019, नई दिल्ली

तमिऴ-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला : तमिऴ में चयनित कश्मीरी कहानियों का अनुवाद
2-4 दिसंबर 2019, नई दिल्ली

वाचिक और जनजातीय साहित्य कार्यक्रम

मणिपुरी आदिवासी लेखक सम्मिलन
19 जुलाई 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

कोकबोरोक काव्योत्सव
19 सितंबर 2019, गाबोर्दी, सिपाहीजाला, त्रिपुरा

मुंडारी लेखक सम्मिलन
19 अक्तूबर 2019, रायरंगपुर, ओड़िशा

आदिवासी लेखक सम्मिलन
5 जनवरी 2020, नई दिल्ली

अखिल भारतीय लेखक सम्मिलन

स्वदेशी भाषाओं के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के अवसर पर अखिल भारतीय स्वदेशी लेखक सम्मिलन
09-10 अगस्त 2019, नई दिल्ली

अखिल भारतीय युवा लेखक महोत्सव - आविष्कार
9-10 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

अखिल भारतीय युवा संताली लेखक महोत्सव
9-10 नवंबर 2019, गुवाहाटी, असम

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय काव्य महोत्सव
21 फ़रवरी 2020, इंफ़ाल, मणिपुर

लेखक सम्मिलन

सूफ़ी कवि सम्मेलन
21 अप्रैल 2019, हंदवारा, जम्मू-कश्मीर

अनुवादक सम्मिलन
15 जून 2019, त्रिपुरा, अगरतला

अभिव्यक्ति
15-16 जून 2019, अगरतला, त्रिपुरा

विख्यात नेपाली लेखकों के साथ कवि गोष्ठी
21 जुलाई 2019, सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल

कन्नड कवि सम्मिलन
1 अगस्त 2019 बेंगळुरु, कर्नाटक

बाङ्ला कवि सम्मिलन
3 अगस्त 2019, सिलचर, असम

गुजराती युवा कवि सम्मिलन
30-31 अगस्त 2019, आणंद, गुजरात

बाङ्ला कवि सम्मिलन
31 अगस्त 2019 अगरतला, त्रिपुरा

पुरस्कार विजेता सम्मिलन
9 सितंबर 2019, डिब्रूगढ़, असम

पूर्वी क्षेत्रीय युवा लेखक सम्मिलन
20-21 सितंबर 2019, तेजपुर, असम

पूर्वी क्षेत्रीय महिला लेखन महोत्सव
21-22 सितंबर 2019, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल

बाङ्ला कवि सम्मिलन
28 सितंबर 2019, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के अवसर पर गाँधी काव्य महोत्सव
4 अक्तूबर 2019, पोरबंदर, गुजरात

युवा राजस्थानी लेखकों के साथ युवा लेखक सम्मिलन
14-15 अक्तूबर 2019, सालासर, राजस्थान

उत्तरी भाषाओं का युवा लेखक सम्मिलन
25 अक्तूबर 2019, नई दिल्ली

सिंधी युवा लेखक सम्मिलन
7-8 नवंबर 2019, नई दिल्ली

अखिल भारतीय युवा संताली लेखक महोत्सव
9-10 नवंबर 2019, असम

इंडो-मैक्सिकन लेखक सम्मिलन
11 नवंबर 2019, नई दिल्ली

मराठी युवा लेखक महोत्सव
15-16 नवंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं के साथ लेखक सम्मिलन
15 नवंबर 2019, चेन्नई, तमिलनाडु

हरि ओम पवार, सरिता शर्मा तथा अशोक चक्रधर के साथ कवि सम्मिलन
23 नवंबर 2019, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

भारतीय संविधान दिवस के अवसर पर कवि सम्मिलन
26 नवंबर 2019, नई दिल्ली

भारतीय संविधान दिवस के अवसर पर कवि सम्मिलन
26 नवंबर 2019, बेंगळुरु, कर्नाटक

भारतीय संविधान दिवस के अवसर पर कवि सम्मिलन
26 नवंबर 2019, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात डोगरी लेखकों के साथ कवि सम्मिलन
30 नवंबर 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

दक्षिणी और पश्चिमी लेखक सम्मिलन
30 नवंबर-1 दिसंबर 2019, मुंबई, महाराष्ट्र

पूर्वी क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन
29-30 दिसंबर 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

राष्ट्रीय काव्योत्सव 2020
1-3 जनवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

इंडो-ईरानी लेखक सम्मिलन
7 जनवरी 2020, नई दिल्ली

पूर्वी भारतीय कहानी लेखक उत्सव
18-19 जनवरी 2020, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

बहुभाषी कवि सम्मिलन
4 फ़रवरी 2020, कोलकाता

काव्य महोत्सव
15-16 फ़रवरी 2020, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

उर्दू कवि सम्मिलन
19 फ़रवरी 2020, नई दिल्ली

युवा साहिती

युवा कन्नड लेखकों के साथ युवा साहिती
9 मई 2019, कारवार, कर्नाटक

युवा कश्मीरी लेखकों के साथ युवा साहिती
22 जून 2019, श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर

युवा असमिया कवियों के साथ युवा साहिती
15 जुलाई 2019, गुवाहाटी, असम

युवा मणिपुरी लेखकों के साथ युवा साहिती
19 जुलाई 2019, इंफ़ाल, मणिपुर

युवा डोगरी लेखकों के साथ युवा साहिती
26 अगस्त 2019, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

युवा ओड़िया लेखकों के साथ युवा साहिती
14 सितंबर 2019, भद्रक, ओड़िशा

युवा तेलुगु लेखकों के साथ युवा साहिती
25 सितंबर 2019, ज़िला रंगारेड्डी, तेलंगाना

विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों के साथ युवा साहिती
11 जनवरी 2020, नई दिल्ली

वर्ष 2019-2020 में आयोजित शासकीय निकाय, क्षेत्रीय मंडलों तथा भाषा परामर्श मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल की बैठकें

तिथि	स्थान
14 जून 2019	अगरतला
18 दिसंबर 2019	नई दिल्ली
24 जनवरी 2020	नई दिल्ली

सामान्य परिषद् की बैठकें

तिथि	स्थान
14 जून 2019	अगरतला
25 जनवरी 2020	नई दिल्ली

वित्त समिति की बैठकें

तिथि	स्थान
7 जून 2019	नई दिल्ली
17 दिसंबर 2019	नई दिल्ली

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	20 जून 2019	इंफ़ाल
पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल	27 अप्रैल 2019	मुंबई
एन.ई.सी.ओ.एल.	27 जून 2019	गुवाहाटी

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें

मंडल	तिथि	स्थान
असमिया	16 फ़रवरी 2020	गुवाहाटी
बाङ्ला	9 जनवरी 2020	कोलकाता
बोडो	10 जनवरी 2020	कोलकाता
डोगरी	8 जनवरी 2020	नई दिल्ली
अंग्रेज़ी	9 जनवरी 2020	कोलकाता
गुजराती	4 जनवरी 2020	अहमदाबाद
हिंदी	30 सितंबर 2019	गोरखपुर
कन्नड	25 जनवरी 2020	बेंगळुरु
कश्मीरी	20 जनवरी 2020	नई दिल्ली
कोंकणी	12 जनवरी 2020	कोचीन
मलयाळम्	12 जनवरी 2020	कोचीन
मैथिली	23 जनवरी 2020	कोलकाता
मणिपुरी	9 जनवरी 2020	कोलकाता
मराठी	5 जनवरी 2020	मुंबई
नेपाली	20 जनवरी 2020	नई दिल्ली
ओड़िआ	10 जनवरी 2020	कोलकाता
पंजाबी	24 जनवरी 2020	नई दिल्ली
राजस्थानी	16 जनवरी 2020	नई दिल्ली
संस्कृत	16 जनवरी 2020	तिरुपति
संताली	8 जनवरी 2020	नई दिल्ली
सिंधी	5 जनवरी 2020	मुंबई
तमिऴ	26 जनवरी 2020	चेन्नई
तेलुगु	27 जनवरी 2020	हैदराबाद
उर्दू	28 जनवरी 2020	नई दिल्ली

पुस्तक मेलों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची–आयोजन एवं सहभागिता : 2019-2020

प्रधान कार्यालय

क्र.स.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	आज़ाद भवन में पुस्तक प्रदर्शनी, आईसीसीआर, नई दिल्ली	09 अप्रैल 2019
2.	अजमेर में पुस्तक मेला	13 से 21 अप्रैल 2019 तक
3.	अबू धाबी अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला	23 से 30 अप्रैल 2019 तक
4.	धर्मशाला में पुस्तक मेला	27 अप्रैल 2019 से 05 मई 2019 तक
5.	आईजीएनसीए में पुस्तक प्रदर्शनी (पुस्तक विमोचन)	09 अगस्त 2019
6.	जनजातीय भाषा पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	9 अगस्त 2019
7.	कन्या महाविद्यालय, जालंधर में पुस्तक प्रदर्शनी	19 से 23 अगस्त 2019 तक
8.	उज्जैन में पुस्तक मेला	31 अगस्त 2019 से 08 सितंबर 2019 तक
9.	25वाँ दिल्ली पुस्तक मेला	11 से 15 सितंबर 2019 तक
10.	अमृतसर पुस्तक प्रदर्शनी	11 से 15 सितंबर 2019 तक
11.	फरीदकोट में पुस्तक मेला	19 से 23 सितंबर 2019 तक
12.	महा पुस्तक मेला-II	30 सितंबर 2019 से 11 अक्तूबर 2019 तक
13.	उदयपुर में पुस्तक मेला	12 से 20 अक्तूबर 2019 तक
14.	जबलपुर में पुस्तक प्रदर्शनी	15 से 16 अक्तूबर 2019 तक
15.	सागर में पुस्तक प्रदर्शनी	18 से 20 अक्तूबर 2019 तक
16.	रीवा में पुस्तक प्रदर्शनी	21 से 23 अक्तूबर 2019 तक
17.	शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 2019	30 अक्तूबर 2019 से 09 नवंबर 2019 तक
18.	भोपाल टैगोर साहित्योत्सव तथा जनजातीय साहित्य कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	07 से 12 नवंबर 2019 तक
19.	पटना पुस्तक मेला 2019	8 से 18 नवंबर 2019 तक
20.	साहित्य आज तक कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	01 से 3 नवंबर 2019 तक
21.	डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय कर्मपुरा में पुस्तक प्रदर्शनी	05 नवंबर 2019
22.	डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय के के.जी. परिसर में पुस्तक प्रदर्शनी	11 नवंबर 2019
23.	डॉ. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लोधी रोड में पुस्तक प्रदर्शनी	13 नवंबर 2019
24.	पुस्तक प्रदर्शनी आईआईटी, नई दिल्ली	14 से 20 नवंबर 2019 तक
25.	वाईएमसीए, फरीदाबाद में पुस्तक प्रदर्शनी	16 से 17 नवंबर 2019 तक

26.	जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी	26 से 27 नवंबर 2019 तक
27.	गुआदालजारा अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 2019	30 नवंबर 2019 से 08 दिसंबर 2019 तक
28.	जश्न-ए-रेखता पुस्तक मेला, नई दिल्ली	14 से 15 दिसंबर 2019 तक
29.	इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद में पुस्तक प्रदर्शनी	5 से 9 दिसंबर 2019 तक
30.	विश्व पुस्तक मेला 2020, हॉल नंबर 12 ए, 10	04 से 12 जनवरी 2020 तक
31.	चंडीगढ़ पुस्तक मेला	01 से 09 फ़रवरी 2020 तक
32.	एन.एस.डी. पुस्तक मेला	01 से 21 फ़रवरी 2020 तक
33.	मऊ पुस्तक मेला	02 से 06 फ़रवरी 2020 तक
34.	गोरखपुर पुस्तक प्रदर्शनी	20 से 22 फ़रवरी 2020 तक
35.	संविधान दिवस पर पुस्तक प्रदर्शनी	20 फ़रवरी 2020
36.	साहित्योत्सव	24 से 29 फ़रवरी 2020 तक
37.	ललित कला अकादेमी राष्ट्रीय कला महोत्सव	04 से 09 मार्च 2020 तक
38.	वाईडब्ल्यूसीए पुस्तक प्रदर्शनी	07 मार्च 2020

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळुरु

क्र.सं.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	बी. पुट्टस्वामय्या के जीवन और लेखन पर संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, कन्नड भवन, बेंगळुरु	17 मई 2019
2.	गोरा शास्त्री की जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, एस.के. हॉल, हैदराबाद	20 जुलाई 2019
3.	सिद्धअय्या पुराणिक, मीरजी अन्नराय तथा रा.या. धारवाड़कर की जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, कन्नड साहित्य परिशात्तु, बेंगळुरु	31 जुलाई 2019 से 01 अगस्त 2019 तक
4.	कन्नड में बाल गौरवग्रंथों के पुनर्पाठ पर संगोष्ठी तथा अनुवाद कार्यशाला के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, जैन विश्वविद्यालय कॉलेज, बेंगळुरु	5 से 06 अगस्त 2019 तक
5.	मलयाळम् साहित्य में गाँधी जी पर संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी बेसलियस कॉलेज, कोट्टयम	26 से 27 अगस्त 2019 तक
6.	साहित्य मंच : 'कन्नड नाटकों पर पुनर्विचार—साहित्य और रंगमंच की गतिविधियाँ' विषय पर आयोजित सम्मेलन के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, शेषाद्रीपुरम कॉलेज, बेंगळुरु	14 सितंबर 2019

7.	बेंगळुरु पुस्तक मेला, पैलेस ग्राउंड्स, बेंगळुरु	02 से 08 अक्तूबर 2019 तक
8.	'महाकवि पंपा और कुमारव्यास के महाकाव्यों की समीक्षा' पर आयोजित परिसंवाद के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, सरकारी प्रथम श्रेणी महाविद्यालय, चेन्नपट्टना	11 अक्तूबर 2019
9.	'दक्षिण भारतीय दलित आत्मकाथाएँ', पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी	04 से 05 नवंबर 2019 तक
10.	'तेलुगु-कन्नड कहानी : वैश्वीकरण का प्रभाव' पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, ज्ञानज्योती सभागार, बेंगळुरु	08 नवंबर 2019
11.	मणिपाल साहित्य उत्सव के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी एम.ए.एच.ई. मणिपाल	09 से 10 नवंबर 2019 तक
12.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी साहित्य अकादेमी किताब-घर एवं गोदाम, बेंगळुरु	14 से 21 नवंबर 2019 तक
13.	33वाँ हैदराबाद राष्ट्रीय पुस्तक मेला, एनटीआर ग्राउंड्स, हैदराबाद	23 दिसंबर 2019 से 01 जनवरी 2020 तक
14.	'कन्नड कहानी का उद्‌गम और विकास' पर परिसंवाद के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, जे.ई. सोसाइटी के के.ए. लोकापुर डिग्री कॉलेज, अथानी, कर्नाटक	24 दिसंबर 2019
15.	पूर्वोत्तर तथा दक्षिणी कवि-सम्मिलन के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, जैन यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ़ साइंस, बेंगळुरु	28 से 29 दिसंबर 2019 तक
16.	अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर साहित्य मंच (नारी चेतना) के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु	08 मार्च 2020
17.	साहित्य मंच : साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस पर व्याख्यान के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, साहित्य अकादेमी, बेंगळुरु	12 मार्च 2020
18.	क्राइस्ट यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रमों के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी, बेंगळुरु	01 से 08 मार्च 2020 तक

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्र.सं.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	नवबर्षा बोई उत्सव कॉलेज स्क्वेयर, कोलकाता	13 से 21 अप्रैल 2019 तक
2.	विश्व पुस्तक दिवस समारोह के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी, कोलकाता	23 अप्रैल 2019

3. सेंट्रल लाइब्रेरी, विश्वभारती, शांतिनिकेतन में पुस्तक प्रदर्शनी	28 जून 2019 से 1 जुलाई 2019 तक
4. दार्जीलिंग में पुस्तक प्रदर्शनी	19 जुलाई 2019
5. सिलीगुड़ी में पुस्तक प्रदर्शनी	21 जुलाई 2019
6. राँची में पुस्तक प्रदर्शनी	23 से 25 अगस्त 2019 तक
7. डिब्रूगढ़ में पुस्तक प्रदर्शनी	07 से 10 सितंबर 2019 तक
8. झारग्राम में पुस्तक प्रदर्शनी	15 सितंबर 2019
9. कलकत्ता विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी, कोलकाता	18 से 19 सितंबर 2019 तक
10. दार्जीलिंग में पुस्तक प्रदर्शनी	21 से 22 सितंबर 2019 तक
11. रायरंगपुर में पुस्तक प्रदर्शनी	19 से 20 अक्तूबर 2019 तक
12. पूर्वोत्तर पुस्तक मेला 2019, गुवाहाटी	1 से 12 नवंबर 2019 तक
13. पासीघाट में पुस्तक प्रदर्शनी, अरुणाचल प्रदेश	2 से 3 नवंबर 2019 तक
14. अरुणाचल साहित्य एवं कला महोत्सव 2019, ईटानगर	8 से 10 नवंबर 2019 तक
15. डिब्रूगढ़ पुस्तक मेला 2019, डिब्रूगढ़	15 से 24 नवंबर 2019 तक
16. विवेकानंद कॉलेज फॉर वुमन, कोलकाता	9 से 10 दिसंबर 2019 तक
17. उत्तर बंगाल पुस्तक मेला, सिलीगुड़ी	29 नवंबर 2019 से 08 दिसंबर 2019 तक
18. दूसरा ओड़िशा राज्य पुस्तक महोत्सव 2019, भुवनेश्वर	6 से 15 दिसंबर 2019 तक
19. बरिशा बोई मेला, कोलकाता	23 से 31 दिसंबर 2019 तक
20. खड़गपुर पुस्तक मेला, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल	04 से 12 जनवरी 2020 तक
21. लिटिल मैगज़ीन बुक फेयर, कोलकाता	11 से 15 जनवरी 2020 तक
22. अखिल भारतीय उर्दू पुस्तक मेला, कोलकाता	18 से 26 जनवरी 2020 तक
23. अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला 2020, कोलकाता	29 जनवरी 2020 से 09 फ़रवरी 2020 तक
24. बाङ्ला कविता उत्सव में पुस्तक प्रदर्शनी नंदन कॉम्प्लेक्स, कोलकाता	5 से 8 मार्च 2020 तक
25. युवा भारतीयों द्वारा आधुनिक अंग्रेज़ी कविता कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी, कोलकाता	08 मार्च 2020
26. 24वाँ दार्जीलिंग पुस्तक मेला 2020, दार्जीलिंग	14 से 19 मार्च 2020 तक

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्र.सं.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	उत्तर-पूर्व पश्चिमी भारतीय काव्य महोत्सव, सुरला, गोवा	20 से 21 अप्रैल 2019 तक
2.	गाँधी और हिंदी, 1980 के बाद के गुजराती साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर, गुजरात	10 से 11 मई 2019 तक
3.	धीरूभाई ठकार जन्मशताब्दी गुजरात पर संगोष्ठी विश्वकोश ट्रस्ट, अहमदाबाद, गुजरात	10 से 11 मई 2019 तक
4.	फ़िल्म स्क्रीनिंग और पुस्तक प्रदर्शनी, के.जे. सोमैया कॉलेज, विद्याविहार, मुंबई	16 से 17 जुलाई 2019 तक
5.	परिसंवाद, एसआरटीएम विश्वविद्यालय, नांदेड़, महाराष्ट्र	18 से 19 जुलाई 2019 तक
6.	फ़िल्म प्रदर्शन एवं पुस्तक प्रदर्शनी, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र	29 से 30 अगस्त 2019 तक
7.	पुस्तक प्रदर्शनी, बसवेश्वर कॉलेज, लात्तूर, महाराष्ट्र	22 से 24 अगस्त 2019 तक
8.	संगोष्ठी, मराठवाड़ा साहित्य परिषद, औरंगाबाद, महाराष्ट्र	24 से 25 अगस्त 2019 तक
9.	पुस्तक प्रदर्शनी, परभाणी, महाराष्ट्र	26 से 29 अगस्त 2019 तक
10.	युवा लेखक सम्मिलन, एन.एस. पटेल आर्ट्स कॉलेज, आणंद, गुजरात	30 से 31 अगस्त 2019 तक
11.	गाँधी और मराठी साहित्य पर संगोष्ठी, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर, महाराष्ट्र	14 से 15 सितंबर 2019 तक
12.	पुस्तक प्रदर्शनी, वी.वी. ज़िला पुस्तकालय, जलगाँव, महाराष्ट्र	6 से 9 अक्तूबर 2019 तक
13.	पुस्तक प्रदर्शनी, विद्यावर्धनी कॉलेज, धुले, महाराष्ट्र	11 से 12 अक्तूबर 2019 तक
14.	लोकप्रिय साहित्य पर संगोष्ठी तथा साहित्य मंच कार्यक्रम, गुजरात कॉलेज, अहमदाबाद, गुजरात	17 से 19 अक्तूबर 2019 तक
15.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, मुंबई	14 से 20 नवंबर 2019 तक
16.	फ़िल्म प्रदर्शन एवं पुस्तक प्रदर्शनी, याज्ञवल्क्य, कल्याण, महाराष्ट्र	14 से 16 नवंबर 2019 तक
17.	परिसंवाद, संगमेश्वर कॉलेज, सोलापुर, महाराष्ट्र	21 से 22 नवंबर 2019 तक
18.	बालकुमार साहित्योत्सव, खार, मुंबई	27 से 29 नवंबर 2019 तक
19.	हिंदी सम्मेलन, बी.ए.आर.सी., चेंबूर, मुंबई	28 से 30 नवंबर 2019 तक
20.	संगोष्ठी, एच. के. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद	30 नवंबर 2019 से 1 दिसंबर 2019 तक

21.	परिसंवाद, आर.के.टी. कॉलेज, उल्हासनगर, महाराष्ट्र	04 दिसंबर 2019
22.	परिसंवाद, सर्व सेवा समिति, ठाणे	13 दिसंबर 2019
23.	मराठी बालक पालक सम्मेलन, मराठी अभ्यास केंद्र, परेल, मुंबई	14 से 15 दिसंबर 2019 तक
24.	फ़िल्म प्रदर्शन एवं पुस्तक प्रदर्शनी, कस्तूरबा स्त्री विकास गृह जामनगर, गुजरात	21 से 24 दिसंबर 2019 तक
25.	फ़िल्म प्रदर्शन एवं पुस्तक प्रदर्शनी, एन.डी.एच. हाई स्कूल, द्वारका, गुजरात	26 से 29 दिसंबर 2019 तक
26.	सतारा ग्रंथ महोत्सव, सतारा, महाराष्ट्र	3 से 6 जनवरी 2020 तक
27.	नागपुर पुस्तक मेला, नागपुर, महाराष्ट्र	10 से 12 जनवरी 2020 तक
28.	93वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन, उस्मानाबाद, महाराष्ट्र	10 से 12 जनवरी 2020 तक
29.	संगोष्ठी, द इंटरनेशनल सेंटर, डोना पाउला, गोवा	18 से 19 जनवरी 2020 तक
30.	*अनुवाद का समाजशास्त्र* विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के साथ प्रदर्शनी डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद	27 से 28 जनवरी 2020 तक
31.	एल.आई.टी.एफ.ई.एस.टी., एन.सी.पी.ए., नरीमन पॉइंट, मुंबई	14 से 15 फ़रवरी 2020 तक
32.	ऑक्टेव@गुजरात आणंद, गुजरात	28 फ़रवरी 2020 से 3 मार्च 2020 तक

उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई

क्र.सं.	पुस्तक मेले/प्रदर्शनी का विवरण	तिथि
1.	'जीवन और साहित्य' पर साहित्यिक मंच तथा पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री कुड्रत्तूर, चेन्नई	03 मई 2019
2.	नेवेली पुस्तक मेला, नेवेली	05 से 14 जुलाई 2019 तक
3.	होसूर पुस्तक मेला, होसूर	12 से 23 जुलाई 2019 तक
4.	कोयंबटूर पुस्तक मेला, कोयंबटूर	19 से 28 जुलाई 2019 तक
5.	करूर पुस्तक मेला, करूर	19 से 28 जुलाई 2019 तक
6.	धर्मपुरी पुस्तक मेला, धर्मपुरी	26 जुलाई 2019 से 04 अगस्त 2019 तक
7.	इरोड पुस्तक मेला, इरोड	02 से 13 अगस्त 2019 तक
8.	उदुमलाई पुस्तक मेला, उदुमलाई	03 से 12 अगस्त 2019 तक

9. धर्मपुरम पुस्तक मेला, धर्मपुरम	16 से 25 अगस्त 2019 तक
10. मन्नारगुडी पुस्तक मेला, मन्नारगुडी	09 से 19 अगस्त 2019 तक
11. संस्कृत पुस्तक मेला, पुदुचेरी	09 से 10 अगस्त 2019 तक
12. तंजावुर पुस्तक मेला, तंजावुर	17 से 26 अगस्त 2019 तक
13. मदुरै पुस्तक मेला, मदुरै	30 अगस्त 2019 से 09 सितंबर 2019 तक
14. 'संगम साहित्य' पर साहित्य मंच तथा पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री, चेन्नई	18 सितंबर 2019
15. कराइकुडी पुस्तक मेला, कराइकुडी	13 से 22 सितंबर 2019 तक
16. गुडियाथ्थम पुस्तक मेला, गुडियाथ्थम	24 सितंबर 2019 से 02 अक्तूबर 2019 तक
17. *महात्मा गाँधी और तमिऴ साहित्य* विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री, गाँधीग्राम, दिडुंक्कल	26 सितंबर 2019 से 27 सितंबर 2019 तक
18. 'तमिऴ साहित्यिक दुनिया के अनुवाद का इतिहास' पर साहित्य मंच कार्यक्रम के साथ पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री, चेन्नई	30 सितंबर 2019
19. 'तमिऴ मुद्रण संस्कृति का इतिहास' पर एक दिवसीय संगोष्ठी में पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री, चेन्नई	01 अक्तूबर 2019
20. थूथुकुडी पुस्तक मेला, थूथुकुडी	05 से 13 अक्तूबर 2019 तक
21. तिरुवन्नमलई पुस्तक मेला, तिरुवन्नमलई	11 से 20 अक्तूबर 2019 तक
22. कडलूर पुस्तक मेला, कडलूर	16 से 21 अक्तूबर 2019 तक
23. 21वीं सदी का महिला लेखन पर साहित्य मंच कार्यक्रम के साथ पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री	23 अक्तूबर 2019
24. कोट्टयम पुस्तक मेला, कोट्टयम	01 से 10 नवंबर 2019 तक
25. 'तमिऴ सौंदर्यशास्त्र' पर संगोष्ठी के साथ पुस्तकों का प्रदर्शन एवं बिक्री, सेलम	06 नवंबर 2019
26. बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह तथा लेखक सम्मिलन के साथ पुस्तकों का प्रदर्शन और बिक्री, चेन्नई	14 से 15 नवंबर 2019 तक
27. डिंडिगुल पुस्तक मेला, डिंडिगुल	28 नवंबर 2019 से 08 दिसंबर 2019 तक

28. कोच्चि अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला, कोच्चि	29 नवंबर 2019 से 08 दिसंबर 2019 तक
29. पुदुचेरी पुस्तक मेला, पुदुचेरी	20 से 29 दिसंबर 2019 तक
30. चेन्नई पुस्तक मेला, चेन्नई	09 से 21 जनवरी 2020 तक
31. तिरूप्पुर पुस्तक मेला, तिरूप्पुर	29 से 10 फ़रवरी 2020 तक
32. कीर्ति कोच्चि पुस्तक मेला, कोच्चि	06 से 16 फ़रवरी 2020 तक
33. पुदुकोट्टई पुस्तक मेला, पुदुकोट्टई	14 से 23 फ़रवरी 2020 तक
34. तिरूर पुस्तक मेला, तिरूर	06 से 09 फ़रवरी 2020 तक

1 अप्रैल 2019 से 31 मार्च 2020 तक प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

एयर एटुकुरा फनेक (पुरस्कृत मणिपुरी कहानी संकलन, *इमेजे फनेक माचेट*)
ले. लाइतोंजम प्रेमचंद सिंह
असमिया अनु. नीना देवी
पृ. 84; ₹ 120/-
ISBN : 978-81-260-2448-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

अनाधिकार प्रवेस अरु अन्यान्य गल्प (टैगोर की 21 कहानियाँ)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
असमिया अनु. मनोज कुमार सरमा
पृ. 96; ₹ 110/-
ISBN : 978-93-89195-35-4

आरोग्य निकेतन (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *आरोग्य निकेतन*)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
असमिया अनु. सुरेन तालुकदार
पृ. 290; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89467-15-4

असमिया एकां नट संकलन (असमिया एकांकी संकलन)
संपा. सत्य प्रसाद बरुआ
पृ. 494; ₹ 460/-
ISBN : 978-81-7201-109-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

आसमिया गद्य : अधुनिक जुग : 1945-2000 (आधुनिक काल का गैर-काल्पनिक गद्य)
संक. एवं संपा. मदन शर्मा
पृ. 292; ₹ 240/-
ISBN : 978-93-89467-68-0

असोमिया सिशु-साहित्येर निर्बाचित छुटिगल्प (बाल साहित्य)
संक. शांतनु तामूली
पृ. 336; ₹ 220/-
ISBN : 978-81-260-5019-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

भर्तृहरि बिरचित सतकत्रय (संस्कृत गौरवग्रंथ)
ले. भर्तृहरि
असमिया अनु. दीपक कुमार सरमा
पृ. 108; ₹ 160/-
ISBN : 978-93-89467-83-3

भासा (अंग्रेज़ी में जीवनी)
ले. वी. वेंकटचलम
असमिया अनु. थानेश्वर सरमा
पृ. 208; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-88468-45-9

द्वाराकत जुई लागिसे (असमिया कविता-संग्रह, नवोदय योजना)
ले. जतिन बोरा
पृ. 64; ₹ 110/-
ISBN : 978-93-89195-40-8

हाउलिर भीतर चरा (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास, *इनसाइड द हवेली*)
ले. रमा मेहता
असमिया अनु. हेमेश्वर दिहिंगिया
पृ. 216; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-260-2589-3
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

हेराई जोवा बोस्तुबोर अरु अन्यान्य कबिता (पुरस्कृत मलयाळम् कविता-संग्रह, *मरान्नु वेचा वस्तुक्कल*)
ले. के. सच्चिदानंदन
असमिया अनु. उत्पल दत्त
पृ. 214; ₹ 230/-
ISBN : 978-93-89467-84-0

निर्बाचित असमिया छुटी गल्प (चयनित असमिया कहानियाँ)
सं. गोविंद प्रसाद सरमा, सैलेन भराली, हृदयानंद गोगोई
पृ. 296; ₹ 220/-
ISBN : 978-81-260-3376-8
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंदर बच्चकबानिया सिसु गल्प (चयनित हिंदी बाल कहानियाँ)
ले. प्रेमचंद
असमिया अनु. भूपेंद्र रॉयचौधुरी
पृ. 158; ₹ 160/-
ISBN : 978-81-260-1104-9
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

रूपार पियाला (असमिया व्यंग्य संग्रह)
संक. एवं संपा. नजमा मुखर्जी
पृ. 432; ₹ 450/-
ISBN : 978-93-89467-19-2

संचयन (असमिया कविता-संग्रह)
संक. महेश्वर नेओग
पृ. 480; ₹ 280/-
ISBN : 978-81-260-2723-1
(25वाँ पुनर्मुद्रण)

सिसु साहित्य (बच्चों के लिए चयनित लेखन)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
असमिया अनु. विभिन्न अनुवादकों द्वारा
पृ. 200; ₹ 180/-
ISBN : 978-81-260-1270-1
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

श्रीराधा (ओड़िया कविता-संग्रह)
ले. रमाकांत रथ
असमिया अनु. निहार रंजन मिश्र एवं संध्यारानी पालो
पृ. 120; ₹ 120/-
ISBN : 978-93-89467-82-6

बाङ्ला

अनेक मानुस अनेक थ्नाइ निर्जनता (पुरस्कृत असमिया कविता-संग्रह, *अनेक मानुस अनेक थाई अरु निर्जनता*)
ले. बिरेश्वर बरुआ
बाङ्ला अनु. तिमिर डे
पृ. 148; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89195-11-8

आशापूर्णा देवी (बाङ्ला विनिबंध)
ले. मानषी दासगुप्त
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2275-5
(चौथा पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला गल्प संकलन खंड II
(बाङ्ला कहानी-संग्रह)
संक. एवं संपा. अश्रु कुमार सिकदर एवं कबिता सिन्हा
पृ. 288; ₹ 210/-
ISBN : 978-81-260-2519-0
(आठवाँ पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला कविता समुच्चय : 1000-1941: खंड I (बाङ्ला कविता-संग्रह)
संक. एवं संपा. सुकुमार सेन
पृ. 576; ₹ 370/-
ISBN : 978-81-260-2921-1
(चौथा पुनर्मुद्रण)

बाङ्लार साहित्य-इतिहास
(बाङ्ला साहित्य का इतिहास)
संक. सुकुमार सेन
पृ. 284; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-260-4896-0
(दसवाँ पुनर्मुद्रण)

भील महाभारत (*भील नू भारत,* हिंदी में गाया गया भील वाचिक महाकाव्य)
ले. भगवानदास पटेल
बाङ्ला अनु. जय मित्र
पृ. 196; ₹ 210/-
ISBN : 978-93-88468-12-1

बिकसिता सत पुष्पा (100 कवियों की 100 कविताओं का संकलन)
संक. एवं संपा. सुनील गंगोपाध्याय
पृ. 168; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-260-3296-9
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

बृष्टि अर होलो ना
(मणिपुरी कहानियाँ, *नोंगदी तारक-खिदारेद*)
ले. केइषम प्रियो कुमार
बाङ्ला अनु. ओइनम नीलकंठ सिंह
पृ. 112; ₹ 110/-
ISBN : 978-81-260-2806-1
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

गा-ए गीत (पुरस्कृत राजस्थानी कविता-संग्रह, *गा-गीत*)
ले. मोहन आलोक
बाङ्ला अनु. ज्योतिर्मय दास
पृ. 96; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89778-15-1

गजेंद्रकुमार मित्र (बाङ्ला विनिबंध)
ले. बारिदबरन घोष
पृ.70; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-87567-01-6

ग़ालिब (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. एम. मुजीब
बाङ्ला अनु. मणिभूषण भट्टाचार्य
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-4517-4
(पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)

गालिबेर स्मृति (उर्दू जीवनी, *यादगारे ग़ालिब*)
ले. मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली
बाङ्ला अनु. पुष्पितो मुखोपाध्याय
पृ. 168; ₹ 150-/
ISBN : 978-81-260-4425-2
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

गोदान (हिंदी उपन्यास)
ले. प्रेमचंद
बाङ्ला अनु. रणजीत सिन्हा
पृ. 410; ₹ 280/-
ISBN : 978-81-260-2319-6
(सातवाँ पुनर्मुद्रण)

इदू निंगथोउ ओ अन्यान्य कविता
(पुरस्कृत मणिपुरी कविताओं का संग्रह, *इदू निंगथोउ* और अन्य कविताएँ)
ले. मेमचौबी देवी
संपा. अवीक मजूमदार एवं सुमंत मुखोपाध्याय
बाङ्ला अनु. अवीक मजूमदार, सुमंत मुखोपाध्याय तथा राजकुमारी देवारिता
टीकाकार- राजकुमारी देवारिता
पृ. 152; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89195-41-5

ईश्वरचंद्र विद्यासागर (अंग्रेज़ी निबंध)
ले. हिरणमई बंद्योपाध्याय
बाङ्ला अनु. सुधीर कुमार चौधुरी
पृ. 78; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2125-3
(आठवाँ पुनर्मुद्रण)

लछामा
(ओड़िया ऐतिहासिक इतिवृत्ता, *लछामा*)
ले. फकीर मोहन सेनापति
बाङ्ला अनु. कृष्णा भट्टाचार्य
पृ. 104; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-88468-96-1

लीला मजूमदार (बाङ्ला विनिबंध)
ले. रुसती सेन
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-79-6

मिलमिश मन (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *मिलजुल मन*)
ले. मृदुला गर्ग
बाङ्ला अनु. उज्जल सिंह
पृ. 279; ₹ 340/-
ISBN : 978-93-89467-66-6

म्रैमा लोकगीती ओ लोकगल्प
(अंग्रेज़ी लोककथाओं का संग्रह, *म्रैमा लोककथाएँ*)
ले. क्रेइरी मोग चौधुरी
बाङ्ला अनु. क्रेइरी मोग चौधुरी
पृ. 146; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89195-62-0

मृच्छ्कटिकम्
(संस्कृत गौरवग्रंथ, *मृच्छ्कटिकम्*)
ले. शुद्रक
बाङ्ला अनु. सुकुमारी भट्टाचार्जी
पृ. 182; ₹ 130/-
ISBN : 978-81-260-2403-2
(दसवाँ पुनर्मुद्रण)

नब-नीता, नौ खंडों में
(पुरस्कृत बाङ्ला लेखन से चयनित *नबनीता*)
ले. नबनीता देवसेन
ब्रेल संस्करण : स्पर्शनंदन दृष्टिहिंदर ब्रेल पत्रिका के सहयोग से
पृ. 1891
ISBN :

नेपाली साहित्येर इतिहास
(नेपाली साहित्य का इतिहास)
ले. कुमार प्रधान
बाङ्ला अनु. बुद्धदेव बंद्योपाध्याय
पृ. 190; ₹ 180/-
ISBN : 978-81-260-1431-6
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

पिता-पुत्र (पुरस्कृत असमिया उपन्यास, *पिता-पुत्र*)
ले. होमन बोरगोहाईं
बाङ्ला अनु. सुजीत चौधुरी
पृ. 248; ₹ 190/-
ISBN : 978-81-260-3206-8
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

पोडो जामी ओ चोऊताल (अंग्रेज़ी कविता-संग्रह *द वेस्ट लैंड एंड फोर क्वारटेट्स*)
ले. टी. एस. एलियट
बाङ्ला अनु. जगन्नाथ चक्रवर्ती
पृ. 80; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-1857-4
(चौथा पुनर्मुद्रण)

राजशेखर बसु (बाङ्ला विनिबंध)
लं. हेमंत कुमार अध्या
पृ. 68; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1323-4
(चौथा पुनर्मुद्रण)

रामकृष्ण परमहंस (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. एवं बाङ्ला अनु. स्वामी लोकेश्वरानंद
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2408-7
(सातवाँ पुनर्मुद्रण)

सबर लोकगान ओ लोककथा (बाङ्ला लोकगीतों और लोककथाओं का संकलन)
ले. महाश्वेता देवी
संक. एवं अनु. प्रशांत रक्षित
पृ. 144; ₹ 120/-
ISBN : 978-81-260-4208-1
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

समरेश बसु (बाङ्ला विनिबंध)
ले. सत्यजीत चौधुरी
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-4973-8
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

शत निश्वास (पुरस्कृत संताली कविता-संग्रह, *शाय साहेंद*)
ले. दमयंती बेसरा
बाङ्ला अनु. दशरथी माझी
पृ. 180; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89195-12-5

उपेंद्रकिशोर रॉयचौधुरी (बाङ्ला विनिबंध)
ले. हेमंत कुमार आध्या
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-63-5
(चौथा पुनर्मुद्रण)

वामन फिर लोना (मराठी विज्ञानकथा, *वामन पारात ना अला*)
ले. जयंत वी. नार्लीकर
बाङ्ला अनु. सुब्रत बसु
पृ. 132; ₹ 120/-
ISBN : 978-81-260-2107-9
(चौथा पुनर्मुद्रण)

बोडो

सम्राट बाबरनी अरोज अरु गुबुन गुबुन खंथाई
(पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह बाबरेर *प्रार्थना*)
ले. शंख घोष
बोडो अनु. अनिल कुमार बर'
पृ. 112; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89467-96-3

डोगरी

बंधु शर्मा (विनिबंध)
ले. सुदेश राज
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-88468-33-6

चोनवियाँ सिंधी कहानियाँ
(सिंधी-डोगरी अनुवाद कार्यशाला)
सेपा. वीना गुप्ता
पृ. 176; ₹ 215/-
ISBN : 978-93-89467-77-2

चोनवियाँ कश्मीरी कहानियाँ
(अनुवाद कार्यशाला)
संपा. ओम गोस्वामी
पृ. 152; ₹ 210/-
ISBN : 978-93-89467-41-3

ढावां दिल्ली दे किंगरे
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास)
ले. बलदेव सिंह
डोगरी अनु. सुषमा रानी
पृ. 392; ₹ 400/-
ISBN : 978-93-89467-76-5

डोगरी बाल कहानियाँ (बाल साहित्य)
संपा. ज्ञानेश्वर
पृ. 128; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-88468-44-2

डोगरी हास्य व्यंग्य संकलन
संपा. शिव मेहता
पृ. 148; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-88468-42-8

किशन चंदर चुनिंदा कहानियाँ
संपा. गोपीचंद नारंग
डोगरी अनु. चमन अरोड़ा
पृ. 272; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89195-73-6

प्रेमचंद : कलम दा सिपाई
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
संपा. अमृत राय
डोगरी अनु. सुनीता भडवाल
पृ. 552; ₹ 525/-
ISBN : 978-93-89195-67-5

रवींद्रनाथ ठाकुर बाल साहित्य-1
डोगरी अनु. इंद्रजीत केसर
पृ. 136; ₹ 190/-
ISBN : 978-93-89195-68-2

रवींद्रनाथ ठाकुर बाल साहित्य-2
डोगरी अनु. इंद्रजीत केसर
पृ. 140; ₹ 195/-
ISBN : 978-93-89195-72-9

तमस (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. भीष्म साहनी
डोगरी अनु. अर्चना केसर
पृ. 256; ₹ 285/-
ISBN : 978-93-89467-71-0

तारा स्मैलपुरी (विनिबंध)
ले. श्याम लाल रैना
पृ. 92; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-43-7

अंग्रेज़ी

ए हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन इंग्लिश लिटरेचर
ले. एम.के. नायक
पृ. 344; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-260-1872-7
(पुनर्मुद्रण)

आनंदकंद (बेटागेरी कृष्ण शर्मा,अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. राघवेंद्र पाटिल
अंग्रेज़ी अनु. शशिधर जी. वैद्य
पृ. 156; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-46-0

अवेटिंग ए नॉक ऐट माई डोर
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास, *अणसार*)
ले. वर्षा अडालजा
अंग्रेज़ी अनु. नीला शाह
पृ. 320; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-89467-33-8

बाबासाहेब अम्बेडकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्रराव
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-152-9
(पुनर्मुद्रण)

बसंत कु. सतपथी (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. जगन्नाथ दाश
पृ. 132; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-64-2

भर्तृहरि (नाटक)
ले. मुलाकल्लूरी श्रीमन नारायणमूर्ति
पृ. 88; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-260-0308-2
(पुनर्मुद्रण)

भर्तृहरि
(एक छत्तीसगढ़ी लोक महाकाव्य)
प्रलेखन नंदकिशोर तिवारी, एच.यू. खान और इरविन मेकवान
पृ. 168; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-260-1363-0
(पुनर्मुद्रण)

बिल्हना (विनिबंध)
ले. पी.एन. कवठेकर
पृ. 98; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-779-8
(पुनर्मुद्रण)

केज्स (आधुनिक भारतीय नाटक शृंखला)
ले. मृदुला गर्ग
अंग्रेज़ी अनु. टुटुन मुखर्जी
पृ. 159; ₹ 190/-
ISBN : 978-93-89195-65-1

चदुरंगा (कन्नड विनिबंध)
ले. जी.आर. तिप्पेस्वामी
अंग्रेज़ी अनु. विजय शेषाद्री
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-55-0

दांडिन (विनिबंध)
ले. जयशंकर त्रिपाठी
पृ. 130; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-129-3
(पुनर्मुद्रण)

धर्मकीर्ति (विनिबंध)
ले. राधावल्लभ त्रिपाठी
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-4551-8
(पुनर्मुद्रण)

धर्मयुद्ध (पुरस्कृत राजस्थानी नाटक, *धरमयुद्ध*)
ले. अर्जुनदेव चरण
अंग्रेज़ी अनु. कल्पना पुरोहित
पृ. 148; ₹ 180/-
ISBN : 978-93-89467-37-6

डोगरी फोक टेल्स
चयन एवं अनु. शिवनाथ
पृ. 176; ₹ 160/-
ISBN : 978-81-260-1224-4
(पुनर्मुद्रण)

इनसाक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर, खंड-4
प्रधान संपा. इंद्रनाथ चौधुरी
पृ. 848; ₹ 1000/-
ISBN : 978-93-89778-36-6
(संशोधित संस्करण)

फोकटेल्स ऑफ़ लक्षद्वीप (खंड-1) : द बेड टाइम स्टोरीज़
(लक्षद्वीप की लोककथाएं)
मलयाळम् में पुनर्कथित एम. मुल्लाकोया
अंग्रेज़ी अनु. वसंती शंकरनारायणन
पृ. 76; ₹ 100/-
ISBN : 978-93-89195-59-0

फोकटेल्स ऑफ़ लक्षद्वीप (खंड-2): द एंजेल ऑफ़ डेथ (लक्षद्वीप की लोककथाएँ)
मलयाळम् में पुनर्कथित एम. मुल्लाकोया
अंग्रेज़ी अनु. वसंती शंकरनारायणन
पृ. 76; ₹ 100/-
ISBN : 978-93-89195-58-3

फ़ोर प्लेज़ (मॉडर्न इंडियन ड्रामा सीरीज़)
ले. एच.एस. शिवप्रकाश
अंग्रेज़ी अनु. मैत्रेयी करनूर
पृ. 212; ₹ 220/-
ISBN : 978-81-940300-9-6

फ़ोर्थ डायरेक्शन एंड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत पंजाबी कहानियाँ)
ले. वरयाम सिंह संधू
अंग्रेज़ी अनु. अक्षय कुमार
पृ. 158; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-260-1957-1
(पुनर्मुद्रण)

हर्बर्ट (बाङ्ला उपन्यास)
ले. नवारुण भट्टाचार्य
अंग्रेज़ी अनु. ज्योति पंजवानी
पृ. 108; ₹ 110/-
ISBN : 978781-260-1932-8
(पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर (1800-1910)
ले. शिशिर कुमार दास
पृ. 832; ₹ 600/-
ISBN : 978-81-7201-006-5
(पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर (500-1399)
ले. शिशिर कुमार दास
पृ. 316; ₹ 265/-
ISBN : 81-260-2171-3
(पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ कश्मीरी लिटरेचर
ले. त्रिलोकीनाथ रैना
पृ. 240; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89467-81-9
(पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ़ नेपाली लिटरेचर
ले. कुमार प्रधान
पृ. 256; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89778-28-1
(पुनर्मुद्रण)

हिस्ट्री ऑफ पंजाबी लिटरेचर
ले. संत सिंह शेखों और करतार सिंह दुग्गल
पृ. 440; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89778-27-4
(पुनर्मुद्रण)

इदु निङ्थौ
(पुरस्कृत मणिपुरी कविता-संग्रह, *इदु निङ्थौ*)
ले. मेमचौबी देवी
अंग्रेज़ी अनु. ख. कुंजो सिंह
पृ. 82; ₹ 110/-
ISBN : 978-93-89195-74-3

इम्प्रिंट्स ऑफ़ टाइम (पुरस्कृत तेलुगु उपन्यास)
ले. अमापसय्यावीन
अंग्रेज़ी अनु. अरुण रवि कुमार
पृ. 544; ₹ 540/-
ISBN : 978-81-940300-4-1

इंडोलॉजी, पास्ट, प्रेजेंट एंड फ़्यूचर
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. सरोजा भाटे
पृ. 240; ₹ 160/-
ISBN : 978-93-89195-93-4
(पुनर्मुद्रण)

खुशवंत सिंह (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. जी.जे.वी. प्रसाद
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-45-3

कुंद्राक्कुडी आदिगल (विनिबंध)
ले. सी. सेतुपति
अंग्रेज़ी अनु. के. दक्षिणामूर्ति
पृ. 127; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-24-6

लूणा (पुरस्कृत पंजाबी काव्य नाटक)
ले. शिव कुमार बटालवी
अंग्रेज़ी अनु. बी.एम. भल्ला
पृ. 168; ₹ 140/-
ISBN : 978-81-260-1873-4
(पुनर्मुद्रण)

मॉडर्न इंग्लिश पोएट्री बाय यंगर इंडियंस
संपा. सुदीप सेन
पृ. 254; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89195-64-4

मल्टिलिंग्वलिज़्म एंड द लिटरेरी कल्चर्स ऑफ़ इंडिया (संगोष्ठी आलेख)
संपा. एम.टी. अंसारी
पृ. 320; ₹ 290/-
ISBN : 978-93-89467-53-6

नो ब्रिज ओवर द ट्रबल्ड वाटर्स
(उपन्यास, नवोदय शृंखला)
ले. मोहम्मद कामरान
पृ. 184; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89467-38-3

वन लास्ट प्लेज
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *रेहन पर रग्घु*)
ले. काशीनाथ सिंह
अंग्रेज़ी अनु. पूरबी पंवार
पृ. 148; ₹ 130/-
ISBN : 978-93-89195-04-0

पर्वा (कन्नड उपन्यास, *पर्व*)
ले. एस.एल. भैरप्पा
अंग्रेज़ी अनु. के. राघवेंद्र राव
पृ. 964; ₹ 500/-
ISBN : 978-81-7201-659-3
(पुनर्मुद्रण)

रिफ़ोरमेट्री
(पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास, *सुधार घर*)
ले. मित्तर सेन मीत
अंग्रेज़ी अनु. मालती माथुर
पृ. 376; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89195-39-2

सर्वज्ञ (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. के.बी. प्रभु प्रसाद
पृ.68; ₹ 50/-
ISBN : 81-7201-404-X (पुनर्मुद्रण)

सेलेक्टेड हिंदी शार्ट स्टोरीज़
(अनुवाद कार्यशाला)
संपा. बबली मोइत्रा सराफ
पृ. 220; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89467-29-1

सेलेक्टेड पोएम्स ऑफ़ आर. रामचंद्रन
ले. आर. रामचंद्रन
अंग्रेज़ी अनु. के.टी. दिनेश
पृ.88; ₹ 100/-
ISBN : 978-93-89467-78-9

सिलेक्टेड वर्क्स ऑफ़ कबीर
अंग्रेज़ी अनु. प्रजापति प्रसाद साह
पृ.120; ₹ 120/-
ISBN : 978-93-89467-06-2

सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम : रीडर (संकलन)
संपा. इंदिरान
अंग्रेज़ी अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 250; ₹ 260/-
ISBN : 978-93-89195-80-4

स्नोफ़्लेक्स फ्रॉम ए समर टाउन
(कहानियाँ, नवोदय शृंखला)
ले. सौनक दास
पृ. 100; ₹ 110/-
ISBN : 978-93-89467-56-7

समथिंग अन्स्पोकन टू (पुरस्कृत पंजाबी कहानियाँ, *कुझ अनकहा वी*)
ले. प्रेम प्रकाश
अंग्रेज़ी अनु. राणा नायर
पृ. 192; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89195-85-9

श्री कृष्ण अलनाहल्ली
(अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. सी. नागन्ना
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-37-3

स्टोरी ऑफ़ वर्ड (पुरस्कृत सिंधी कविताएँ, *आखर कथा*)
ले. नंद झावेरी
अंग्रेज़ी अनु. विनोद असुदानी और रामदरयानी
पृ.168; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89778-01-4

स्वामी विवेकानंद (विनिबंध)
ले. नेमाई सदन बोस
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0342-6
(सातवाँ पुनर्मुद्रण)

द आई ऑफ़ डो एंड अदर स्टोरीज़ (पुरस्कृत पंजाबी कहानियाँ, *मून दी अख*)
ले. मोहन भंडारी
अंग्रेज़ी अनु. राणा नायर
पृ. 170; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-260-1790-4
(पुनर्मुद्रण)

द लीजेंड ऑफ़ सरप्राइज़
(बाल कहानियाँ)
ले. ताजिमा शिंजी
अनु. टी.एम. हॉफमैन
पृ. 70; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-260--4813-7
(पुनर्मुद्रण)

द लाई ऑफ़ द लैंड (अंग्रेज़ी में भारतीय कविता-संग्रह)
संपा. गौतम करमाकर
पृ. 296; ₹ 260/-
ISBN : 978-93-89778-09-0

द रिवर ऑफ़ ब्लड (पुरस्कृत तमिळ उपन्यास, *कुरुति पुनळ*)
ले. इंदिरा पार्थसारथी
अंग्रेज़ी अनु. का. ना. सुब्रह्मण्यम
पृ. 226; ₹ 180/-
ISBN : 978-81-260-2421-6

द स्टोरी ऑफ़ माई लाइफ़
(आत्मकथा)
ले. स्वामीनाथ अय्यर
अंग्रेज़ी अनु. के.एस. सुब्रह्मण्यन
पृ. 960; ₹ 800/-
ISBN : 978-93-88468-91-6

टोंग लिंग एक्सप्रेस
(बाङ्ला बाल कहानी-संग्रह)
अंग्रेज़ी अनु. निवेदिता सेन
पृ. 240; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2848-1
(पुनर्मुद्रण)

विनायक (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *विनायक*)
ले. रमेशचंद्र शाह
अंग्रेज़ी अनु. सुधीर कुमार
पृ.296; ₹ 350/-
ISBN : 978-93-89778-04-5

वीर टिकेंद्रजित रोड (पुरस्कृत मणिपुरी उपन्यास, *वीर टिकेंद्रजित रोड*)
ले. हिजम गुनो सिंह
अंग्रेज़ी अनु. ख. कुंजो सिंह
पृ.160; ₹ 160/-
ISBN : 978-93-89467-20-8

गुजराती

अर्वाचीन गुजराती हास्यरचनाओ
(गुजराती हास्य रचना संग्रह)
संक. एवं संपा. रतिलाल बोरिसागर
पृ. xxviii +220; ₹ 230/-
ISBN : 81-260-1459-9 (पुनर्मुद्रण)

गुजराती बालवार्ताओ (1990-2015)
(गुजराती बाल कहानी-संग्रह)
संक. हुंदराज बलवाणी
पृ. 228; ₹ 290/-
ISBN : 978-93-89467-21-5

गुजराती लघु कथा संचय
(गुजराती कहानी-संग्रह)
संक. मोहनलाल पटेल
पृ. 148; ₹ 125/-
ISBN : 978-93-89467-45-1

कथा विश्व- II (गुजराती कहानी-संग्रह)
संक. शिरीष पांचाल
पृ. 128; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89467-52-9

कथा विश्व - I (गुजराती कहानी-संग्रह)
संक. शिरीष पांचाल
पृ. 240; ₹ 260/-
ISBN : 978-93-89467-46-8

मध्यकालीन जैन कविता संचयन
(जैन धर्म पर आधारित कविताओं का संग्रह)
संक. अभय दोशी
पृ. 236; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-89195-49-1

नागो राजा (पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह, *उल्लंग राजा*)
ले. निरेंद्रनाथ चक्रवर्ती
गुजराती अनु. उर्वीश वावदा
पृ. 64; ₹ 120/-
ISBN : 978-93-89467-3679

पत्थर फेंकी रह्यो छूँ
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, *पत्थर फेंक रहा हूँ*)
ले. चंद्रकांत देवताले
गुजराती अनु. प्रवीण पंड्या
पृ. 180; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-88468-88-6

श्रीरामानुज (विनिबंध)
ले. एम. नरसिम्हाचारी
गुजराती अनु. छाया त्रिवेदी
पृ. 68; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-88468-99-2

हिंदी

आभास (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. वर्षा अडालजा
हिंदी अनु. सत्यनारायण स्वामी
पृ. 280; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89195-00-2

आँधी और अन्य कहानियाँ
(पुरस्कृत तेलुगु कहानियाँ)
ले. पी. पद्मराजू
हिंदी अनु. भीमसेन निर्मल
पृ. 140; ₹ 120/-
ISBN : 978-81-7201-493-3
(पुनर्मुद्रण)

अब भी बसंत को तुम्हारी ज़रूरत है
(रिल्के की कविताएँ)
ले. रिल्के
संक.और संपा. अनामिका
पृ. 84; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-1899-4
(पुनर्मुद्रण)

अब न बसो इह गाँव
ले. एवं हिंदी अनु. कर्तार सिंह दुग्गल
पृ. 420; ₹ 200/-
ISBN : 81-260-0123-2 (पुनर्मुद्रण)

अबुल कलाम आज़ाद
(उर्दू लेखक पर जीवनी)
ले. अबुल कवि दसनवी
हिंदी अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 104; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-1408-8
(पुनर्मुद्रण)

अचरज ग्रह की दंतकथा
(जापानी कहानियाँ, अंग्रेज़ी में *द लीजेंड ऑफ़ प्लेनेट सरप्राइज़*)
ले. ताजिमा शिंजी
हिंदी अनु. हरीश नारंग
पृ. 64; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-260-0224-5
(पुनर्मुद्रण)

आचार्य नरेंद्र देव (विनिबंध)
ले. मस्तराम कपूर
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2384-4
(पुनर्मुद्रण)

आचार्य रामचंद्र शुक्ल (विनिबंध)
ले. रामचंद्र तिवारी
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2053-9
(पुनर्मुद्रण)

आधुनिक भारतीय कविता संचयन
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 248; ₹ 175/-
ISBN : 978-81-260-4012-4
(पुनर्मुद्रण)

आधुनिक रूसी कहानी : खंड-नौ
संक. एवं संपा. हेमचंद्र पांडेय
पृ. 340; ₹ 220/-
ISBN : 978-81-260-1834-5
(पुनर्मुद्रण)

आदिवासी कहानी संचयन
संपा. रामणिका गुप्ता
पृ. 400; ₹ 300/-
ISBN : 978-81-940300-1-0

अज्ञेय काव्य स्तबक
(अज्ञेय की चुनिन्दा कविताएँ)
संपा. विद्यानिवास मिश्र एवं रमेशचंद्र शाह
पृ. 216; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-87567-14-6
(पुनर्मुद्रण)

अज्ञेय (विनिबंध)
ले. रमेशचंद्र शाह
पृ. 84; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-713-1
(पुनर्मुद्रण)

अलेक्ज़ेंडर पुश्किन प्रतिनिधि कहानियाँ
(अलेक्ज़ेंडर एस. पुश्किन की चुनिन्दा कहानियाँ)
हिंदी अनु. ए. चारूमति रामदास
पृ. 288; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-260-1348-7
(पुनर्मुद्रण)

अमृता प्रीतम (विनिबंध)
ले. सुतिंदर सिंह नूर
हिंदी अनु. गुरचरण सिंह
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-3170-2
(पुनर्मुद्रण)

आनंदीबाई और अन्य कहानियाँ
(पुरस्कृत बाङ्ला कहानियाँ)
ले. परशुराम
हिंदी अनु. माया गुप्ता
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-337-0
(पुनर्मुद्रण)

अंधी गली (पुरस्कृत ओड़िया कहानियाँ, *ओ अंधगली*)
ले. अखिलमोहन पटनायक
हिंदी अनु. राजेंद्र प्रसाद उपाध्याय
पृ. 144; ₹ 120/-
ISBN : 978-81-7201-767-5
(पुनर्मुद्रण)

अंडमान तथा निकोबार की लोक कथाएँ (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की लोकथाओं का संकलन)
संक. व्यास मणि त्रिपाठी
पृ. 132; ₹ 110/-
ISBN : 978-81-260-2542-5
(पुनर्मुद्रण)

आँख की किरकिरी (बाङ्ला उपन्यास)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
हिंदी अनु. हंस कुमार तिवारी
पृ. 196; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-7201-661-6
(पुनर्मुद्रण)

अंतरिक्ष में विस्फोट
(मराठी विज्ञान कथा, *अंतरातील स्फोट*)
ले. जयंत विष्णु नार्लीकर
हिंदी अन. सुरेखा पांडिकर
पृ. 92; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-7201-423-0
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

अनुभव (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. दिब्येन्दु पालित
हिंदी अनु. सुशील गुप्ता
पृ. 124; ₹ 80/-
ISBN : 978-81-260-1030-1
(पुनर्मुद्रण)

आरण्यक (बाङ्ला उपन्यास)
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
हिंदी अनु. हंस कुमार तिवारी
पृ. 216; ₹ 160/-
ISBN : 978-93-89195-60-
(पुनर्मुद्रण)

एसेंट टू व्यास गुहा (32वाँ संवत्सर व्याख्यान)
ले. एस.एल. भैरप्पा
हिंदी अनु. इंदुशेखर तत्पुरुष एवं कुंदनमाली
पृ. 21; ₹ 25/-
ISBN : 978-93-89195-90-3

बाँस की टहनियाँ (विदेशी गौरव ग्रंथ)
ले. बाई जुयी
हिंदी अनु. प्रियदर्शी ठाकुर ख़याल
पृ. 232; ₹ 165/-
ISBN : 978-81-7201-485-8
(पुनर्मुद्रण)

बाबा फरीद (विनिबंध)
ले. बलवंत सिंह आनंद
पृ. 92; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1582-5
(पुनर्मुद्रण)

बाबरनामा (बाबर के संस्मरण, तुर्की)
हिंदी अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 468; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-87567-13-9
(पुनर्मुद्रण)

बच्चों ने दबोचा चोर
(मराठी नाटक, *मुले चोर पकड़ात*)
ले. गंगाधर गाडगिल
हिंदी अनु. साने
पृ. 56; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-7201-522-0
(पुनर्मुद्रण)

बड़ी लंबी रात
(पुरस्कृत ओड़िया कहानी-संग्रह)
ले. चंद्रशेखर रथ
हिंदी अनु. दीप्ति प्रकाश
पृ. 108; ₹ 130/-
ISBN : 978-93-88467-10-9

बलिवाडा कांताराव की कहानियाँ
(पुरस्कृत तेलुगु कहानियाँ)
ले. बलिवाडा कांताराव
हिंदी अनु. के. लीलावती
पृ. 230; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-940300-7-2

बर्फ़ पर पड़े पदचिह्न
(पुरस्कृत कश्मीरी उपन्यास)
ले. प्राण किशोर
हिंदी अनु. रफीक मसूदी
पृ. 120; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-4338-5
(पुनर्मुद्रण)

बारहठ नरहरि दास (विनिबंध)
ले. ओंकार सिंह लखवात
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1613-6
(पुनर्मुद्रण)

बारोमास (मराठी उपन्यास)
ले. सदानंद देशमुख
हिंदी अनु. दामोदर खड़से
पृ. 344; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-4004-9
(पुनर्मुद्रण)

बौद्ध संग्रह (बौद्ध ग्रंथों से चयन)
ले. नलिनाक्ष दत्त
हिंदी अनु. राममूर्ति त्रिपाठी
पृ. 144; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-7201-344-8
(पुनर्मुद्रण)

बौना (स्वीडिश में, *द ड्वार्फ़*)
ले. पार लागेरक्विस्ट
हिंदी अनु. रमेश दवे
पृ. 180; ₹ 145/-
ISBN : 978-81-260-0512-3
(पुनर्मुद्रण)

भगत (पुरस्कृत सिंधी कविता-संग्रह)
ले. प्रेम प्रकाश
हिंदी अनु. जय गोस्वामी
पृ. 112; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-89467-09-3

भगवती चरण वर्मा (विनिबंध)
ले. श्रीलाल शुक्ल
पृ. 84; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0425-6
(पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ-1
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 96; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2676-0
(पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ-2
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 104; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2677-7
(पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ-3
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 90; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2678-4
(पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ-4
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 108; ₹ 100/-
ISBN : 978-817260-2740-8
(पुनर्मुद्रण)

भारतेंदु हरिश्चंद्र (विनिबंध)
ले. मदन गोपाल
पृ. 44; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2603-6
(पुनर्मुद्रण)

भिखारी ठाकुर (विनिबंध)
ले. तैयब हुसैन
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2630-2
(पुनर्मुद्रण)

भूली यादें मधुपुर की
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. शीलभद्र
हिंदी अनु. नीता बनर्जी
पृ. 112; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2046-1
(पुनर्मुद्रण)

भुवनेश्वर (विनिबंध)
ले. गिरीश रस्तोगी
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1029-5
(पुनर्मुद्रण)

बिहारी (विनिबंध)
ले. बच्चन सिंह
पृ. 60; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0414-0
(पुनर्मुद्रण)

बिल्ली हाउसबोट पर
(अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह, *अ कैट ऑन द हाउसबोट*)
ले. अनीता देसाई
हिंदी अनु. विमला मोहन
पृ. 32; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-492-6
(पुनर्मुद्रण)

बुलबुल की किताब
(बाङ्ला में *टुनटुनीर बोई किताब*)
ले. उपेंद्रकिशोर रॉय चौधुरी
हिंदी अनु. स्वप्न दत्त
पृ. 76; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-7201-481-0
(पुनर्मुद्रण)

बुल्लेशाह (विनिबंध)
ले. सुरिंदर सिंह कोहली
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-343-1
(पुनर्मुद्रण)

बुंदेली लोककथाएँ
(बुंदेली लोककथाओं का संकलन)
संपा. शरद सिंह
पृ. 264; ₹ 170/-
ISBN : 978-81-260-4304-0
(पुनर्मुद्रण)

चंदबरदाई (बुंदेली)
ले. शांता सिंह
पृ. 76; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0865-0
(पुनर्मुद्रण)

चाँदनी रात का दुखांत
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह *इक छिट् चानणदी*)
ले. एवं हिंदी अनु. कर्तार सिंह दुग्गल
पृ. 224; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-7201-206-9
(पुनर्मुद्रण)

चंद्रपहाड़
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
हिंदी अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 120; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-7201-575-6
(पुनर्मुद्रण)

दादा और पोता
ले. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ
हिंदी अनु. दिनकर कुमार
पृ. 148; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2043-0
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

दलित कहानी संचयन
संपा. रमणिका गुप्ता
पृ. 400; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-1700-3
(पुनर्मुद्रण)

दीवारों से पार आकाश
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास *सत पगलां आकाशमां*)
ले. कुंदनिका कापडीआ
हिंदी अनु. नंदिनी मेहता
पृ. 308; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-7201-030-0
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

दो गज़ ज़मीन (पुरस्कृत उर्दू उपन्यास)
ले. एवं हिंदी अनु. अब्दुस्सद
पृ. 208; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-7201-775-0
(पुनर्मुद्रण)

दुष्यंत कुमार (विनिबंध)
ले. विजय बहादुर सिंह
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2633-3
(पुनर्मुद्रण)

फनी बदायूँनी (विनिबंध)
ले. मुगनी तबस्सुम
हिंदी अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-843-6
(पुनर्मुद्रण)

फादर कामिल बुल्के (विनिबंध)
ले. दिनेश्वर प्रसाद
पृ. 116; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1416-3
(पुनर्मुद्रण)

फ़ौजी लड़कियाँ तथा अन्य कहानी
(चिनुआ अचेबे की अंग्रेज़ी में कहानियाँ)
ले. चिनुआ अचीबी
हिंदी अनु. हरीश नारंग
पृ. 92; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-7201-171-0
(पुनर्मुद्रण)

गढ़वली लोकगीत (गढ़वाल लोकगीत)
संपा. गोविंद चातक
पृ. 456; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-1001-1
(पुनर्मुद्रण)

गणेश शंकर विद्यार्थी (विनिबंध)
ले. कृष्ण बिहारी मिश्र
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0006-7
(पुनर्मुद्रण)

गरीबदास (विनिबंध)
ले. लालचंद गुप्त 'मंगल'
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-3087-3
(पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब (विनिबंध)
ले. मोहम्मद मुजीब
हिंदी अनु. रमेश गौड़
पृ. 98; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0424-9
(पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब और उनका युग
ले. पवन कुमार वर्मा
हिंदी अनु. निशात ज़ैदी
पृ. 240; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-260-2554-1
(पुनर्मुद्रण)

घनानंद (विनिबंध)
ले. लल्लन राय
पृ. 108; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2605-0
(पुनर्मुद्रण)

गिरिजा कुमार माथुर रचना-संचयन
संक. एवं संपा. पवन माथुर
पृ. 412; ₹ 400/-
ISBN : 978-93-89195-43-9

गोरा (बाङ्ला गौरवग्रंथ)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
हिंदी अनु. सच्चिदानंद वात्स्यायन
पृ. 404; ₹ 230/-
ISBN : 978-81-7201-627-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

गोरखनाथ (विनिबंध)
ले. नगेंद्रनाथ उपाध्याय
पृ. 68; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2042-3
(पुनर्मुद्रण)

गोसाईं बगान का भूत
(बाङ्ला, *गोसाईं बगानेर भूत*)
ले. शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय
हिंदी अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 88; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-260-0226-9
(पुनर्मुद्रण)

गोस्वामी तुलसीदास (विनिबंध)
ले. रामजी तिवारी
पृ. 140; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0517-3
(पुनर्मुद्रण)

गोटया (मराठी नाटक)
ले. एन.डी. तमहानकर
हिंदी अनु. सुरेखा पनंदिकर
पृ. 68; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-7201-244-1
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ - I
ले. जेकब लुडविग कार्ल ग्रिम एवं विल्हेम कार्ल ग्रिम
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 218; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2041-6
(पुनर्मुद्रण)

ग्रिम बंधुओं की कहानियाँ - II
ले. जेकब लुडविग कार्ल ग्रिम एवं विल्हेम कार्ल ग्रिम
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 220; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2041-6
(पुनर्मुद्रण)

गुमशुदा दैर की गूँजती घंटियाँ
(पुरस्कृत उर्दू कविता)
ले. एवं हिंदी अनु. शीन काफ़ निज़ाम
पृ. 116; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-4312-5
(पुनर्मुद्रण)

गुरु गोविंद सिंह (विनिबंध)
ले. महीप सिंह
पृ. 106; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0330-3
(पुनर्मुद्रण)

गुरु तेग बहादुर (विनिबंध)
ले. महिंदर पाल सिंह
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-973-0
(पुनर्मुद्रण)

ग्यारह तुर्की कहानियाँ
हिंदी अनु. मस्तराम कपूर
पृ. 156; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2433-9
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

हब्बा खातून (विनिबंध)
ले. श्यामलाल साधु
हिंदी अनु. शिबान कृष्ण रैना
पृ. 60; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2731-6
(पुनर्मुद्रण)

हेंस एंडरसन की कहानियाँ - 1
हिंदी अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 248; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2487-2
(पुनर्मुद्रण)

हेंस एंडरसन की कहानियाँ - 2
हिंदी अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 228; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2488-9
(पुनर्मुद्रण)

हरिशंकर परसाई (विनिबंध)
ले. विश्वनाथ त्रिपाठी
पृ. 124; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2547-3
(पुनर्मुद्रण)

हरिवंश राय बच्चन (विनिबंध)
ले. बिशन टंडन
पृ. 192; ₹ 175/-
ISBN : 978-81-260-2743-9
(पुनर्मुद्रण)

हवेली के अंदर (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास, *इनसाइड द हवेली*)
ले. रमा मेहता
हिंदी अनु. कांति सिंह
पृ. 148; ₹ 115/-
ISBN : 978-81-7201-805-4
(पुनर्मुद्रण)

हजारी प्रसाद द्विवेदी (किशोरोपयोगी जीवनी)
ले. विश्वनाथ त्रिपाठी
पृ. 60; ₹ 95/-
ISBN : 978-81-940300-8-9

हजारी प्रसाद द्विवेदी (विनिबंध)
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0016-6
(पुनर्मुद्रण)

हिमाचली लोक कथाएँ (हिंदी में हिमाचल प्रदेश की लोककथाओं का संकलन)
संक. एवं संपा. सुदर्शन वशिष्ठ
पृ. 360; ₹ 220/-
ISBN : 978-81-260-4308-8
(पुनर्मुद्रण)

हिमालय में
(पुरस्कृत कोंकणी यात्रावृत्तांत)
ले. रवींद्र केलेकर
हिंदी अनु. प्रभा वी. भट
पृ. 84; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-260-4322-4
(पुनर्मुद्रण)

हिंदी अनुवाद विमर्श (खंड-1)
संपा. अवधेश कुमार सिंह
पृ. 448; ₹ 400/-
ISBN : 978-93-89467-12-3

हिंदी अनुवाद विमर्श (खंड- 2)
संपा. अवधेश कुमार सिंह
पृ. 408; ₹ 350/-
ISBN : 978-93-89467-11-6

हिंदी दलित साहित्य
ले. मोहनदास नेमिशराय
पृ. 360; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-8677-79-7
(पुनर्मुद्रण)

हिंदी कहानी संग्रह (आधुनिक हिंदी कहानी-संकलन)
संक. भीष्म साहनी
पृ. 384; ₹ 150/-
ISBN : 978-81-7201-657-9
(पुनर्मुद्रण)

होनहार बच्चे (मराठी बाल नाटक)
ले. गंगाधर गाडगीळ
हिंदी अनु. माधवी देशपांडे
पृ. 40; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2594-7
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

इंतिखाब-ए-कलम गोरखपुरी
संक. हैदर जाफ़री सैयद
पृ. 256; ₹ 175/-
ISBN : 978-93-89195-91-0
(पुनर्मुद्रण)

जयशंकर प्रसाद (विनिबंध)
ले. रमेशचंद्र शाह
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260--0422-5
(पुनर्मुद्रण)

जलपरी का मायाजाल (मेघालय की प्राचीन और लोककहानियों का संग्रह)
ले. वेबस्टार डेविस
हिंदी अनु. अल्मा सोहिलिया
पृ. 48; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1817-8
(चौथा पुनर्मुद्रण)

जांभोजी (विनिबंध)
ले. हीरालाल माहेश्वरी
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2434-6
(पुनर्मुद्रण)

जनजतियाँ और उनकी लोकवार्ताएँ
ले. अर्जुन दास केसरी
पृ. 240; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-89195-97-2

जापान की कथाएँ (जापान की प्राचीन और लोककथाओं का संग्रह)
ले. साइजी माकिनो
पृ. 68; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-260-1218-3
(पुनर्मुद्रण)

जायसी (विनिबंध)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 68; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-401-8
(पुनर्मुद्रण)

झंझा भवन (अंग्रेज़ी गौरवग्रंथ, *वुथरिंग हाइट्स*)
ले. एमिली ब्रोंटे
हिंदी अनु. मधुब्रज अंशुमाली
पृ. 320; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89195-92-7
(पुनर्मुद्रण)

जीवन के सफ़र में (पुरस्कृत ओड़िआ आत्मकथा, *जिबेनार चलपथे*)
ले. पठाणी पटनायक
हिंदी अनु. एनी राय
पृ. 246; ₹ 275/-
ISBN : 978-93-88468-48-0

जंगल कथा
ले. औरासियो किरोगा
हिंदी अनु. प्रीति पंत
पृ. 60; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2555-8
(पुनर्मुद्रण)

जंगल की एक रात (मराठी कहानी, *रानाताली रात*)
ले. लीलावती भागवत
हिंदी अनु. अरुंधति देवस्थले
पु. 48; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-260-0228-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

जंगल टापू (पंजाबी में बाल गौरवग्रंथ)
ले. जसबीर भुल्लर
हिंदी अनु. शांता ग्रोवर
पृ. 64; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-7201-482-7
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
पृ. 56; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2426-4
(पुनर्मुद्रण)

कबीर एक चयन (हिंदी संत कवि की रचनाओं का संकलन)
संपा. रामवचन रॉय
पृ. 116; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-4323-1
(पुनर्मुद्रण)

कबूतरों की उड़ान (अंग्रेज़ी उपन्यास, *ए फ्लाइट ऑफ़ द पिजंस*)
ले. रस्किन बॉन्ड
हिंदी अनु. सौमित्र मोहन
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-806-1
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

कहानी सूफ़ी की ज़ुबानी (मलयाळम् उपन्यास)
ले. के.पी. रामनुन्नी
हिंदी अनु. पी.के. राधामणि
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2144-4
(पुनर्मुद्रण)

कारागार (स्वतंत्रता सेनानी के संस्मरण)
ले. उर्मिला शास्त्री
पृ. 88; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-0440-9
(पुनर्मुद्रण)

करूर नीलकांत पिळळै : चुनिंदा कहानियाँ
ले. नीलकांत पिळळै
हिंदी अनु. रति सक्सेना
पृ. 100; ₹ 96/-
ISBN : 978-81-260-0318-1
(पुनर्मुद्रण)

कश्मीरी की प्रतिनिधि कहानियाँ
संक. एवं अनु. गौरीशंकर रैणा
पृ. 184; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-260-5075-8
(पुनर्मुद्रण)

केशव प्रसाद पाठक (विनिबंध)
ले. सत्येंद्र शर्मा
पृ. 148; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-5210-3
(पुनर्मुद्रण)

ख़ज़ाने वाली चिड़िया (हिंदी बाल उपन्यास)
ले. प्रकाश मनु
पृ. 144; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-4763-5
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

किशोर कहानियाँ
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
हिंदी अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 158; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-0747-9
(पुनर्मुद्रण)

लघु कथा संग्रह - 1
संपा. जयमंत मिश्र
हिंदी अनु. रेखा व्यास
पृ. 128; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-1219-0
(पुनर्मुद्रण)

लघु कथा संग्रह - 2
संपा. जयमंत मिश्र
हिंदी अनु. रेखा व्यास
पृ. 152; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-1219-0
(पुनर्मुद्रण)

ललद्यद
ले. जयलाल कौल
हिंदी अनु. शिबन कृष्ण रैना
पृ. 112; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2874-0
(पुनर्मुद्रण)

मछुआरे (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास, *चेम्मीन*)
ले. तकष़ी शिवशंकर पिळळै
हिंदी अनु. भारती विद्यार्थी
पृ. 168; ₹ 125/-
ISBN : 978-81-260-2609-8
(पुनर्मुद्रण)

महादेवी रचना संचयन
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 296; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-260-0437-9
(पुनर्मुद्रण)

महावीर प्रसाद द्विवेदी (विनिबंध)
ले. नंदकिशोर नवल
पृ. 98; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0672-4
(पुनर्मुद्रण)

मैथिलीशरण गुप्त (विनिबंध)
ले. रेवती रमन
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0013-5
(पुनर्मुद्रण)

माखनलाल चतुर्वेदी (विनिबंध)
ले. श्रीकांत जोशी
पृ. 152; ₹ 130/-
ISBN : 978-81-260-2608-1
(पुनर्मुद्रण)

मोरों वाला बाग़ (अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अनीता देसाई
हिंदी अनु. विमला मोहन
पृ. 40; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-7201-491-8
(पुनर्मुद्रण)

नंद चतुर्वेदी (हिंदी विनिबंध)
ले. पल्लव
पृ. 110; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-05-5

नया चना चबेना (पुरस्कृत कश्मीरी कृति)
ले. गुलाम नबी आतश
हिंदी अनु. बीना बुदकी
पृ. 94; ₹ 115/-
ISBN : 978-93-89195-30-9

नेपाली लोककथाएँ (भाग-1)
हिंदी अनु. प्रकाश प्रसाद उपाध्याय
पृ. 88; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2673-9
(पुनर्मुद्रण)

नेपाली लोककथाएँ (भाग-2)
हिंदी अनु. प्रकाश प्रसाद उपाध्याय
पृ. 76; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-2673-9
(पुनर्मुद्रण)

निर्बुद्धि का राजकाज
(हिंदी लोककथाएँ)
ले. गोपाल दास
पृ. 96; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-7201-996-9
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

निश्चलदास (विनिबंध)
ले. लालचंद गुप्त 'मंगल'
पृ. 102; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-32-3

पड़ोसी (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास, *अयलक्कर*)
ले. पी. केशव देव
हिंदी अनु. सुधांशु चतुर्वेदी
पृ. 300; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-88468-86-2
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

पगली तेरे साथ (पुरस्कृत बाङ्ला कविता-संग्रह)
ले. जय गोस्वामी
हिंदी अनु. निशांत
पृ. 106; ₹ 125/-
ISBN : 978-93-89195-33-0

पक्या और उसका गैंग (बाल मराठी उपन्यास)
ले. गंगाधर गाडगीळ
हिंदी अनु. माधवी देशपांडे
पृ. 40; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2544-2
(पुनर्मुद्रण)

परमाणु बम की छाया में
ले. मिकी युइचिरो
हिंदी अनु. हर्जेंद्र चौधरी
पृ. 256; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-260-5060-4
(पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ - 1
(प्रेमचंद की चुनिंदा कहानियाँ)
ले. प्रेमचंद
संक. अमृतराय
पृ. 100; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-7201-975-4
(पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ - 2
(प्रेमचंद की चुनिंदा कहानियाँ)
ले. प्रेमचंद
संक. अमृतराय
पृ. 98; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-7201-993-8
(पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ का बाल साहित्य (भाग-1)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
संपा. लीला मजूमदार एवं क्षितिज राय
हिंदी अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 160; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-0009-8
(पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ का बालसाहित्य (भाग-2)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
संपा. लीला मजूमदार एवं क्षितिज राय
हिंदी अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 176; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-0008-1
(पुनर्मुद्रण)

राधाचरण गोस्वामी रचना-संचयन
संपा. रामनिरंजन परिमलेंदु
पृ. 416; ₹ 310/-
ISBN : 978-81-940300-6-5

रांगेय राघव रचना-संचयन
संक. एवं संपा. सीमन्तिनी राघव
पृ. 475; ₹ 400/-
ISBN : 978-93-87989-37-5

समकालीन कश्मीरी कविता
(कविता-संग्रह *समकाल कथीर शैरा*)
संपा. अज़ीज़ हाजिनी
हिंदी अनु. गौरीशंकर रैणा
पृ. 172; ₹ 801/-
ISBN : 978-93-89778-45-8

सरस्वतीचंद्र (भाग-1)
(भारतीय गौरवग्रंथ—गुजराती उपन्यास)
ले. गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी
हिंदी अनु. आलोक गुप्त
पृ. 328; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-4538-9
(पुनर्मुद्रण)

शिवपूजन सहाय रचना-संचयन
संक. एवं संपा. मंगलमूर्ति
पृ. 486; ₹ 475/-
ISBN : 978-93-89195-09-5

सुकुमार राय : चुनिंदा कहानियाँ
हिंदी अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 80; ₹ 100/-
ISBN : 978-81-260-1415-6
(पुनर्मुद्रण)

सुंदर और सुंदरियाँ (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास, *सुंदरिकालुम सुदरनमारुम*)
ले. पी.सी. कुट्टिकृष्णन उरूब
हिंदी अनु. सुधांशु चतुर्वेदी
पृ. 472; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-88468-87-9
(पुनर्मुद्रण)

सुनो कहानी
संपा. विष्णु प्रभाकर
पृ. 60; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-7201-092-8
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

सूरज और मोर (मेघालय की लोककथाएँ)
ले. वेबस्टार डेविस जिरवा
हिंदी अनु. अल्मा सुहाल्या
पृ. 72; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-260-1818-5
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

तट पर प्रतीक्षा
ले. तेमसुला आओ
हिंदी अनु. श्रुति माधवेंद्र
पृ. 84; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-3238-9
(पुनर्मुद्रण)

वानप्रस्थ (पुरस्कृत ओड़िया नाटक)
ले. विजय मिश्र
हिंदी अनु. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
पृ. 80; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-88468-49-7

वनदेवी
(विज्ञान साहित्य, *कनककान्नी*, तमिऴ)
ले. कालवी गोपालकृष्णन
हिंदी अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 56; ₹ 75/-
ISBN : 978-81-7201-576-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

विपुल दिगंत (पुरस्कृत ओड़िया काव्य-संग्रह)
ले. गोपाल कृष्ण
हिंदी अनु. राजेंद्र प्रसाद मिश्र
पृ. 124; ₹ 175/-
ISBN : 978-93-89467-13-0

विश्वंभरनाथ उपाध्याय (विनिबंध)
ले. हेतु भारद्वाज
पृ. 88; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-940300-2-7

विवेकी राय (हिंदी विनिबंध)
ले. सत्यकाम
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-08-6

कन्नड

आनंदकंद (विनिबंध)
ले. राघवेंद्र पाटिल
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-0810-5

अंतराल (पुरस्कृत मराठी निबंध, *पैस*)
ले. दुर्गा भागवत
कन्नड अनु. चंद्रकांत पोकले
पृ. 104; ₹ 115/-
ISBN : 978-93-89778-22-9

बालकृष्ण भगवंत बोरकर (मराठी विनिबंध)
ले. प्रभा गनोरकर
कन्नड अनु. शांतिदेवी एस. गुंजल
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-75-0

बावी (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास *कुवो*)
ले. अशोकपुरी गोस्वामी
कन्नड अनु. डी. एन. श्रीनाथ
पृ. 336; ₹ 330/-
ISBN : 978-93-89467-30-7

दक्षिण कर्नाटक जनपद कथालु
(दक्षिण कर्नाटक के लोककथाओं का संकलन)
संपा. जे. परमशिवैः
पृ. 288; ₹ 230/-
ISBN : 81-260-0026-0 (पुनर्मुद्रण)

दिगंतदा काडगे (पुरस्कृत उर्दू कविता संग्रह आफ़ाक़ की तरफ़)
ले. खलील मामून
कन्नड अनु. माहेर मंसूर एवं
बी.आर. लक्ष्मण राव
पृ. 108; ₹ 115/-
ISBN : 978-93-89195-88-0

दिक्कू (पुरस्कृत कोंकणी उपन्यास)
ले. देविदास कदम
कन्नड अनु. एस.एम. कृष्ण राव
पृ. 256; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-88468-60-2

द्रौपदी (पुरस्कृत तेलुगु उपन्यास)
ले. यार्लगड्डा लक्ष्मी प्रसाद
कन्नड अनु. के. शारदा
पृ. 272; ₹ 210/-
ISBN : 978-93-88468-25-1

होसगान्नद प्रबंध संकलन
(आधुनिक कन्नड निबंधों का संकलन)
संपा. गोरूर रामास्वामी अयंगर
पृ. 232; ₹ 195/-
ISBN : 978-93-89195-87-3
(पुनर्मुद्रण)

जनपद मट्टू बुदाकट्टू गीतेगलु
(कन्नड लोक एवं जनजातीय गीतों का संकलन)
संपा. कृष्णमूर्ति हानूर
पृ. 208; ₹ 180/-
ISBN : 81-260-0555-6 (पुनर्मुद्रण)

केम्पु चिन्नेगलु (पुरस्कृत मलयाळम् कहानी-संग्रह *चूवन्न चिन्नङळ*)
ले. एम. सुकुमारन
कन्नड अनु. अशोक कुमार
पृ. 280; ₹ 285/-
ISBN : 978-93-89467-31-4

खजानेया हक्की (हिंदी बाल उपन्यास *ख़ज़ाने वाली चिड़िया*)
ले. प्रकाश मनु
कन्नड अनु. मालती
पृ. 144; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-89195-86-6

कीर्तिनाथ कुर्तकोटी (कन्नड विनिबंध)
ले. एस.आर. विजयशंकर
पृ. 116; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-22-2

कुतुहालादिन्दा नानू निद्रिसिदे
(पुरस्कृत मराठी उपन्यास, *उत्सुकतेने मी झोपलो*)
ले. श्याम मनोहर
कन्नड अनु. विट्ठल कट्टी
पृ. 192; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89467-32-1

लक्ष्मीशा (कन्नड विनिबंध)
ले. ए. सुब्बन्ना राय
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-88468-572-2

मनुष्यनिगे ओंदु मुन्नुदी (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *मनुष्याणु ओरु आमुखम*)
ले. सुभाष चंद्रन
कन्नड अनु. अशोक कुमार
पृ. 400; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-88468-24-4

मिरी मगालु (असमिया उपन्यास *मिरी जियारी*)
ले. रजनीकांत बोरदोलोई
कन्नड अनु. गुरुनाथ जोशी
पृ. 96; ₹ 105/-
ISBN : 978-9389195-50-7
(पुनर्मुद्रण)

मिर्जी अन्नाराय (कन्नड विनिबंध)
ले. शिवानंद गली
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-37-8

मोहनदास (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *मोहनदास*)
ले. उदय प्रकाश
कन्नड अनु. धरणेन्द्र कुरकुरी
पृ. 96; ₹ 110/-
ISBN : 978-93-89467-18-5

उरा बावी (तेलुगु गौरवग्रंथ—कहानियाँ)
ले. कोलाकालुरी एनोक
कन्नड अनु. ए.आर. निरुपमा
पृ. 216; ₹ 180/-
ISBN : 978-93-89467-28-4

फीनिक्स : बुदियिनदेद्दा नविलु
(पुरस्कृत मराठी कहानी-संग्रह *फिनिक्सच्या राखेतून उठला मोर*)
ले. जयंत पवार
कन्नड अनु. चंद्रकांत पोखले
पृ. 184; ₹ 165/-
ISBN : 978-93-89195-54-5

आर. नरसिम्हाचार्य (कन्नड विनिबंध)
ले. टी. वी. वेंकटचला शास्त्री
पृ. 148; ₹ 50 /-
ISBN : 978-93-89195-56-8

आर. एस. मुगली (कन्नड विनिबंध)
ले. एन.के. लोलक्ष्मी
पृ.104; ₹ 50 /-
ISBN : 978-93-89467-23-9

रा. शि. (कन्नड विनिबंध)
ले. जे. श्रीनिवासमूर्ति
पृ. 160; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-38-5

सक्कारियारा कथेगळु (पुरस्कृत मलयाळम् कहानी-संग्रह *ज़करियायुटे कथकाळ*)
ले. पॉल ज़करिया
कन्नड अनु. के. के. नायर
पृ. 720; ₹ 700/-
ISBN : 978-93-89467-59-8

सर्वज्ञ (कन्नड विनिबंध)
ले. एवं अनु. के.बी. प्रभु प्रसाद
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 81-260-2164-0 (पुनर्मुद्रण)

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना (विनिबंध)
ले. कृष्णदत्त पालीवाल
कन्नड अनु. नामदेव गौड़ा
पृ. 136; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-38-0

शिशुनाला शरीफ साहेबरु (कन्नड विनिबंध)
ले. शिवानंद गुब्बन्नावर
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN : 81-7201-1820-2
(पुनर्मुद्रण)

श्रेष्ठ बर्मी कथेगळु
(श्रेष्ठ बर्मी कहानियाँ)
संपा. चंद्रप्रकाश प्रभाकर
कन्नड अनु. आर. लक्ष्मीनारायण
पृ. 520; ₹ 470/-
ISBN : 978-93-89467-26-0

श्यामलादेवी (कन्नड विनिबंध)
ले. आर. तरिणी शुभदायिनी
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-63-7

श्री बसवन्नानावारा वचन संग्रह
(श्री बसवन्ना के चयनित वचन)
संपा. एस.एस. मालावद
पृ. 168; ₹ 155 /-
ISBN : 81-260-1385-0 (पुनर्मुद्रण)

सूर्यास्त (असमिया उपन्यास *एस्टोरा : द सनसेट*)
ले. होमेन बरगोहाईं
कन्नड अनु. सी.सी. वस्त्राड
पृ. 120; ₹ 125/-
ISBN : 978-93-89195-51-4

स्वप्न लिपि (पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह)
ले. अजंता (पी.वी. शास्त्री)
कन्नड अनु. चिदानंद साली
पृ. 80; ₹ 100/-
ISBN : 978-93-89195-28-6

तुकाराम गाथा (तुकाराम के मराठी अभंगों का संकलन)
संपा. भालचंद्र नेमाडे
कन्नड अनु. चंद्रकांत पोकले
पृ. 176; ₹ 155/-
ISBN : 978-93-88468-97-8

उत्तर कर्नाटकदा जनपद कथेगळु
(उत्तर कर्नाटक के लोककथाओं का संकलन)
संपा. सिम्पी लिंगन्ना
पृ. 224; ₹ 190/-
ISBN : 81-260-0025-2
(पुनर्मुद्रण)

कश्मीरी

अब्दुल अहद ज़रगर (संगोष्ठी आलेख)
संपा. शहजादा रफीक़
पृ. 264; ₹ 290/-
ISBN : 978-93-89778-17-5

अख इंसान अख गारेह अख दुनिया
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास *ए मैन ए होम एंड ए वर्ल्ड*)
ले. जयकांतन
कश्मीरी अनु. गुलाम नबी आतश
पृ 236; ₹ 260/-
ISBN : 978-93-89778-13-7

गुलाम नबी नाज़िर (कश्मीरी विनिबंध)
ले. गुलाम नबी अताश
पृ. 94; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-31-1

लफ़्ज़-ए नब
(पुरस्कृत ओड़िया कविता-संग्रह *शब्द आकाश*)
ले. सीताकांत महापात्र
कश्मीरी अनु. मोहम्मद ज़मां अज़ुर्दा
पृ. 124; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89778-39-7

मी गत्शी ज़ून (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *मुझे चाँद चाहिए*)
ले. सुरेंद्र वर्मा
कश्मीरी अनु. रूपकृष्ण भट
पृ. 692; ₹ 750/-
ISBN : 978-93-89778-44-1

मोहम्मद अहसन अहसन
(कश्मीरी विनिबंध)
ले. रियाज़ुल हसन
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-34-2

पुष्कर भान (कश्मीरी विनिबंध)
ले. माखन लाल सर्राफ
पृ. 88; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-29-8

यादे वोत्रुक दोउख (पुरस्कृत डोगरी कविता-संग्रह *चेतन दी रोल*)
ले. चंपा शर्मा
कश्मीरी अनु. मोहन कृशन कौल
पृ. 144; ₹ 175/-
ISBN : 978-93-89778-30-4

कोंकणी

नटसम्राट (पुरस्कृत मराठी नाटक)
ले. वी. वी. शिरवाडकर
कोंकणी अनु. उदय माणकिकर
पृ. 128; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-89467-07-9

स्वामी विवेकानंद (विनिबंध)
ले. निमाई सधन बोस
कोंकणी अनु. उषा कामत
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-94030-03-4

मैथिली

आधुनिक मैथिली नाट्य संचयन
संपा. रामानंद झा रमन'
पृ. 480; ₹ 465/-
ISBN : 978-93-89467-39-0

आधुनिक भारतीय कविता संचयन-पंजाबी (मैथिली)
संपा. जसविंदर सिंह
मैथिली अनु. अरविंद कुमार मिश्र 'नीरज'
पृ. 264; ₹ 290/-
ISBN : 978-93-89467-40-6

अरण्यक (बाङ्ला उपन्यास)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
मैथिली अनु. केशकर ठाकुर
पृ. 224; ₹ 260 /-
ISBN : 978-93-89467-02-4

बारहो मास (पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. सदानंद देशमुख
मैथिली अनु. भालचंद्र झा
पृ. 372; ₹ 500/-
ISBN : 978-93-89195-02-6

जाँच अयोग (पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. सा. कंदासामी
मैथिली अनु. डॉ. ललिता झा
पृ. 196; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-89467-72-7

मैथिली ज्योति लोकमहागाथा
संपा. शिव प्रसाद यादव
पृ. 136; ₹ 185/-
ISBN : 978-93-89195-70-5

पार्थिवक सपना (तमिऴ उपन्यास)
ले. कल्कि
मैथिली अनु. योगानंद झा
पृ. 236; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89467-42-0

फड़ीछ जखन भेल
(पुरस्कृत कश्मीरी कहानी-संग्रह)
ले. सोमनाथ जुत्शी
मैथिली अनु. ललिता झा
पृ. 124; ₹ 185/-
ISBN : 978-93-89467-73-4

रबींद्रनाथ ठाकुर (विनिबंध)
ले. शिशिर कुमार घोष
मैथिली अनु. नीलम कुमारी
पृ. 122; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-88468-30-5

राजेश्वर झा (विनिबंध)
ले. महेंद्र झा
पृ. 96; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-87567-53-5

राजमोहन झा (विनिबंध)
ले. अशोक
पृ. 102; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-44-4

राजनगर (बाङ्ला उपन्यास)
ले. अमिय भूषण मजूमदार
मैथिली अनु. विनोद कुमार झा
पृ. 408; ₹ 380/-
ISBN : 978-93-89195-69-9

रामधारी सिंह दिनकर (विनिबंध)
ले. विजेंद्र नारायण सिंह
मैथिली अनु. ममता चौधुरी झा
पृ. 116; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-01-7

मलयाळम्

आदिवासी भाषा संस्कारम
(जनजातीय भाषा और संस्कृति पर आयोजित संगोष्ठी आलेख)
संपा. हास्केराली ई.सी.
पृ. 184; ₹160/-
ISBN : 978-93-89195-34-7

एल्ला मनुष्यरुम सहोदरार
संपा. कृष्णा कृपलानी
मलयाळम् अनु. कुट्टीपुझा कृष्ण पिल्लई
पृ. 272; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-88468-68-8
(पुनर्मुद्रण)

ग़ालिब : व्यक्ति, कालम (*ग़ालिब : द मैन, द टाइम्स*)
ले. पवन के. वर्मा
मलयाळम् अनु. वी.के. नारायणन
पृ. 304; ₹ 225/-
ISBN : 978-93-89195-27-9

कल्लिक्कतिंटे इतिहासम् (पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास, *कल्लिकट्टु इतिहासम*)
ले. वैरमुत्तु
मलयाळम् अनु. के. एस. वेंकटाचलम
पृ. 284; ₹ 225/-
ISBN : 978-93-89195-52-1

नाटकमंजरी (20वीं शताब्दी के मलयाळम् नाटकों का संकलन)
संपा. राजा वारियर
पृ. 368; ₹ 280/-
ISBN : 978-93-89467-27-7

ओलप्पमन्ना (मलयाळम् विनिबंध)
ले. के.पी. शंकरन
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-71-2

पर्वम (कन्नड उपन्यास, पर्व)
ले. एस.एल. भैरप्पा
मलयाळम् अनु. सुधाकरन रमनथली
पृ. 928; ₹ 700/-
ISBN : 978-93-89467-93-2

तकष़ी शिवशंकर पिळळै (मलयाळम् विनिबंध)
ले. के.एस. रवि कुमार
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-84-2

वायलार रामवर्मा (मलयाळम् विनिबंध)
ले. के. जयकुमार
पृ. 92; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-61-3

व्यलोपिल्लि श्रीधर मेनन
(मलयाळम् विनिबंध)
ले. पी. सोमन
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-31-6

मणिपुरी

लाइबाक निङ्बागी इसेई आमसुङ शाईरेङ (गीतों का संकलन)
संक. और संपा. बी. जयंतकुमार शर्मा
पृ. 288; ₹ 260/-
ISBN : 978-81-260-0601-4
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

माजायबुंगो दाराशुकोह, खंड - I
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *शाहजादा दाराशुकोह खंड I*)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
मणिपुरी अनु. थिङबाईजम कुलमणि सिंह
पृ. 624; ₹ 470/-
ISBN : 978-93-89467-65-9

मणिपुरी फुंगा वारी (लोककथाएँ)
संक. एवं संपा. आई. आर. बाबू सिंह
पृ. 86; ₹ 80/-
ISBN : 978-81-260-2015-7
(छठा पुनर्मुद्रण)

मणिपुरी वारिमाचा (कहानी-संग्रह)
संपा. अरिबम कुमार सरमा
पृ. 186; ₹ 230/-
ISBN : 978-81-7201-620-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

मराठी

अभिनवगुप्त (विनिबंध)
ले. जी.टी. देशपांडे
मराठी अनु. श्यामला मजूमदार
पृ. 208; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-89467-90-1

बहाव्याची फूला (पुरस्कृत अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह *लबरनम फ़ॉर माई हेड*)
ले. तेमसुला आओ
मराठी अनु. मैत्रेयी जोशी
पृ. 136; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-89407-16-1

बोरकरांची निवादक कविता
(बी.बी. बोरकर की चुनिंदा कविताओं का संकलन)
ले. संक. एवं संपा. प्रभा गनोरकर
पृ. 186; ₹ 200/-
ISBN : 81-7201-958-0(पुनर्मुद्रण)

दगड भिरकावु लगालोय
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, *पत्थर फेंक रहा हूँ*)
ले. चंद्रकांत देवताले
मराठी अनु. प्रफुल्ल शिलेदार
पृ. 196; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-89467-62-8

देहवाली साहित्य
संक. एवं संपा. चामुलाल राथवा
पृ. 276; ₹ 230/-
ISBN : 81-260-1222-6 (पुनर्मुद्रण)

दुश्कालात सारस (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *अकाल में सारस*)
ले. केदारनाथ सिंह
मराठी अनु. बलवंत जेडरकर
पृ. 116; ₹ 155/-
ISBN : 978-93-89467-75-8

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
मराठी अनु. जयप्रकाश सावंत
पृ. 60; ₹ 50/-
ISBN : 81-260-1145-9 (पुनर्मुद्रण)

कुसुमाग्रज (विनिबंध)
ले. निशिकांत मिरजकर
मराठी अनु. अविनाश सप्रे
पृ. 88; ₹ 50/-
ISBN : 81-260-3255-3 (पुनर्मुद्रण)

लोक विसरले आहेत
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, *लोग भूल गए हैं*)
ले. रघुवीर सहाय
मराठी अनु. गजानन चव्हाण
पृ. 112; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-89467-74-1

महाराजा सयाजीराव गायकवाड़
(विनिबंध)
ले. बाबा भांड
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-82-8

स्मारक शिला (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. पुनत्तिल कुंञ्जब्दुल्ला
मराठी अनु. छाया महाजन
पृ. 264; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-88468-64-0

वारली लोकगीते (वारली लोक गीतों का संकलन)
संपा. एवं अनु. कविता महाजन
पृ. 328; ₹ 300/-
ISBN : 81-260-0877-6 (पुनर्मुद्रण)

नेपाली

भारतीय नेपाली साहित्यमा भानुभक्तो रामायण (नेपाली)
संपा. जीवन नामदुंग एवं प्रेम प्रधान
पृ. 238; ₹ 260/-
ISBN : 978-93-89778-10-6

भारतीय नेपाली साहित्यत्मा युद्ध साहित्य (संगोष्ठी आलेख)
संपा. भूपेंद्र अधिकारी
पृ. 72; ₹ 120/-
ISBN : 978-93-88468-90-9

एम.एम. गुरुंग (नेपाली विनिबंध)
ले. सीताराम काफल
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-77-4

मन बहादुर गुरुंग (नेपाली विनिबंध)
ले. उदय सुब्बा गोर्खा
पृ. 112; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-76-7

पखेरू (पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह, *पखेरू*)
ले. रामलाल
नेपाली अनु. राजेंद्र ढकाल
पृ. 204; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89195-05-7

सआदत हसन मंटो (विनिबंध)
ले. वारिस अल्वी
नेपाली अनु. सतीश रसाइली
पृ. 83; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-88468-84-8

शांतनुकुलनंदन
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. पुरवी बरमुदै
नेपाली अनु. पूरन कुमार सरमा
पृ. 268; ₹ 295/-
ISBN : 978-93-89467-49-9

शोभाकांति थेगिम (लेपचा)
(नेपाली विनिबंध)
ले. उदय छेत्री
पृ. 76; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-06-4

सिंधी कथा संग्रह 1980-2005
(नेपाली अनुवाद)
संपा. प्रेम प्रकाश
नेपाली अनु. देवराज शर्मा
पृ. 256; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-88468-89-3

वीर बिक्रम गुरुंग (नेपाली विनिबंध)
ले. जीवन लाबर
पृ. 100; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-8967-48-2

ओड़िआ

आउ केही नुहें (पुरस्कृत हिंदी-संग्रह, *कोई दूसरा नहीं*)
ले. कुंवर नारायण
ओड़िया अनु. अपर्णा मोहंती
पृ. 208; ₹ 170/-
ISBN : 978-81-260-258478
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

अन्ना भाऊ साठे (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. बजरंग कोरडे
ओड़िया अनु. श्वेता मोहंती
पृ. 119; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-07-6

दिव्य अस्त्र (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास, *इन्हीं हथियारों से*)
ले. अमरकांत
ओड़िया अनु. आशीष कुमार राय
पृ. 768; ₹ 500/-
ISBN : 978-93-89778-05-2

हाजीजाईथिबा ज़िनिशा ओ अन्यान्य कविता (पुरस्कृत मलयाळम् कविता-संग्रह *मरन्नुवेचावास्तुक्कळ*)
ले. के. सच्चिदानंदन
ओड़िया अनु. प्रवासिनी महाकुड
पृ. 212; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-88468-63-3

ज्ञानेंद्र वर्मा चयनिका
(ज्ञानेंद्र वर्मा का चयनित लेखन)
संक. एवं संपा. बिजयानंद सिंह
पृ. 420; ₹ 400/-
ISBN : 978-93-89195-13-2

खानामिहिरंका धिपा (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *खाना मिहिरेर धिपी*)
ले. बानी बसु
ओड़िया अनु. सूर्यमणि खुंटिया
पृ. 220; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89778-08-3

कुहुदिरे घेरा रंग (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *कोहरे में क़ैद रंग*)
ले. गोविंद मिश्र
ओड़िया अनु. सबिता मिश्र
पृ. 216; ₹ 210/-
ISBN : 978-93-89778-06-9

नित्यानंद महापात्र संचयन
(नित्यानंद महापात्र के चयनित लेखन)
संक. एवं संपा. गुरुकल्याण महापात्र
पृ. 440; ₹ 420/-
ISBN : 978-93-89195-10-1

ओड़िआ समारा साहित्य
संक. सुरेश बालाबंत राय
पृ. 232; ₹ 160/-
ISBN : 978-81-260-3300-3
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

प्रणबबंधु कर चयनिका
(प्रणबबंधु कर के चुनिंदा नाटक)
संक. एवं संपा. अभिन्नचंद्र साहू
पृ. 344; ₹ 340/-
ISBN : 978-93-89195-26-2

राधानाथनका निर्बाचिता गद्य
(राधानाथ राय के चयनित निबंध)
ले. रवींद्र कुमार बिहारी
पृ. 208; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89195-83-5

सरला दास संचयन
(सरला दास का चयनित लेखन)
संक. एवं संपा. नीलाद्री भूषण हरिचंदन
पृ. 320; ₹ 230 /-
ISBN : 978-81-260-2654-8
(दूसरा पुनर्मुद्रण)

पंजाबी

बलवंत गार्गी दी पंजाबी साहित नू देन
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. जसविंदर सिंह सैनी
पृ. 136; ₹ 160/-
ISBN : 978-93-89778-42-2

बाताँ दी फुलवारी
(पुरस्कृत राजस्थानी लोककथाएँ)
ले. विजयदान देथा
पंजाबी अनु. केसर राम
पृ. 272; ₹ 285/-
ISBN : 978-93-89195-20-0

भगत (पुरस्कृत सिंधी कविता)
ले. प्रेम प्रकाश
पंजाबी अनु. परगट सिंह
पृ. 112; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-89778-49-6

कैंडिड जा आशावाद
(फ्रांसीसी गौरवग्रंथ)
ले. वॉल्टेयर
पंजाबी अनु. रमणीक अरोड़ा
पृ. 148; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89778-50-2

धरती दा गीत
(पूर्वोत्तर की कहानियों का संकलन)
संक. कैलाश सी. बराल
पंजाबी अनु. रवि रविंदर
पृ. 176; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-89195-17-0

ज्ञानी गुरुदत्त सिंह (पंजाबी विनिबंध)
ले. बलदेव सिंह
पृ. 104; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-11-3

महाभारत एक कीड़ी दा
(पुरस्कृत मराठी उपन्यास)
ले. गंगाधर गाडगीळ
पंजाबी अनु. जसविंदर कौर बिंद्रा
पृ. 976; ₹ 800/-
ISBN : 978-93-89778-51-9

मानव ज़मीन
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय
पंजाबी अनु. तरसेम
पृ. 898; ₹ 1100/-
ISBN : 978-93-89778-21-7

नैन मैम्मोलड़े
(पंजाबी कविता, नवोदय योजना)
ले. गुरबिंदर सिंह
पृ. 100; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89195-16-3

श्री नारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन
पंजाबी अनु. प्रवेश शर्मा
पृ. 144; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89778-52-6

नाटक त्रिकरी
(पुरस्कृत कश्मीरी नाटक)
ले. मोतीलाल खेमू
पंजाबी अनु. शालू कौर
पृ. 172; ₹ 190/-
ISBN : 978-93-89778-48-9

नाटककार हरचरण सिंह
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. सतनाम सिंह जस्सल
पृ. 260; ₹ 285/-
ISBN : 978-93-89195-47-7

ओम नमो
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. शांतिनाथ कुबेरप्पा देसाई
पंजाबी अनु. बलदेव सिंह
पृ. 292; ₹ 325/-
ISBN : 978-93-89778-26-7

पाताल भैरवी (पुरस्कृत असमिया उपन्यास, *पाताल भैरवी*)
ले. लक्ष्मीनंदन बोरा
पंजाबी अनु. दविंदर कौर संधू
पृ. 320; ₹ 325/-
ISBN : 978-93-89195-18-7

पुन्न ते पाप (पुरस्कृत कश्मीरी उपन्यास, *पुण्य ते पाप*)
ले. गुलाम नबी गौहर
पंजाबी अनु. सुरिंदर नीर
पृ. 296; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89195-19-4

रूह जाणे किव गाणा
(चयनित अंग्रेज़ी कविता-संग्रह)
ले. कमला दास
पंजाबी अनु. जसवंत दीद
पृ. 136; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89778-46-5

शिवकामी दी शपथ
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. कल्कि कृष्णमूर्ति
पंजाबी अनु. चंद्र मोहन
पृ. 872; ₹ 1,000/-
ISBN : 978-93-89778-53-3

राजस्थानी

आंख री किरकर
(बाङ्ला उपन्यास *चोखे बाली*)
ले. रवींद्रनाथ ठाकुर
राजस्थानी अनु. मनोहर सिंह राठौड़
पृ. 196; ₹ 230/-
ISBN : 978-93-89467-70-3

अखूत तसालो
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास, *आखेपातर*)
ले. बिंदू भट्ट
राजस्थानी अनु. मदन गोपाल लढ़ा
पृ. 184; ₹ 280/-
ISBN : 978-93-89467-89-5

अपूर्वा (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
ले. केदारनाथ अग्रवाल
राजस्थानी अनु. नवनीत पांडे
पृ. 96; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-88468-15-2

हिमतरंगिनी (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह)
ले. माखनलाल चतुर्वेदी
राजस्थानी अनु. अब्दुल समद राही
पृ. 116; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89195-42-2

हिमाला में
(पुरस्कृत कोंकणी यात्रा-वृत्तांत *हिमालयंत*)
ले. रवींद्र केलकर
राजस्थानी अनु. रामदयाल मिश्र
पृ. 80; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-89195-55-2

झोकरी कहावतो भगत
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह, *उनिंदा वर्तमान*)
ले. मंजीत टिवाणा
राजस्थानी अनु. राजूराम बिजरनिया
पृ. 80; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89467-88-8

कोठे खड़क सिंह (पुरस्कृत पंजाबी उपन्यास, *कोठे खड़क सिंह*)
ले. रामस्वरूप अणखी
राजस्थानी अनु. मनोज कुमार स्वामी
पृ. 395; ₹ 400/-
ISBN : 978-93-89195-57-6

म्हारी कविता : म्हारा गीत
(पुरस्कृत डोगरी कविता-संग्रह, *मेरी कविता मेरे गीत*)
ले. पद्मा सचदेव
राजस्थानी अनु. सूरज राव
पृ. 112; ₹ 150/-
ISBN : 978-93-89195-81-1

सादाउ लिफाफू (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *सदा खाम*)
ले. मति नंदी
राजस्थानी अनु. चंदा लाल चकवाला
पृ. 128; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-89467-91-8

सरोकार (पुरस्कृत मैथिली कहानी-संग्रह *सरोकर*)
ले. प्रदीप बिहारी
राजस्थानी अनु. भँवरलाल भ्रमर
पृ. 160; ₹ 275/-
ISBN : 978-93-88468-43-5

सोने री चिड़िया
(पुरस्कृत डोगरी कहानी-संग्रह, *सुन्ने दी चिड़ी*)
ले. ओम गोस्वामी
राजस्थानी अनु. नीरज दइया
पृ. 192; ₹ 230/-
ISBN : 978-93-89195-89-7

सूरतां (पुरस्कृत मराठी उपन्यास, *स्मरण गाथा*)
ले. जी.एन. दांडेकर
राजस्थानी अनु. अंबिका दत्त
पृ. 405; ₹ 500/-
ISBN : 978-93-89467-85-7

उजास उच्छाब
(पुरस्कृत हिंदी निबंध, *आलोक पर्व*)
ले. हजारी प्रसाद द्विवेदी
राजस्थानी अनु. जी. चरण 'शक्तिसुत'
पृ.. 204; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-89195-53-8

उपरवास तीन कथावन (पुरस्कृत गुजराती उपन्यास, *उपरवास कथात्रयी*)
ले. रघुवीर चौधरी
राजस्थानी अनु. शंकर सिंह राजपुरोहित
पृ. 676; ₹ 750/-
ISBN : 978-93-89195-98-9

संस्कृत

आधुनिक गीतसंकलनम् (*गीतगंगागोमुखम*)
संपा. अभिराज राजेंद्र मिश्र
पृ. 860; ₹ 890/-
ISBN : 978-93-89567-04-8

प्रभाकर भट्ट (विनिबंध)
ले. रवींद्र नारायण झा
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-00-0

शतावधनी आर. गणेश रचना संचयन
संपा. बलराम शुक्ल
पृ. 172; ₹ 380/-
ISBN : 978-93-89195-01-9

योगवाशिष्ठ (संगोष्ठी आलेख)
संपा. राधावल्लभ त्रिपाठी
पृ. 163; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-940300-5-8

संताली

अरण्यक (बाङ्ला उपन्यास, *अरण्यक*)
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
संताली अनु. सोमाई किस्कु
पृ. 242; ₹ 220/-
ISBN : 978-93-89195-29-3

ध्रुबु हापन
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *ध्रुबपुत्र*)
ले. अमर मित्र
संताली अनु. चंडी चरण किस्कु
पृ. 624; ₹ 550/-
ISBN : 978-93-89195-44-6

हुलसाई अक्टो
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास, *क्रांतिकाल*)
ले. प्रफुल्ल राय
संताली अनु. अनल हेम्ब्रम
पृ. 160; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89467-99-4

काहुको अर कालापानी
(हिंदी कहानी-संग्रह, *कव्वे और काला पानी*)
ले. निर्मल वर्मा
संताली अनु. चंद्र मोहन किस्कु
पृ. 180; ₹ 260/-
ISBN : 978-93-89467-69-7

लरहाई अर लरहाइया
(संताली में अनूदित नेपाली लघु महाकाव्य *युद्ध रा योद्धा*)
ले. अगम सिंह गिरी
संताली अनु. दशरथी मझी
पृ. 48; ₹ 75/-
ISBN : 978-93-89195-79-8

मोन गाबन धूरी
(पुरस्कृत ओड़िया कविता-संग्रह *तन्मय धूली*)
ले. प्रतिभा सत्पथी
संताली अनु. दमयंती बेशरा
पृ. 86; ₹ 110/-
ISBN : 978-93-89778-33-5

तूमल पाता सेरेंग
(पाता गीतों का संकलन)
संक. एवं संपा. मोतीलाल हांसदाहो
पृ. 253; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89467-97-0

सिंधी

अँधेरे में दुखंदर अखरमाला
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह *हनेरे विच सुगलदी वर्णमाला*)
ले. सुरजीत पातर
सिंधी अनु. मोहन हिमथाणी
पृ. 160; ₹ 200/-
ISBN : 978-93-87989-45-0

आज़ादिया खांपोई सिंधी नाटक
(स्वतंत्रता के बाद सिंधी नाटक पर आयोजित संगोष्ठी-आलेख)
संपा. प्रेम प्रकाश
पृ. 260; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-5307-0
(पुनर्मुद्रण)

भारत जून बाल कहानीयून (खंड-III)
(हिंदी में बाल साहित्य, *भारतीय बाल कहानियाँ*)
संपा. हरेकृष्ण देवसारे
सिंधी अनु. हुंदराज बलवाणी
पृ. 128; ₹ 170/-
ISBN : 978-93-89195-24-8

भारत जून बाल कहानीयून (खंड-IV)
(हिंदी में बाल साहित्य, *भारतीय बाल कहानियाँ*)
संपा. हरेकृष्ण देवसारे
सिंधी अनु. हुंदराज बलवाणी
पृ. 152; ₹ 190/-
ISBN : 978-93-89195-25-5

भारत जून बाल कहानीयून (खंड-I)
(हिंदी में बाल साहित्य, *भारतीय बाल कहानियाँ*)
संपा. हरेकृष्ण देवसारे
सिंधी अनु. हुंदराज बलवाणी
पृ. 136; ₹ 175/-
ISBN : 978-93-89195-22-4

भारत जून बाल कहानीयून (खंड-II)
(हिंदी में बाल साहित्य, *भारतीय बाल कहानियाँ*)
संपा. हरेकृष्ण देवसारे
सिंधी अनु. हुंदराज बलवाणी
पृ. 144; ₹ 180/-
ISBN : 978-93-89195-23-1

जदीद भारती कविता संग्रह (1950-2010) (आज़ादी के बाद की कविता, 1950-2010)
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा रेवती रमण
सिंधी अनु. वासदेव मोही
पृ. 380; ₹ 350/-
ISBN : 978-93-87567-71-9

किल्लियुं ते टंगियल शख्स
(पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह, *खूंटियों पर टंगे लोग*)
ले. सर्वेश्वर दयाल शर्मा
सिंधी अनु. भगवान अतालाणी
पृ. 136; ₹ 175/-
ISBN : 978-93-87989-64-1

तातल तई-अ-जो सच
(पुरस्कृत पंजाबी नाटक, *तत्ती तवी दा सच* का हिंदी से सिंधी में किया गया अनुवाद)
ले. आतमजीत
सिंधी अनु. हीना अगनाणी
पृ. 80; ₹ 140/-
ISBN : 978-93-87989-63-4

तमिऴ

21 नूटरांडू पुदुचेरी—कारइक्कळ तमिऴ सिरुकथइगळ (कहानी-संकलन)
संपा. सुंदर मुरुगन
पृ. 280; ₹ 255/-
ISBN : 978-93-89467-92-5

अमुतक्काणि
(ओड़िया उपन्यास)
ले. मनोज दास
तमिऴ अनु. रुद्र. तुलसीदास
पृ. 288; ₹ 260/-
ISBN : 978-93-89467-25-3

अरिग्नर अन्ना (विनिबंध)
ले. ए.स षणमुगा सुंदरम
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1123-8

अरुणगिरिनाथर (विनिबंध)
ले. वेल कार्तिकेयन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-2695-1

अशोकमित्रन (विनिबंध)
ले. सा. कंदासामी
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-58-1

सी.एस. चेल्लप्पा (विनिबंध)
ले. तिरुप्पूर कृष्णन
पृ. 110; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-36-1

चिदाम्बरा रागसियाम
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. के.पी. पूर्णचंद्र तेजस्वी
तमिऴ अनु. कृष्णास्वामी
पृ. 272; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-0834-2

इंगल थाथावुक्कु ओरु यानई इरुंदु
(मलयाळम् उपन्यास)
ले. वाईकोम मोहम्मद बशीर
तमिऴ अनु. शंकर नारायणन
पृ. 88; ₹ 110/-
ISBN : 978-93-89195-99-6

गिलगमेश कवियम (नाटक)
ले. स्टालिन
पृ. 192; ₹ 190/-
ISBN : 978-93-88468-94-7

जयकांतन (विनिबंध)
ले. के.एस. सुब्रह्मण्यन
पृ. 80; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-5332-2

जीवनानंदम (जीवनी)
ले. डी. सेल्वाराज
पृ. 255; ₹ 225/-
ISBN : 978-81-260-1547-0

कालवेली कधाईगनर्गळ
(साहित्यिक समालोचना का संकलन)
ले. एस. रमेश
पृ. 356; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-8977823-6

कालिदासर (जीवनी)
ले. को. कृष्णमूर्ति
तमिऴ अनु. सरस्वती वेणुगोपाल
पृ. 191; ₹ 165/-
ISBN : 978-81-260-0656-0

कविग्नर कन्नदासन (विनिबंध)
ले. एम. बालासुब्रह्मण्यम
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1721-X

कविग्नर कन्नदासन कविताईगळ
(कविता संकलन)
ले. सी.आर. रविंद्रन
पृ. 264; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-2364-3

कु.पा. राजगोपालनिन थेरंथेदुथा सिरुकथाईगळ (कहानी संकलन)
ले. एम. राजेंद्रन
पृ. 304; ₹ 280/-
ISBN : 978-93-89195-08-8

मदुरकवि भास्करदास (विनिबंध)
ले. पी. चोलनडान
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-95-8

महाकवि भारतीयर कात्तुराइगळ
(निबंध संकलन)
ले.जयकांतन और सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 312; ₹ 280/-
ISBN : 978-81-260-1448-2

मणिथानुक्कु ओरू मुनुराई
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. सुभाष चंद्रन
तमिळ अनु. निर्मल्या
पृ. 512; ₹ 410/-
ISBN : 978-93-89195-78-1

मीराबाई (विनिबंध)
ले. उषा एस. निल्सन
तमिऴ अनु. सा. कंदासामी
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-14-9

एन.डी. सुंदरा वादिवेलु (विनिबंध)
ले. एन. वेलुसामी
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-4451-1

ना. पिचामूर्तिन थेरनथेदुथा कथाईगळ
(कहानी संकलन)
ले. वेंकट स्वामीनाथन
पृ. 328; ₹ 280/-
ISBN : 978-81-260-0994-2

ना. पिचामूर्तिन थेरनथेडुथा कविताईगळ (कविता संकलन)
ले. ज्ञानकूथन
पृ. 176; ₹ 180/-
ISBN : 978-81-260-0993-4

ना. वनमामलाई (विनिबंध)
ले. एस. थोथाद्री
पृ. 98; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1127-2

नवीन तमीऴ सिरुकथाईगळ
(कहानी संकलन)
ले. सा. कंदासामी
पृ. 320; ₹ 245/-
ISBN : 978-81-260-0891-1

ओरू पिनांथूक्कियिन वरलात्रू कुरिप्पुगळ (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. साइरस मिस्त्री
तमिऴ अनु. मालन
पृ. 264; ₹ 240/-
ISBN : 978-93-89467-95-6

ओरू पुधु उलागम
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अमित चौधरी
तमिऴ अनु. अक्कालूर रवि
पृ. 262; ₹ 235/-
ISBN : 978-93-89467-03-1

परूवम (कन्नड उपन्यास *पर्व*)
ले. एस.एल. भैरप्पा
तमिऴ अनु. पवन्नन
पृ. 928; ₹ 650/-
ISBN : 978-81-260-1438-5

पेइक्कारुम्बु
(पुरस्कृत संस्कृत कहानियाँ)
ले. ए. राजेंद्र मिश्र
तमिऴ अनु. अलामेलू कृष्णन
पृ. 94; ₹ 115/-
ISBN : 978-93-89467-94-9

पेन्न मैया सिरुकथाईगळ
(कहानी संकलन)
ले. आर. प्रेमा
पृ. 384; ₹ 320/-
ISBN : 978-81-260-2379-1

पुथिया तमिऴ इलाक्किया वरलारू (भाग 1) (तमिऴ साहित्य का इतिहास)
ले. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम तथा नील पद्मनाभन
पृ. 432; ₹ 430/-
ISBN : 978-81-260-4360-6

पुथिया तमिऴ इलाक्किया वरलारू (भाग 2)
(तमिळ साहित्य का इतिहास)
ले. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम तथा नील पद्मनाभन
पृ. 464; ₹ 460/-
ISBN : 978-81-260-4361-3

पुथिया तमिऴ इलाक्किया वरलारू (भाग 3)
(तमिऴ साहित्य का इतिहास)
ले. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम तथा नील पद्मनाभन
पृ. 976; ₹ 890/-
ISBN : 978-81-260-4362-6

पुथिया तमिऴ सिरुकथाईगळ
(कहानी संकलन)
ले. मुहिलई राजापंदियन
पृ. 376; ₹ 300/-
ISBN : 978-93-89195-07-1

पूवी एनगुम तमिऴ कविथाई
(कविता संकलन)
ले. मालन
पृ. 144; ₹ 160/-
ISBN : 978-93-88468-95-4

राहुल सांकृत्यायन (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
तमिऴ अनु. वल्लिक्कान्नन
पृ. 72; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-940300-0-3

सरोजिनी नायडू (विनिबंध)
ले. पद्मिनी सेन गुप्ता
तमिऴ अनु. एम.के. थंगावेलन
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-15-6

सर्वयालु नयागर (विनिबंध)
ले. आर. संबथ
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89195-96-8

सिरुवर कथाईप्पदलगळ
(कविता संकलन)
ले. सी. सेतुपति
पृ. 232; ₹ 250/-
ISBN : 978-93-89467-35-2

स्वामी विवेकानंदर (विनिबंध)
ले. नेमाई सदन बोस
तमिऴ अनु. के. चेलप्पन
पृ. 168; ₹ 50/-
ISBN : 978-81-260-1714-7

तमीऴ सिरुकथाई कलंजियम
(कहानी संकलन)
ले. ए. चिदंबरनाथ चेट्टियार
पृ. 304; ₹ 235/-
ISBN : 978-81-260-0990-X

तमिऴ सिरुकथाईगळ (खंड 2)
(कहानी संकलन)
ले. अखिलन
पृ. 208; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-7201-429-5

तमिऴगा पजहंकुदिगालिन वाईमोज़ही इलाक्कियम
(संगोष्ठी आलेख)
ले. आर. संबथ
पृ. 416; ₹ 350/-
ISBN : 978-93-88468-98-5

तमिऴहिल सूयासारथीरंगळ
(आत्मकथाओं का संकलन)
ले. सा. कंदासामी
पृ. 333; ₹ 290/-
ISBN : 978-93-88468-85-5

तमस (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. भीष्म साहनी
तमिऴ अनु. वेंकट स्वामीनाथन
पृ. 416; ₹ 345/-
ISBN : 978-81-260-1656-6

थारकाला इंडिया सिरुकथाईगळ (खंड 1) (कहानियों का संकलन)
ले. विभिन्न लेखक
तमिऴ अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 200; ₹ 200/-
ISBN : 978-81-7201-161-X

थारकाला इंडिया सिरुकथाईगळ (खंड 2) (कहानियों का संकलन)
ले. विभिन्न लेखक
तमिऴ अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 328; ₹ 280/-
ISBN : 978-81-260-0040-6

थारकाला इंडिया सिरुकथाईगळ (खंड 3) (कहानियों का संकलन)
ले. विभिन्न लेखक
तमिऴ अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 295; ₹ 270/-
ISBN : 978-81-7201-286-1

थी. का. शिवशंकरन (विनिबंध)
ले. आर. कामरासु
पृ. 128; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-67-3

वनवासी (बाङ्ला उपन्यास)
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
तमिऴ अनु. टी.एन. सेनापति
पृ. 400; ₹ 330/-
ISBN : 978-93-89195-94-1

वंगा इलाक्किया वरलारू
(बाङ्ला साहित्य का इतिहास)
ले. सुकुमार सेन
तमिऴ अनु. पी.एन. अप्पुसामी
पृ. 544; ₹ 430/-
ISBN : 978-93-89195-48-4

ज़कारियाविन कथाईगळ (पुरस्कृत मलयाळम् कहानियाँ)
ले. पॉल ज़कारिया
तमिऴ अनु. के.वी. जयश्री
पृ. 312; ₹ 250/-
ISBN : 978-81-260-4444-3

तेलुगु

अनंतपुरम
(पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. कुम. वीरभद्रप्पा
तेलुगु अनु. रंगनाथ रामचन्द्र राव
पृ. 504; ₹ 420/-
ISBN : 978-93-89467-57-4

बाईलिंगुअल डिक्शनेरी : कन्नड तेलुगु निघान्तुवु
संक. आर. शेषा शास्त्री एवं
जे. सदानंदम
पृ. 1024; ₹ 780/-
ISBN : 978-93-89467-98-7

चंडीदास प्रेम गीतालु
(बाङ्ला प्रेम गीत)
ले. चंडीदास
तेलुगु अनु. पेरुगु रामकृष्ण
पृ. 80; ₹ 100/-
ISBN : 978-93-89778-18-2

गोरा शास्त्री
(तेलुगु विनिबंध)
ले. गोविंदराजू चक्रधर
पृ. 124; ₹ 50/-
ISBN : 81-260-1977-8
(पुनर्मुद्रण)

उर्दू

इक्कीसवीं सदी में उर्दू नॉवेल
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. रहमान अब्बास
पृ. 320; ₹ 400/-
ISBN : 978-93-89778-55-7

दारा शिकोह, भाग-2
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. श्यामल गंगोपाध्याय
अनु. खुर्शीद आलम
पृ. 658; ₹ 700/-
ISBN : 978-93-88778-12-0

गुलशेर खाँ शानी (विनिबंध)
ले. एवं अनु. जानकी प्रशाद शर्मा
पृ. 140; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-88468-83-1

इन्हीं हथियारों से
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. अमरकांत
उर्दू अनु. मोहम्मद हादी
पृ. 854; ₹ 900/-
ISBN : 978-93-89778-54-0

मैं भी इंसान हूँ तुम्हारी तरह
(दलित कविता-संकलन, अनुवाद कार्यशाला)
संपा. जयंत परमार
पृ. 224; ₹ 225/-
ISBN : 978-93-89467-54-3

मज़हर इमाम (उर्दू विनिबंध)
ले. इमाम आज़म
पृ. 119; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-34-5

शकीलुर रहमान (उर्दू विनिबंध)
ले. कौसर मज़हरी
पृ. 120; ₹ 50/-
ISBN : 978-93-89467-14-7

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. हमने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के 31 मार्च 2020 के संलग्न तुलन-पत्र तथा समाप्ति वर्ष के आय एवं व्यय/प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की लेखापरीक्षा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियों एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20(1) के अंतर्गत कर ली है। वर्ष 2023-24 तक की अवधि के लिए लेखापरीक्षा सौंपी गई थी। वित्तीय विवरणों में अकादेमी के तीन क्षेत्रीय कार्यालयों तथा दो बिक्री कार्यालयों के लेखे भी शामिल हैं। इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी अकादेमी के प्रबंधन की है। हमारी ज़िम्मेदारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर विचार व्यक्त करने की है।
2. इस पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों प्रकटीकरण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में हैं। वित्तीय लेन-देन के लेखापरीक्षा की टिप्पणियाँ नियमों, विनियमों, क़ानून एवं कार्यान्वयन पहलुओं, यदि कोई है, का उल्लेख निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में पृथक् रूप से किया गया है।
3. हमने लेखापरीक्षा सामान्यतः भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षण मानकों और लागू नियमों के अनुरूप की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि लेखापरीक्षा इस प्रकार आयोजित तथा निष्पादित की जाए कि वित्तीय विवरण तथ्यों की ग़लतबयानी से मुक्त हों। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा वित्तीय विवरणों में दी गई राशियों तथा तथ्यों के समर्थन में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर की जाती है। लेखापरीक्षा में लेखा संबंधी नियमों तथा प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ-साथ वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का पूर्ण मूल्यांकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।
4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि :
   (i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने अपनी लेखापरीक्षा के उद्देश्य से आवश्यक सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।
   (ii) इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता/प्राप्ति एवं भुगतान खाता को वित्त मंत्रालय द्वारा स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप तैयार किया गया है।
   (iii) हमारे विचार से लेखापरीक्षा के दौरान लेखा पुस्तकों की जाँच करने पर प्रतीत होता है कि साहित्य अकादेमी में लेखा पुस्तकों तथा अन्य संबंधित दस्तावेज़ों को समुचित ढंग से रखा जा रहा है।
   (iv) आगे हम यह सूचित करते हैं कि --

ए. तुलन पत्र

ए. 1 स्थायी परिसंपत्तियाँ (अनुसूची 8) : रु. 19.81 करोड़

अकादेमी ने के.लो.नि.वि., दिल्ली जल बोर्ड तथा बीएसईएस को द्वारका, नई दिल्ली में भवन निर्माण तथा पानी की लाइन/बिजली आपूर्ति लाइन की शिफ्टिंग के लिए रु. 2.68 करोड़ की अग्रिम राशि जारी की। लेखापरीक्षा ने पाया कि इन कार्यों के लिए कोई बिल नहीं दर्शाया गया। अकादेमी ने इस राशि को चालू परिसंपत्तियों, ऋणों तथा अग्रिमों के अंतर्गत, अग्रिम के रूप में दिखाने के बजाए इसे स्थायी परिसंपत्तियों के रूप में पूँजीगत कार्य प्रगति के तहत दर्शाया है, इसके परिणामस्वरूप रु. 2.68 का स्थायी परिसंपत्तियों पर अतिकथन तथा स्थायी परिसंपत्तियों, ऋणों तथा अग्रिमों पर न्यूनोक्ति परिलक्षित हुई है।

बी. आय एवं व्यय खाता :

बी. 1 व्यय : रु. 41.08 करोड़

विद्युत अधिष्ठान तथा पुस्तकालय पुस्तकों पर मूल्यह्रास आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 32(1) के अंतर्गत निर्धारित 10%

के स्थान पर क्रमशः 15% तथा 10% की दर से लिया गया था। इसके परिणामस्वरूप रु. 43.91 लाख का न्यूनोक्ति व्यय तथा स्थायी परिसंपत्तियों पर अतिकथन परिलक्षित हुआ।

सी. सामान्य

सी. 1 वित्त मंत्रालय द्वारा निर्धारित खाते के सामान्य प्रारूप के अनुसार शुद्ध अधिशेष/घाटे के शेष को संग्रह/पूँजी निधि की अनुसूची 1 में स्थानांतरित किया जाना चाहिए किंतु अकादेमी ने इसे रक्षित तथा अधिशेष निधि की अनुसूची 2 में स्थानांतरित कर दिया है। इसे सुधारने की आवश्यकता है।

सी. 2 1987 से रु. 72.53 लाख की राशि विविध देनदारों द्वारा दी जानी बकाया है। इन लंबे समय से लंबित देनदारों की समीक्षा की जानी चाहिए तथा यदि संदिग्ध हो तो आवश्यक क़दम उठाए जाने चाहिए।

डी. सहायता अनुदान

वर्ष 2019-20 के लिए प्राप्त एवं उपयोगार्थ सहायता अनुदान का ब्यौरा निम्नलिखित है–

ब्यौरा	राशि (करोड़ में)
वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान	35.71
गर्त वर्ष का अव्ययित शेष	1.07
वर्ष के दौरान आंतरिक प्राप्तियाँ	3.61
कुल उपलब्ध पूँजी	40.39
वर्ष के दौरान व्यय	39.70
अव्ययित शेष	0.69

वित्तीय वर्ष के अंत में साहित्य अकादेमी के पास रु. 0.69 करोड़ की राशि का अव्ययित शेष है।

ई. प्रबंधन पत्र : लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उनके बारे में साहित्य अकादेमी को प्रबंधन पत्र के माध्यम से प्रभावी कार्रवाई के लिए अलग से बताया गया है।

(v) पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में व्यक्त हमारे विचारों के संदर्भ में हम यह कहना चाहते हैं कि जिस तुलनपत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा का उपयोग इस प्रतिवेदन के लिए किया गया है, वे लेखा बहियों के साथ अनुबंधित हैं।

(vi) हमारे विचार और हमारी सर्वोत्तम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं तथा अनुलग्नक में दिए गए अन्य तथ्यों के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रपट भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षा मानकों और लागू नियमों के अनुरूप है।

(क) यह साहित्य अकादेमी के 31 मार्च 2020 तक के कार्यकलापों के तुलनपत्र से संबंधित है; तथा

(ख) उसी तिथि को समाप्त वर्ष के अधिशेष के आय एवं व्यय लेखा से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से

ह./-

(प्रवीर पाण्डेय)

महानिदेशक लेखापरीक्षा

(गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)

स्थान : नई दिल्ली

दिनांक : 07 अप्रैल 2021

''प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।''

अनुलग्नक

(1) आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी का आंतरिक लेखापरीक्षा चार्टर्ड-अकाउंटेंट फर्म द्वारा मार्च 2020 तक किया गया।

(2) आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी की आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था को निम्नलिखित के कारण सुदृढ़ करने की आवश्यकता है–

(i) बैंक समाधान विवरण (बी.आर.एस.) आंतरिक नियंत्रण का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। अकादेमी के बैंक समाधान विवरण (बी.आर.एस.) की जाँच से पता चला कि निम्नलिखित बैंक खाते की राशि का कोई समाधान नहीं किया गया है–

(राशि रुपए में)

क्र. सं.	**बैंक खाते/खातों का विवरण**	**जमा कैश बुक में दिखाई दिया किंतु बैंक में क्लीयर नहीं हुआ**	**कैश बुक में राशि ली गई किंतु बैंक द्वारा जमा नहीं की गई(–)**	**बैंक द्वारा राशि नामे किंतु कैश बुक में दर्ज नहीं की गई (–)**	**बैंक द्वारा जमा की गई राशि किंतु कैश बुक में दर्ज नहीं की गई**
1.	9183 केनरा बैंक	57900	—	270778 (जुलाई 2016 से सितंबर 2019)	—
2.	32985 केनरा बैंक	—	2333	3000	—
3.	15680 केनरा बैंक	—	—	—	12522 (अप्रैल 2019 से दिसंबर 2019)
	योग	**57900**	**2333**	**270778**	**12522**

इन शेष राशियों का समाधान करने की आवश्यकता है।

(ii) स्थायी परिसंपत्ति रजिस्टर का रख-रखाव उचित प्रकार से नहीं किया गया है। स्थायी परिसंपत्तियों को सूचीबद्ध नहीं किया गया है तथा नियमित रूप से इसका प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं किया जाता।

(iii) अग्रिम रजिस्टर का रख-रखाव नहीं किया गया है।

(iv) लेखा खाते में अग्रिम के लिए रु. 45.45 लाख दर्शाए गए हैं। अकादेमी द्वारा प्रदान किए गए बकाया अग्रिमों की जानकारी के अनुसार रु. 45.45 लाख में से बाहरी पार्टियों को रु. 45.43 दिए गए, जबकि बाहरी पार्टियों को अग्रिम के रूप में केवल रु. 15.25 लाख दर्शाए गए हैं। इसी प्रकार गत वर्ष की तुलना में कर्मचारियों को रु. 0.59 लाख से रु. 30.19 लाख तक की राशि का बकाया अग्रिम विचलन को दर्शाता है। स्टॉफ तथा अन्य पार्टियों को दिए गए अग्रिमों के समाधानकृत आँकड़ों को दर्शाने की आवश्यकता है।

(v) लेखापरीक्षा की आपत्तियों पर प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं है क्योंकि 31-03-2020 तक 29 लेखापरीक्षा पैरा अब तक बकाया हैं।

(3) स्थायी परिसंपत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

(i) भूमि, भवन तथा वाहन का मार्च 2020 तक तथा पुस्तकालय की पुस्तकों का 2017-18 की अवधि तक का प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया। अन्य परिसंपत्तियों जैसे फर्नीचर एवं स्थावर सामग्री तथा कंप्यूटर एवं सहायक उपकरणों का प्रत्यक्ष सत्यापन

केवल 2013-14 की अवधि तक ही किया गया है।

(ii) 31 मार्च 2020 तक अकादेमी के पास रु. 19.81 करोड़ मूल्य की स्थायी परिसंपत्तियाँ हैं किंतु अकादेमी द्वारा रखे गए रजिस्टरों में लेखा में दर्शाए गए सभी मदों के विवरण प्राप्त नहीं होते।

(4) सामान सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

लेखन-सामग्री तथा अन्य उपभोग्य वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन केवल 2016-17 तक ही किया गया है।

(5) देय राशि के भुगतान में नियमितता

लेखा के अनुसार 31 मार्च 2020 तक छह माह की अवधि से अधिक वाला कोई भुगतान बकाया नहीं था।

प्रबंधन पत्र का अनुलग्नक

(1) अकादेमी द्वारा प्रदान की गई सूचना के अनुसार, वर्ष के दौरान खरीदी तथा उपहार स्वरूप प्राप्त पुस्तकों का मूल्य रु. 5.99 लाख था (रु. 5.27 लाख की ख़रीदी पुस्तकें तथा रु. 0.72 लाख की उपहार स्वरूप प्राप्त पुस्तकें) यद्यपि, तुलनपत्र में रु. 5.24 लाख की राशि दर्शाई गई है (रु. 3.85 लाख की खरीदी पुस्तकें तथा रु. 1.39 लाख की उपहार स्वरूप प्राप्त पुस्तकें)। इसके परिणामस्वरूप स्थायी परिसंपत्तियों के साथ-साथ पूँजी निधि में रु. 0.75 लाख की राशि की न्यूनोक्ति परिलक्षित होती है।

(2) स्थायी परिसंपत्ति रजिस्टर का रख-रखाव उचित प्रकार से नहीं किया गया है। यह वर्ष 2019-20 के दौरान निर्धारित स्थायी परिसंपत्ति की ख़रीद के सब समय के विवरण नहीं दर्शाता।

वार्षिक लेखा
2019-2020

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

तुलनपत्र	233
आय एवं व्यय लेखा	234
उपर्युक्त वित्तीय विवरण का अनुसूची निर्माण	235–269
प्राप्ति और भुगतान लेखा	270
सामान्य भविष्य निधि का तुलन–पत्र	271
सामान्य भविष्य निधि का आय और व्यय लेखा	272
सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा	273
सामान्य भविष्य निधि की निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची	274
लेखा पर टिप्पणियाँ	275

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र विवरण यथातिथि 31 मार्च 2020

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
संग्रह निधि और दायित्व			
पूंजी संग्रह निधि और दायित्व	1	10,000,000	10,000,000
आरक्षित और अधिशेष	2	(130,294,907)	(103,843,666)
नियत/अक्षय निधि	3	435,447,284	384,175,470
सुरक्षित ऋण और उधार	4	-	-
असुरक्षित ऋण और उधार	5	-	-
अस्थगित जमा दायित्व	6	92,675,542	87,813,354
चालू दायित्व और उपबंध	7	69,116,221	54,099,426
योग		476,944,140	432,244,585
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	198,154,155	175,738,742
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	98,863,851	89,127,534
अन्य निवेश	10	-	-
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	179,926,134	167,378,309
विविध व्यय (एक सीमा एक अवलेखित या समायोजित)			
योग		476,944,140	432,244,585
महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	(घनश्याम शर्मा)	(बाबुराजन एस.)	(के. एस. राव)
दिनांक : 27 जुलाई 2020	*प्रवर लेखपाल*	*उपसचिव*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	524,474	812,688
अनुदान/इमदाद राशि से प्राप्त आय	13	332,713,146	345,884,002
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	207,350	217,357
निवेश से प्राप्त आय	15	-	-
प्राप्त आय	16	27,242,269	40,267,447
रॉयल्टी प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	17	2,609,938	3,462,074
प्राप्त आय	18	1,104,230	772,096
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	19,942,667	(680,962)
योग (ए)		**384,344,074**	**390,734,702**
व्यय			
स्थापना व्यय	20	195,402,779	207,472,451
अन्य प्रशासनिक व्यय इत्यादि	21	40,876,740	35,899,379
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	22	173,668,932	159,465,885
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय	23	846,864	467,081
वित्तीय प्रभार	24	-	-
योग (बी)		**410,795,315**	**403,304,796**
आय पर व्यय का आधिक्य (ए–बी)		(26,451,241)	(12,570,094)
पूर्व अवधि मदें	25	-	-
असाधारण मदें – सेवानिवृत्ति	26	-	(94,121,736)
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) पूँजी निधि में अग्रेनीत		**(26,451,241)**	**(106,691,830)**
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

	ह./–	ह./–	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(घनश्याम शर्मा)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(के. एस. राव)**
दिनांक : 27 जुलाई 2020	*प्रवर लेखपाल*	*उपसचिव*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण, यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–1

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
पूंजी निधि			
जमा	वर्ष के आरंभ में शेष	10,000,000	10,000,000
	संग्रह निधि में योगदान	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित		
जमा	कुल आय/(व्यय) का शेष	-	-
	संग्रह निवेश पर प्राप्त कुल ब्याज	775,499	722,193
घटा	वर्ष के दौरान योजनागत संग्रह में स्थानांतरित	(775,499)	(722,193)
घटा	सामान्य आरक्षित में स्थानांतरित शेष	-	-
	सब योग (ए)	**10,000,000**	**10,000,000**
आय और व्यय लेखा			
जमा	वर्ष के आरंभ में शेष	-	-
	उक्त संग्रह/पूंजीगत निधि से स्थानांतरित शेष	-	-
	आय और व्यय लेखा से स्थानांतरित कुल आय/व्यय का शेष		
	शेष राशि जनरल रिजर्व को हस्तांतरित	-	-
	एन.ई. से योजना में अस्थायी स्थानांतरण की छूट		-
	योग (बी)	**-**	**-**
	वर्ष के अंत में शेष (ए+बी)	**10,000,000**	**10,000,000**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–2

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
आरक्षित और अधिशेष			
1. आरक्षित पूँजी			
पिछले लेखों के अनुसार		-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि		-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		-	-
	योग	**-**	**-**
2. आरक्षित पुनर्मूल्यांकन :			
पिछले लेखा के अनुसार		-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि		-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		-	-
	योग	**-**	**-**
3. विशेष आरक्षित			
पिछले लेखा के अनुसार		-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि		-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ		-	-
	योग	-	-
4. सामान्य आरक्षित			
आदिशेष		(103,843,666)	2,848,164
जमा : वर्ष के दौरान अधिकता / (घाटा)		(26,451,241)	(106,691,830)
जमा : संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-	
जमा : पूर्व अवधि समायोजना	-	-	
	योग	**(130,294,907)**	**(103,843,666)**
	योग	**(130,294,907)**	**(103,843,666)**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–3

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
अनुसूची–3–नियत/अक्षय निधि			
(ए) निधियों का आदिशेष		384,175,470	363,951,967
(बी) **निधियों में बढ़ोत्तरी**			
1. **दान/अनुदान**		1,333,884	3,761,840
–अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्ति		26,884,536	35,080,684
–अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर		5,422,890	5,521,219
2. खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय			
3. **अन्य बढ़ोत्तरियाँ**			
–बैंक ब्याज		130,302	195,162
–प्रकाशनों/वीडियो फिल्में/कागज		-	-
–पुस्तकालय एवं भेंट की गई पुस्तकें		138,925	128,026
–अन्य जमा/समायोजन		20,119,953	381,064
–सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज		22,843,440	21,301,303
–एनपीएस अंशदान		-	411,721
योग (बी)		**76,873,930**	**66,781,019**
योग (ए+बी)	संलग्न सलग्नक के अनुसार	**461,049,400**	**430,732,986**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
1. **पूँजी व्यय**			
–स्थायी परिसंपत्तियाँ		-	-
–कार (सकल) की बिक्री में हानि		-	-
–वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन		-	-
–वर्ष के दौरान मूल्यह्रास		6,119,218	7,339,891
–अन्य		-	-
एनएसडीएल को भुगतान		-	402,086
अंतिम निकासी		5,844,150	8,187,518
पूर्ण और अंतिम समायोजन		6,583,003	22,925,351
योग		**18,546,371**	**38,854,846**
2. **राजस्व खर्च**			
–वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि		-	-
–वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण		-	680,965
–सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज		7,055,745	7,020,356
–अन्य प्रशासनिक व्यय		-	1,349
योग		**7,055,745**	**7,702,670**
योग (सी)		**25,602,116**	**46,557,516**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी+सी)		**435,447,284**	**384,175,470**

अनुसूची–3, अनुलग्नक

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद			योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2019
चालू दायित्व और उपबंध	**चालू वर्ष**			
(ए) निधियों का आदि शेष	175,738,742	115,222,195	93,214,533	384,175,470
(बी) निधियों में बढ़ोत्तरी				
1. **दान/अनुदान**	-	-	-	-
–अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,333,884	-	-	1,333,884
–अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	26,884,536	-	-	26,884,536
2. खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	5,422,890.00	5,422,890
3. **अन्य बढ़ोत्तरियाँ**				130,302
–बैंक ब्याज	-	-	130,302.00	
–प्रकाशनों/वीडियो फिल्में/कागज	-		-	-
–पुस्तकालय को भेंट की गई पुस्तकें	138,925	-	-	138,925
–अन्य जमा/समायोजन	177,286	19,942,667	-	20,119,953
–सा.भ.नि. अंशदान तथा ब्याज	-	-	22,843,440	22,843,440
–एनपीएस अंशदान तथा ब्याज	-	-	-	-
योग (बी)	**28,534,631**	**19,942,667**	**28,396,632**	**76,873,930**
योग (ए+बी)	**204,273,373**	**135,164,862**	**121,611,165**	**461,049,400**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
1. **पूँजी व्यय**				-
–स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	
–कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
–वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
–वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	6,119,218	-	-	6,119,218
–अन्य				-
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	-	
अंतिम निकासी	-	-	5,844,150	5,844,150
पूर्ण एवं अंतिम अदायगी	-	-	6,583,003	6,583,003
योग	**6,119,218**	**-**	**12,427,153**	**18,546,371**
2. **राजस्व खर्च**				-
–वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	
–वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण	-		-	-
–सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	7,055,745	7,055,745
–अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**7,055,745**	**7,055,745**
योग (सी)	**6,119,218**	**-**	**19,482,898**	**25,602,116**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**198,154,155**	**135,164,862**	**102,128,267**	**435,447,284**

अनुसूची–3, अनुलग्नक

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

(राशि रुपये में)

विवरण		निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2019
	गत वर्ष			
(ए) निधियों का आदि शेष	**144,102,911**	**115,903,160**	**103,945,896**	**363,951,967**
(बी) निधियों में बढ़ोत्तरी				
1. दान/अनुदान	-	-	-	-
–अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	3,761,840	-	-	3,761,840
–अनुदान पूँजीकृत–पूँजीगत कार्य प्रगति पर	35,080,684	-	-	35,080,684
2. खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	5,521,219	5,521,219
3. अन्य बढ़ोत्तरियाँ				195,162
–बैंक ब्याज	-	-	195,162	
–प्रकाशनों/वीडियो फिल्में/कागज	-		-	-
–पुस्तकालय को भेंट की गई पुस्तकें	128,026	-	-	128,026
–अन्य जमा/समायोजन	5,172	-	375,892	381,064
–सा.भ.नि. अंशदान तथा ब्याज	-	-	21,301,303	21,301,303
–एनपीएस अंशदान तथा ब्याज	-	-	411,721	411,721
योग (बी)	**38,975,722**	**-**	**27,805,297**	**66,781,019**
योग (ए+बी)	**183,078,633**	**115,903,160**	**131,751,193**	**430,732,986**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
1. पूँजी व्यय				-
–स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	
–कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
–वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
–वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	7,339,891	-	-	7,339,891
–अन्य				-
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	402,086	402,086
अंतिम निकासी	-	-	8,187,518	8,187,518
पूर्ण एवं अंतिम समायोजन	-	-	22,925,351	22,925,351
योग	**7,339,891**	**-**	**31,514,955**	**38,854,846**
2. राजस्व खर्च				-
–वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	
–वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण	-	680,965	-	680,965
–अंशदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	7,020,356	7,020,356
–अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	1,349	1,349
योग	**-**	**680,965**	**7,021,705**	**7,702,670**
योग (सी)	**7,339,891**	**680,965**	**38,536,660**	**46,557,516**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**175,738,742**	**115,222,195**	**93,214,533**	**384,175,470**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–4

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 **वित्तीय संस्थाएँ**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
4 **बैंक**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
(ग) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
(घ) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–5

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 वित्तीय संस्थाएँ	-	-
4 बैंक :		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 आवधिक जमा	-	-
8 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची–6

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
आस्थगित जमा दायित्व :		
(क) पूंजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	-	-
(ख) उपदान के प्रावधान	58,150,981	55,288,858.00
(ग) अवकाश भुनाने के प्रावधान	34,524,561	32,524,496.00
(घ) अन्य	-	-
योग	**92,675,542**	**87,813,354**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची - 7

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
चालू दायित्व और उपबंध		
(ए) चालू दायित्व		
1. स्वीकृति		
प्रतिभूति जमा (द्वारा)		
पुस्तकालय के सदस्य	10,841,242	10,150,842
अन्य	486,291	486,291
2. विभिन्न लेनदार		
(क) रॉयल्टी	-	-
(ख) अन्य	28,062,181	15,371,424
(ग) गतावधि चेक व्युत्क्रमण	952,069	
3. प्राप्त अग्रिम		
(क) ग्राहकों से अग्रिम	192,545	201,964
4. प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :		
(क) सुरक्षित ऋण/उधार	-	-
(ख) असुरक्षित ऋण/उधार	-	-
5. कानूनी दायित्व :		
(क) अतिशेध	-	-
(ख) अन्य	53,932	116,867
6. अन्य चालू दायित्व		
(क) सा.भ.नि. खाता	311,088	311,088
(ख) पेंशन देय	90,440	-
(ग) वेतन देय	-	639,746
(घ) अन्य कंट्रा भुगतान	989	-
7. वर्ष के अंत में अव्ययित अनुदान शेष	6,937,923	10,713,488
योग (ए)	**47,928,700**	**37,991,710**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–7

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
चालू दायित्व और उपबंध		
(बी) प्रावधान		
1. कर लगाने के लिए	-	-
2. प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	1,500,000	800,000
3. अधिवर्षिता / पेंशन	2,100,000	2,100,000
4. संचित अवकाश भुनाना	900,000	900,000
5. व्यापार वारंटी / दावे	-	-
6. अन्य–देय लेखापरीक्षा शुल्क	263,870	230,000
7. अन्य–व्यावसायिक शुल्क देय	150,000	200,000
8. उपदान के प्रावधान	10,557,122	8,790,633
9. अवकाश भुनाने के प्रावधान	5,716,529	3,087,083
योग (बी)	**21,187,521**	**16,107,716**
योग (ए+बी)	**69,116,221**	**54,099,426**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
ए.	**स्थायी परिसंपत्ति**												
1.	भूमि	-	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
2.	भवन	10%	46,250,559	-	-	-	46,250,559	27,960,404	1,829,016	-	29,789,420	16,461,139	18,290,155
3.	सयंत्र और तंत्र	15%	66,350	37,475	55,460	-	159,285	16,103	17,318	-	33,421	125,864	50,247
4.	वाहन	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,480,490	139,900	-	1,620,390	792,765	932,665
5.	फर्नीचर और जुड़नार	15%	42,110,609	373,563	138,228	-	42,622,400	30,271,466	1,265,957	-	31,537,423	11,084,977	11,839,143
6.	कार्यालय उपकरण	15%	29,683,708	65,132	182,729	-	29,931,569	25,150,911	703,395	-	25,854,306	4,077,263	4,532,797
7.	कंप्यूटर/परिधीय	40%	19,638,142	71,902	201,754	-	19,911,798	18,166,414	657,803	-	18,824,217	1,087,581	1,471,728
8.	विद्युतीय अधिष्ठान	15%	926,558	-	-	-	926,558	673,646	37,937	-	711,583	214,975	252,912
9.	पुस्तकालय में पुस्तकें	10%	45,356,729	248,352	275,500	-	45,880,581	30,748,369	1,467,892	-	32,216,261	13,664,320	14,608,360
	कुल योग		**195,141,694**	**796,424**	**853,671**	**-**	**196,791,789**	**134,467,803**	**6,119,218**	**-**	**140,587,021**	**56,204,768**	**60,673,891**
बी.	**पूँजीगत कार्य प्रगति पर**		115,064,851	-	26,884,536	-	141,949,387	-	-	-	-	141,949,387	115,064,851
	कुल योग		**115,064,851**	**-**	**26,884,536**	**-**	**141,949,387**	**-**	**-**	**-**	**-**	**141,949,387**	**115,064,851**
	योग (ए+बी)		**310,206,545**	**796,424**	**27,738,207**	**-**	**338,741,176**	**134,467,803**	**6,119,218**	**-**	**140,587,021**	**198,154,155**	**175,738,742**
	गतवर्ष												
	स्थायी परिसंपत्तियाँ		191,251,828	2,037,649	1,852,477	260	195,141,694	127,127,912	7,339,891	-	134,467,803	60,673,891	64,123,916
	पूँजीगत कार्य प्रगति पर		79,984,167	-	35,080,684	-	115,064,851	-	-	-	-	115,064,851	79,984,167
	गत वर्ष का कुल योग		271,235,995	2,037,649	36,933,161	260	310,206,545	127,127,912	7,339,891	-	134,467,803	175,738,742	144,108,083

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–8, अनुलग्नक

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
1.	**भूमि**												
	फ्रीहोल्ड	0%	-				-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे पर दिया	0%	8,695,884	-	-		8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
	योग (1)		**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**8,695,884**
2.	**भवन**												
	फ्रीहोल्ड भूमि पर	10%	-	-	-		-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे की भूमि पर	10%	10,025,384	-	-		10,025,384	3,718,517	630,687	-	4,349,204	5,676,180	6,306,867
	स्वामित्व फ्लैट्स /परिसर	10%	36,225,175	-	-		36,225,175	24,241,887	1,198,329	-	25,440,216	10,784,959	11,983,288
	योग (2)		**46,250,559**	**-**	**-**	**-**	**46,250,559**	**27,960,404**	**1,829,016**	**-**	**29,789,420**	**16,461,139**	**18,290,155**
3.	संयंत्र मशीनरी और उपकरण						-						
	तकनीकी उपकरण	15%	66,350	37,475	55,460		159,285	16,103	17,318	-	33,421	125,864	50,247
	योग (3)		**66,350**	**37,475**	**55,460**	**-**	**159,285**	**16,103**	**17,318**	**-**	**33,421**	**125,864**	**50,247**
4.	**वाहन**						-						
	मोटर, कार/स्कूटर	15%	2,413,155	-	-		2,413,155	1,480,490	139,900	-	1,620,390	792,765	932,665
	योग (4)		**2,413,155**	**-**	**-**	**-**	**2,413,155**	**1,480,490**	**139,900**	**-**	**1,620,390**	**792,765**	**932,665**
5.	**फर्नीचर और जुड़नार**						-						
	फर्नीचर	10%	35,229,063	161,064	23,364		35,413,491	23,990,608	1,141,120	-	25,131,728	10,281,763	11,238,455
	स्थायी कैबिनेट्स, अलमारियाँ आदि	10%	-	111,149	8,000		119,149	-	11,515	-	11,515	107,634	-
	वोल्टेज स्टेबलाइजर्स, यूपीएस सिस्टम	15%	42,995	5,990	8,864		57,849	2,325	7,664	-	9,989	47,860	40,670
	जल वितरक	15%	27,169	12,498	-		39,667	2,076	5,639	-	7,715	31,952	25,093
	जल शोधक	15%	-	24,298	-		24,298	-	3,645	-	3,645	20,653	-
	एयर कूलर	15%	-	35,872	-		35,872	-	5,381	-	5,381	30,491	-
	एयर कंडीशनर	15%	6,811,382	22,692	98,000		6,932,074	6,276,457	90,993	-	6,367,450	564,624	534,925
	योग (5)		**42,110,609**	**373,563**	**138,228**	**-**	**42,622,400**	**30,271,466**	**1,265,957**	**-**	**31,537,423**	**11,084,977**	**11,839,143**
6.	**कार्यालय उपकरण**				511,791		511,791						
	कार्यालय उपकरण	15%	29,490,695	36,832	-	-	29,527,527	25,130,380	659,572	-	25,789,952	3,737,575	4,360,315
	फैक्स मशीन, स्कैनर	15%	6,963	18,300	-	-	25,263	1,044	3,633	-	4,677	20,586	5,919
	उपस्थिति मशीन	15%	73,780	-	-	-	73,780	11,067	9,407	-	20,474	53,306	62,713
	फोटो कॉपियर	15%	-	-	175,000	-	175,000	-	13,125	-	13,125	161,875	-
	सीसीटीवी कैमरे	15%	102,270	-	7,729	-	109,999	7,670	14,770	-	22,440	87,559	94,600
	मोबाइल फोन	15%	10,000	10,000	-	-	20,000	750	2,888	-	3,638	16,362	9,250
	योग (6)		**29,683,708**	**65,132**	**182,729**	**-**	**29,931,569**	**25,150,911**	**703,395**	**-**	**25,854,306**	**4,077,263**	**4,532,797**
7.	**कंप्यूटर/परिधीय**												
	कंप्यूटर एवं कंप्यूटर परिधीय	40%	19,133,692	71,902	201,754	-	19,407,348	18,015,079	516,557	-	18,531,636	875,712	1,118,613
	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर	40%	504,450	-	-	-	504,450	151,335	141,246	-	292,581	211,869	353,115
	योग (7)		**19,638,142**	**71,902**	**201,754**	**-**	**19,911,798**	**18,166,414**	**657,803**	**-**	**18,824,217**	**1,087,581**	**1,471,728**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–8, अनुलग्नक

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	दर	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
8.	**विद्युतीय अधिश्ठान**												
	विद्युतीय अधिष्ठान	15%	926,558	-	-	-	926,558	673,646	37,937	-	711,583	214,975	252,912
	योग (8)		**926,558**	-	-	-	**926,558**	**673,646**	**37,937**	-	**711,583**	**214,975**	**252,912**
9.	**पुस्तकालय पुस्तकें**												
	पुस्तकालय पुस्तकें	10%	45,110,645	248,352	136,575	-	45,495,572	30,748,369	1,467,892	-	32,216,261	13,279,311	14,362,276
	पुस्तकालय पुस्तकें/ उपहार	0%	246,084	-	138,925	-	**385,009**	-	-		-	**385,009**	**246,084**
	योग (9)		**45,356,729**	**248,352**	**275,500**	-	**45,880,581**	**30,748,369**	**1,467,892**	-	**32,216,261**	**13,664,320**	**14,608,360**
	कुल योग		**195,141,694**	**796,424**	**853,671**	-	**196,791,789**	**134,467,803**	**6,119,218**	-	**140,587,021**	**56,204,768**	**60,673,891**
बी	**पूँजीगत कार्य प्रगति पर**					-							
	अन्य		3,128,097	-	-	-	3,128,097	-	-	-	-	3,128,097	3,128,097
	शौचालय		1,091,413	-	-	-	1,091,413	-	-	-	-	1,091,413	1,091,413
	मॉडयूलर वर्कस्टेशन		3,975,868	-	-	-	3,975,868	-	-	-	-	3,975,868	3,975,868
	ए.सी. प्लांट पुस्तकालय		5,556,495	-	-	-	5,556,495	-	-	-	-	5,556,495	5,556,495
	पोर्टेबल शौचालय		207,625	-	-	-	207,625	-	-	-	-	207,625	207,625
	किताब घर एवं चार दीवारी निर्माण आदि		3,450,300	-	-	-	3,450,300	-	-	-	-	3,450,300	3,450,300
	सिविल कार्य (कोलकाता)		974,369	-	-	-	974,369	-	-	-	-	974,369	974,369
	डक्टेबल ए.सी.		3,358,570	-	-	-	3,358,570	-	-	-	-	3,358,570	3,358,570
	द्वारका स्थित भवन निर्माण		76,600,000	-	25,000,000	-	101,600,000	-	-	-	-	101,600,000	76,600,000
	दिल्ली जल बोर्ड की पानी की लाइन का स्थानांतरण		-	-	235,452	-	235,452	-	-	-	-	235,452	-
	दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन का स्थानांतरण		-	-	1,649,084	-	1,649,084	-	-	-	-	1,649,084	-
	गैस आधारित स्प्रिंकलर सिस्टम		16,722,114	-	-	-	16,722,114	-	-	-	-	16,722,114	16,722,114
	कुल योग		**115,064,851**	-	**26,884,536**	-	**141,949,387**	-	-	-	-	**141,949,387**	**115,064,851**
	चालू वर्ष का योग		**310,206,545**	**796,424**	**27,738,207**	-	**338,741,176**	**134,467,803**	**6,119,218**	-	**140,587,021**	**198,154,155**	**175,738,742**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–9

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020			31 मार्च 2019		
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
1 सरकारी प्रतिभूतियों से			-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ			-	-	-	-
3 शेयर			-	-	-	-
4 डिबेंचर तथा बॉण्ड्स			-	-	-	-
5 समानुषंगी और संयुक्त उद्यम			-	-	-	-
6 अन्य			-	-	-	-
(क) आवधिक जमा–संग्रह निधि/सा.भ.नि.	10,000,000	88,703,688	98,703,688	11,432,466	77,544,628	88,977,094
(ख) आई.डी.बी.आई. फ्लैक्सी बॉण्ड	-	-	-	-	-	-
(ग) आवधिक जमा–नई पेंशन योजना	-	160,163	160,163	-	150,440	150,440
योग	**10,000,000.00**	**88,863,851**	**98,863,851**	**11,432,466**	**77,695,068**	**89,127,534**

अनुसूची–10

विवरण	31 मार्च 2020			31 मार्च 2019		
निवेश–अन्य	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-	-	-
3 शेयर	-	-	-	-	-	-
4 डिबेंचर तथा बॉण्ड्स	-	-	-	-	-	-
5 समानुषंगी तथा संयुक्त उद्यम	-	-	-	-	-	-
6 अन्य (उल्लेख करें)	-	-	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–11ए

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020			31 मार्च 2019		
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ						
1 वस्तुसूची						
(क) स्टोर एंड स्पेयर्स	-	-	-	-	-	-
(ख) लूज टूल्स	-	-	-	-	-	-
(ग) प्रकाशन एवं कागज का स्टॉक						-
तैयार माल	-	-	-	-	-	-
अकादेमी प्रकाशन	122,263,051	-	122,263,051	108,537,520	-	108,537,520
अपरोक्ष प्रकाशन	120,290	-	120,290	124,030	-	124,030
वीडियो फिल्में एवं सी.डी.	726,450	-	726,450	715,700	-	715,700
कार्य प्रगति पर	-	-	-	-	-	-
कच्चा माल	-	-	-	-	-	-
कागज : अपने पास	6,713,849	-	6,713,849	2,517,833	-	2,517,833
मुद्रणलयों में	5,341,222	-	5,341,222	3,327,112	-	3,327,112
2 विविध लेनदार		-			-	
(क) छः माह की अवधि से अधिक बकाया ऋण	7,253,773	-	7,253,773	3,549,963	-	3,549,963
(ख) अन्य	2,350,157	-	2,350,157	6,986,456	-	6,986,456
3 हाथ में शेष धन या बकाया राशि						
(जिसमें चेक/ड्राफ्ट रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल है)	693,910	-	693,910	702,339	-	702,339
4 बैंक में शेष धन :						
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	
–बचत खातों पर	6,244,013	4,817,527	11,061,540	10,011,150	5,614,163	15,625,313
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	-
–बचत खातों पर	-	-	-	-	-	-
5 डाकघर बकाया राशि	-	-	-	-	-	-
बचत खातों में						
योग (ए)	**151,706,715**	**4,817,527**	**156,524,242**	**136,472,102**	**5,614,163**	**142,086,265**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2020

अनुसूची–11बी

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020			31 मार्च 2019		
ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ आदि (जारी)	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ						
1 ऋण						
(क) स्टॉफ	1,584,495	-	1,584,495	2,006,315	-	2,006,315
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो समान गतिविधियों/ कार्यों में संलग्न है	-	-	-	-	-	-
(ग) अन्य–सा.भ.नि. अग्रिम	-	5,751,342	5,751,342	-	6,686,992	6,686,992
2 अग्रिम और अन्य राशियों जिन्हें नकदी अथवा सदृश अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है						
(क) पूंजी खातों पर	-	-	-	-	-	-
(ख) पूर्व भुगतान	-	-	-	-	-	-
(ग) अन्य						
स्रोतों से कर कटौती	341,529	806,571	1,148,100	286,456	549,262	835,718
प्रतिभूति जमा	4,687,643	-	4,687,643	4,497,942	-	4,497,942
पूर्व भुगतान खर्चे	161,518	-	161,518	132,764	-	132,764
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	1,318,122	-	1,318,122	1,318,122	-	1,318,122
अन्य वसूली योग्य		-	-	-	-	-
–कर्मचारियों को अग्रिम	3,019,983	-	3,019,983	59,261	-	59,261
–बाहरी पार्टी को अग्रिम	1,525,233	-	1,525,233	6,977,366	-	6,977,366
–सरकारी अभिकरणों को अग्रिम	-	-	-	-	-	-
3 प्रोदभूत आय						
(क) नियत/अक्षय निधियों से निवेश पर	2,316,480	1,888,976	4,205,456	108,515	2,669,048	2,777,563
(ख) निवेशों पर –अन्य	-	-	-	-	-	-
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	-	-	-	-	-	-
4 प्राप्त करने योग्य दावे		-	-		-	-
(क) वसूली योग्य – सा.भ.नि.	-	-	-	-	-	-
योग (बी)	**14,955,003**	**8,446,889**	**23,401,892**	**15,386,741**	**9,905,302**	**25,292,043**
योग (ए+बी)	**166,661,718**	**13,264,416**	**179,926,134**	**151,858,843**	**15,519,465**	**167,378,309**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–12

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
बिक्री / सेवाओं से प्राप्त आय		
1. बिक्री से प्राप्त आय		
(क) सभागार रखरखाव प्राप्ति	492,000	418,000
(ख) फोटोकॉपी शुल्क	32,474	74,682
(ग) भारतीय साहित्य पर ऑनलाइन सामग्री की बिक्री (जे.एस.टी.ओ.आर.)	-	320,006
योग	**524,474**	**812,688**

अनुसूची–13

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
अनुदान / इमदाद		
(अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
(1) भारत सरकार की ओर से – संस्कृति मंत्रालय		
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	167,932,000	167,119,000
–अकादेमी सेल राजस्व सामान्य	126,999,000	126,121,000
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	25,600,000	35,628,000
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन	28,050,000	36,628,000
–अकादेमी सेल–टीएसपी, राजस्व सामान्य	7,500,000	9,412,000
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	1,075,000	687,000
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–इजराइल	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–थाइलैंड	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल	-	367,500
–विशेष सेल–रामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	-	1,275,000
(2) राज्य सरकार	-	-
(3) सरकारी अभिकरण	-	-
(4) संस्थाएँ / कल्याणकारी निकाय	-	-
(5) अंतरराष्ट्रीय संगठन	-	-
(6) अन्य		
जमा वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	10,713,489	18,207,687
घटा वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	(6,937,923)	(10,713,488)
घटा वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों पर खर्च की गई पूंजीगत अनुदान राशि	(1,333,884)	(3,767,012)
घटा वर्ष के दौरान पूंजीगत कार्य की प्रगति में खर्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(26,884,536)	(35,080,684)
घटा संस्कृति मंत्रालय को अनुदान वापस	-	-
योग	**332,713,146**	**345,884,002**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–14

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
शुल्क / अंशदान		
1. प्रवेश शुल्क	-	-
2. वार्षिक शुल्क / अंशदान	-	-
3. संगोष्ठी / कार्यक्रम शुल्क	-	-
4. परामर्श शुल्क	-	-
5. **अन्य**		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	207,350	217,357
बुक क्लब सदस्यता शुल्क	-	-
योग	**207,350**	**217,357**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–15

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	अक्षय निधि से निवेश	
	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड/डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
बैंक एफडीआर के निवेश से प्राप्त ब्याज	5,553,192	5,716,381
घटा : सा.भ.नि. पूंजी में स्थानांतरित	(5,553,192)	(5,716,381)
योग	**-**	**-**

विवरण	अन्य निवेश	
	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड/डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. किराए	-	-
4. अन्य		
घटा : आर्टिस्ट वेलफेयर पूंजी में स्थानांतरित		
योग	**-**	**-**
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–16

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
रॉयल्टी, प्रकाशनों इत्यादि से प्राप्त आय		
1. रॉयल्टी से प्राप्त आय	91,510	49,988
2. अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	27,150,759	40,217,459
योग	**27,242,269**	**40,267,447**

अनुसूची–17

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
प्राप्त ब्याज		
1. सशर्त जमा		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	554,898	818,749
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) संस्थाओं के साथ	-	-
(घ) अन्य–संग्रह निधि	775,499	722,192
2. बचत खातों पर :		
(क) अनुसूचित बैंक के साथ	728,231	1,209,027
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) डाक घर के बचत खाते	-	-
(घ) अन्य	-	-
3. ऋणों पर :		
(क) कर्मचारी/स्टॉफ़	551,310	655,456
(ख) अन्य	-	-
4. ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ		
(क) सा.भ.नि./सी.पी.एफ. पर ब्याज	-	-
(ख) आयकर रिफंड पर ब्याज	-	56,650
योग	**2,609,938**	**3,462,074**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–18

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
अन्य आय		
1 परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ	-	-
(ख) परिसंपत्तियाँ जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	-	-
(ग) गैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसंपत्ति) की बिक्री	-	-
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	5,983	1,957
2 निर्यात को प्रोत्साहन	-	-
3 विविध सेवाओं के लिए शुल्क	-	-
4 **विविध आय**		
(क) अन्य विविध प्राप्तियाँ	485,976	359,889
(ख) कर्मचारियों का सीजीएचएस अंशदान	428,164	410,250
(ग) कर्मचारियों का एनपीएस गैर वापसी योग्य अंशदान	-	-
(घ) सरदार पटेल अनुवाद प्राप्ति	-	-
(ङ) अतिरिक्त प्रावधान लिखित वापस	167,691	-
(च) नेपाल में भारत का उत्सव	16,416	
योग	**1,104,230**	**772,096**

अनुसूची–19

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार/चढ़ाव)		
(क) अंत शेष माल		
–तैयार माल (पुस्तकें)	123,109,791	109,377,250
–कच्चा माल (कागज)	12,055,071	5,844,945
घटा :		
(ख) प्रारंभिक स्टॉक		
तैयार माल (पुस्तकें)	109,377,250	109,260,817
कच्चा माल (कागज)	5,844,945	6,642,340
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए–बी)	**19,942,667**	**(680,962)**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–20

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
स्थापना व्यय		
(क) वेतन, मजदूरी और भत्ते	162,282,378	149,949,277
(ख) नई पेंशन योजना हेतु योगदान	3,080,385	2,640,076
(ग) कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर हुए खर्च तथा आवाधिक लाभ	24,948,106	46,894,765
(घ) अन्य		
– चिकित्सा सुविधाएँ	4,474,203	5,309,803
– अवकाश यात्रा सुविधा	617,707	2,678,530
योग	**195,402,779**	**207,472,451**

अनुसूची– 21

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2020	31 मार्च 2019
अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	223,160	300,865
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	990,407	487,365
(ग) दूरभाष एवं डाक–व्यय	3,542,602	3,621,410
(घ) अन्य आकस्मिक व्यय	724,150	1,384,989
(ङ) वाहन अनुरक्षण	172,060	150,700
(च) किराया, परिकर एवं कर	27,057,168	28,449,370
(छ) संयुक्त सेवाएँ अन्य	6,373,156	
(ज) कानूनी शुल्क	996,859	193,000
(झ) यात्रा खर्च	635,958	1,054,250
(ञ) व्यावसायिक शुल्क	161,220	257,430
योग	**40,876,740**	**35,899,379**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वेतन, मजदूरी और भत्ते		
(क) मूल वेतन	79,983,178	78,750,834
(ख) ग्रेड पे	-	86,400
(ग) मँहगाई भत्ता	12,610,657	8,221,955
(घ) मकान किराया भत्ता	19,474,178	19,343,453
(ङ) परिवहन भत्ता	7,735,753	7,487,263
(च) बच्चों का शिक्षा भत्ता	1,436,966	1,299,100
(छ) व्यक्तिगत वेतन	6,800	76,000
(ज) वर्दी भत्ता	215,000	200,000
(झ) नकद भत्ता	14,000	14,000
(प) स्टाफ वेतन एवं भत्ते – कार्यालय का सुधार	1,843,306	60,487
(फ) वेतन बकाया	59,078	
योग	**123,378,916**	**115,539,492**
पेंशन		
(भ) पेंशन	31,195,512	22,993,653
(म) पेंशनभोगियों को महंगाई भत्ता	6,172,367	10,496,360
(य) पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता	564,000	372,800
(र) अतिरिक्त पेंशन	971,583	546,972
योग	**38,903,462**	**34,409,785**
कर्मचारी की सेवानिवृत्ति तथा सेवानिवृत्ति लाभ पर व्यय		
(क) उपदान	11,410,108	13,773,710
(ख) पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन	8,739,129	25,495,842
(ग) अवकाश नकदीकरण	4,798,869	7,625,213
योग	24,948,106	46,894,765
किराया, परिकर एवं कर		
(क) वार्षिक रखरखाव अनुबंध	1,258,541	1,699,786
(ख) बिजली/पानी शुल्क	4,112,848	4,552,871
(ग) किराया	21,685,779	22,196,713
योग	**27,057,168**	**28,449,370**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–22

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण		चालू वर्ष (2019–2020)				गत वर्ष (2018–2019)			
	गतिविधियों का संवर्द्धन एवं प्रसार	सामान्य	एनई	टीएसपी	योग	सामान्य	एनई	टीएसपी	योग
ए	**अकादेमी सेल**								
	01 बाल साहित्य पुरस्कार	3,989,174	740,529	137,709	**4,867,412**	2,349,755	2,040,303	84,504	**4,474,562**
	02 बनारस स्कूल परियोजना	-	-	-	-	14,905	-	-	**14,905**
	03 राजभाषा कार्यक्रम	332,471	-	-	**332,471**	524,547	-	-	**524,547**
	04 भाषाओं का विकास	-	-	4,058,149	**4,058,149**	-		4,544,457	**4,544,457**
	05 फैलोशिप	477,914	60,126	-	**538,040**	533,402	-	-	**533,402**
	06 साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	21,437,523	10,645,640	2,663,822	**34,746,985**	23,192,881	21,510,402	3,879,064	**48,582,347**
	07 आधुनिकीकरण एवं सुधार	13,669,880	46,020	-	**13,715,900**	10,735,817	40,748	-	10,776,565
	08 बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	8,873,718	319,797	-	**9,193,515**	12,447,668	1,698,664	-	**14,146,332**
	09 प्रकाशन योजनाएँ	55,814,315	5,888,733	380,140	**62,083,188**	27,558,624	1,431,681	186,072	**29,176,377**
	10 क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	463,880	271,297	-	**735,177**	529,787	516,133	-	**1,045,920**
	11 लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	18,941,148	2,375,975	298,199	**21,615,322**	16,613,815	4,402,823	2,033,528	**23,050,166**
	12 अनुवाद योजनाएँ	5,285,367	5,032,807	122,225	**10,440,399**	5,382,177	4,978,465	72,855	**10,433,497**
	13 पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	1,187,024	-	-	**1,187,024**	1,391,161	-	-	**1,391,161**
	14 युवा पुरस्कार	3,588,093	2,052,237	108,890	**5,749,220**	3,641,703	1,187,029	97,128	**4,925,860**
	15 इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन पोएटिक	-	-	-	-	58,280	-	-	**58,280**
	16 भारतीय अनुवाद	1,021,265	-	-	**1,021,265**	573,392	-	-	**573,392**
	17 टैगोर नेशनल फैलोशिप	11,000	-	-	11,000	21,064	-	-	**21,064**
	18 योग	**24,926**	-	-	**24,926**	**158,976**	-	-	**158,976**
	19 महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	1,802,767	177,174	-	**1,979,941**	1,617,636	-	-	**1,617,636**
	20 रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी/कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन	-	-	-		-	-	-	-
	21 सरदार पटेल अनुवाद योजना	-	-	-		-	-		-
	योग	**136,920,465**	**27,610,335**	**7,769,134**	**172,299,934**	**107,345,590**	**37,806,248**	**10,897,608**	**156,049,446**
	01 एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना	1,236,870	-	-	**1,236,870**	1,651,738	-	-	**1,651,738**
बी	**विशेष सेल**								
	01 भारत महोत्सव – इज़राइल	-	-	-		-	-	-	-
	02 भारत महोत्सव – स्पेन	-	-	-	-	111,060	-	-	**111,060**
	03 भारत महोत्सव – थाइलैण्ड	-	-	-	-	72,512	-	-	**72,512**
	04 भारत महोत्सव – नेपाल	123,503	-	-	**123,503**	247,643	-	-	**247,643**
01	1000वीं श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	8,625	-	-	**8,625**	1,333,486			**1,333,486**
	कुल योग	**138,289,463**	**27,610,335**	**7,769,134**	**173,668,932**	**110,762,029**	**37,806,248**	**10,897,608**	**159,465,885**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–23

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुदान, इमदाद आदि पर ब्याज		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान		
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद		
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	685,817	467,081
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता के लिए एन.ई.	161,047	-
(ग) विभिन्न परियोजनाओं/योजनाओं के अंतर्गत भुगतान	-	
योग	**846,864**	**467,081**

अनुसूची–24

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वित्त शुल्क		
(क) स्थायी ऋण पर	-	-
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	-	-
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–25

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
पूर्व अवधि मदें		
पूर्व अवधि आय	-	-
घटा :		
पूर्व अवधि व्यय	-	-
योग	**-**	**-**

अनुसूची–26

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
असाधारण मदें		
(कृपया अनुसूची 27 के नोट 10 तथा अनुसूची 28 के नोट 6 को भी देखें)		
सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान (गैर–वित्त पोषित)		
(क) सेवानिवृत्ति उपदान वाई.टी.डी. मार्च 2019 के लिए प्रावधान	-	60,499,631
(ख) सेवानिवृत्ति अवकाश नकदीकरण वाई.टी.डी. मार्च 2019 के लिए प्रावधान	-	33,622,105
योग	**-**	**94,121,736**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2019–20	गत वर्ष 2018–19	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2019–20	गत वर्ष 2018–19
1. आदि शेष				**1. व्यय**			
(क) हाथ रोकड़		702,339	617,520	(क) स्थापना व्यय	10	186,363,922	199,386,437
(चैक/ड्राफ्ट और टिकट सहित)				(ख) प्रशासनिक व्यय	11	38,205,938	35,164,794
(ख) बैंक में जमा							
चालू खातों में		-		**2. विभिन्न योजनाओं/परियोजनाओं**			
जमा खातों में		-		**के अंतर्गत भुगतान**			
बचत खातों में		10,011,150	17,590,167	(क) परियोजनाएं/योजनाएं	12	104,507,309	98,086,818
2. प्राप्त अनुदान				– अकादेमी राजस्व			
(क) भारत सरकार द्वारा– संस्कृति मंत्रालय				– राज्य अकोदेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	12	968,058	380,510
– अकादेमी सेल–राजस्व वेतन		167,932,000	167,119,000	– अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	12	27,596,949	38,599,750
– अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य		126,999,000	126,121,000	– अकादेमी सेल–टीएसपी. राजस्व सामान्य	12	7,941,924	10,761,502
– अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.		25,600,000	35,628,000	– अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	12	1,223,578	1,630,817
– अकादेमी सेल–पूँजीगत परिसंपत्तियों का सृजन		28,050,000	36,628,000	– विशेष सेल–भारत महोत्सव	12	123,503	431,215
– अकादेमी सेल–टी.एस.पी. राजस्व सामान्य		7,500,000	9,412,000	– विशेष सेल–संत श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	12	8,625	1,333,486
– अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना		1,075,000	687,000				
– विशेष सेल–भारत महोत्सव–इजराइल		-	.				
– विशेष सेल–भारत महोत्सव–थाईलैण्ड		-	-	**3. निवेश और जमा राशियाँ**			
– विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन		-	-	(क) नियत/अक्षय निधियाँ		-	-
– विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल		-	367,500	(ख) स्वपूंजियों से (निवेष–अन्य)		148,295,582	179,432,466
– विशेष सेल–संत श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी		-	1,275,000				
(ख) संस्कृति मंत्रालय से अतिरिक्त पूंजी प्राप्त		-	-	**4. स्थायी परिसंपत्तियों पर व्यय तथा पूंजी**			
(ग) राज्य सरकार द्वारा		-	-	**- पर आधारित कार्य प्रगति पर**			
(घ) अन्य स्रोतों द्वारा		-	-	(क) स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	13	1,373,379.41	3,727,519
		-	-	(ख) पूंजी पर आधारित कार्य प्रगति पर	13	26,884,536	35,080,684
3. निवेशों से आय		-	-	**5. अधिशेष धन/ऋणों की वापसी**			
(क) नियत/अक्षय निधियाँ	-	-	-	(क) संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार को		-	-
(ख) स्वपूंजी (अन्य निवेश)	1	775,499	713,876	(ख) राज्य सरकार को		-	-
4. प्राप्त ब्याज	1	1,283,129	2,027,776	(ग) अन्य पूंजी उपलब्ध कराने वालों को		-	-
(क) बैंकों में जमा राशि पर ब्याज							
(ख) ऋण, अग्रिम आदि	1	551,310	712,106	**6. वित्त शुल्क (ब्याज)**			
5. अन्य आय							
(क) माल/सेवाओं की बिक्री से आय	2	524,474	812,688	**7. अन्य भुगतान**			
(ख) फीस एवं अंशदान से आय	3	207,350	217,357	(क) स्टाफ को अग्रिम राशि	14	-	1,136,766
(ग) रॉयल्टी, प्रकाशन आदि से आय	4	27,242,269	37,890,008	(ख) प्रतिभूति जमा राशि दी	15	189,701	163,523
(घ) विविध आय/प्राप्तियाँ	5	936,539	772,096	(ग) अन्य (वसूली योग्य)	16	1,609,927	4,266,007
6. उधार ली गई राशि		-	-	**8. अंत शेष**			
				(क) हाथ में रोकड़		693,910	702,339
7. कोई अन्य प्राप्तियाँ	**6**	421,820	263,325	(चैक/ड्राफ्ट और टिकटों सहित)			
(क) स्टॉफ द्वारा चुकाए गए ऋण	7	690,400	730,405	(ख) बैंक में शेष			
(ख) लौटाने योग्य जमा राशि	8	9,092	74,357	1. चालू खातों में		-	-
(ग) कोंट्रा प्राप्तियाँ और भुगतान	9	3,423,900	1,918,012	2. जमा खातों में		-	-
(घ) अन्य भुगतान योग्य		148,295,582	178,718,590	3. बचत खातों में		6,244,013	10,011,150
(ङ) अन्य लघु अवधि जमा परिपक्व							
योग		**552,230,854**	**620,295,783**	**योग**		552,230,854	620,295,783

ह./–
(घनश्याम शर्मा)
प्रवर लेखपाल

ह./–
(बाबुराजन एस.)
उपसचिव

ह./–
(के. एस. राव)
सचिव

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 27 जुलाई 2020

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
ब्याज प्राप्त	1		
संग्रह निधि पर ब्याज		775,499	713,876
योग		**775,499**	**713,876**
सावधि जमा पर ब्याज		554,898	818,749
बैंक बचत खाते पर ब्याज		728,231	1,209,027
योग		**1,283,129**	**2,027,776**
अग्रिम पर ब्याज		551,310	655,456
आयकर वापसी पर ब्याज		-	56,650
योग		**551,310**	**712,106**
योग		**1,834,439**	**2,739,882**
माल और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त आय	**2**		
बिक्री / सेवाओं से प्राप्त आय			
सभागार रखरखाव प्राप्ति		492,000	418,000
फोटो कॉपी शुल्क		32,474	74,682
ऑनलाइन साहित्य सामग्री की बिक्री से प्राप्ति		-	320,006
शुल्क और सदस्यता से प्राप्त आय	3		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क आय		207,350	217,357
बुक क्लब सदस्यता	-	-	
योग		**207,350**	**217,357**
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	4		
रॉयल्टी से प्राप्त आय		91,510	49,988
अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय		27,150,759	37,840,020
योग		**27,242,269**	**37,890,008**
विविध प्राप्तियाँ	5		
खोई पुस्तक पर पुस्तकालय द्वारा वसूली		5,983	1,957
विविध रसीदें		485,976	359,889
पूर्व अवधि प्राप्तियाँ		-	-
सीजीएचएस में कर्मचारी योगदान की वसूली		428,164	410,250
एनपीएस खाते में गैर प्रतिदेय राशि का नियोक्ता द्वारा दिया गया योगदान		-	-
नेपाल में भारत उत्सव (प्राप्तियाँ)		16,416	-
योग		**936,539**	**772,096**
स्टाफ द्वारा चुकाए गए ऋण	6		
स्टॉफ कंप्यूटर अग्रिम		6,000	8,500
स्टॉफ वाहन अग्रिम		4,800	24,300
त्यौहार अग्रिम		-	37,800

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम		411,020	192,725
योग		**421,820**	**263,325**
प्रतिदेय जमा राशि	7		
वर्ष के दौरान प्राप्त पुस्तकालय सदस्यता		770,200	680,405
वर्ष के दौरान प्रतिदेय पुस्तकालय सदस्यता		(79,800)	
वर्ष के दौरान प्राप्त बयाना राशि		100,000	50,000
वर्ष के दौरान प्रतिदेय बयाना राशि		(100,000)	
योग		**690,400**	**730,405**
कॉट्रा (बैंक) प्राप्ति और भुगतान	8		
टीडीएस/आयकर			
प्राप्ति		12,883,260	10,651,802
भुगतान		(12,883,260)	(10,651,802)
योग		-	-
जीएसटी			
प्राप्ति		-	119,050
भुगतान		-	(90,522)
योग		-	28,528.00
जीएसटी (टीडीएस)			
प्राप्ति		363,716	233,295
भुगतान		(355,964)	(187,115)
योग		**7,752**	**46,180.00**
प्राप्ति		-	10,651,802
भुगतान		-	(10,651,802)
योग		-	-
जीएसटी			
प्राप्ति		15,772,700	119,050
भुगतान		(15,772,700)	(90,522)
योग		-	**28,528.00**
जीएसएलआईसी			
प्राप्ति		928,851	1,206,787
भुगतान		(927,511)	(1,207,138)
योग		**1,340**	**(351.00)**
एल.आई.सी.			
प्राप्ति		285,256	312,419
भुगतान		(285,256)	(312,419)
योग		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
सा.भ.नि. ऋण की वसूली			
प्राप्ति		3,543,500	2,949,360
भुगतान		(3,543,500)	(2,949,360)
योग		-	-
कुल योग		**9,092**	**74,357**
अन्य देय	9		
देनदारों से प्राप्त अग्रिम			
वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	-
योग		-	-
देनदारों से वसूली			
वर्ष के दौरान		932,489	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
योग		**932,489**	-
बाहरी पार्टियों से प्राप्त अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		9,002,827	31,163,366
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(7,380,663)	(30,797,895)
योग		**1,622,164**	**365,471.00**
अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान छोड़े गए		14,997,217	-
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		(14,127,970)	-
योग		**869,247**	-
वसूली योग्य कर			
वसूली योग्य आयकर		-	566,510
वर्ष के दौरान आयकर की वापसी		-	(86,876)
योग		-	**479,634.00**
विविध लेनदार			
वर्ष के दौरान देय		-	5,093,561
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	(4,020,654)
योग		-	**1,072,907.00**
अन्य चालू दायित्व			
वर्ष के दौरान		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
कुल योग		**3,423,900**	**1,918,012.00**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्थापना व्यय	10		
स्टाफ वेतन और भत्ते		-	
वेतन, मजदूरी और भत्ते			
मूल वेतन		79,983,178	78,544,460
ग्रेड पे		-	86,400
महँगाई भत्ता		12,610,657	8,221,955
मकान किराया भत्ता		19,474,178	19,343,453
यात्रा भत्ता		7,735,753	7,487,263
बच्चों का शिक्षा भत्ता		1,436,966	1,299,100
व्यक्तिगत वेतन		6,800	76,000
वर्दी भत्ते		215,000	200,000
नकद भत्ता		14,000	14,000
स्टाफ वेतन और भत्ते –कार्यालय का सुधार		1,843,306	60,487
बकाया वेतन		59,078	16,567
पेंशन			
पेंशन		31,195,512	22,982,773
पेंशनभोगियों के लिए महँगाई भत्ता		6,172,367	10,496,360
पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता		564,000	378,500
अतिरिक्त पेंशन		971,583	546,972
एनपीएस को अंशदान		3,080,385	2,597,566
कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और सेवांत हितलाभ पर व्यय			
उपदान		6,781,496	8,204,376
परिवारिक पेंशन सहित पेंशन		8,739,129	25,495,842
अवकाश नकदीकरण		169,358	7,625,213
चिकित्सा सुविधाएँ		4,693,469	3,030,620
अवकाश यात्रा रियायत		617,707	2,678,530
योग		**186,363,922**	**199,386,437**
प्रशासनिक व्यय	11		
लेखा परीक्षा तथा लेखा शुल्क		189,290	220,865
प्रकाशन एवं लेखन सामग्री		990,407	598,156
टेलीफोन तथा डाक शुल्क		3,553,635	3,667,757

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	अन्य आकस्मिक व्यय		724,150	1,384,989
	वाहनों का रखरखाव		172,060	151,930
	किराया, दरें और कर			
	वार्षिक रखरखाव अनुबंध		1,509,313	177,855
	बिजली/पानी का शुल्क		4,112,848	6,075,202
	किराया		21,197,458	21,430,160
	अन्य संयुक्त सेवाएँ		4,047,062	-
	कानूनी शुल्क		836,859	193,000
	यात्रा खर्च		649,836	1,054,250
	व्यावसायिक शुल्क		223,020	210,630
	पूर्व आवधिक व्यय		-	-
	योग		**38,205,938**	**35,164,794**
	संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	12		
	सामान्य			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		3,946,894	2,262,771
02	बनारस स्कूल परियोजना		-	14,905
03	राजभाषा कार्यक्रम		352,866	476,047
04	भाषाओं का विकास		-	
05	फेलोशिप		488,268	523,048
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		21,124,447	22,861,285
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		12,272,968	10,903,335
08	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि		8,806,367	12,347,266
09	प्रकाशन योजनाएँ		31,439,746	20,928,951
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना		463,880	529,787
11	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ		12,932,407	14,437,304
12	अनुवाद योजनाएँ		5,288,663	5,376,177
13	पुस्तकालय तथा सूचना सेवाओं में सुधार		1,031,348	1,536,981
14	युवा पुरस्कार		3,477,093	3,641,703
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	40,484
16	भारतीय अनुवाद		1,021,265	431,502
17	टैगोर राष्ट्रीय फैलोशिप		11,000	21,064
18	योग		24,926	158,976
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		1,825,171	1,595,232
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी/कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद योजना	-	-	
	योग		**104,507,309**	**98,086,818**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता			
	राज्य अकादेमियों को सहायता		807,011	380,510
	राज्य अकादेमियों को सहायता तथा अन्य संस्थानों के लिए एन.ई.		161,047	-
	योग		**968,058**	**380,510.00**
	एन.ई.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		740,529	2,040,303
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	
03	राजभाषा महोत्सव		-	
04	भाषाओं का विकास		-	
05	फैलोशिप		60,126	
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		10,632,254	22,303,904
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		46,020	40,748
08	बिक्री (विज्ञापन) इत्यादि का संवर्द्धन		319,797	1,698,664
09	प्रकाशन योजनाएँ		5,888,733	1,431,681
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजनाएँ		271,297	516,133
11	लेखकों को सेवाएँ		2,375,975	4,402,823
12	अनुवाद योजनाएँ		5,032,807	4,978,465
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		2,052,237	1,187,029
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	
16	भारतीय अनुवाद		-	
17	टैगोर नेशनल फैलोशिप		-	
18	योग		-	
02	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		177,174	
19	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	
20	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	
	योग		**27,596,949**	**38,599,750**
	टी.एस.पी.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		137,709	84,504
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	
03	राजभाषा महोत्सव		-	

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
04	भाषाओं का विकास		4,143,595	4,506,831
05	फैलोशिप		-	
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		2,671,198	3,908,372
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	
08	बिक्री (विज्ञापन) इत्यादि का संवर्द्धन		-	
09	प्रकाशन योजनाएँ		460,108	106,104
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन परियोजनाएँ		-	
11	लेखकों को सेवाएँ		298,199	1,985,708
12	अनुवाद योजनाएँ		122,225	72,855
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	
14	युवा पुरस्कार		108,890	97,128
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	
16	भारतीय अनुवाद		-	
17	टैगोर नेशनल फैलोशिप		-	
18	योग		-	
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी/कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	
	योग		**7,941,924**	**10,761,502**
	एस.ए.पी.			
	स्वच्छता कार्य योजना		1,223,578	1,630,817
	योग		**1,223,578**	**1,630,817**
	विशेष सेल–भारत महोत्सव			
	भारत–इजराइल महोत्सव		-	-
	भारत–स्पेन महोत्सव		-	111,060
	भारत– थाईलैंड महोत्सव		-	72,512
	भारत–नेपाल महोत्सव		123,503	247,643
	योग		**123,503**	**431,215**
	–विशेष सेल–श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी			
	–श्रीरामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी		8,625	1,333,486
	योग		**8,625**	**1,333,486**
	कुल योग		**142,369,946**	**151,224,098**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	13		
भूमि		-	-
भवन		-	-
सयंत्र और तंत्र		92,935	-
वाहन		-	-
फर्नीचर और जुड़नार		551,286	293,934
कार्यालय उपकरण		142,132	288,442
कंप्यूटर/परिधीय		273,656	1,679,714
विद्युतीय/अधिष्ठान		-	
पुस्तकालय में पुस्तकें		313,370	1,465,429
योग		**1,373,379**	**3,727,519**
पूँजीगत कार्य प्रगति पर व्यय			
पूँजीगत कार्य प्रगति पर		26,884,536	35,080,684
योग		**26,884,536**	**35,080,684**
कुल योग		**28,257,915**	**38,808,203**
स्टॉफ को प्रदत्त ऋण (परिसंपत्तियाँ)	15		
स्टॉफ कंप्यूटर अग्रिम		-	-
स्टॉफ वाहन अग्रिम		-	-
स्टॉफ भवन निर्माण अग्रिम		-	1,136,766
कुल योग		**-**	**1,136,766**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
वसूली योग्य प्रतिभूति जमा	16		
प्राप्ति योग्य प्रतिभूति जमा			
वर्ष के दौरान जमा राशि		627,701	163,523
वर्ष के दौरान जमा राशि प्रतिदाय		438,000	-
कुल योग		**189,701**	**163,523**
अन्य प्राप्ति योग्य	17		
देनदारों द्वारा दिए गए अग्रिम			
वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		181,964	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		(172,545)	-
योग		**9,419**	-
बाहरी पार्टी को दिया गया अग्रिम			
वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	73,767,396
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	(69,501,389)
योग		-	**4,266,007.00**
अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	-
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	-
योग		-	-
अस्थायी स्थानांतरण			
भुगतान		64,877,851	101,317,759
प्राप्ति		(64,877,851)	(101,317,759)
योग		-	-
देय ब्याज प्रोद्भूत			
वर्ष के दौरान		775,499	-
वर्ष के दौरान वसूला गया (ब्याज)		-	-
योग		**775,499**	-
वसूली योग्य कर			
वसूली योग्य आयकर		55,073	-
वर्ष के दौरान प्रतिदाय आयकर		-	-
योग		**55,073**	-
विविध लेनदार			
वर्ष के दौरान देय		913,960	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(793,122)	-
योग		**120,838**	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2020 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
वर्ष के दौरान देय		128,255,273	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(127,705,967)	-
योग		**549,306**	**-**
जी.एस.टी.			
प्राप्ति		381,316	-
भुगतान		(352,788)	-
योग		**28,528**	**-**
प्राप्ति		6,237,868	-
भुगतान		(6,195,358)	-
योग		**42,510**	**-**
पूर्वदत्त व्यय			
वर्ष के दौरान जारी		161,518	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(132,764)	-
योग		**28,754**	**-**
कुल योग		**1,609,927**	**4,266,007.00**

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का तुलन–पत्र : यथातिथि 31–03–2020

2018–19	दायित्व	2019–2020		2018–2019	परिसम्पत्तियाँ	2019–2020	
	सा. भ. नि. खाता				निवेश (लागत पर)		
104,803,521	01–04–2019 को शेष	**94,991,955**			**आवधिक जमा एवं बॉण्ड (निम्नांकित बैंकों के साथ)**		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			150,440	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	160,163	
14,280,947	कर्मचारियों का सा. भ. नि. में अंशदान	15,772,700		34,146,727	केनरा बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	41,525.290	
-	अन्य परिवर्धन	14,995		43,397,901	यूको बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	47,178,398	
7,020,356	ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	7,055,745		**77,695,068**			**88,863,851**
21,301,303		**22,843,440**					
	वर्ष के दौरान कटौती :				**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–सा.भ.नि.**		
7,741,000	अंतिम निकासी	5,712,000		2,563,029	01–04–2019 को शेष	2,667,679	
446,518	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	132,150		2,667,679	**जमा :** वर्ष के दौरान प्रोदभूत ब्याज	1,887,665	
22,925,351	पूर्ण एवं अंतिम भुगतान	6,583,003		2,563,029	**घटा :** परिपक्वता पर प्राप्त ब्याज	2,667,679	
31,112,869		**12,427,153**		2,667,679			
94,991,995			**105,408,242**				**1,887,665**
	नई पेंशन योजना				**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–एन.पी.एस.**		
142,749	01–04–2019 को शेष	152,384		1,332	01–04–2019 को शेष	1,369	
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			1,369	**जमा :** 2019–20 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	1,311	
201,043	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	-		1,332	**घटा :** परिपक्वता पर ब्याज	1,369	
201,043	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	-		**1,369**			**1,311**
9,635	एन.पी.एस. आवधिक पर प्राप्त ब्याज	-					
411,721		-			**ग्राहकों को अग्रिम**		
	वर्ष के दौरान कटौती :			6,053,360	01–04–2019 को शेष	6,686,992	
—	01-04-2019 को पी.एफ.आर.डी.ए. में शेष	-		4,310,100	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	2,740,000	
402,086	घटा : राशि पी.एफ.आर.डी.ए. में स्थानांतरित	-		3,676,468	घटा : अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	132,150	
402,086		-		**6,686,992**	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	3,543,500	
	परिवर्धन			311,088	**अन्य अग्रिम–टी.डी.एस.**		**5,751,342**
—	जमा : साहित्य अकादेमी के लिए वापसी योग्य अंशदान	-		238,174	01–04–2019 को शेष	549,262	
—	जमा : साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को वापसी योग्य अंशदान	-		**549,262**	जमा : वर्ष के दौरान स्रोत पर टैक्स कटौती	257,309	
—		-					**806,571**
152,384		-	**152,384**	5,514,042	**बैंक शेष**		
	ब्याज (अनुपयुक्त) लेखा			100,121	– एस.बी. खाता 01100/401527 एसबीआई, नई दिल्ली	4,713,964	
(1,000,374)	01–04–2018 का शेष	(1,929,806)		**5,614,163**	– एस.बी. खाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	103,562.69	
375,892	जमा : अंशदान में अधिशेष स्थानांतरण	-					**4,817,527**
1,305,324	घटा : आय पर व्यय का आधिक्य	1,502,553	**(3,432,359)**				
(1,92906)							
93,214,533	**योग**		**102,128,267**	**93,214,533**	**योग**		**102,128,267**

ह./–
(घनश्याम शर्मा)
प्रवर लेखपाल

ह./–
(बाबुराजन एस.)
उपसचिव

ह./–
(के. एस. राव)
सचिव

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 27 जुलाई 2020

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का आय और व्यय लेखा : यथातिथि 31–03–2020

2018–19	व्यय	2019–2020		2018–2019	आय	2019–2020	
					निवेश (लागत पर)		
7,020,356	सा.भ.नि. के ग्राहकों को ब्याज दिया गया	7,055,745		5,098,757	निवेश पर प्राप्त ब्याज	5,078,307	
1,349	बैंक शुल्क	-		195,162	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	130,302	
-	अन्य कटौतियाँ	-		422,462	अन्य अधिशेष	344,583	
7,021,705			**7,055,745**	**5,716,381**			**5,553,192**
					आय पर व्यय का आधिक्य		
				1,305,324	घाटे को स्थानांतरित किया	1,502,553	
							1,502,553
7,021,705	**योग**		**7,055,745**	**7,021,705**	**योग**		**7,055,745**

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 27 जुलाई 2020

ह./–
(घनश्याम शर्मा)
प्रवर लेखपाल

ह./–
(बाबुराजन एस.)
उपसचिव

ह./–
(के. एस. राव)
सचिव

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2019 से 31–03–2020

2018–19	प्राप्तियाँ	2019–2020		2018–2019	भुगतान	2019–2020	
	आदि बैंक शेष				**सा.भ.नि. खाता**		
6,138,442	केनरा बैंक	5,514,042		7,741,000	अंतिम निकासी	5,712,000	
93,220	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	100,121	**5,614,163**	446,518	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
6,231,662				22,925,351	पूर्ण और अंतिम बस्तियाँ	6,583,003	**12,295,003**
				31,112,869			
	सा.भ.नि. लेखा				**राष्ट्रीय पेंशन योजना**		
14,653,900	कर्मचारियों का अंशदान	15,772,700		402,086	एन.पी.एस. में निवेश	-	
3,676,468	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	3,543,500		-	कर्मचारी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
7,023,295	उपभोक्ताओं का ब्याज जमा	7,055,745	**26,371,945**	-	अकादेमी को एन.पी.एस. का निपटान	-	-
25,353,663				**402,086**			
	नई पेंशन योजना				**ग्राहकों को अग्रिम**		
201,043	अकादेमी का योगदान	-		4,310,100	वर्ष के दौरान ग्राहकों को दी गई अग्रिम राशि	2,740,000	
201,043	कर्मचारियों का योगदान	-		-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	**2,740,000**
9,635	आवधिक जमा पर ब्याज	-		**4,310,100**			
411,721							
	प्राप्त ब्याज				**निवेश**		
2,358,090	सा.भा.नि. के निवेश पर ब्याज–केनरा बैंक	2,054,214		-	वर्ष के दौरान सा.भ.नि. खाते में किए गए निवेश	8,000,000	
2,740,667	सा.भा.नि. के निवेश पर ब्याज–यूको बैंक	3,024,093		4,712,677	सा.भ.नि. निवेश पर प्राप्त ब्याज	4,820,998	
195,162	बैंक बचत खातों पर ब्याज	130,302		-	वर्ष के दौरान एन.पी.एस. में निवेश	-	**12,820,998**
422,462	आई.डी.बी.आई. फलैक्सी बॉण्ड	-	**5,208,609**	**4,712,677**			**1,311**
5,716,381							
	निवेश				**साहित्य अकादेमी से वसूली योग्य राशि**		
9,698,347	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	2,791,865		238,174	साहित्य अकादेमी		
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–एन.पी.एस.	-		**238,174**	स्रोत पर काटा गया कर	257,309	**257,309**
6,000,000	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–आई.डी.बी.आई. फलैक्सी बॉण्ड	-	**2,791,865**		**अन्य व्यय**		**5,751,342**
15,698,347				7,202,356	सा.भ.नि. ग्राहक को दिया गया आकलित ब्याज	7,055,745	
	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित			1,349	बैंक शुल्क	-	**7,055,745**
-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	-	**7,021,705**			
					बैंक अंत शेष		
				5,514,042	केनरा बैंक	4,713,964	
				100,121	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	103,563	**4,817,527**
				5,614,163			
53,411,774	**योग**		**39,986,582**	**53,411,774**	**योग**		**39,986,527**

ह./–
(घनश्याम शर्मा)
प्रवर लेखपाल

ह./–
(बाबुराजन एस.)
उपसचिव

ह./–
(के. एस. राव)
सचिव

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 27 जुलाई 2020

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची : यथातिथि 01–04–2019 से 31 मार्च 2020

निवेश									ब्याज		
क्र. सं.	एफ.डी.सं.	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	ब्याज दर (%)	31-03-2020 को ब्याज का अंकित मूल्य	परिपक्वता मूल्य	प्राप्त योग्य सकल ब्याज	31-03-2019 तक प्रोद्भूत	2019-2020 के दौरान प्रोद्भूत	प्रोद्भूत ब्याज पर टी.डी.एस. कटौती	31-03-2020 को कुल परिपक्वता
	नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
3	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/72-79	2/9/2020	2/9/2021	6.3%	160163.00	170495.00	10332.00	-	1,457	146	1,311
	योग 1				**160,163**	**170,495**	**10,332**	**-**	**1,457**	**146**	**1,311**
	सा.भ.नि. की राशि यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफडीआर सं. 18250310055601	27/9/2019	30/12/2020	6.40%	14,045,551	15,216,396	1170845.00	-	460,540	-	460,540
3	एफडीआर सं. 18250310055625	24/9/2019	26/12/2020	6.40%	14,036,423	15,201,287	1164864.00	-	467,624	-	467,624
5	एफडीआर सं. 18250310055649	25/9/2019	28/12/2020	6.40%	14,041,037	15,208,841	1167804.00	-	465,316	-	465,316
2	एफडीआर सं. 18250310055618	27/9/2019	30/12/2020	6.40%	1,685,641	1,826,157	140516.00	-	55,271	-	55,271
4	एफडीआर सं. 18250310055632	24/9/2019	26/12/2020	6.40%	1,684,617	1,824,408	139791.00	-	56,123	-	56,123
6	एफडीआर सं. 18250310055656	25/9/2019	28/12/2020	6.40%	1,685,129	1,825,282	140153.00	-	55,845	-	55,845
	योग 2			**0**	**47,178,398**	**51,102,371**	**3,923,973**	**-**	**1,560,719**	**-**	**1,560,719**
	सा.भ.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफडीआर सं 2417401000282/58-75	29/12/2019	14/11/2020	5.95%	2,907,120	3,061,576	154456.00	-	44,218	4,422	39,796
2	एफडीआर सं 2417401000282/61	2/2/2020	2/2/2021	6.3%	10,155,938	10,810,504	654566.00	-	104,854	10,485	94,369
3	एफडीआर सं 2417401000282/62	2/2/2020	2/2/2021	6.3%	10,155,438	10,810,504	655066.00	-	104,854	10,485	94,369
4	एफडीआर सं 2417401000282/63	2/2/2020	2/2/2021	6.3%	10,155,438	10,810,504	655066.00	-	104,854	10,485	94,369
5	एफडीआर सं 2417301000097/146/156/15	28/3/2020		4.3%	5,111,575	5,212,566	100991.00	-	2,829	283	2,546
6	एफडीआर सं 2417301000097/148/152	28/3/2020	23/6/2020	4.3%	3,039,781	3,069,613	29832.00	-	1,663	166	1,497
	योग 3	**-**			**41,525,290**	**43,775,267**	**2,249,977**	**-**	**363,272**	**36,326**	**326,946**
	कुल योग (1+2+3)			**-**	**88,863,851**	**95,048,133**	**6,184,282**	**-**	**1,925,448**	**36,472**	**1,888,976**

31-03-2020 को समाप्त वर्ष के लिए वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

31-03-2020 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

भूमिका

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करनेवाली केंद्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। इसका विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करनेवाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके मध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालाँकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का 1955-56 का पंजीकरण सं. 927 दिनांक 7 जनवरी 1956 को किया गया।

साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के कोलकाता, बेंगळुरु, मुंबई में तीन क्षेत्रीय कार्यालय तथा चेन्नई में एक उप-कार्यालय है।

अनुसूची-27—महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परिपाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधरित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) ग़ैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूँजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यह्रास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचार गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों को कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय गत 5 वर्षों के प्रारम्भ से नहीं लिखा गया।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधर पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि पर लेन-देन दिया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्र ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधर पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु/सेवा-निवृत्ति पर देय उपदान के प्रति देयता प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर प्रदान की जाती है।

(10.2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर कर्मचारियों को संचित अवकाशों के लाभों को भुनाने का भी प्रावधान है।

अनुसूची-26–प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद मांगे :
आयकर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
जी.एस.टी.–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में उन अनुबंधों का अनुमानित मूल्य जो निष्पादित किए जाने हैं तथा जो (कुल अग्रिम) रु. 2008.49 लाख (गत वर्ष 2072.12 लाख) है को उपलब्ध नहीं कराया गया है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि–रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31-3-2020 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूंजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	अनुसूची सं.	राशि	निधियों का नाम	अनुसूची	राशि
संग्रह निधि	1	₹ 1,00,00,000	तदनुरूप निवेश	11ए	₹ 1,00,00,000
स्थायी परिसंपत्ति निधि	3	₹ 19,81,54,155	स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	₹ 19,81,54,155
प्रकाशन निधि	3	₹ 13,51,64,862	स्टॉफ प्रकाशन	11ए	₹ 13,51,64,862
सा.भ.नि./एन.पी.एस.	3	₹ 10,21,28,267	आवधिक जमा	9	₹ 8,88,63,851
			बैंक शेष	11ए	₹ 48,17,527
			निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11बी	₹ 18,88,976
			सा.भा.नि. अग्रिम	11बी	₹ 57,51,342
			अन्य अग्रिम	11बी	₹ 8,06,571
कुल योग		**44,54,47,284**	**कुल योग**		**44,54,47,284**

5. चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण और अग्रिम

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. सेवानिवृत्ति लाभ

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंड संस्थान द्वारा जारी 'कर्मचारी लाभ' पर लेखा मानक-15 का अनुपालन न करने के संबंध में सीएजी लेखा परीक्षा अवलोकन का अनुपालन करने के संबंध में, अकादेमी ने वित्त वर्ष 2018-19 से उक्त लेखा मानकों के अनुरूप सेवानिवृत्ति लाभों अर्थात् ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण पर अपनी देयता की मान्यता की दिशा में अपनी नीति में परिवर्तन किया है।

तदनुसार, उसने इसके अंतर्गत दिए गए विवरणों के अनुसार बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर ग्रेच्युटी और अवकाश नकदीकरण के प्रति अपनी सेवानिवृत्ति लाभ देयता को मान्यता दी है। 17.9 वर्षों की पिछले वर्ष की सेवा को ध्यान में रखते हुए, 31 मार्च 2019 तक वित्तीय वर्ष से संबंधित व्यय की चालू वर्ष से संबंधित खर्चों के वास्तविक और निष्पक्ष दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करने के लिए गैर-पुनरावर्ती मदों के रूप में दिखाया गया है। 31 मार्च 2020 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए बीमांकक मूल्यांकन के प्रासंगिक सार को पुनः प्रस्तुत किया गया है।

ग्रेच्युटी प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2019 से 31-03-2020 तक	01-4-2018 से 31-03-2019 तक
ब्याज लागत	₹ 44,85,564	
वर्तमान सेवा लागत	₹ 31,06,422	
पिछली सेवा लागत	0	
योजना परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	(0)	
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त बीमांकिक लाभ/हानि	₹ 18,73,754	
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	₹ 94,65,740	

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित):

अवधि	31-03-2020 को	31-03-2019 को
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	₹ 1,05,57,122	₹ 87,90,633
गैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	₹ 5,81,50,981	₹ 5,52,88,858
कुल देयता	₹ 6,87,08,103	₹ 6,40,79,491

3.7 : तुलन पत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2019 से 31-03-2020 तक	01-4-2018 से 31-03-2019 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	₹ 6,40,79,491	
लाभ और हानि में पहचाने जानेवाले व्यय	₹ 94,65,740	
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	₹ (48,37,128)	
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	₹ 6,87,08,103	

अवकाश नकदीकरण प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2019 से 31-03-2020 तक	01-4-2018 से 31-03-2019 तक
ब्याज लागत	₹ 24,92,811	
वर्तमान सेवा लागत	₹ 22,90,370	
योजना परिसंपत्तियों पर अपेक्षित लाभ	(0)	
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त बीमांकिक लाभ/हानि	₹ 12,61,477	
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	₹ 60,44,658	

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित):

अवधि	31-03-2020 को	31-03-2019 को
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	₹ 57,16,529	₹ 30,87,083
गैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	₹ 3,45,24,561	₹ 3,25,24,496
कुल देयता	₹ 4,02,41,090	₹ 3,56,11,579

3.6 : तुलन पत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2019 से 31-03-2020 तक	01-4-2018 से 31-03-2019 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति परिभाषित)	₹ 3,56,11,579	
लाभ और हानि पहचाने जानवाले व्यय	₹ 60,44,658	
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(₹ 14,15,147)	
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	₹ 4,02,41,090	

7. कराधान

अकादेमी को अपने कार्यक्रम और गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णतः वित्त-पोषित किया जाता है। तदनुसार, अकादेमी की आय को कर से छूट दी गई है। आयकर अधिनियम 1961 के अंतर्गत कर योग्य आय न होने को ध्यान में रखते हुए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

8. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(8.1)	आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधर पर गणना :	शून्य
	तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (परागमन सहित)	
	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(8.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	विदेशों में पुस्तक मेलों तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन—	
	राजस्व योजना के अंतर्गत	₹ 1,88,541/-
(ख)	वित्तीय संस्थाओ/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	अन्य व्यय :	
	कानूनी तथा व्यावसायिक व्यय	शून्य
	विविध व्यय	₹ 83,864/-
	माल भाड़ा	शून्य
	यात्रा व्यय	₹ 15,27,697/-
(8.3)	अर्जन :	
	एफ.ओ.बी. के आधर पर निर्यात मूल्य	शून्य
(8.4)	लेखापरीक्षकों को पारिश्रमिक (सीएजी)	₹ 1,50,000/-

9. अनुदान उपयोग

अकादेमी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा पूर्णतः वित्त पोषित है। इसके अतिरिक्त, यह अपने प्रकाशन और बैंक ब्याज आदि की बिक्री के माध्यम से कुछ राजस्व भी उत्पन्न करती है। 31 मार्च 2020 को प्राप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाते के आधार पर अकादेमी द्वारा प्राप्त अनुदानों/वित्तीय सहायता की संक्षिप्त स्थिति इस प्रकार है :

विवरण	राजस्व वेतन (₹)	राजस्व सामान्य (₹)	राजस्व सी.सी.ए.(₹)	राजस्व एन.ई.(₹)	टी.एस.पी. (₹)	एफ़.ओ.आई. (₹)	एस.ए.पी. (₹) (₹)	विशेष सेल संत रामानुजाचार्य की जन्म शताब्दी	योग (₹)
01/04/2019 को अव्ययित आदिशेष	–	30,01,460	11,91,986	64,00,186	–	1,19,857	–	–	1,07,13,489
संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	16,79,32,000	12,69,99,000	2,80,50,000	2,56,00,000	75,00,000	–	10,75,000	–	35,71,56,000
अन्य प्राप्तियाँ	1,84,31,922	1,70,31,088	–	–	4,41,924	3,646	1,48,578	8,625	3,60,65,783
योग ए	**18,63,63,922**	**14,70,31,548**	**2,92,41,986**	**3,20,00,186**	**79,41,924**	**1,23,503**	**12,23,578**	**8,625**	**40,39,35,272**
व्यय	18,63,63,922	14,35,64,544	2,82,57,915	2,77,13,710	79,41,924	1,23,503	12,23,578	8,625	39,51,97,721
अन्य भुगतान	–	17,99,628	–	–	–	–	–	–	17,99,628
योग बी	**18,63,63,922**	**14,53,64,174**	**2,82,57,915**	**2,77,13,710**	**79,41,924**	**1,23,578**	**12,23,578**	**8,625**	**39,69,97,349**
31/03/2020 को अव्ययित अंत शेष	–	16,67,376	9,84,071	42,86,476	–	–	–	–	69,37,923

10. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है, जिससे उन्हें चालू वर्ष के आँकड़ों के साथ तुलनीय बनाया जा सके। ₹ 10/- के अंतर को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है।

11. अनुसूची 1 से 26 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलन पत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2020 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

	ह/-	ह/-	ह/-
स्थान : नई दिल्ली	**घनश्याम शर्मा**	**बाबुराजन एस.**	**के.एस. राव**
दिनांक : 27 जुलाई 2020	(प्रवर लेखापाल)	(उपसचिव)	(सचिव)

शब्द ही एकमात्र रत्न हैं जो मेरे पास हैं
शब्द ही एकमात्र वस्त्र हैं जिन्हें मैं पहनता हूँ
शब्द ही एकमात्र आहार है जो मुझे जीवित रखता है
शब्द ही एकमात्र धन है जिसे मैं लोगों में बाँटता हूँ

—संत तुकाराम